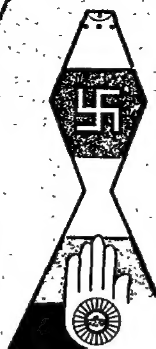


परस्परोपग्रहो जीवानाम्

श्री नवकार महामंत्र

।। णमो अरिहंताणं ।।

।। णमो सिद्धाणं ।।

।। णमो आयरियाणं ।।

।। णमो उवज्झायाणं ।।

।। णमो लोएसव्वसाहूणं ।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पाव-प्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं

समता स्वाध्याय सौरभ



प्रकाशक
समता युवा संघ, बीकानेर

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

☐ श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
'समता भवन' रामपुरिया मार्ग, बीकानेर फोन : 0151-2544867

☐ श्री जैन जवाहर विद्यापीठ
मैन रोड़, भीनासर - बीकानेर

☐ श्री जैन जवाहर मित्र मण्डल
मेवाड़ी बाजार, ब्यावर (राज.)

☐ श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार
81, समता भवन, नौलाईपुरा, रतलाम - म.प्र.

☐ श्री समता प्रचार संघ
झालामन्ना चौराहा, पोस्ट-बड़ी सादड़ी, जिला - चित्तौड़गढ़

☐ श्री छत्तीसगढ़ समता प्रचार संघ
पोस्ट- नगरी, जिला-धमतरी

संस्करण : तृतीय, 03.02.2004 वि.सं. 2060
आवृति : 1100
अर्द्धमूल्य : 20 रुपये (बीस रुपये मात्र)

प्रकाशक :
समता युवा संघ, बीकानेर
बोथरा भवन, मुकीम-बोथरा मौहल्ला
बीकानेर -334005 (राज.)

आवरण व साजसज्जा : विनय बोथरा
कम्पोजिंग : कमला ग्राफिक्स, बागड़ी मौहल्ला, बीकानेर

मुद्रक :
बीकानेर प्रिण्टर्स
बागड़ी मौहल्ला, बीकानेर
फोन : 0151-2530148, 2271860

卐 卐



सादर समर्पित

उन प्रेरणा सूर्य, प्रातः स्मरणीय, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना, आगम रहस्यज्ञाता, हुक्मगच्छाधिपति, नानेश पट्टधर, श्रीवाल प्रतिबोधक, व्यसनमुक्ति एवं संस्कार क्रान्ति के प्रणेता, युवा हृदय सम्राट, बालब्रह्मचारी, परमश्रद्धेय

आचार्य प्रवर श्री श्री १००८ श्री रामलाल जी म. सा.

के पावन पुनीत चरण सरोजों

में

समता स्वाध्याय सौरभ

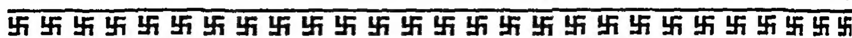
श्रद्धान्वत

कमलचन्द-शोभा देवी, विमलचन्द-कंचन देवी, इन्द्रमल-प्रमिला देवी
सरोजदेवी (पत्नी, स्व. श्री मुन्नीलाल बैद), धर्मचन्द- जीवन प्रभा
विजय चन्द-मंजू देवी, मूलचन्द-रजनी देवी
एवं समस्त बैद परिवार, बीकानेर

बैद पॉलिमर्स (इण्डिया) प्रा. लि. :
236/38 सेम्युल स्ट्रीट, चौथा तल, कमरा नं. 15 मुम्बई-400 003
फोन : 23415784, 23435679, 23435680 (ऑ) 25702722 (नि.)
फैक्स : 91-22-3433191

जे, एन. एक्स पोर्टस्
युनिट-ई-एफ, आठवां तल
फार इस्ट मेन्सन, 5-6 मिडल रोड़
टी. एस. टी. कोलून, हांगकांग
फोन :23687218 (3 लाईन)
डी लाईन : 27218648, 27231814
मोबा. 00852-90944552
ई-मेल :jnexpo@netvigator.com
mcbaid@jnexport.com.hk

एस. एम. पी. सेक्युरिटीज लि.
सदस्य : नेशनल स्टॉक एक्सचेन्ज ऑफ इण्डिया लि.
4806/24, भरतराम रोड़
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 23289688, 23274822



सार्थक नाम : कीर्तिमानीय काम

ओसवाल समाज के गौरव, संघरत्न, सहजता, सरलता के प्रतीक आदर्श सुश्रावक स्वर्गीय संतोकचन्द जी बैद, आदर्श सुश्राविका स्वर्गीय फत्तादेवी बैद की पुण्य स्मृति में समस्त बैद परिवारजन की ओर से **"समता स्वाध्याय सौरभ"** पुस्तक के प्रकाशन हेतु सहयोग प्राप्त कर अत्यन्त गौरव की अनुभूति हो रही है। धर्म, तप, सेवा, स्वाध्याय, सौजन्य की प्रतीक धरा बीकानेर के प्रवासी तथा हाल में हांगकांग, नेपाल, मुम्बई, दिल्ली निवासी बैद परिवार का स्वाध्याय के क्षेत्र में शुरू से रूझान रहा है। आपने 'पढमं णाणं तओ दया' की युक्ति को सार्थक करते हुए स्वध्याय के महत्त्व को समझकर **"समता स्वाध्याय सौरभ"** पुस्तक के प्रकाशन का निर्णय लिया जिसके लिए समता युवा संघ, बीकानेर बैद परिवार का हृदय के अंतःस्थल से हार्दिक आभार व्यक्त करता है। बैद परिवार एक सुसंस्कारित परिवार है आपके परिवार से वर्तमान में महासती श्री सुशीला कंवर जी म. सा. आचार्य श्री रामेश के शासन को ज्ञान, दर्शन, चारित्र से गौरवान्वित कर रही है। आपके सुपुत्र भारत तथा विदेशों में भी व्यावसायिक क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। साथ ही धार्मिक सुसंस्कारों से ओतःप्रोत है। प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन से स्वाध्यायी जन लाभान्वित होंगे तभी प्रकाशन का श्रेय सार्थक है।

इन्हीं शुभानुशंसाओं के साथ।

समता युवा संघ, बीकानेर

स्वाध्याय करने की विधि

आगम-शास्त्र देववाणी/भाषा में होने के कारण इसे पढ़ने वाले को विशेष सावधानी रखनी चाहिये। स्थानांगसूत्र में ३३ तथा निशिथ सूत्र में ९ अस्वाध्याय काल बताये गये है। उस समय में आगमों के मूल पाठ, पद का स्वाध्याय नहीं करना चाहिये। इस वर्जित काल में स्वाध्याय करते समय यदि जाने-अनजाने में अशुद्धि हो जाये, अशातना हो जाये तो देवशक्ति द्वारा अनिष्ट क्रिया की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। स्थानांग सूत्र एवं निशीथ सूत्र के आधार से ऐसे अस्वाध्याय काल को यहां प्रस्तुत किये जाने का प्रसंग है। बुद्धिमान साधक इन कालावधियों को टालकर स्वाध्याय करने का उपयोग रखावें।

स्वाध्याय करने के पूर्व आकाश, औदारिक/शारीरिक, तिथि, काल संबंधी जाँच करनी चाहिए-

१. आकाश में यदि बड़ा तारा टूटा हो तो एक प्रहर (लगभग तीन घंटे) शास्त्र का स्वाध्याय नहीं करना चाहिये।

२. आकाशीय दिशाएँ लाल रंग की हो तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए। दिशाएँ प्रायः करके सूर्योदय व सूर्यास्त के समय लाल रहती हैं।

चातुर्मास काल को छोड़कर शेषकाल में-

३. बादल गरजे तो-दो प्रहर यानि लगभग ६ घंटे का स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

४. बिजली चमके तो-एक प्रहर यानि लगभग ३ घंटे का स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

५. बिजली कड़के (बादल हो या न हो पर आकाश में घोर गर्जना होवे) तो दो प्रहर यानि लगभग ६ घंटे स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

६. शुक्ल पक्ष में बाल चन्द्र (चंद्र छोटे आकार का) होने से

शुक्ल पक्ष की एकम्, दूज, तीज के दिन स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

७.आकाश में बादल की आकृति जब तक यक्ष आकार की दिखे तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

८,६,१० आकाश में जब तक कोहरा या धुंअर छाया हो, जब तक तुषारपात हो (ओला गिरे) तथा जब तक आकाश धूल से ढका हो तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए। उपरोक्त आकाश संबंधी निषिद्धताओं के साथ अपने आसपास शरीर संबंधी शुद्धियों की जाँच करनी चाहिए।

१,२,३ अपने साठ हाथ की सीमा में तिर्यंच (पशु-पक्षी)संबंधी तथा सौ हाथ की सीमा में मनुष्य की हड्डी दिखाई दे,मांस समीप हो, रक्त पास में हो तो तीन प्रहर (लगभग ६ घंटे) स्वाध्याय नहीं करना चाहिए। अगर वह शव हत्याजनक हो तो एक दिन-रात का अस्वाध्याय काल है।

४.जब तक मल-मूत्र आदि दिखाई दे या उसकी दुर्गन्ध आती हो तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

५.श्मशान के समीप हों तब भी स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

६,७. चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण हो तो ८-१२ और १६ प्रहर (२४-३६-४८ घंटे) स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

८.राजा, मंत्री या ठाकुर (वर्तमान स्थिति से राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सरपंच, महापौर या कलेक्टर आदि) मरे तो जब तक नये की नियुक्ति न हो, स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

६. युद्ध क्षेत्र के निकट रहें तो स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

१०. उपाश्रय में या उसके निकट मनुष्य या पशु का शव पड़ा हो तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

स्वाध्याय अयोग्य तिथियाँ:-

इन तिथियों को सम्पूर्ण दिन स्वाध्याय नहीं करना चाहिए :-
(१) आषाढ़ सुदी १५ (२) श्रावण बदी १ (३) भादवा सुदी १५ (४) आश्विन बदी १ (५) आश्विन सुदी १५ (६) कार्तिक बदी १ (७) कार्तिक सुदी १५ (८) मिगसर बदी १(६)चैत सुदी १५ और (१०) बैसाख बदी १

संधिकाल का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए :-

(१) सूर्योदय (२) सूर्यास्त (३) मध्य दिन और (४) मध्यरात्रि के समय दो-दो घड़ी अर्थात ४८ मिनट तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

इसके अलावा (१) शास्त्र को बिजली की रोशनी में नहीं पढ़ना/बोलना चाहिए (रात्रि में चंद्रमा के प्रकाश में पढ़/बोल सकते हैं।) (२) खुले मुंह नहीं पढ़ना/बोलना चाहिए।(३) स्वाध्याय करने के बाद आगमे तिविहे के पाठ का ध्यान कर लेना चाहिए।

व्यवहार सूत्र के सातवें उद्देशक में स्वाध्याय और अस्वाध्याय काल के विषय में वर्णन करते हुए उत्सर्ग और अपवाद मार्ग दोनों का ही वर्णन किया गया है। जिसके भावानुसार साधुओं को अ-काल (निषिद्ध समय) में स्वाध्याय नहीं करना चाहिए किन्तु काल (योग्य समय) में ही स्वाध्याय करना चाहिए। यदि परस्पर वाचना चलती हो तो वाचना की क्रिया कर सकते हैं। अर्थात् अ-काल में भी वाचना दे-ले सकते हैं। और यदि अपने शरीर से रक्त आदि बहता हो, तब भी स्वाध्याय नहीं कर सकते हैं, परन्तु उस स्थान को ठीक प्रकार से बांध कर यदि रक्त आदि बाहर न बहते हों तो परस्पर वाचना दे-ले सकते हैं।

स्वाध्याय करने के बाद

इस पाठ का ध्यान अवश्य करें।

आगमे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा-सुत्तागमे अत्थागमे तदुभयागमे। इस तरह तीन प्रकार के आगम रूप ज्ञान के विषय में जो कोई अतिचार (दोष) लगा हो, तो आलाउं-जं वाइद्धं वच्चामेलियं हीणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोषहीणं सुट्ठूदीणं दुट्ठूपडिच्छियं अकाले कओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ असज्झाए सज्झाइयं सज्झाए न सज्झाइयं भणतां गुणतां विचारतां ज्ञान और ज्ञानवंत पुरुषों की विनय अशातना की हो तो-

तस्स मिच्छामि दुक्कडं

सूत्र पढ़ने की तालिका

क्र.	शास्त्र का नाम	अध्ययन	चूलिका	गाथाप्रमाण	कालिकउत्कालिक	अनुयोग	दीक्षापर्याय	आयम्बिल
01.	आचारांग	25	5	2500	कालिक	चरणानुयोग	3 वर्ष	50
02.	सूयगडांग	23	—	2100	कालिक	द्रव्यानुयोग	4 वर्ष	30
03.	ठाणांग	10	—	3770	कालिक	द्रव्यानुयोग	8 वर्ष	18
04.	समवायांग	1	—	1667	कालिक	द्रव्यानुयोग	8 वर्ष	3
05.	भगवती	41	—	1575	कालिक	सर्वानुयोग	10 वर्ष	186
06.	ज्ञाता–धर्म कथांग	29	—	5500	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	33
07.	उवासग दशांग	10	—	812	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	14
08.	अन्तगड दशा	90	—	900	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	12
09.	अनुत्तरोववाई	33	—	192	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	7
10.	प्रश्न व्याकरण	10	—	2300	कालिक	चरणानुयोग	गुरु आज्ञा	14
11.	विपाक	20	—	1216	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	24
12.	उववाई	1	—	1167	उत्कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	3
13.	रायप्पसेणिय	1	—	2100	उत्कालिक	द्रव्यानुयोग	गुरु आज्ञा	3
14.	जीवाजीवाभिगम	1	—	4750	उत्कालिक	द्रव्यानुयोग	गुरु आज्ञा	3
15.	पन्नवण्णा	1	—	7787	उत्कालिक	द्रव्यानुयोग	गुरु आज्ञा	3

16.	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति	1	—	4146	कालिक	गणितानुयोग	गुरु आज्ञा	3
17.	चंद प्रज्ञप्ति	1	—	2200	कालिक	गणितानुयोग	गुरु आज्ञा	3
18.	सूर प्रज्ञप्ति	1	—	2200	उत्कालिक	गणितानुयोग	गुरु आज्ञा	3
19.	निरया—वलिया	—	—	1100	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	7
20.	कप्पवंडसिया	—	—	1100	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	7
21.	पुष्फिया	—	—	1100	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	7
22.	पुष्फ—चूलिया	—	—	1100	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	7
23.	वण्हि—दशा	—	—	1100	कालिक	धर्मकथानुयोग	गुरु आज्ञा	7
24.	उत्तराध्ययन	36	—	2100	कालिक	सर्वानुयोग	गुरु आज्ञा	20
25.	दशवैकालिक	10	2	700	उत्कालिक	चरणानुयोग	गुरु आज्ञा	15
26.	नंदी	1	—	700	उत्कालिक	द्रव्यानुयोग	गुरु आज्ञा	3
27.	अनुयोग द्वार	4द्वार	—	1899	उत्कालिक	द्रव्यानुयोग	5 वर्ष	3
28.	दशाश्रुत स्कंध	10	—	1830	कालिक	चरणानुयोग	5 वर्ष	20
29.	बृहत्कल्प	81	—	473	कालिक	चरणानुयोग	5 वर्ष	20
30.	व्यवहार	—	—	373	कालिक	चरणानुयोग	5 वर्ष	20
31.	निशीथ	—	—	812	कालिक	चरणानुयोग	3 वर्ष	3
32.	आवश्यक	—	—	100	उत्कालिक	चरणानुयोग	उसी दिन	6

प्रकाशकीय

आत्मा के अस्तित्व को पहचानने में चार्वाक दर्शन को छोड़कर शेष भारतीय दर्शनों में इसे भिन्न–भिन्न रूप से स्वीकार किया है। जैन दर्शनों में अततीति आत्मा अर्थात् निरन्तर जो प्रवाहमान है, वही आत्मा है।

इस आत्मा की परमोन्नयन व सृति की परिभ्रमणता को दूर करने के लिये स्वाध्याय का अपना अलग ही महत्व है। दशवैकालिक–सूत्र में कहा गया है कि–

" पढमं णाणं तओ दया "

की उक्ति के अनुसार सर्वप्रथम ज्ञान फिर क्रिया का समन्वय किया गया है। ज्ञान के अभाव में क्रिया पंगु व लक्ष्यविहीन है। अतः शास्त्रकारों व ऋषि महर्षियों ने एक स्वर में स्वाध्याय पर अत्यधिक बल दिया है।

स्वस्मिन् अध्यायः स्वाध्यायः' अपना अध्ययन अर्थात् अपना अवलोकन स्वाध्याय है। निर्जरा के बारह भेदों में स्वाध्याय को एक तप कहा गया है। जिसके द्वारा कर्म निजीर्ण होते हैं। अतः कहा गया है–

" सज्झायामि रओ सया "

अर्थात् स्वाध्याय में सदा रमण करना चाहिए। वीतराग वाणी का हिन्दी आदि भाषाओं में तो प्रकाशन होता ही रहता है, जिससे अर्थ बोध सुगमता से हो सके पर मूलवाणी का पारायण(पठन) अपने आप में अलग ही प्रभाव छोड़ता है।

गारूडिक मंत्र को सुनने वाला नही जानता कि इसका अर्थ क्या है तथापि उस पर श्रद्धा रखते हुए श्रवण करने से चढ़ा हुआ जहर उतर जाता है। डाक्टर द्वारा दी गई गोली में क्या वस्तुएं मिली है, इसे रोगी नहीं जानते हैं तो

भी उस गोली पर श्रद्धा–विश्वास से उसका रोग दूर हो जाता है ठीक वैसे ही भले हम वीतराग वाणी के अर्थ को नहीं जान पाये हो तथापि उन मूलवाणी का स्वाध्याय करने से कर्मरोग अवश्य कटता है एवं भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है–

" सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ "

स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म नष्ट होते हैं। सिद्धान्तों में वर्णन आता है कि एक साधु को शास्त्र रटते रटते ही केवलज्ञान हो गया। इन सारी दृष्टियों से मूलवाणी का प्रभाव आत्मा पर अवश्यमेव पड़ता है।

पूर्व में समता युवा संघ, बीकानेर द्वारा "समता स्वाध्याय सौरभ" पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इस पुस्तक की मांग को देखते हुए इसका परिष्कृत व शुद्धि का विशेष ध्यान रखते हुए पुनः प्रकाशन किया जा रहा है।

नवम् पट्टधर, प्रशांतमना, तरूण तपस्वी, आगम मर्मज्ञ, आचार्य प्रवर पूज्य श्री 1008 श्री श्री रामलालजी म.सा. का मार्गदर्शन भी समय–समय पर मिलता रहा।

प्रस्तुत ग्रंथ की सामग्री को संकलित–संपादित करने हेतु विद्वान, सेवाभावी श्री प्रकाश मुनि म. सा. ने अथक परिश्रम कर यह भागीरथी कार्य संपन्न किया। युवा संघ परिवार हृदय से आभारी एवं सदैव ऋणी रहेगा।

पुस्तक के प्रकाशन में जिन श्रेष्ठीवर्यों ने उदारता पूर्वक आर्थिक सहयोग प्रदान किया है उनके प्रति समता युवा संघ, बीकानेर हृदय से आभारी हैं। हम आभारी हैं हमारे समस्त कार्यकर्त्ताओं का विशेषकर श्री मनोज बेगाणी, श्री रितेश आसाणी, श्री नवीन कुमार कोठारी, श्री हेमन्त सिंगी,

श्री पंकज गोलछा जिनका पुस्तक के संकलन–संपादन और प्रकाशन में सहयोग रहा।

हम बीकानेर प्रिण्टर्स के आभारी हैं जिनके अथक परिश्रम व लगन से प्रकाशन का कार्य सुनियोजित समय पर सम्पन्न किया जा सका।

पुस्तक के प्रकाशन में त्रुटियां न रहे इस हेतु विशेष सजगता एवं सतर्कतां रखी गई है फिर भी प्रमादवश कोई त्रुटि रह गई हो तो हम हृदय से क्षमा चाहते हैं तथा प्रबुद्ध पाठकों से आग्रह है कि पुस्तक प्रकाशन में रही त्रुटियां एवं अन्य सुझाव हेतु हमारा ध्यान आकर्षित करेंगे ताकि आगामी प्रकाशन में उसे सुधारा जा सके।

स्वाध्याय प्रेमी इस पुस्तक से निरन्तर लाभान्वित होंगें तभी हमारे प्रकाशन की सार्थकता दृष्टिगोचर होगी। इस विश्वास के साथ...।

जय रामेश!

राजेन्द्र गोलछा (अध्यक्ष)

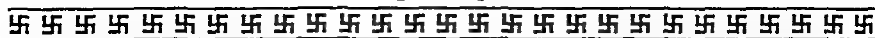
ललित अभाणी (मंत्री)

समता युवा संघ, बीकानेर



अनुक्रमणिका

क्रं.	अध्ययन सामग्री	पृष्ठ
१.	पुच्छिंस्सुणं	१४
२.	उववाई-सूत्र	१७
३.	श्री सुखविपाक-सूत्र	१९
४.	श्री दशवैकालिक-सूत्र	३२
५.	श्री उत्तराध्ययन-सूत्र	८८
६.	श्री नन्दी-सूत्र	२५३
७.	श्री अणुत्तरोववाइयदशा-सूत्र	२६८
८.	मोक्ष-मार्ग (मोक्ख मग्गं)	३१४
९.	चउसरणपईण्णा	३१८
१०.	घंटाकर्ण-मंत्र	३२३
११.	श्री तत्वार्थ-सूत्र	३२४
१२.	श्री भक्तामर-स्तोत्रम्	३४०
१३.	श्री कल्याणमन्दिर-स्तोत्रम्	३५२
१४.	रत्नाकर पंचविंशतिः	३६१
१५.	श्री महावीराष्टकम्-स्तोत्रम्	३६३
१६.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ-स्तोत्रम्	३६५
१७.	उपसर्गहर-स्तोत्रम्	३६७
१८.	लघु-साधु वंदना	३६८
१९.	बड़ी-साधु वंदना	३६९
२०.	बृहदालोयणा	३७८
२१.	श्री शांतिनाथ छंद	४०२
२२.	मेरी भावना	४०४
२३.	संघ-समर्पणा	४०६
२४.	श्री हुक्म्यष्टकम्-स्तोत्रम्	४०८
२५.	श्री नानेशगुणाष्टकम्-स्तोत्रम्	४०९
२६.	श्री रामेशाष्टकम्-स्तोत्रम्	४११
२७.	प्रत्याख्यान-सूत्र	४१३



पुच्छिंस्सुणं

(गणधर सुधर्मा स्वामीकृत)

पुच्छिंस्सुणं समणा माहणा य,अगारिणो या पर-तित्थिया य ।
से केइ णेगंत हियं धम्ममाहु,अणेलिसं साहु समिक्खयाए ।।१।।
कहं च णाणं कहं दंसणं से, सीलं कहं णाय सुयस्स आसी ।
जाणासि णं भिक्खु जहा तहेणं, अहा सुयं बूहि जहा णिसंतं ।।२।।
खेयण्णए से कुसले महेसी, अणंत णाणी य अणंत दंसी ।
जसंसिणो चक्खु पहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ।।३।।
उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।
से णिच्च णिच्चेहिं समिक्ख-पण्णे, दीवेव धम्मं समियं उदाहु ।।४।।
से सव्वदंसी अभिभूय णाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा ।
अणुत्तरे सव्व जगंसि विज्जं, गंथा अईए अभए अणाऊ ।।५।।
से भूइपण्णे अणिए अचारी, ओहंतरे धीरे अणंत चक्खू ।
अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा, वइरोय-णिंदेव तमं पगासे ।।६।।
अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपण्णे ।
इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्स णेया दिविणं विसिट्ठे ।।७।।
से पण्णया अक्खय सागरे वा, महोदही वादि अणंत पारे ।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्केव-देवाहिवईज्जुईमं ।।८।।
से वीरिएणं पडिपुण्ण वीरिए, सुदंसणे वा णग सव्व सेट्ठे ।
सुरालए वासि-मुदागरे से, विरायए-णेग गुणोववेए ।।९।।

सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडग वेजयंते ।
से जोयणे णव-णवइ सहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्स मेगं ।।१०।।
पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमि-वट्ठिए, जं सूरिया अणुपरि-वट्टयंति ।
से हेमवण्णे बहु णंदणे य, जंसि रइं वेदयंति महिंदा ।।११।।
से पव्वए सद्द महप्पगासे, विरायइ कंचणमट्ठ वण्णे ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्व दुग्गे, गिरिवरे से जलिए व भोमे ।।१२।।
महिए मज्झंमि ठिए णगिंदे, पण्णाय ते सूरिए सुद्ध लेसे ।
एवं सिरीए उ स भूरि-वण्णे, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ।।१३।।
सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स ।
एतोवमे समणे णायपुत्ते, जाइ जसो दंसण-णाण-सीले ।।१४।।
गिरिवरे वा णिसहाययाणं, रूयए व सेट्ठे वलयायताणं ।
तओवमे से जग भूइपण्णे, मुणीण मज्झे तमुदाहु पण्णे ।।१५।।
अणुत्तरं धम्म-मुई रइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइं ।
सुसुक्क सुक्कं अपगंड सुक्कं, संखिदु एगन्तव-दात सुक्कं ।।१६।।
अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेस कम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिं गइं साइ-मणंत पत्ते, णाणेण सीलेण य दंसणेण ।।१७।।
रूक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयंति सुवण्णा ।
वणेसु वा णंदण-माहु सेट्ठं, णाणेण सीलेण य भूइपण्णे ।।१८।।
थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चंदण-माहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिण्ण-माहु ।।१६।।
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, णागेसु वा धरणिंद-माहु सेट्ठे ।
खोओदए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणि वेजयंते ।।२०।।

हत्थीसु एरावण-माहु णाए, सीहो मियाणं सलिलाण गंगा।
पक्खीसु वा गरूले वेणु देवे, णिव्वाण वादीणिह णायपुत्ते ।।२१।।
जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु।
खत्तीण सेट्टे जह दंत-वक्के, इसीण सेट्टे तह वद्धमाणे ।।२२।।
दाणाण सेट्ठं अभय-प्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति।
तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते ।।२३।।
ठिईण सेट्ठा लव सत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
णिव्वाण सेट्ठा जह सव्व धम्मा, ण णाय पुत्ता परमत्थि णाणी ।।२४।।
पुढोवमे धुणइ विगय गेहि, ण सण्णिहिं कुव्वइ आसुपण्णे।
तरिउं समुद्दं च महा भवोघं, अभयंकरे वीर अणंत चक्खू ।।२५।।
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थ दोसा।
एयाणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वइ पाव ण कारवेइ ।।२६।।
किरिया किरियं वेण इयाणुवायं, अण्णाणि याणं पडियच्च ठाणं।
से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए संजम दीह रायं ।।२७।।
से वारिया इत्थी सराइ भत्तं, उवहाणवं दुक्ख खयट्ठयाए।
लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्व वारं ।।२८।।
सोच्चा य धम्मं अरहंत भासियं, समाहियं अट्ठ पदोव सुद्धं।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्संति ।।२९।।

मंगल मंत्र

नमिऊण असुर-सुर-गरूल-भुयंग-परिवंदिए गयकिलेसे !
अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाय सव्वसाहू य !!

उववाई-सूत्र

कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया? ।
कहिं बोंदि चइत्ताणं, कत्थ गंतूण सिज्झइ ।।१।।
अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इह बोंदि चइताणं, तत्थ गंतूण सिज्झइ ।।२।।
जं संठाणं तु इह भवे, चयं तस्स चरिम समयंमि ।
आसी य पएस घणं, तं संठाणं तहिं तस्स ।।३।।
दीहं वा हस्सं वा जं, चरिम भवे हवेज्ज संठाणं ।
तत्तो तिभाग हीणं, सिद्धाणोगाहणा भणिया ।।४।।
तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्ति भागो य होइ बोद्धव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा भणिया ।।५।।
चत्तारि य रयणीओ, रयणित्ति भागूणिया य बोद्धव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिम ओगाहणा भणिया ।।६।।
एक्का य होइ रयणी, साहिया अंगुलाइं अट्ठ भवे ।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्ण ओगाहणा भणिया ।।७।।
ओगाहणाए सिद्धा, भवत्ति भागेण होइ परिहीणा ।
संठाण-मणित्थंथं, जरा मरण विप्पमुक्काणं ।।८।।
जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खय विमुक्का ।
अण्णोण्ण समवगाढा, पुट्ठा सव्वे य लोगंते ।।६।।
फुसइ अणंते सिद्धे, सव्व पएसेहिं णियम सो सिद्धो ।
ते वि अंसखेज्ज गुणा, देस पएसेहिं जे पुट्ठा ।।१०।।

असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य।
सागार-मणागारं, लक्खण मेयं तु सिद्धाणं ॥११॥
केवल णाणुवउत्ता, जाणंति सव्वभाव गुण भावे।
पासंति सव्वओ खलु, केवलदिट्ठि अणंताहिं ॥१२॥
णवि अत्थि मणुसाणं, तं सोक्खं ण वि य सव्व देवाणं।
जं सिद्धाणं सोक्खं, अव्वाबाहं उवगयाणं ॥१३॥
जं देवाणं सोक्खं, सव्वद्धा पिंडियं अणंत गुणं।
ण य पावइ मुत्तिसुहं, णंताहिं वग्ग वग्गूहिं ॥१४॥
सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्धा पिंडिओ जइ हवेज्जा।
सोणंत वग्ग भइओ, सव्वागासे ण माएज्जा ॥१५॥
जह णाम कोइ मिच्छो, णगर गुणे बहुविहे वियाणंतो।
ण चएइ परिकहेउं, उवमाए तहिं असंतीए ॥१६॥
इय सिद्धाणं सोक्खं, अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं।
किंचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ॥१७॥
जह सव्व कामगुणियं, पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई।
तण्हा छुहा विमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ॥१८॥
इय सव्व कालइत्ता, अतुलं निव्वाण-मुवगया सिद्धा।
सासय मव्वाबाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥१९॥
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य, पारगयत्ति य परंपर गयत्ति।
उम्मुक्क कम्म कवया, अजरा अमरा असंगा य ॥२०॥
णिच्छिण्ण सव्व दुक्खा, जाइ जरा मरण बंधण विमुक्का।
अव्वाबाहं सुक्खं, अणुहोंती सासयं सिद्धा ॥२१॥
अउल सुह सागर गया, अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता।
सव्व मणागयमद्धं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥२२॥

श्री सुखविपाक-सूत्र

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था। रिद्धित्थिमिय समिद्धे गुणसिलए-चेइए ! सुहम्मे अणगारे समोसढ़े। जंबू जाव पज्जुवासइ एवं वयासी-जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते। सुहविवागाणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी 'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। तंजहा-

सुबाहू[१] भद्दणंदी[२] य सुजाए[३], सुवासवे[४] तहेव जिणदासे[५]।
धणवई[६] य महब्बले[७], भद्दणंदी[८] महचंदे[९] वरदत्ते[१०]।।

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी।

पढमं अज्झयणं–सुबाहू

(१) एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं

हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था। रिद्धित्थिमिय समिद्धे। तत्थणं हत्थि सीसस्स णयरस्स बहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसिभाए एत्थणं पुप्फ करंडए णामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउ य पुप्फफल समिद्धे, रम्मे नंदणवण प्पगासे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे तत्थणं कयवण मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था दिव्वे।

तत्थणं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू णामं राया होत्था। महया हिमवंते रायवण्णओ। तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणी पामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था।

तएणं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइं तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं। णवरं सुबाहुकुमारे जाव अलं भोगसमत्थे यावि जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासाय वडिंसग सयाइं करेंति, अब्भुग्गय-मूसिय पहसाय विव भवणं। एवं जहा महब्बलस्स रण्णो। णवरं पुप्फचूला पामोक्खाणं पंचण्हं रायवर कण्णा सयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेइ। तहेव पंचसयाइं दाओ जाव उप्पिं पासाय वरगए फुट्टमाणे मत्थेहिं जाव विहरइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे! परिसा णिग्गया। अदीणसत्तू जहा कोणिए

णिग्गए। सुबाहुकुमारे वि जहा जमाली तहा रहेणं णिग्गए। जाव धम्मो कहिओ। राया परिसा य पडिगया। तएणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ वंदित्ता णामंसइ णमंसित्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंत्ते! निग्गथं पावयणं एवं रोएमि णं भंत्ते! निग्गथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंत्ते! निग्गथं पावयणं, एवमेयं भंत्ते! तह मेयं भंत्ते! अवितह मेयं भंत्ते! असंदिद्धमेयं भंत्ते! पडिच्छियमेयं भंत्ते! इच्छिय पडिच्छियमेयं भंत्ते! जं णं तुब्भे वदहत्ति । कट्टु एवं वयासी जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर सत्थवाह प्पभइओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया। णो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खा-वयाइं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि। 'अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधां करेह।'

तएणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वयाइं, सत्तसिक्खा-वयाइं, दुवालस विहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव रहं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव एवं वयासी-अहो णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे[1], कंते कंतरूवे[2], पिए पियरूवे[3], मणुण्णे मणुण्णरूवे[4], मणामे मणामरूवे[5], सोम्मे सुभगे पियदंसणे सुरूवे। बहुजणस्स वि य णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठेरूवे ५ सोमे जाव सुरूवे। साहु जणस्स वि य णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठेरूवे जाव सुरूवे। सुबाहुणा भंते! कुमारेणं! इमा एया रूवा उराला माणुस्स रिद्धि किण्णालद्धा? किण्णापत्ता? किण्णा अभिसमण्णागया? को वा एस आसी पुव्वभवे जाव किं णामए वा? किं गोत्तए वा? किं वा दच्चा? किं वा भोच्चा? किं वा समायरित्ता? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा णिसम्म सुबाहुकुमारेणं इमेया रूवा उराला माणुस्सरिद्धी, लद्धा, पत्ता, अभिसमण्णागया?

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे णामं णयरे होत्था, रिद्धित्थिमिय समिद्धे वण्णओ। तत्थणं हत्थिणाउरे णयरे सुमुहे णामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसे णामं

थेरे,जाइ संपण्णे जाव पंचहिं समण सएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हइ उग्गिण्हित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव तेउलेसे मासं मासेणं खममाणे विहरइ।

तएणं से सुदत्ते अणगारे मासखमण-पारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे थेरे आपुच्छइ जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे। तएणं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे, आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता, पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करित्ता सुदत्तं-अणगारं सत्तट्ठ-पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सय हत्थेणं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभेस्सामि त्ति कट्टु तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिए वि तुट्ठे।

तएणं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्व सुद्धेणं दायग सुद्धेणं, पडिग्गाहग सुद्धेणं, तिविहेणं तिकरण सुद्धेणं, सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए मणुस्साउए णिबद्धे, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं तंजहा- वसुहारा वुट्ठा[1] दसद्ध वण्णे कुसुमे णिवाइए[2] चेलुक्खेवे कए[3] आहयाओ देवदुंदभीओ[4] अंतरा वि य णं आगासंसि अहोदाणं अहोदाणं घुट्टे[5] य। तएणं हत्थिणाउरे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एव-माइक्खइ एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ धण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई जाव तं धण्णे णं देवाणुप्पिया! से सुमुहे गाहावई।

तएणं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससताइं आउयं पालेइ, पालित्ता, कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थीसीसे णयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुतत्ताए उववण्णे। तएणं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि, सुत्तजागरा उहीरमाणी उहीरमाणी तहेव सीहं पासेइ। सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरइ, तं एवं खलु गोयमा ! सुबाहुणा कुमारेणं इमे एयारूवा उराला माणुस्स रिद्धी लद्धा, पत्ता अभिसमण्णागया।

पभू णं भंते ! सुबाहु कुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए? हंता पभू। तएणं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तएणं से समणे भगवं महावीरे अण्णया

कयाइं हत्थिसीसाओ णयराओ पुप्फ करंडयाओ उज्जाणाओ कयवण मालप्पियस्स जक्खस्स-जक्खाय-यणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ। तएणं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगय जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ।

तएणं से सुबाहुकुमारे अण्णया कयाइं चाउद्दसट्ठ-मुद्दिट्ठ पुण्ण-मासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार पासवणं भूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता, दब्भ संथारगं संथरेइ, संथरित्ता, दब्भ संथारगं दुरूहइ, दुरूहित्ता, अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता, पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ।

तएणं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्ता वरत्तकाले धम्म-जागरियं जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे-धण्णा णं ते गामागर-णयर जाव सण्णिवेसा, जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ, धण्णा णं ते राईसर जाव सत्थवाह प्पभइओ जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति,धण्णा णं ते राइसर जाव सत्थवाह प्पभइओ जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं पडिसुणंति। तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरिज्जा। तएणं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स

अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा।

तएणं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवण- मालप्पियस्स-जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहा पडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा राया णिग्गया। तएणं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा णिग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया पडिग्गया। तएणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठे। जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ। णिक्खमणाभि सेओ तहेव जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

तएणं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइय माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठमतवो विहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्ण परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं,भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे।

से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ, लभिहित्ता, केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झिहित्ता, तहारूवाणं

थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सइ। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणिहिइ, पाउणिहित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। से णं ताओ देवलोगाओ, माणुस्सं जाव पव्वज्जा। बंभलोए। तओ माणुस्सं। महासुक्के। तओ माणुस्सं। आणए देवे। तओ माणुस्सं तओ आरणे। तओ माणुस्सं, तओ सव्वट्ठ सिद्धे।

से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढे, जहा दढपइण्णे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ सव्व दुक्खाण मंतं करिहिइ। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, ।।त्तिबेमि।।

।। सुहविवागस्स पढमं अज्झयणं समत्तं ।।१।।

बियं अज्झयणं–भद्दणंदी

(२) बिईयस्स उक्खेवो। एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णयरे। थूभ करंडगें उज्जांणे। धण्णो जक्खो। धणावहो राया। सरस्सई देवी। सुमिण दंसणं, कहणं, जम्मं। बालत्तणं। कलाओ य। जोव्वणे, पाणिग्गहणं, दाओ, पासाया य, भोगा य जहा सुबाहुस्स णवरं भद्दणंदी कुमारे। सिरीदेवी-पामोक्खाणं,पंच-सयाणंकण्णगाणं, पाणिग्गहणं। सामिस्स समोसरणं।

सावगधम्मं पडिवज्जे, पुव्वभव पुच्छा। महाविदेहे वासे पुंडरीगिणी णयरीए, विजयकुमारे जुगबाहू तित्थयरे, पडिलाभिए। मणुस्साउए णिबद्धे इह उववण्णे। सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे-वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ, सव्व दुक्खाणमंतं करेहिइ। एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं बिईयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।।त्तिबेमि।।

।। सुहविवागस्स बियं अज्झयणं समत्तं ।।२।।

तइयं अज्झयणं-सुजाए

(३) तच्चयस्स उक्खेवो। वीरपुरे णामं णयरे। मणोरमे उज्जाणे। वीरकण्हे (जक्खे), मित्ते राया, सिरीदेवी, सुजाए कुमारे, बलसिरी पामोक्खाणं, पंचसय कण्णगाणं पाणिग्गहणं, सामी समोसरिए, पुव्वभव पुच्छा, उसुयारे णयरे, उसभदत्ते गाहावई पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिए, मणुस्साउए णिबद्धे इह उववण्णे जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ[1] ।।त्तिबेमि।।

।। सुहविवागस्स तईयं अज्झयणं समत्तं ।।३।।

चउत्थं अज्झयणं-सुवासवे

(४)चउत्थस्स उक्खेवो । विजयपुरे णामं नयरे, णंदणवणे उज्जाणे, असोगो जक्खो, वासवदत्ते राया, कण्हा सिरीदेवी, सुवासवे कुमारे, भद्दा-पामोक्खाणं

पंचसयाणं, पाणिग्गहणं, जाव पुव्वभवपुच्छा, कोसंबी णयरी, धणपालो राया, वेसमण भद्दे अणगारे पडिलाभिए, इह उववण्णे जाव सिद्धे।।त्तिबेमि।।

।। सुहविवागस्स चउत्थं अज्झयणं समत्तं ।।४।।

पंचम अज्झयणं-जिणदासे

(५) पंचमस्स उक्खेवो। सोगंधिया णयरी, णीलासोगे उज्जाणे, सुकालो जक्खो, अपडिहओ रांया, सुकण्हादेवी, महचंदे कुमारे, तस्स अरहदत्ता भारिया, जिणदासो पुत्तो, तित्थयरा गमणं, जिणदासो पुव्वभवं पुच्छा। मज्झमिया णयरी, मेहरहे राया, सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्तिबेमि।।

।। सुहविवागस्स पंचमं अज्झयणं समत्तं ।।५।।

छट्ठं अज्झयणं-धणवई

(६) छट्ठस्स उक्खेवो। कणगपुरे णयरे। सेयासोए उज्जाणे। वीरभद्दो जक्खो। पियचंदो राया। सुभद्दा देवी। वेसमणेकुमारे जुवराया। सिरिदेवी पामोक्खाणं, पंचसया कण्णगाणं, तित्थयरागमणं, धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवं पुच्छा मणिवइया णयरी, मित्ते राया संभूयविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्तिबेमि।।

।। सुहविवागस्स छट्ठं अज्झयणं समत्तं ।।६।।

सत्तमं अज्झयणं-महब्बले

(७) सत्तमस्स उक्खेवो। महापुरे णयरे। रत्तासोगे

उज्जाणे। रत्तपाओ जक्खो। बले राया। सुभद्दा देवी। महाब्बले कुमारे, रत्तवई पामोक्खाणं पंचसया रायवर कण्णगाणं पाणिग्गहणं, तित्थयरागमणं जाव पुव्वभव पुच्छा। मणिपुरे णयरे। णागदत्ते गाहावई। इंददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्तिबेमि।।

।। सुहविवागस्स सत्तमं अज्झयणं समत्तं ।।७।।

अट्ठमं अज्झयणं-भद्दणंदी

(८) अट्ठमस्स उक्खेवो। सुघोसे णयरे। देवरमणे उज्जाणे। वीरसेणो जक्खो। अज्जुणो राया। रत्तवई देवी। भद्दणंदी-कुमारे।सिरीदेवी-पामोक्खाणं पंचसयाणं कण्णगाणं पाणिग्गहणं जाव पुव्वभव पुच्छा। महाघोसे णयरे, धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्तिबेमि।।

।। सुहविवागस्स अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ।।८।।

णवमं अज्झयणं-महचंदे

(६) णवमस्स उक्खेवो। चंपा णयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दो जक्खो। दत्ते राया। रत्तवई देवी। महचंदे कुमारे जुवराया। सिरिकंता-पामोक्खाणं पंचसयाणं कण्णगाणं पाणिग्गहणं जाव पुव्वभव पुच्छा। तिगिच्छा णयरी। जियसत्तु राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्तिबेमि।।

।। सुहविवागस्स णवमं अज्झयणं समत्तं ।।६।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

दसमं अज्झयणं–वरदत्ते

(१०) दसमस्स उक्खेवो। एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं, साइए णामं णयरे होत्था। उत्तरकुरू उज्जाणे, पासामिओ जक्खो। मित्तणंदी राया। सिरीकंता देवी। वरदत्ते कुमारे। वीरसेणा-पामोक्खाणं पंचदेवी सयाणं पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं, सावगधम्मं, पुव्वभव पुच्छा। सयदुवारे णयरे। विमलवाहणे राया। धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए, मणुस्साउए णिबद्धे, इहं उववण्णे, सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स, चिंता जाव पवज्जा, कप्पंतरिए जाव सव्वट्ठसिद्धे। तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ सव्व दुक्खाण-मन्तं करेहिइ। एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।।त्तिबेमि।। सेवं भंते-२

।। सुहविवागस्स दसमं अज्झयणं समत्तं ।।१०।।

णमो सूयदेवाए। विवागं-सुयस्स-दो सुयक्खंधा-दुह विवागो१ य सुहविवागो२ य। तत्थ दुह विवागे दस अज्झयणा एक्क-सरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति एवं सुख विवागे वि। सेसं जहा आयारस्स।

।। इति सुखविपाक सम्पूर्णम्।।

श्री दशवैकालिक-सूत्र

।। दुमपुप्फिया पढमं अज्झयणं।।१।।

धम्मो मंगल-मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं णमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।१।।
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं।
ण य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं।।२।।
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाण-भत्तेसणे रया।।३।।
वयं च वित्तिं लब्भामो, ण य कोई उवहम्मइ।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा।।४।।
महुगार-समा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
णाणा-पिंड-रया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो।।५।।

।। इति दुमपुप्फिया णामं पढमज्झयणं समत्तं।।१।।

।। सामण्णपुव्वयं बीयं अज्झयणं।। २।।

कहं णु कुज्जा सामण्णं, जो कामे ण णिवारए।
पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ।।१।।
वत्थ-गंध-मलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छंदा जे ण भुंजंति, ण से चाइत्ति वुच्चइ।।२।।
जे य कंते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठी कुव्वइ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइत्ति वुच्चइ।।३।।

समाइ पेहाइ परिव्वयंतो, सिया मणो णिस्सरइ बहिद्धा ।
ण सा महं णो वि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ।।४।।
आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाहि, कमियं खु दुक्खं ।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए ।।५।।
पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
णेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ।।६।।
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीविय-कारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ।।७।।
अहं च भोगरायस्स, तं चसि अंधग-वण्हिणो ।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं णिहुओ चर ।।८।।
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारीओ ।
वाया-विद्धोव्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ।।६।।
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासियं ।
अंकुसेण जहा णागो, धम्मे संपडिवाइओ ।।१०।।
एवं करेन्ति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ? ।।११।।

।। इति सामण्णपुव्वयं णाम बीयं अज्झयणं समत्तं।।२।।

।। खुड्डियायारकहा तइयं अज्झयणं।। ३।।

संजमे सुट्ठि-अप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं ।
तेसि-मेय-मणाइण्णं, णिग्गंथाण-महेसिणं ।।१।।

उद्देसियं कीयगडं, णियाग-मभिहडाणि य।
राइभत्ते सिणाणे य, गंध मल्ले य वीयणे।।२।
सण्णिही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए।
संवाहणा दंत-पहोयणा य, संपुच्छणा देह-पलोयणा य।।३।
अट्ठावए य णालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए।
तेगिच्छं पाहणा-पाए, समारम्भं च जोइणो।।४।
सिज्जायर-पिण्डं च, आसंदी पलियंकए।
गिहंतर णिसिज्जा य, गाय-स्सुव्वट्टणाणि य।।५।
गिहिणो वेयावडियं, जा य आजीव-वत्तिया।
तत्ता णिव्वुड भोइत्तं, आउ-रस्सरणाणि य।।६।
मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखण्डे अणिव्वुडे।
कंदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए।।७।
सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमा-लोणे य आमए।
सामुद्दे पंसुखारे य, काला-लोणे य आमए।।८।
धूवणेत्ति वमणे य, वत्थीकम्म-विरेयणे।
अंजणे दंतवणे य, गायब्भंग-विभूसणे।।९।
सव्वमेय-मणाइण्णं, णिग्गंथाण-महेसिणं।
संजमम्मि य जुत्ताणं, लहुभूय विहारिणं।।१०।।
पंचासव परिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया।
पंच-णिग्गहणा धीरा, णिग्गंथा उज्जु-दंसिणो।।११।।
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया।।१२।।

परीसह-रिउ-दंता, धूयमोहा जिइंदिया।
सव्वदुक्ख-प्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो।।१३।।
दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य।
के इत्थ देवलोएसु, केई सिज्झंति णीरया।।१४।।
खवित्ता पुव्व-कम्माइं संजमेण तवेण य।
सिद्धि-मग्ग-मणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडे।।१५।।

।। खुड्डियायार कहा णामं तइयमज्झयणं समत्तं ।।३।।

।। छज्जीवणिया चउत्थं अज्झयणं।। ४।।

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु छज्जीवणिया णामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्म-पण्णत्ति।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया णामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्म पण्णत्ती।

इमा खलु सा छज्जीवणिया णामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती। तंजहा-१ पुढवि -काइया २ आउ-काइया ३ तेउ-काइया ४ वाउ-काइया ५ वणस्सइ-काइया ६ तस-काइया। पुढवी

चित्तमंत-मक्खाया अणेग जीवा पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थ परिणएणं। आऊ चित्तमंत-मक्खाया अणेगजीवा पुढो-सत्ता अण्णत्थ सत्थ परिणएणं। तेऊ चित्तमंत-मक्खाया अणेग-जीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ-सत्थ परिणएणं। वाऊ चित्तमंत मक्खाया अणेग-जीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ-सत्थ परिणएणं। वणस्सई चित्तमंत-मक्खाया अणेग जीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थ परिणएणं। तंजहा-अग्ग-बीया, मूल-बीया, पोर-बीया, खंध -बीया बीयरूहा, सम्मुच्छिमा, तण-लया, वणस्सइ काइया, सबीया चित्तमंत-मक्खाया अणेग जीवा, पुढोसत्ता, अण्णत्थ सत्थ परिणएणं।

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा, तंजहा-अंडया, पोयया, जराउया, रसया, संसेइमा, सम्मुच्छिमा, उब्भिया, उववाइया, जेसिं केसिं च पाणाणं, अभिक्कंतं, पडिक्कंतं, संकुचियं, पसारियं, रूयं, भंतं, तसियं, पलाइयं आगइ-गइ विण्णाया, जे य कीड पयंगा,जा य कुंथु-पिवीलिया, सव्वे बेइंदिया, सव्वे तेइंदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पंचिंदिया, सव्वे तिरिक्ख जोणिया, सव्वे णेरइया, सव्वे मणुआ, सव्वे देवा, सव्वे पाणा परमाहम्मिया। एसो खलु छट्ठो जीवणिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ।

इच्चेसिं छण्हं जीव-णिकायाणं णेव सयं

दण्डं समारंभिज्जा, णेवण्णेहिं दण्डं समारंभाविज्जा, दण्डं समारंभन्ते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

पढमे भंते ! महव्वए पाणाइ वायाओ वेरमणं। सव्वं भंते! पाणाइवायं पच्चक्खामि। से सुहुमं वा, बायरं वा, तसं वा, थावरं वा, णेव सयं पाणे अइवाइज्जा, णेवण्णेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइ-वायाओ वेरमणं।।१।।

अहावरे दुच्चे भंते ! महव्वए मुसा-वायाओ वेरमणं। सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि। से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, णेव सयं मुसं वइज्जा, णेवण्णेहिं मुसं वायाविज्जा, मुसं वयंते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि।

तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। दुच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं।।२।।

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिण्णा-दाणाओ वेरमणं। सव्वं भंते। अदिण्णा-दाणं पच्चक्खामि। से गामे वा, णगरे वा, रण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्त-मंतं वा, णेव सयं अदिण्णं -गिण्हिज्जा, णेवण्णेहिं अदिण्णं गिण्हा-विज्जा, अदिण्णं गिण्हंते वि अण्णे ण समणु-जाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिण्णा-दाणाओ वेरमणं।।३।।

अहावरे चउत्थे भंते! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! मेहुणं पच्चक्खामि। से दिव्वं वा, माणुसं वा, तिरिक्ख-जोणियं वा, णेव सयं मेहुणं सेविज्जा, णेवण्णेहिं मेहुणं सेवाविज्जा,-मेहुणं सेवंते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं विविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि

अप्पाणं वोसिरामि। चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं।।४।।

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं। सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि। से गामे वा, णगरे वा रण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा। णेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा, णेवण्णेहिं परिग्गहं परिगिण्हा-विज्जा, परिग्गहं परिगिण्हंते वि अण्णे ण समणु-जाणिज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। पंचमे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं।।५।।

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राइ-भोयणाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! राइ-भोयणं पच्चक्खामि। से असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, णेव सयं राइं भुंजिज्जा, णेवण्णेहिं राइं भुंजाविज्जा, राइं भुंजंते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि

सव्वाओ राइ-भोयणाओ वेरमणं।

इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइभोयण-वेरमण छट्ठाइं अत्त-हियट्ठियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि।।६।।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, पारिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिलं वा, लेलुं वा, ससरक्खं वा कायं, ससरक्खं वा वत्थं, हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण वा, किलिंचेण वा, अंगुलियाए वा, सिलागए वा, सिलाग-हत्थेण वा, ण आलिहिज्जा, ण विलिहिज्जा, ण घट्टिज्जा, ण भिंदिज्जा अण्णं ण आलिहाविज्जा, ण विलिहाविज्जा, ण घट्टाविज्जा, ण भिंदाविज्जा अण्णं आलिहंतं वा, विलिहंतं वा, घट्टंतं वा, भिंदंतं वा ण समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।१।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय- विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिमं वा, महियं वा, करगं वा, हरितणुगं वा,

सुद्धोदगं वा, उदउल्लं वा कायं, उदउल्लं वा वत्थं, ससिणिद्धं वा कायं, ससिणिद्धं वा वत्थं, ण आमुसिज्जा, ण संफुसिज्जा, ण आवीलिज्जा, ण पवीलिज्जा, ण अक्खोडिज्जा, ण पक्खोडिज्जा, ण आयाविज्जा, ण पयाविज्जा, अण्णं ण आमुसाविज्जा, ण संफुसाविज्जा, ण आवीलाविज्जा ण पवीलाविज्जा, ण अक्खोडाविज्जा, ण पक्खोडाविज्जा, ण आयाविज्जा, ण पयाविज्जा, अण्णं आमुसंतं वा, संफुसंतं वा, आवीलंतं वा, पवीलंतं वा, अक्खोडंतं वा, पक्खोडंतं वा, आयावंतं वा, पयावंतं वा ण समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।२।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय -विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणिं वा, इंगालं वा, मुम्मुरं वा, अच्चिं वा, जालं वा, अलायं वा, सुद्धागणिं वा, उक्कं वा, ण उंजिज्जा, ण घट्टिज्जा, ण भिंदिज्जा ण उज्जालिज्जा, ण पज्जालिज्जा, ण णिव्वाविज्जा, अण्णं ण उंज्जाविज्जा, ण घट्टाविज्जा, ण भिंदाविज्जा, ण उज्जालाविज्जा, ण पज्जालाविज्जा,

ण णिव्वाविज्जा, अण्णं उंजंतं वा घट्टंतं वा, भिंदंतं वा, उज्जालंतं वा, पज्जालंतं वा, णिव्वावंतं वा, ण समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।३।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय -विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुयणेण वा तालियंटेण वा, पत्तेण वा, पत्त-भंगेण वा, साहाए वा, साहा-भंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेल-कण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा कायं बाहिरं वावि पोग्गलं ण फुमिज्जा, ण वीएज्जा, अण्णं ण फुमाविज्जा, ण वीआविज्जा, अण्णं फुमंतं वा, वीयंतं वा ण समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।४।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय -विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से वीएसु वा,

बीय-पइट्ठेसु वा, रूढेसु वा, रूढ-पइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जाय-पइट्ठेसु वा, हरिएसु वा, हरिय-पइट्ठेसु वा, छिण्णेसु वा, छिण्ण-पइट्ठेसु वा, सचित्तेसु वा,सचित्तकोल -पडिणिस्सिएसु वा, ण गच्छेज्जा, ण चिट्ठेज्जा, ण णिसीइज्जा, ण तुयट्टिज्जा, अण्णं ण गच्छाविज्जा, ण चिट्ठाविज्जा, ण णिसीयाविज्जा, ण तुयट्टाविज्जा, अण्णं गच्छन्तं वा, चिट्ठंतं वा, णिसीयंतं वा, तुयट्टंतं वा ण समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि, ण कारवेमि, करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।५।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय -विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा, पयंगं वा, कुंथुं वा, पिवीलियं वा, हत्थंसि वा, पायंसि वा, बाहुंसि वा, उरुंसि वा, उदरंसि वा, सीसंसि वा, वत्थंसि वा, पडिग्गहंसि वा, कम्बलंसि वा, पाय-पुंछणंसि वा,रय -हरणंसि वा, गुच्छगंसि वा, उडुगंसि वा, दंडगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेज्जंसि वा, संथारगंसि वा, अण्णयरंसि वा, तहप्पगारे उवगरण-जाए तओ संजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय एगंत-मवणिज्जा, णो णं संघाय मावज्जिजज्जा।।६।।

अजयं चरमाणो य, पाण भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।१।।
अजयं चिट्ठमाणो य, पाण-भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।२।।
अजयं आसमाणो य, पाण भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।३।।
अजयं सयमाणो य, पाण भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।४।।
अजयं भुंजमाणो य, पाण भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।५।।
अजयं भासमाणो य, पाण भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।६।।
कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए।
कहं भुंजंतो, भासंतो, पावकम्मं ण बंधइ।।७।।
जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं ण बंधइ।।८।।
सव्व-भूयप्प-भूयस्स, सम्मं भूयाइ पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स, पावकम्मं ण बंधइ।।६।।
पढमं णाणं तओ दया, एवं चिट्ठई सव्व संजए।
अण्णाणी किं काही, किं वा णाही सेय पावगं।।१०।।
सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयंपि जाणेइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे।।११।।
जो जीवे वि ण याणेइ, अजीवे वि ण याणेइ।
जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो णाहिइ संजमं?।।१२।।

जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणेइ।
जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु णाहिइ संजमं ।।१३।।
जया जीव-मजीवे य, दोवि एए वियाणेइ।
तया गइं बहुविहं, सव्व जीवाण जाणइ ।।१४।।
जया गइं बहुविहं, सव्व जीवाण जाणइ।
तया पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ ।।१५।।
जया पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ।
तया णिव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ।।१६।।
जया णिव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ संजोगं, सब्भिन्तर-बाहिरं ।।१७।।
जया चयइ संजोगं, सब्भिंतर-बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ।।१८।।
जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं।
तया संवर-मुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ।।१९।।
जया संवर मुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणेइ कम्म-रयं, अबोहि-कलुसं कडं ।।२०।।
जया धुणइ कम्म-रयं, अबोहि-कलुसं कडं।
तया सव्वत्तगं णाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ।।२१।।
जया सव्वत्तगं णाणं, दंसणं चाभिगच्छइ।
तया लोगमलोगं च, जिणो जाणेइ केवली ।।२२।।
जया लोगमलोगं च, जिणो जाणेइ केवली।
तया जोगे णिरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ।।२३।।
जया जोगे णिरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ णीरओ ।।२४।।

जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ णीरओ ।
तया लोग-मत्थ-यत्थो, सिद्धो हवई सासओ ।।२५।।
सुह-सायगस्स समणस्स, साया उलगस्स णिगाम साइस्स ।
उच्छोलणा पहोअस्स, दुल्लहा सुगई तारिसगस्स ।।२६।।
तवो-गुण-पहाणस्स, उज्जुमइ-खंति-संजम रयस्स ।
परीसहे जिणंतस्स, सुल्लहा सुगई तारिसगस्स ।।२७।।
पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमर-भवणाइं ।
जेसिं पिओ तवो संजमो य, खंति य बंभचेरं च ।।२८।।
इच्चेयं छज्जीवणियं, सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मुणा ण विराहिज्जासि त्तिबेमि ।।२९।।

।। इति छज्जीवणिया णामं चउत्थं अज्झयणं समत्तं ।।४।।

।। पिंडेसणा णामं पंचमज्झयणं ।। ५ ।।

प्रथम उद्देशक

संपत्ते भिक्ख-कालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ ।
इमेण कम्म-जोगेण, भत्त-पाणं गवेसए ।।१।।
से गामे वा णयरे वा, गोयरग्ग-गओ मुणी ।
चरे मंद-मणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।।२।।
पुरओ जुग-मायाए, पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जंतो बीय-हरियाइं, पाणे य दग-मट्टियं ।।३।।
ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण ण गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ।।४।।
पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए ।
हिंसेज्ज पाण-भूयाइं, तसे अदुव थावरे ।।५।।

तम्हा तेण ण गच्छिज्जा, संजए सुसमाहिए।
सइ अण्णेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे।।६।।
इंगालं छारियं रासिं, तुस-रासिं च गोमयं।
ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं णाइक्कमे।।७।।
ण चरेज्ज वासे-वासंते, महियाए व पडन्तिए।
महावाए व वायंते, तिरिच्छ-संपाइमेसु वा।।८।।
ण चरेज्ज वेस-सामंते, बंभचेर-वसाणुए।
बंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तत्थ विसुत्तिया।।६।।
अणाययणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं।
होज्जा वयाणं पीला, सामण्णम्मि य संसओ।।१०।।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं।
वज्जए वेस-सामंतं, मुणी एगंत-मस्सिए।।११।।
साणं सूइयं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए।।१२।।
अणुण्णाए णावणाए, अप्पहिट्ठे अणाउले।
इंदियाइं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे।।१३।।
दव-दवस्स ण गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे।
हसंतो णाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया।।१४।।
आलोयं थिग्गलं दारं, सन्धिं दग-भवणाणि य।
चरंतो ण विणिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए।।१५।।
रण्णो गिह-वईणं च, रहस्सा रक्खियाणि य।
संकिलेस-करं ठाणं, दूरओ परिवज्जए।।१६।।
पडिकुट्ठं कुलं ण पविसे, मामगं परिवज्जए।
अचियत्तं कुलं ण पविसे, चियत्तं पविसे कुलं।।१७।।

साणी-पावार-पिहियं, अप्पणा णाव-पंगुरे।
कवाडं णो पणुल्लिज्जा, उग्गहंसि अजाइया ।।१८।।
गोयरग्ग-पविट्ठो य, वच्चमुत्तं ण धारए।
ओगासं फासुयं णच्चा, अणुण्ण वि य वोसिरे ।।१९।।
णीयं दुवारं तमसं, कुट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खु-विसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ।।२०।।
जत्थ पुप्फाइं बीयाइं, विप्पइण्णाइं कुट्ठए।
अहुणोव-लित्तं उल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए ।।२१।।
एलगं दारगं साणं, वच्छगं वावि कोट्ठए।
उल्लंघिया ण पविसे, विउहित्ताण व संजए ।।२२।।
असंसत्तं पलोइज्जा, णाइ दूरावलोयए।
उप्फुल्लं ण विणिज्झाए, णियट्टिज्ज अयंपिरो ।।२३।।
अइभूमिं ण गच्छेज्जा, गोयरग्ग-गओ मुणी।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मियं भूमिं परक्कमे ।।२४।।
तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागं वियक्खणो।
सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए ।।२५।।
दग-मट्टिय आयाणे, बीयाणि हरियाणि य।
परिवज्जंतो चिट्ठिज्जा, सव्विंदिय समाहिए ।।२६।।
तत्थ से-चिट्ठमाणस्स, आहारे पाण-भोयणं।
अकप्पियं ण गिण्हिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पियं ।।२७।।
आहारंती सिया तत्थ, परिसाडिज्ज भोयणं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।२८।।
सम्मद्दमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजम-करिं णच्चा, तारिसं परिवज्जए ।।२९।।

साहट्टु णिक्खिवित्ता णं, सचित्तं घट्टियाणि य ।
तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणुल्लिया ।।३०।।
ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहारे पाण-भोयणं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।३१।।
पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।३२।।
एवं उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टिया-उसे ।
हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ।।३३।।
गेरुय वण्णिय सेडिय, सोरट्ठिय-पिट्ठ कुक्कुस कए य ।
उक्किट्ठ-मसंसट्ठे, संसट्ठे चेव बोद्धव्वे ।।३४।।
असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं ण इच्छिज्जा, पच्छा कम्मं जहिं भवे ।।३५।।
संसट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ।।३६।।
दुण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ णिमं-तए ।
दिज्जमाणं ण इच्छिज्जा, छंदं से पडिलेहए ।।३७।।
दुण्हं तु भुंजमाणाणं, दोवि तत्थ णिमंतए ।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ।।३८।।
गुव्विणीए उवण्णत्थं, विविहं पाण-भोयणं ।
भुंजमाणं विवज्जिजज्जा, भुत्त-सेसं पडिच्छए ।।३६।।
सिया य समणट्ठाए, गुव्विणी काल-मासिणी ।
उट्ठिआ वा णिसीइज्जा, णिसण्णा वा पुणुट्ठए ।।४०।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।४१।।

थणगं पिज्जमाणी, दारगं वा कुमारियं।
तं णिक्खिवित्तु रोयंतं, आहरे पाण भोयणं ।।४२।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, "ण मे कप्पइ तारिसं" ।।४३।।
जं भवे भत्तपाणं तु कप्पाकप्पम्मि संकियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।४४।।
दग-वारेण पिहियं, णीसाए पीढएण वा।
लोढेण वावि लेवेण, सिलेसेण व केणइ ।।४५।।
तं च उब्भिंदिया दिज्जा, समणट्ठाए व दावए।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।४६।।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, दाणट्ठा पगडं इमं ।।४७।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।४८।।
असणं पाणगं वा-वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं ।।४९।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।५०।।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, वणीमट्ठा पगडं इमं ।।५१।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।५२।।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं ।।५३।।

तं भवे भत्तपाणं तु,-संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं।।५४।।
उद्देसियं कीयगडं, पूइकम्मं च आहडं।
अज्झोयर पामिच्चं, मीस-जायं विवज्जए।।५५।।
उग्गमं से य पुच्छिज्जा, कस्सट्टा केण वा कडं।
सुच्चा णिस्संकियं सुद्धं, पडिगाहिज्ज संजए।।५६।।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
पुप्फेसु हुज्ज उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा।।५७।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं।।५८।।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
उदगंमि हुज्ज णिक्खित्तं, उत्तिंग-पणगेसु वा।।५९।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं।।६०।।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज णिक्खित्तं, तं च संघट्टिया दए।।६१।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं।।६२।।
एवं उस्सक्किया ओसक्किया, उज्जलिया पज्जालिया णिव्वाविया।
उस्सिंचिया णिस्सिंचिया, उववत्तिया ओया!रिया दए।।६३।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं।।६४।।
हुज्ज कट्ठं सिलं वावि, इट्टालं वा वि एगया।
ठवियं संकमट्टाए, तं च हुज्ज चलाचलं।।६५।।

ण तेण भिक्खू गच्छिज्जा, दिट्ठो तत्थ असंजमो ।
गम्भीरं झुसिरं चेव, सव्विंदिय-समाहिए ।।६६।।
णिस्सेणिं फलगं पीढं, उस्सवित्ताण-मारुहे ।
मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ।।६७।।
दुरुहमाणी पवडिज्जा, हत्थं पायं व लूसए ।
पुढवी जीवे वि हिंसेज्जा, जे य तन्निस्सिया जगे ।।६८।।
एयारिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो ।
तम्हा मालोहडं भिक्खं, ण पडिगिण्हंति संजया ।।६६।।
कंदं मूलं पलंबं वा, आमं छिण्णं च सण्णिरं ।
तुम्बागं सिंगबेरं च, आमगं परिवज्जए ।।७०।।
तहेव सत्तु-चुण्णाइं, कोल-चुण्णाइं आवणे ।
सक्कुलिं फाणियं पूयं, अण्णं वावि तहाविहं ।।७१।।
विक्कायमाणं पसढं, रएण परिफासियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।७२।।
बहु-अट्ठियं पुग्गलं, अणिमिसं वा बहु-कंटयं ।
अत्थियं तिंदुयं बिल्लं, उच्छु-खंडं व सिम्बलिं ।।७३।।
अप्पे सिया भोयण जाए, बहु-उज्झिय-धम्मियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।७४।।
तहेवुच्चावयं पाणं, अदुवा वार-धोयणं ।
संसेइमं चाउलोदगं, अहुणा-धोयं विवज्जए ।।७५।।
जं जाणेज्ज चिराधोयं, मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सुच्चा वा, जं च णिस्संकियं भवे ।।७६।।
अजीवं परिणयं णच्चा, पडिगाहिज्ज संजए ।
अह संकियं भविज्जा, आसाइत्ताण रोयए ।।७७।।

थोव-मासायणं-ट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे।
मा मे अच्चंबिलं पूयं, णालं तिण्हं विणित्तए ॥७८॥
तं च अच्चं बिलं पूयं, णालं तिण्हं विणित्तए।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
तं च हुज्ज अकामेण, विमणेण पडिच्छियं।
तं अप्पणा ण पिबे, णोवि अण्णस्स दावए ॥८०॥
एगंत-मवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया।
जय परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८१॥
सिया य गोयरग्ग गओ, इच्छिज्जा परिभुत्तुयं।
कुट्ठगं भित्ति-मूलं वा, पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥
अणुण्ण-वित्तु मेहावी, पडिच्छिण्णम्मि संवुडे।
हत्थगं संपमज्जित्ता, तत्थ भुंजिज्ज संजए ॥८३॥
तत्थ से भुंजमाणस्स, अट्ठियं कंटओ सिया।
तण-कट्ठ-सक्करं वावि, अण्णं वावि तहाविहं ॥८४॥
तं उक्खि-वित्तु ण णिक्खिवे, आसएण ण छड्डए।
हत्थेण तं गहेऊणं, एगंत-मवक्कमे ॥८५॥
एंगत-मवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया।
जयं परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८६॥
सिया य भिक्खु इच्छिज्जा, सिज्ज-मागम्म भुत्तुयं।
स-पिंडपाय-मागम्म, उंडुयं पडिलेहिया ॥८७॥
विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी।
इरियावहिय-मायाय, आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
आभोइत्ताण णीसेसं, अइयारं च जहक्कमं।
गमणागमणे चेव, भत्तपाणे व संजए ॥८९॥

उज्जु-प्पण्णो अणुव्विग्गो, अवक्खित्तेण चेयसा।
आलोए गुरु सगासे, जं जहा गहियं भवे ॥९०॥
ण सम्म-मालोइयं हुज्जा, पुव्विं पच्छा व जं कडं।
पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसिट्ठो चिंतए इमं ॥९१॥
अहो ! जिणेहिं असावज्जा, वित्ती साहुण देसिया।
मोक्ख-साहण हेउस्स, साहु-देहस्स धारणा ॥९२॥
णमुक्कारेण पारित्ता, करित्ता जिण संथवं।
सज्झायं पट्ठवित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥
वीसमंतो इमं चिंते, हियमट्ठं लाभ-मट्ठिओ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू हुज्जामि तारिओ ॥९४॥
साहवो तो चियत्तेणं, णिमंतिज्ज जहक्कमं।
जइ तत्थ केइ इच्छिज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥९५॥
अह कोइ ण इच्छिज्जा, तओ भुंजिज्ज एगओ।
आलोए भायणे साहु, जयं अपरिसाडियं ॥९६॥
तित्तगं व कडुयं व कसायं, अंबिलं व महुरं लवणं वा।
एयलद्ध-मण्णट्ठ-पउत्तं, महु-घयं व भुंजिज्ज संजए ॥९७॥
अरसं विरसं वा वि, सूइयं वा असूइयं।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथु-कुम्मास-भोयणं ॥९८॥
उप्पण्णं णाइ-हीलिज्जा, अप्पं वा बहु फासुयं।
मुहालद्धं मुहा-जीवी, भुंजिज्जा दोस वज्जियं ॥९९॥
दुल्लहा उ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा।
मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गइं॥त्तिबेमि॥ ॥१००॥

॥ इति पिण्डेसणाए पढमो उद्देसो समत्तो ॥१॥

पिण्डेसणाए बिओ उद्देशो

पडिग्गहं संलि-हित्ताणं, लेव-मायाए संजए।
दुगंधं वा सुगंधं वा, सव्वं भुंजे ण छड्डुए।।१।।
सेज्जा णिसीहियाए, समावण्णो य गोयरे।
अयावयट्ठा भुच्चाणं, जइ तेणं ण संथरे।।२।।
तओ कारण समुप्पण्णे, भत्तपाणं गवेसए।
विहिणा पुव्व-उत्तेण, इमेणं उत्तरेण य।।३।।
कालेण णिक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे।।४।।
अकाले चरसि भिक्खू, कालं ण पडिलेहसि।
अप्पाणं च किलामेसि, सण्णिवेसं च गरिहसि।।५।।
सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारियं।
अलाभोत्ति ण सोइज्जा, तवो त्ति अहियासए।।६।।
तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया।
तं उज्जुयं ण गच्छिज्जा, जयमेव परक्कमे।।७।।
गोयरग्ग-पविट्ठो य, ण णिसीइज्ज कत्थई।
कहं च ण पबंधिज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए।।८।।
अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वावि संजए।
अवलंबिया ण चिट्ठिज्जा, गोयरग्ग-गओ मुणी।।९।।
समणं माहणं वावि, किविणं वा वणीमगं।
उवसंक-मंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए।।१०।।
तमइक्कमित्तु ण पविसे, ण चिट्ठे चक्खु-गोयरे।
एगंत-मवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठिज्ज संजए।।११।।

वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा।
अप्पत्तियं सिया हुज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ।।१२।।
पडिसेहिए व दिण्णे वा, तओ तम्मि णियत्तिए।
उवसंक-मिज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ।।१३।।
उप्पलं पउमं वावि, कुमुयं वा मगदंतियं।
अण्णं वा पुप्फ-सचित्तं, तं च संलुंचिया दए ।।१४।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, "ण मे कप्पइ तारिसं" ।।१५।।
उप्पलं पउमं वावि, कुमुयं वा मगदंतियं।
अण्णं वा पुप्फ-सच्चित्तं, तं च सम्मद्दिया दए ।।१६।।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, "ण मे कप्पइ तारिसं" ।।१७।।
सालुयं वा विरालियं, कुमुयं उप्पल-णालियं।
मुणालियं सासव-णालियं, उच्छुखंडं अणिव्वुडं ।।१८।।
तरुणगं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा।
अण्णस्स वावि हरियस्स, आमगं परिवज्जए ।।१९।।
तरुणियं वा छिवाडिं, आमियं भज्जियं सयइं।
दिंतियं पडियाइक्खे, ण मे कप्पइ तारिसं ।।२०।।
तहा कोल मणुस्सिण्णं, वेलुयं कासव-णालियं।
तिल-पप्पडगं णीमं, आमगं परिवज्जए ।।२१।।
तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्तऽणिव्वुडं।
तिल-पिट्ठ पूइ-पिण्णागं, आमगं परिवज्जए ।।२२।।
कविट्ठं माउलिंगं य, मूलगं मूलगत्तियं।
आमं असत्थ-परिणयं, मणसा वि ण पत्थए ।।२३।।

तहेव फलमंथूणि, बीयमंथूणि जाणिया।
विहेलगं पियालं य, आमगं परिवज्जए ।।२४।।
समुयाणं चरे भिक्खू, कुल-मुच्चावयं सया।
णीयं कुल-मइक्कम्म, ऊसढं णाभिधारए ।।२५।।
अदीणो वित्ति-मेसिज्जा, ण विसीइज्ज पंडिए।
अमुच्छिओ भोयणम्मि, मायण्णे एसणा रए ।।२६।।
"बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइम-साइमं।
ण तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो ण वा ।।२७।।
सयणासण वत्थं वा, भत्तं पाणं च संजए।
अदिंतस्स ण कुप्पिज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ ।।२८।।
इत्थियं पुरिसं वावि, डहरं वा महल्लगं।
वंदमाणं ण जाइज्जा, णो य णं फरुसं वए ।।२९।।
जे ण वंदे ण से कुप्पे, वंदिओ ण समुक्कसे।
एवमण्णे समाणस्स, सामण्ण-मणुचिट्ठइ ।।३०।।
सिया एगइओ लद्धुं, लोभेण विणिगूहइ।
"मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए" ।।३१।।
अत्तट्ठा-गुरुओ लुद्धो, बहुपावं पकुव्वइ।
दुत्तोसओ य से होइ, णिव्वाणं च ण गच्छइ ।।३२।।
सिया एगइओ लद्धुं, विविहं पाण-भोयणं।
भद्दगं-भद्दगं भुच्चा, विवण्णं विरस-माहरे ।।३३।।
जाणंतु ता इमे समणा, "आययट्ठी अयं मुणी।
संतुट्ठो सेवए पंतं, लुह-वित्ती सुतोसओ ।।३४।।
पूयणट्ठी जसोकामी, माण-सम्माण-कामए।
बहुं पसवइ पावं, माया सल्लं च कुव्वइ ।।३५।।

सुरं वा मेरगं वावि, अण्णं वा मज्जगं रसं।
ससक्खं ण पिबे भिक्खू, जसं सारक्ख-मप्पणो ।।३६।।
पियए एगओ तेणो, ण मे कोइ वियाणइ।
तस्स पस्सह दोसाइं, णियडिं च सुणेह मे ।।३७।।
वड्डइ सुंडिया तस्स, माया-मोसं च भिक्खूणो।
अयसो य अणिव्वाणं, सययं च असाहुया ।।३८।।
णिच्चुविग्गो जहा तेणो, अत्त-कम्मेहिं दुम्मई।
तारिसो मरणंते वि, ण आराहेइ संवरं ।।३६।।
आयरिए णाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्थाऽवि, णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं ।।४०।।
एवं तु अगुण-प्पेही, गुणाणं च विवज्जए।
तारिसो मरणंतेऽवि, ण आराहेइ संवरं ।।४१।।
तवं कुव्वइ मेहावी, पणीयं वज्जए रसं।
मज्ज-प्पमाय-विरओ, तवस्सी अइउक्करसो ।।४२।।
तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेग-साहु-पूइयं।
विउलं अत्थ-संजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे ।।४३।।
एवं तु गुण-प्पेही, अगुणाणं च विवज्जए।
तारिसो मरणंतेऽवि, आराहेइ संवरं ।।४४।।
आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्थाऽवि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ।।४५।।
तव-तेणे वय-तेणे, रूव-तेणे य जे णरे।
आयार-भाव-तेणे य, कुव्वइ देव-किव्विसं ।।४६।।
लद्धूणं वि देवत्तं, उववण्णो देव-किव्विसे।
वि से ण याणेइ, किं मे किच्चा इमं फलं? ।।४७।।

तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भइ एल-मूयगं ।
णरगं तिरिक्ख-जोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा ।।४८।।
एयं च दोसं दट्टूणं, णायपुत्तेण भासियं ।
अणुमायंऽपि मेहावी, माया-मोसं विवज्जए ।।४६।।
सिक्खिऊण भिक्खेसण-सोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे ।
तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिंदिए, तिव्व लज्ज-गुणवं विहरिज्जासि ।।५०।।

।। इति पिण्डेसणाए बीओ उद्देसो ।।२।।

।। पंचमज्झयणं समत्तं ।।५।।

।। छट्ठं धम्मत्थ-कामज्झयणं ।। ६।।

णाण-दंसण-संपण्णं, संजमे य तवे रयं ।
गणिमागम-संपण्णं, उज्जाणम्मि समोसढं ।।१।।
रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया ।
पुच्छंति णिहुअप्पाणो, कहं भे आयार गोयरो ।।२।।
तेसिं सो णिहुओ दंतो, सव्व-भूय सुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आयक्खइ वियक्खणो ।।३।।
हंदि धम्मत्थ-कामाणं, णिग्गंथाणं सुणेह मे ।
आयार-गोयरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठियं ।।४।।
णण्णत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परम-दुच्चरं ।
विउल-ट्ठाण भाइस्स, ण भूयं ण भविस्सइ ।।५।।
स-खुड्डग-वियत्ताणं, वाहियाणं य जे गुणा ।
अखंड-फुडिया कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा ।।६।।
दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झइ ।
तत्थ अण्णयरे ठाणे, णिग्गंथ-त्ताओ भस्सइ ।।७।।

जंऽपि वत्थं व पायं वा, कंबलं पाय-पुंछणं।
तंऽपि संजम-लज्जट्ठा, धारंति परिहंरंति य ।।२०।।
ण सो परिग्गहो, वुत्तो, णायपुत्तेण ताइणा।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ।।२१।।
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खण-परिग्गहे।
अवि अप्पणोऽवि देहम्मि, णायरंति ममाइयं ।।२२।।
अहो-णिच्चं तवो-कम्मं, सव्व बुद्धेहिं वण्णियं।
जाय लज्जा-समावित्ती, एग-भत्तं च भोयणं ।।२३।।
संति मे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा।
जाइं राओ अपासंतो, कह-मेसणियं चरे? ।।२४।।
उदउल्लं बीय संसत्तं, पाणा णिवडिया महिं।
दिया ताइं विवज्जिजज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ।।२५।।
एयं च दोसं दट्ठूणं, णायपुत्तेण भासियं।
सव्वाहारं ण भुंजंति, णिग्गंथा राइभोयणं ।।२६।।
पुढवि कायं ण हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सुसमाहिया ।।२७।।
पुढवि कायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ।।२८।।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्ढणं।
पुढविकाय-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ।।२९।।
आउ कायं ण हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सुसमाहिया ।।३०।।
आउकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ।।३१।।

वय-छक्कं काय-छक्कं, अकप्पो गिहि-भायणं।
पलियंक णिसिज्जा य, सिणाणं सोह-वज्जणं ।।८।।
तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं।
अहिंसा णिउणा दिट्ठा, सव्व भूएसु संजमो ।।९।।
जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा।
ते जाण-मजाणं वा, ण हणे णो वि घायए ।।१०।।
सव्वे-जीवा वि इच्छंति, जीविउं ण मरिज्जिउं।
तम्हा पाणिवहं घोरं, णिग्गंथा वज्जयंति णं ।।११।।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया।
हिंसगं ण मुसं बूया, णो वि अण्णं वयावए ।।१२।।
मुसावाओ य लोगम्मि, सव्व-साहूहिं गरिहिओ।
अविस्सासो य भूयाणं, तम्हा मोसं विवज्जिए ।।१३।।
चित्तमंत-मचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं।
दंतसोहण-मित्तंपि, उग्गहंसि अजाइया ।।१४।।
तं अप्पणा ण गिण्हंति, णो वि गिण्हावए परं।
अण्णं वा गिण्हमाणं पि, णाणुजाणंति संजया ।।१५।।
अबंभ-चरियं घोरं, पमायं दुरहि-ट्ठियं।
णायरंति मुणी लोए, भेयाययण-वज्जिणो ।।१६।।
मूलमेय-महम्मस्स, महादोस-समुस्सयं।
तम्हा मेहुण संसग्गं, णिग्गंथा वज्जयंति णं ।।१७।।
बिड-मुब्भेइमं लोणं, तिल्लं सप्पिं च फाणियं।
ण ते सण्णिहि-मिच्छंति, णायपुत्त-वओ-रया ।।१८।।
लोहस्सेस-अणुफासे, मण्णे अण्णयरा-मवि।
जे सिया सण्णिहिं कामे, गिही पव्वइए ण से ।।१९।।

जंऽपि वत्थं व पायं वा, कंबलं पाय-पुंछणं।
तंऽपि संजम-लज्जट्ठा, धारंति परिहंरंति य ।।२०।।
ण सो परिग्गहो, वुत्तो, णायपुत्तेण ताइणा।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ।।२१।।
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खण-परिग्गहे।
अवि अप्पणोऽवि देहम्मि, णायरंति ममाइयं ।।२२।।
अहो-णिच्चं तवो-कम्मं, सव्व बुद्धेहिं वण्णियं।
जाय लज्जा-समावित्ती, एग-भत्तं च भोयणं ।।२३।।
संति मे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा।
जाइं राओ अपासंतो, कह-मेसणियं चरे? ।।२४।।
उदउल्लं बीय संसत्तं, पाणा णिवडिया महिं।
दिया ताइं विवज्जिजज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ।।२५।।
एयं च दोसं दट्ठूणं, णायपुत्तेण भासियं।
सव्वाहारं ण भुंजंति, णिग्गंथा राइभोयणं ।।२६।।
पुढवि कायं ण हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सुसमाहिया ।।२७।।
पुढवि कायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ।।२८।।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्ढणं।
पुढविकाय-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ।।२९।।
आउ कायं ण हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सुसमाहिया ।।३०।।
आउकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ।।३१।।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्ढणं।
आउकाय समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३२॥
जायतेयं ण इच्छंति, पावगं जलइत्तए।
तिक्ख-मण्णयरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासयं ॥३३॥
पाईणं पडिणं वावि, उड्ढं अणुदिसा-मवि।
अहे दाहिणओ वावि, दहे उत्तरओ-वि य ॥३४॥
भूयाण-मेस-माघाओ, हव्ववाहो ण संसओ।
तं पईव-पयावट्ठा, संजया किंचि णारंभे ॥३५॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्ढणं।
तेउकाय-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३६॥
अणिलस्स समारंभं, बुद्धा मण्णंति तारिसं।
सावज्ज-बहुलं चेयं, णेयं ताईहिं सेवियं ॥३७॥
तालियंटेण पत्तेण, साहा विहुयणेण वा।
ण ते वीइउ-मिच्छंति, वीया-वेऊण वा परं ॥३८॥
जंऽपि वत्थं वा पायं वा, कंबलं पायपुंछणं।
ण ते वाय-मुईरंति, जयं परिहरंति य ॥३९॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्ढणं।
वाउकाय समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४०॥
वणस्सइं ण हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सुसमाहिया ॥४१॥
वणस्सइं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४२॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्ढणं।
वणस्सइ-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४३॥

तस कायं ण हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सुसमाहिया ॥४४॥
तसकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४५॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्ढणं।
तसकाय-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४६॥
जाइं चत्तारिऽभुज्जाइं, इसिणाहार-माईणि।
ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अणुपालए ॥४७॥
पिंडं सिज्जं य वत्थं च, चउत्थं पायमेव य।
अकप्पियं ण इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पियं ॥४८॥
जे णियागं ममायंति, कीय-मुद्देसियाहडं।
वहं ते समणु-जाणंति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥४९॥
तम्हा असण-पाणाइं, कीय-मुद्देसियाहडं।
वज्जयंति ठियप्पाणो, णिग्गंथा धम्म-जीविणो ॥५०॥
कंसेसु कंस-पाएसु, कुंड-मोएसु वा पुणो।
भुंजंतो असण पाणाइं, आयारो परिभस्सइ ॥५१॥
सीओदग-समारंभे, मत्त-धोअण छड्डणे।
जाइं छंणंति भूयाइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५२॥
पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिया तत्थ ण कप्पइ।
एयमट्ठं ण भुंजंति, णिग्गंथा गिहि-भायणे ॥५३॥
आसंदी पलियंकेसु, मंच-मासालएसु वा।
अणायरिय-मज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥
णासंदी-पलियंकेसु, ण णिसिज्जा ण पीढए।
णिग्गंथा-अपडिलेहाए, बुद्ध-वुत्त-महिट्ठगा ॥५५॥

गंभीर-विजया एए, पाणा-दुप्पडिलेहगा।
आसंदी पलियंको य, एयमट्ठं विवज्जिया ।।५६।।
गोयरग्ग-पविट्ठस्स, णिसिज्जा जस्स कप्पइ।
इमेरिस-मणायारं, आवज्जइ अबोहियं ।।५७।।
विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो।
वणीमग-पडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ।।५८।।
अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वावि संकणं।
कुसील-वड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ।।५९।।
तिण्ह-मण्णय-रागस्स, णिसिज्जा जस्स कप्पइ।
जराए अभिभूयस्स, वाहियस्स तवस्सिणो ।।६०।।
वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए।
वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ।।६१।।
संति मे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु य।
जे य भिक्खू सिणायंतो, वियडे-णुप्पिलावए ।।६२।।
तम्हा ते ण सिणायंति, सीएण उसिणेण वा।
जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाण-महिट्ठगा ।।६३।।
सिणाणं अदुवा कक्कं, लुद्धं पउमगाणि य।
गाय-स्सुव्वट्टण-ट्ठाए, णायरंति कयाइवि ।।६४।।
णगिणस्स वावि मुंडस्स, दीह-रोम-णहंसिणो।
मेहुणाओ उवसंतस्स, किं विभूसाए कारियं ।।६५।।
विभूसा वत्तियं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं।
संसार-सायरे घोरे, जेणं पडइ दुरुत्तरे ।।६६।।
विभूसा वत्तियं चेयं, बुद्धा मण्णंति तारिसं।
सावज्जं बहुलं चेयं, णेयं ताईहिं सेवियं ।।६७।।

खवेंति अप्पाण-ममोह-दंसिणो, तवे रया संजमे अज्जवे गुणे ।
धुणंति पावाइं पुरे-कडाइं, णवाइं पावाइं ण ते करेंति ।।६८।।
सओव-संता अममा अकिंचणा, सविज्ज विज्जाणु गया जसंसिणो ।
उउप्पसण्णे विमले व चदिंमा, सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो ।।६६।।

।। छट्ठं धम्मत्थकामज्झयणं समत्तं ।। ६।।

।। वक्कसुद्धी णामं सत्तमं अज्झयणं ।। ७।।

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पण्णवं ।
दुण्हं तु विणयं सिक्खे, दो ण भासिज्ज सव्वसो ।।१।।
जा य सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा य बुद्धेहिं णाइण्णा, ण तं भासिज्ज पण्णवं ।।२।।
असच्च मोसं सच्चं च, अणवज्ज-मकक्कसं ।
समुप्पेह-मसंदिद्धं, गिरं भासिज्ज पण्णवं ।।३।।
एयं च अट्ठमण्णं वा, जं तु णामेइ सासयं ।
स भासं सच्चमोसं वि, तंपि धीरो विवज्जए ।।४।।
वितहं वि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए णरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुणं जो मुसं वए ।।५।।
तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ ।
अहं वा णं करस्सिामि, एसो वा णं करिस्सइ ।।६।।
एवमाइ उ जा भासा, एस-कालम्मि संकिया ।
संपयाईय-मट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए ।।७।।
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण्ण-मणागए ।
जमट्ठं तु ण जाणिज्जा, एवमेयं ति णो वए ।।८।।
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण्ण-मणागए ।
जत्थ संका भवे तं तु, 'एवमेयं' त्ति णो वए ।।६।।

अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण-मणागए।
णिस्संकियं भवे जं तु, एवमेयं ति णिद्दिसे।।१०।।
तहेव फरुसा भासा, गुरु-भूओव-घाइणी।
सच्चा वि सा ण वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो।।११।।
तहेव काणं काणे-त्ति, पंडगं पंडगे-त्ति वा।
वाहियं वावि रोगित्ति, तेणं चोरेत्ति णो वए।।१२।।
एएणअण्णेण अट्ठेणं, परो जेणुव-हम्मइ।
आयार-भाव दोसण्णु, ण तं भासिज्ज पण्णवं।।१३।।
तहेव होले गोलि-त्ति, साणे वा वसुले-त्ति य।
दमए दुहए वावि, णेवं भासिज्ज पण्णवं।।१४।।
अज्जिए पज्जिए वावि, अम्मो माउस्सिय त्ति य।
पिउस्सिए भायणिज्जत्ति, धूए णत्तुणिए त्ति य।।१५।।
हले हलेत्ति अण्णेत्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुलित्ति, इत्थियं णेव-मालवे।।१६।।
णामधिज्जेण णं बूआ, इत्थी-गुत्तेण वा पुणो।
जहारिह मभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा।।१७।।
अज्जए पज्जए वावि, बप्पो चुल्ल-पिउत्ति य।
माउला भाइणिज्जत्ति, पुत्ते णत्तुणिय त्ति य।।१८।।
हे भो! हलित्ति अण्णित्ति, भट्टे सामिय गोमिए।
होल गोल वसुलित्ति, पुरिसं णेव-मालवे।।१६।।
णामधिज्जेण णं बूया, पुरिस गुत्तेण वा पुणो।
जहारिह-मभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा।।२०।।
पंचिंदियाण पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं।
जाव णं ण विजाणिज्जा, ताव जाइत्ति आलवे।।२१।।

तहेव मणुस्सं पसुं, पक्खिं वा वि सरीसिवं।
थूले पमेइले वज्झे, पाइमित्ति य णो वए ।।२२।।
परिवूढत्ति णं बूया, बूया उवचिएत्ति य।
संजाए पीणिए वावि, महाकायत्ति आलवे ।।२३।।
तहेव गाओ दुज्झाओ, दम्मा गो रहगत्ति य।
वाहिमा रह-जोगित्ति, णेवं भासिज्ज पण्णवं ।।२४।।
जुवं गवित्ति णं बूया, धेणुं रसदयत्ति य।
रहस्से महल्लए वावि, वए संवहणि त्ति य ।।२५।।
तहेव गंतु-मुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, णेवं भासिज्ज पण्णवं ।।२६।।
अलं पासाय खंभाणं, तोरणाणं गिहाण य।
फलि-हग्गल णावाणं, अलं उदग दोणिणं ।।२७।।
पीढए चंगबेरे य, णंगले-मइयं सिया।
जंतलट्ठी व णाभी वा, गंडिया व अलं सिया ।।२८।।
आसणं सयणं जाणं, हुज्जा वा किंचुवस्सए।
भूओव-घाइणिं भासं, णेवं भासिज्ज पण्णवं ।।२६।।
तहेव गंतु-मुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासिज्ज पण्णवं ।।३०।।
जाइ-मंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया।
पयाय-साला विडिमा, वए दरिसणित्ति य ।।३१।।
तहा फलाइं पक्काइं, पाय-खज्जाइं णो वए।
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइत्ति णो वए ।।३२।।
असंथडा इमे अंबा, बहु-णिव्वडिमा फला।
वइज्ज बहु संभूया, भूयरूवत्ति वा पुणो ।।३३।।

तहे-वोसहिओ पक्काओ, णीलियाओ छवीइ य।
लाइमा भज्जि-माउत्ति, पिहु-खज्जत्ति णो वए ।।३४।।
रूढा बहु संभूया, थिरा ओसढा वि य।
गब्भियाओ पसूयाओ, संसाराउत्ति आलवे ।।३५।।
तहेव संखडिं णच्चा, किच्चं कज्जं तिं णो वए।
तेणगं वावि वज्झित्ति, सुतित्थित्ति य आवगा ।।३६।।
संखडिं संखडिं बूया, पणियट्ठत्ति तेणगं।
बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाणं वियागरे ।।३७।।
तहा णईओ पुण्णाओ, काय-तिज्जत्ति णो वए।
णावाहिं तारि-माउत्ति, पाणिपिज्ज-त्ति णो वए ।।३८।।
बहु बाहडा अगाहा, बहुसलि-लुप्पिलोदगा।
बहु वित्थडोदगा यावि, एवं भासिज्ज पण्णवं ।।३९।।
तहेव सावज्जं जोगं, परस्सट्ठा य णिट्ठियं।
कीर-माणंति वा णच्चा, सावज्जं ण लवे मुणी ।।४०।।
सुक्कडित्ति सुपक्कित्ति, सुछिण्णे सुहडे मडे।
सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ।।४१।।
पयत्त-पक्कत्ति व पक्क-मालवे, पयत्त छिण्णत्ति व छिण्ण मालवे।
पयत्त-लट्ठित्ति व कम्महेउयं, पहारगाढत्ति व गाढमालवे ।।४२।।
सव्वुक्कसं परग्घं वा, अउलं णत्थि एरिसं।
अविक्किय-मवत्तव्वं, अचियत्तं चेव णो वए ।।४३।।
सव्व-मेयं वइस्सामि, सव्वमेयं त्ति णो वए।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एवं भासिज्ज पण्णवं ।।४४।।
सुक्कीयं वा सुविक्कीयं, अकिज्जं किज्जमेव वा।
इमं गिण्हं इमं मुच्चं, पणीयं णो वियागरे ।।४५।।

अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा।
पणियट्ठे समुप्पण्णो, अणवज्जं वियागरे ।।४६।।
तहेवा-संजयं धीरो, आस एहि करेहि वा।
सयं चिट्ठ वयाहित्ति, णेवं भासिज्ज पण्णवं ।।४७।।
बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो।
ण लवे असाहुं साहुत्ति, साहू साहुत्ति आलवे ।।४८।।
णाण दंसण संपण्णं, संजमे य तवे रयं।
एवं गुण समाउत्तं संजयं साहु-मालवे ।।४६।।
देवाणं मणुयाणं च, तिरियाणं च वुग्गहे।
अमुयाणं जओ होउ, मा वा होउत्ति णो वए ।।५०।।
वाओ वुट्ठं च सीउण्हं, खेमं धायं सिवं ति वा।
कयाणु हुज्ज एयाणि, मा वा होउत्ति णो वए ।।५१।।
तहेव मेहं व णहं व माणवं, ण देव देवत्ति गिरं वइज्जा।
समुच्छिए उण्णए वा पओए, वइज्ज वा वुट्ठ बला-हइत्ति ।।५२।।
अंतलिक्खत्ति णं बूया, गुज्झाणु चरियत्ति य।
रिद्धिमंतं णरं दिस्स, रिद्धिमंतंत्ति आलवे ।।५३।।
तहेव सावज्जणु मोयणी गिरा, ओहारिणी जा य परोव-घाइणी।
से कोह-लोह भय हास माणवो, ण हासमाणो वि गिरं वइज्जा ।।५४।।
सुवक्क सुद्धिं समुपेहिया मुणी, गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए, सयाण मज्झे लहइ पसंसणं ।।५५।।
भासाइ दोसे य गुणे य जाणिया, तीसे अ दुट्ठे परिवज्जए सया।
छसु संजए सामणिए सया जए, वइज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ।।५६।।
परिक्खभासी सुसमाहि इंदिए, चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स णिद्धुणे धुण्णमलं पुरेकडं, आराहए लोगमिणं तहा परं ।।५७।।

।। इति वक्कसुद्धी णामं सत्तमं अज्झयणं समत्तं।।७।।

।। आयारपणिही णामं अट्ठमं अज्झयणं ।। ८ ।।

आयार-प्पणिहिं लद्धुं, जहा कायव्व भिक्खुणा ।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ।।१।।
पुढवि दग अगणि-मारुय, तण रुक्ख सबीयगा ।
तसा य पाणा जीवत्ति, इइ वुत्तं महेसिणा ।।२।।
तेसिं अच्छण जोएण, णिच्चं होयव्वयं सिया ।
मणसा काय वक्केणं, एवं हवइ संजए ।।३।।
पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, णेव भिंदे, ण संलिहे ।
तिविहेण करण जोएण, संजए सुसमाहिए ।।४।।
सुद्ध पुढवीं ण णिसीए, ससरक्खम्मि य आसणे ।
पमज्जित्तु णिसीइज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ।।५।।
सीओदगं ण सेविज्जा, सिलावुट्ठं हिमाणि य ।
उसिणोदगं तत्त फासुयं, पडिगाहिज्ज संजए ।।६।।
उदउल्लं अप्पणो कायं, णेव पुंछे ण संलिहे ।
समुप्पेह तहाभूयं, णो णं संघट्टए मुणी ।।७।।
इंगालं अगणिं अच्चिं, अलायं वा सजोईयं ।
ण उंजिज्जा ण घट्टिज्जा, णो णं णिव्वावए मुणी ।।८।।
तालिअंटेण पत्तेण, साहाए विहुयणेण वा ।
ण वीइज्जऽप्पणो कायं, बाहिरं वावि पुग्गलं ।।६।।
तणरुक्खं ण छिंदिज्जा, फलं मूलं च कस्सई ।
आमगं विविहं बीयं, मणसा वि ण पत्थए ।।१०।।
गहणेसु ण चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा ।
उदगम्मि तहा णिच्चं, उत्तिंग पणगेसु वा ।।११।।

तसे पाणे ण हिंसिज्जा, वाया अदुव कम्मुणा।
उवरओ सव्व-भूएसु, पासेज्ज विविहं जगं ।।१२।।
अट्ठ सुहुमाइं पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए।
दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ।।१३।।
कयराइं अट्ठ सुहुमाइं, जाइं पुच्छिज्ज संजए।
इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खिज्ज वियक्खणो ।।१४।।
सिणेहं पुप्फ-सुहुमं च, पाणुत्तिंगं तहेव य।
पणगं बीय हरियं च, अंड सुहुमं च अट्ठमं ।।१५।।
एवमेयाणि जाणित्ता, सव्व भावेण संजए।
अप्पमत्तो जए णिच्चं, सव्विंदिय-समाहिए ।।१६।।
धुवं च पडिलेहिज्जा, जोगसा पाय कंबलं।
सिज्ज-मुच्चार भूमिं च, संथारं अदुवासणं ।।१७।।
उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण जल्लियं।
फासुयं पडिलेहित्ता, परिट्ठाविज्ज संजए ।।१८।।
पविसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोयणस्स वा।
जयं चिट्ठे मियं भासे, ण य रूवेसु मणं करे ।।१६।।
बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ।
ण यं दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउ-मरिहइ ।।२०।।
सुयं वा जइ वा दिट्ठं, ण लविज्जोव-घाइयं।
ण य केणइ उवाएणं, गिहिजोगं समायरे ।।२१।।
णिट्ठाणं रस-णिज्जूढं, भद्दगं पावगं त्ति वा।
पुट्ठो वावि अपुट्ठो वा, लाभालाभं ण णिद्दिसे ।।२२।।
ण य भोयणम्मि गिद्धो, चरे उंछं अयंपिरो।
अफासुयं ण भुंजिज्जा, कीय-मुद्देसियाहडं ।।२३।।

संणिहिं च ण कुव्विज्जा, अणुमायं पि संजए।
मुहाजीवी असंबद्धे, हविज्ज जग-णिस्सिए ।।२४।।
लूहवित्ती सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिया।
आसुरत्तं ण गच्छिज्जा, सुच्चा णं जिणसासणं ।।२५।।
कण्ण सुक्खेहिं सद्देहिं, पेम्मं णाभिणिवेसए।
दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहियासए ।।२६।।
खुहं पिवासं दुस्सिज्जं, सी-उण्हं अरइं भयं।
अहियासे अव्वहिओ, देह दुक्खं महाफलं ।।२७।।
अत्थं-गयम्मि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए।
आहार-माइयं सव्वं, मणसा वि ण पत्थए ।।२८।।
अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे।
हविज्ज उयरे दंते, थोवं लद्धुं ण खिंसए ।।२९।।
ण बाहिरं परिभवे, अत्ताणं ण समुक्कसे।
सुयलाभे ण मज्जिज्जा, जच्चा तवस्सि बुद्धिए ।।३०।।
से जाण-मजाणं वा, कट्टु आहम्मियं पयं।
संवरे खिप्प-मप्पाणं, बीयं तं ण समायरे ।।३१।।
अणायारं परक्कम्म, णेव, गूहे ण णिण्हवे।
सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए ।।३२।।
अमोहं वयणं कुज्जा, आयरियस्स-महप्पणो।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ।।३३।।
अधुवं जीवियं णच्चा, सिद्धिमग्गं वियाणिया।
विणियट्टिज्ज भोगेसु, आउं परिमिय-मप्पणो ।।३४।।
वलं थामं च पेहाए, सद्धा मारुग्ग-मप्पणो।
खित्तं कालं च विण्णाय, तहप्पाणं णिजुंजए ।।३५।।

जरा जाव ण पीडेई, वाही जाव ण वड्ढई।
जाविंदिया ण हायंति, ताव धम्मं समायरे ।।३६।।
कोहं माणं च मायं च, लोहं च पाव वड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हिय-मप्पणो ।।३७।।
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणय णासणो।
माया मित्ताणि णासेइ, लोहो सव्व विणासणो ।।३८।।
उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
माय-मज्जव भावेण, लोहं संतोसओ जिणे ।।३६।।
कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोहो य पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ।।४०।।
रायणिएसु विणयं पउंजे, धुव सीलयं सययं ण हावइज्जा।
कुम्मुव्व अल्लीण-पलीण गुत्तो, परक्कमिज्जा तव संजमम्मि ।।४१।।
णिद्दं च ण बहु मण्णिज्जा, सप्पहासं विवज्जए।
मिहो कहाहिं ण रमे, सज्झायम्मि रओ सया ।।४२।।
जोगं च समण-धम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं।
जुत्तो य समण-धम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ।।४३।।
इहलोग पारत्त-हियं, जेणं गच्छइ सुग्गइं।
बहुस्सुयं पज्जुवासिज्जा, पुच्छिज्जत्थ विणिच्छयं ।।४४।।
हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए।
अल्लीण-गुत्तो णिसिए, सगासे गुरूणो मुणी ।।४५।।
ण पक्खओ ण पुरओ, णेव किच्चाण पिट्ठओ।
ण य ऊरूं समासिज्जा, चिट्ठिज्जा गुरूणंतिए ।।४६।।
अपुच्छिओ ण भासिज्जा, भास माणस्स अंतरा।
पिट्ठि मंसं ण खाइज्जा, माया मोसं विवज्जए ।

अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पिज्ज वा परो।
सव्वसो तं ण भासिज्जा, भासं अहिय-गामिणिं ॥४८॥
दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुण्णं वियं जियं।
अयंपिर-मणुव्विग्गं, भासं निसिरे अत्तवं ॥४९॥
आयार-पण्णत्ति धरं, दिट्ठिवाय-महिज्जगं।
वाय-विक्खलियं णच्चा, ण तं उवहसे मुणी ॥५०॥
णक्खत्तं सुमिणं जोगं, णिमित्तं मंत भेसजं।
गिहिणो तं ण आइक्खे, भूयाहिगरणं पयं ॥५१॥
अण्णट्ठं पगडं लयणं, भइज्ज सयणासणं।
उच्चारभूमि संपण्णं, इत्थी पसु विवज्जियं ॥५२॥
विवित्ता य भवे सिज्जा, णारीणं ण लवे कहं।
गिहि-संथवं ण कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ॥५३॥
जहा कुक्कुड-पोयस्स, णिच्चं कुललओ भयं।
एवं खु बंभयारिस्स, इत्थी विग्गहओ भयं ॥५४॥
चित्त भितिं ण णिज्झाए, णारिं वा सुअलंकियं।
भक्खर-मिव दट्टूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५५॥
हत्थ-पाय-पडिच्छिण्णं, कण्ण णास विगप्पियं।
अवि-वाससयं णारिं, बंभयारी विवज्जए ॥५६॥
विभूसा इत्थी संसग्गो, पणीयं रस भोयणं।
णरस्सऽत्त-गवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥५७॥
अंग-पच्चंग संठाणं, चारुल्ल-विय पेहियं।
इत्थीणं तं ण णिज्झाए, कामराग विवड्ढणं ॥५८॥
विसएसु मणुण्णेसु, पेमं णाभिणिवेसए।
अणिच्चं तेसिं विण्णाय, परिणामं पुग्गलाण य ॥५९॥

पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं णच्चा जहा तहा ।
विणीय तिण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ।।६०।।
जाइ सद्धाइ णिक्खंतो, परियाय ट्ठाण-मुत्तमं ।
तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरिय संमए ।।६१।।
तवं चिमं संजम जोगयं च, सज्झाय जोगं च सया अहिट्ठिए ।
सूरे व सेणाइ समत्त-माउहे, अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ।।६२।।
सज्झाय सुज्झाण रयस्स ताइणो, अपाव भावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं, समीरियं रूप्प मलं व जोइणा ।।६३।।
से तारिसे दुक्ख सहे जिइंदिए, सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे
विरायई कम्म घणम्मि अवगए, कसिणब्भ पुडावगमे व चंदिमे

।। इति आयारपणिही णामं अट्ठममज्झयणं समत्तं ।।८।।

।। विणयसमाही णामंणमवममज्झयणं।।९।।

प्रथम उद्देशक

थंभा व कोहा व मय प्पमाया, गुरूस्सगासे विणयं ण सिक्खे ।
सो चेव उ तस्स अभुइ भावो, फलं व कीयस्स वहाय होइ ।।१।।
जे यावि मंदित्ति गुरुं विइत्ता, डहरे इमे अप्पसुए त्ति णच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा, करंति आसायण ते गुरूणं ।।२।।
पगईइ मंदावि भवंति एगे, डहरा वि य जे सुय बुद्धोववेया ।
आयारमंतो गुण सुट्ठिअप्पा, जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ।।३।।
जे यावि णागं डहरंति णच्चा, आसायए से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो, णियच्छइ जाइ पहं खु मंदो ।।४।।
आसीविसो वावि परं सुरुट्ठो, किं जीव नासाउ परं णु कुज्जा ।
आयरिय पाया पुण अप्पसण्णा, अबोहि आसायण णत्थि मुक्खो ।।५।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

जो पावगं जलिय-मवक्क मिज्जा, आसीविसं वावि हु कोवइज्जा ।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी, एसोव-माऽसायणया गुरुणं ।।६।।
सिया हु से पावय णो डहिज्जा, असीविसो वा कुविओ ण भक्खे ।
सिया विसं हलाहलं ण मारे, ण यावि मुक्खो गुरु हीलणाए ।।७।।
जो पव्वयं सिरसा भित्तुमिच्छे, सुत्तं च सीहं पडिबोहइज्जा ।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं, एसोव-माऽसायणया गुरूणं ।।८।।
सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविओ ण भक्खे ।
सिया ण भिंदिज्ज व सत्तिअग्गं, ण यावि मुक्खो गुरू हीलणाए ।।६।।
आयरिय पाया पुण अप्पसण्णा, अबोही आसायण णत्थि मुक्खो ।
तम्हा अणाबाह-सुहाभिकंखी, गुरू-प्पसायाभिमुहो रमिज्जा ।।१०।।
जहाहि अग्गी जलणं णमंसे, णाणाहुइ मंत-पयाभिसित्तं ।
एवायरियं उवचिट्ठइज्जा, अणंत णाणोव-गओ वि संतो ।।११।।
जस्संतिए धम्म पयाइं सिक्खे, तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ, काय-ग्गिरा भो मणसा य णिच्चं ।।१२।।
लज्जा-दया-संजम-बंभचेरं, कल्लाण भागिस्स विसोहि ठाणं ।
जे मे गुरू सयय-मणुसासयंति, तेऽहं गुरुं सययं पूययामि ।।१३।।
जहा णिसंते तवणच्चिमाली, पभासई केवल भारहं तु ।
एवायरिओ सुयसील बुद्धिए, विरायइ सुर मज्झेव इंदो ।।१४।।
जहा ससी कोमुइ जोग जुत्तो,णक्खत्त तारा-गण परिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भ मुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खु मज्झे ।।१५।।
महागरा आयरिया महेसी, समाहि जोगे सुयसील बुद्धिए ।
संपाविउ कामे अणुत्तराइं, आराहए तोसइ धम्मकामी ।।१६।।
सुच्चाण मेहावी सुभासियाइं, सुस्सूसए आयरियप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावइ सिद्धि-मणुत्तरं ।।१७।।

।। इति विणयसमाहिज्झयणे पढमो उद्देसो समत्तो ।।१।।

द्वितीय उद्देशक

मूलाउ खंध-प्पभवो दुमस्स,खंधाउ पच्छा समुविंति साहा।
साह-प्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ सि पुप्फं च फलं रसो य।।१।।
एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो से मुक्खो।
जेण कित्तिं सुयं सिग्घं, णीसेसं चाभिगच्छइ।।२।।
जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई णियडी सढे।
वुज्झइ से अविणीयप्पा, कट्ठं सोयगयं जहा।।३।।
विणयम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पइ णरो।
दिव्वं सो सिरि-मिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए।।४।।
तहेव अविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओग-मुवट्ठिया।।५।।
तहेव सुविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा।।६।।
तहेव अविणीयप्पा, लोगंसि णर णारिओ।
दीसंति दुहमेहंता, छाया ते विगलिंदिया।।७।।
दंड-सत्थ परिजुण्णा, असब्भ वयणेहि य।
कलुणा विवण्ण-छंदा, खु-प्पिवासा परिगया।।८।।
तहेव सुविणीयप्पा, लोगंसि णर णारिओ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा।।६।।
तहेव अविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओग-मुवट्ठिया।।१०।।
तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा।।११।।

जे आयरिय उवज्झायाणं, सुस्सूसा वयणं-करा।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति, जलसित्ता-इव पायवा।।१२।।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा णेउणियाणि य।
गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा।।१३।।
जेण बंधं वहं घोरं, परियावं च दारूणं।
सिक्खमाणा णियच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिया।।१४।।
ते वि तं गुरुं पूयंति, तस्स सिप्पस्स कारणा।
सक्कारंति णमंसंति, तुट्ठा णिद्देस-वत्तिणो।।१५।।
किं पुण जे सुयग्गाही, अणंत हिय-कामए।
आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं णाइवत्तए।।१६।।
णीयं सिज्जं गइं ठाणं, णीयं च आसणाणि य।
णीयं च पाए वंदिज्जा, णीयं कुज्जा य अंजलिं।।१७।।
संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहि-णामवि।
खमेह अवराहं मे, वइज्ज ण पुणुत्ति य।।१८।।
दुग्गओ वा पओएणं, चोइओ वहइ रहं।
एवं दुबुद्धि किच्चाणं, वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ।।१९।।
आलवंते लवंते वा, ण णिसिज्जाइ पडिस्सुणे।
मुत्तूणं आसणं धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे।।२०।।
कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं।
तेण तेण उवाएणं, तं तं संपडिवायए।।२१।।
विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणीयस्स य।
जस्सेयं दुहओ णायं, सिक्खं से अभिगच्छइ।।२२।।
जे यावि चंडे मइ इड्ढि गारवे, पिसुणे णरे साहस्स हीण पेसणे।
अदिट्ठ धम्मे विणए अकोविए, असम्विभागी ण हु तस्स मोक्खो।।२३।।

णिद्देस-वित्ती पुण जे गुरूणं, सुयत्थ धम्मा विणयम्मि कोविया ।
तरित्तु ते ओघमिणं दुरुत्तरं, खवित्तु कम्मं गइ-मुत्तमं गया ।।२४।।

।। इति विणयसमाहिणामज्झयणे बीओ उद्देसो समत्तो ।।२।।

तृतीय उद्देशक

आयरियं अग्गि-मिवाहि अग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा ।
आलोइयं इंगियमेव णच्चा, जो छंद-माराहयई स पुज्जो ।।१।।
आयार-मट्ठा विणयं पउंजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो, गुरुं तु णासाययइ स पुज्जो ।।२।।
रायणिएसु विणयं पउंजे, डहरा वि य जे परियाय जेट्ठा ।
णीयत्तणे वट्टइ सच्चवाई, उवायवं वक्ककरे स पुज्जो ।।३।।
अण्णाय-उंछं चरई विसुद्धं,-जवणट्ठया समुयाणं च णिच्चं ।
अलद्धुयं णो परिदेवइज्जा, लद्धुणं विकत्थयई स पुज्जो ।।४।।
संथार-सिज्जासण-भत्तपाणे, अप्पिच्छया अइलाभेऽवि संते ।
जो एव-मप्पाण-मभि तोसइज्जा,संतोस पाहण्ण रए स पुज्जो ।।५।।
सक्का सहेउं आसाइ कंटया, अओमया उच्छहया णरेणं ।
अणासए जो उ सहिज्ज कंटए, वईमए कण्णसरे स पुज्जो ।।६।।
मुहुत्त-दुक्खा उ हवंति कंटया, अओमया तेऽवि तओ सुउद्धरा ।
वाया-दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणु-बंधीणि महब्भयाणि ।।७।।
समावयंता वयणाभि-घाया, कण्णं गया दुम्मणियं जणंति ।
धम्मुत्ति किच्चा परमग्ग सूरे, जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ।।८।।
अवण्णवायं च परम्मुहस्स, पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।
ओहारिणिं अप्पिय कारिणिं च, भासं ण भासिज्ज सया स पुज्जो ।।६।।
अलोलुए अक्कुहए अमाई, अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
णो भावए णो वि य भावियप्पा, अकोउहल्ले य सया ।।१०

गुणेहिं साहू अगुणेहिंऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण-मुंचऽसाहू।
वियाणिया अप्पग-मप्पएणं, जो राग-दोसेहिं समो स पुज्जो ।।११।।
तहेव डहरं च महल्लगं वा, इत्थिं पुमं पव्वइयं गिहिं वा।
णो हीलए णो वि य खिंसइज्जा, थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ।।१२।।
जे माणिया सययं माणयंति, जत्तेण कण्णं व णिवेसयंति।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ।।१३।।
तेसिं गुरूणं गुण सायराणं, सुच्चाण मेहावी सुभासियाइं।
चरे मुणी पंच रए तिगुत्तो, चउ-क्कसायाव-गए स पुज्जो ।।१४।।
गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी, जिणमय णिउणे अभिगम कुसले।
धुणिय रयमलं-पुरेकडं, भासुर-मउलं गइं गओ ।।१५।।

।। इति विणयसमाहीए तइओ उद्देओ समत्तो ।।३।।

चतुर्थ उद्देशक

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु थेरिहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणय-समाहि-ट्ठाणा पण्णत्ता।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणय समाहिट्ठाणा पण्णत्ता।

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणय समाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा-विणय-समाही-सुय-समाही तव -समाही आयार-समाही।

विणए सुए य तवे, आयारे णिच्चं पंडिया।
अभिरामयंत्ति अप्पाणं, जे भवंति जिइंदिया।।१।।

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तंजहा-अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ[१],सम्मं संपडिवज्जइ[२], वेयमाराहयइ[३], ण य भवइ अत्त-संपग्गहिए[४]। चउत्थं पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो।

पेहेइ हियाणु सासणं, सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठए।
ण य माण मए ण मज्जइ, विणयसमाहि आययट्ठिए।।२।।

चउव्विहा खलु सुय समाही भवइ, तंजहा-सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ[१]-एगग्ग चित्तो भविस्सामित्ति अज्झाइयव्वं भवइ[२]-अप्पाणं ठावइस्सामित्ति अज्झाइयव्वं भवइ[३]-ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ[४]-चउत्थं पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो।

णाण-मेगग्ग-चित्तो य, ठिओ य ठावयइ परं।
सुयाणि य अहिज्जित्ता, रओ सुय समाहिए।।३।।

चउव्विहा खलु तव समाही भवइ, तंजहा-णो इह लोगट्ठयाए तव-महिट्ठिज्जा[१], णो परलोगट्ठयाए तव -महिट्ठिज्जा[२], णों कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए तव -महिट्ठिज्जा[३], णण्णत्थ णिज्जरट्ठयाए तव-महिट्ठिज्जा[४]। चउत्थं पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो।

विविह गुण तवोरए य णिच्चं, भवइ णिरासए णिज्जरट्ठिए।
तवसा धुणेइ पुराण पावगं, जुत्तो सया तव समाहिए।।४।।

चउव्विहा खलु आयार समाही भवइ, तंजहा-णो

इहलोगट्ठयाए आयार-महिट्ठिज्जा[1], णोपरालोगट्ठयाए आयार -मिहिट्ठिज्जा[2],णो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए, आयार-महिट्ठिज्जा[3],णण्णत्थ अरिहंतेहिं हेऊहिं आयार -महिट्ठिज्जा[4], चउत्थं पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो।

जिणवयण-रए अतिंतिणे, पडिपुण्णाययमाययट्ठिए।
आयार समाहि-संवुडे, भवइ य दंते भावसंधए।।५।।
अभिगम-चउरो-समाहिओ, सुविसुद्धो सुसमाहिय-प्पओ।
विउल-हियं सुहावहं पुणो, कुव्वइ य सो पयखेम-मप्पणो।।६।।
जाइ-मरणाओ मुच्चइ, इत्थथं च चएइ सव्वसो।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महड्ढिए।।७।।त्तिबेमि।।

।। णवमं अज्झयणं समत्तं ।।९।।

।। सभिक्खू णामं दसममज्झयणं ।। १०।।

णिक्खम्म-माणाइ य बुद्धवयणे, निच्चं चित्त समाहिओ हविज्जा।
इत्थीण वसं ण यावि गच्छे, वंतं णो पडिआयइ जे स भिक्खू।।१।।
पुढविं ण खणे ण खणावए, सीओदगं ण पिए ण पियावए।
अगणिसत्थं जहा सुणिसियं, तं ण जले ण जलावए जे स भिक्खू।।२।।
अणिलेण ण वीए ण वीयावए, हरियाणि ण छिंदे ण छिंदावए।
बीयाणि सया विवज्जयंतो, सचित्तं णाहारए जे स भिक्खू।।३।।
वहणं तस थावराण होइ, पुढवी तण कट्ठ णिस्सियाणं।
तम्हा उद्देसियं ण भुंजे, णो वि पए ण पयावए जे स भिक्खू।।४।।
रोइअ णायपुत्त वयणे, अत्तसमे मण्णिज्ज छप्पिकाए।
पंच य फासे महव्वयाइं, पंचासव संवरे जे स भिक्खू।।५।।

चत्तारि वमे सया कसाए, धुवजोगी हविज्ज बुद्धवयणे।
अहणे णिज्जाय रूव-रयए, गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ।।६।।
सम्मदिट्ठी सया अमूढे, अत्थि हु णाणे तवे संजमे य।
तवसा धुणइ पुराण पावगं, मण वय काय सुसंवुडे जे स भिक्खू ।।७।।
तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमं साइमं लभित्ता।
होही अट्ठो सुए परे वा, तं ण णिहे ण णिहावए जे स भिक्खू ।।८।।
तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमं साइमं लभित्ता।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे, भुच्चा सज्झाय रए जे स भिक्खू ।।६।।
ण य वुग्गहियं कहं कहिज्जा, ण य कुप्पे णिहु-इंदिए पसंते।
संजमे धुवं जोगेण जुत्ते, उवसंते अविहेडए जे स भिक्खू ।।१०।।
जो सहइ उ गाम कंटए, अक्कोस पहार-तज्जणाओ य।
भय भेरव सद्द सप्पहासे, सम सुह-दुक्खसहे य जे स भिक्खू ।।११।।
पडिमं पडिवज्जिया मसाणे, णो भीयए भय भेरवाइं दिस्स।
विविह गुण तवो रए य णिच्चं, ण सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू ।।१२।।
असइं वोसट्ठ-चत्तदेहे, अक्कुट्ठे व हए लूसिए वा।
पुढवि-समे मुणी हविज्जा, अणियाणे अकोउहल्ले जे स भिक्खू ।।१३।।
अभिभूय काएण परिसहाइं, समुद्धरे जाइपहा उ अप्पयं।
विइत्तु जाई मरणं महब्भयं, तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ।।१४।।
हत्थसंजए पायसंजए, वायसंजए संज इंदिए।
अज्झप्प-रए सुसमाहि अप्पा, सुत्तत्थं च वियाणइ जे स भिक्खू ।।१५।।
उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे, अण्णाय-उंछं पुलणि-प्पुलाए।
कय विक्कय संणिहिओ विरए, सव्व संगावगए य जे स भिक्खू ।।१६।।
अलोलभिक्खू ण रसेसु गिज्झे, उंछं चरे जीविय-णाभिकंखे।
इड्ढिं च सक्कार पूयणं च, चए ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू ।।१७।।

ण परं वइज्जासि अयं कुसीले, जेणं च कुप्पिज्ज ण तं वइज्जा।
जाणिय पत्तेयं पुण्ण पावं, अत्ताणं ण समुक्करो जे स भिक्खू ॥१८॥
ण जाइमत्ते ण य रूवमत्ते, ण लाभमत्ते ण सुएण मत्ते।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाण रए जे स भिक्खू ॥१९॥
पवेयए अज्जपयं महामुणी, धम्मे ठिओ ठावयई परं पि।
निक्खम्म वज्जिज्ज कुसील लिंगं, ण यावि हासं कुहए जे स भिक्खू ॥२०॥
तं देहवासं असुइं असासयं, सया चए णिच्च हियट्ठि अप्पा।
छिंदित्तु जाई मरणस्स बंधणं, उवेइ भिक्खू अपुणरागमं गइं ॥२१॥

॥ सभिक्खू णामं दसमं अज्झयणं समत्तं ॥१०॥

॥ रइवक्क-चूलिया पढमा ॥१॥

इह खलु भो ! पव्वइएणं उप्पण्ण-दुक्खेणं संजमे अरइ-समावण्ण-चित्तेणं ओहाणु-प्पेहिणा अणोहाइएणं चेव हय-रस्सि-गयंकुस-पोय-पडागा भूयाइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडि-लेहियव्वाइं भवंति। तंजहा-

हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी[१] लहुसग्गा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा[२] भुज्जो य साइ-बहुला मणुस्सा[३]। इमे य मे दुक्खे ण चिर-कालोवट्ठाई भविस्सइ[४]ओमजण-पुरक्कारे[५] वंतस्स य पडिआइयणं[६] अहर-गइ-वासोवसंपया[७] दुल्लहे खलु भो! गिहीणं धम्मे गिहिवास मज्झे वसंताणं[८] आयंके से वहाय होइ[९] संकप्पे से वहाय होइ[१०] सोवक्केसे गिहिवासे, णिरुवक्केसे परियाए[११] बंधे गिहिवासे, मुक्खे परियाए[१२] सावज्जे गिहिवासे, अणवज्जे परियाए[१३] बहु साहारणा गिहिणंकामभोगा[१४] पत्तेयं पुण्ण पावं[१५] अणिच्चे खलु भो ! मणुयाण जीविए कुसग्ग-जलबिंदु-चंचले[१६] बहुं च खलु भो ! पावं कम्मं पगडं[१७] पावाणं च खलु भो!

कडाणं कम्माणं पुव्विं-दुच्चिण्णाणं दुप्पडि-कंताणं वेयइत्ता मुक्खो, णत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता[१८]। अट्ठारसमं पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो।

जया य चयइ धम्मं, अणज्जो भोगकारणा।
से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं णावबुज्झइ।।१।।
जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं।
सव्व-धम्म-परिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ।।२।।
जया य वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो।
देवया व चुया ठाणा, स पच्छा परितप्पइ।।३।।
जया य पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो।
राया य रज्ज पब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ।।४।।
जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो।
सेट्ठिव्व कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ।।५।।
जया य थेरओ होइ, समइक्कंत जुव्वणो।
मच्छुव्व गलं गिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ।।६।।
जया य कुकुडुम्बस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ।
हत्थी व बंधणे बद्धो, स पच्छा परितप्पइ।।७।।
पुत्तदार परिकिण्णो, मोह संताण संतओ।
पको सण्णो जहा णागो, स पच्छा परितप्पइ।।८।।
अज्ज अहं गणी हुंतो, भावियप्पां बहुस्सुओ।
जइऽहं रमंतो परियाए, सामण्णे जिणदेसिए।।९।।
देवलोग समाणो य, परियाओ महेसिणं।
रयाणं अरयाणं च, महाणरय सारिसो।।१०।।
अमरोवमं जाणिय सुक्ख-मुत्तमं,रयाणं परियाइं तहाऽरयाणं।
णिरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं, रमिज्ज तम्हा परियायपंडिए।।११।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

धम्माउ भट्टं सिरिओ अवेयं,जण्णग्गि विज्झाय-मिवऽप्पतेयं ।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला,दाढुड्ढियं घोरविसं व णागं ।।१२।।
इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती,दुण्णाम-धिज्जं च पिहुज्ज-णम्मि ।
चुयस्स धम्माउ अहम्म सेविणो,संभिण्ण वित्तस्स य हिट्ठओ गई ।।१३।।
भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा, तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं ।
गइं च गच्छे अणभिज्जियं दुहं,बोही य से णो सुल्लहा पुणो पुणो ।।१४।।
इमस्स ता णेरइयस्स जंतुणो, दुहोवणीयस्स किलेस-वत्तिणो ।
पलिओवमं झिज्झइ सागरोवमं,किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ।।१५।।
ण मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ, असासया भोगपिवास जंतुणो ।
ण च सरीरेण इमेणऽविस्सइ, अविस्सइ जीविय पज्जवेण मे ।।१६।।
जस्सेव-मप्पा उ हविज्ज णिच्छिओ,चइज्ज देहं ण हु धम्मसासणं ।
तं तारिसं णो पइलन्ति इंदिया, उविंति वाया व सुदंसणं गिरिं ।।१७।।
इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं णरो, आयं उवायं विविहं वियाणिया ।
काएण वाया अदु माणसेणं, तिगुत्ति गुत्तो जिणवयण-महिट्ठिज्जासि ।।१८।।

।। रइवक्क-पढमा चूलिया समत्ता ।।१।।

।। विवित्तचरिया बीया चूलिया ।।२।।

चूलियं तु पवक्खामि, सुयं केवलि भासियं ।
जं सुणित्तु सुपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जए मई ।।१।।
अणुसोय-पट्टिए बहुजणम्मि, पडिसोय-लद्ध-लक्खेणं ।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउ कामेणं ।।२।।
अणुसोय-सुहो लोओ, पडिसोओ आसवो सुविहियाणं ।
अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ।।३।।
तम्हा आयार परक्कमेणं, संवर-समाहि-बहुलेणं ।
चरिया गुणा य णियमा य, हुंति साहूण दट्ठव्वा ।।४।।

अणिएय वासो समुयाण-चरिया, अण्णाय उंछं पइरिक्कया य।
अप्पोवही कलह विवज्जणा य, विहार चरिया इसिणं पसत्था।।५।।
आइण्ण-ओमाण-विवज्जणा य, ओसण्ण- दिट्ठाहड -भत्तपाणे।
संसट्ठ कप्पेण चरिज्ज भिक्खू, तज्जाय संसट्ठ जई जइज्जा।।६।।
अमज्ज-मंसासि अमच्छरीया, अभिक्खणं णिव्विगइं गया य।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी, सज्झाय जोगे पयओ हविज्जा।।७।।
ण पडिण्ण-विज्जा सयणासणाइं, सिज्जं णिसिज्जं तह भत्तपाणं।
गामे कुले वा णगरे व देसे, ममत्तभावं ण कहिं पि कुज्जा।।८।।
गिहिणो वेयावडियं ण कुज्जा, अभिवायणं वंदणं-पूयणं वा।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसिज्जा, मुणी चरित्तस्स जओ ण हाणि।।६।।
ण वा लभेज्जा णिउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
इक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो।।१०।।
संवच्छरं वावि परं पमाणं, बीयं च वासं ण तहिं वसिज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ।।११।।
जो पुव्व-रत्तावर-रत्तकाले, संपेहए अप्पग-मप्पएणं।
किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं न समायरामि।।१२।।
किं मे परो पासइ किं च अप्पा, किंवाऽहं खलियं ण विवज्जयामि।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो, अणागयं णो पडिबंध कुज्जा।।१३।।
जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं।
तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा, आइण्णओ खिप्प-मिवक्खलीणं।।१४।।
जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स, धिइमओ सप्पुरिसस्स णिच्चं।
तमाहु लोए पडिबुद्ध जीवी, सो जीवइ संजम-जीविएणं।।१५।।
अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं-उवेइ, सुरक्खिओ सव्व दुहाण मुच्चइ।।१६।।

।। विवित्तचरिया बीया चूला समत्ता ।।२।।

।। इति दसवेआलिअं सुत्तं समत्तं ।।

श्री उत्तरज्झयणं-सुत्तं

।। विणयसुयं पढमं अज्झयणं ।।१।।

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
विणयं पाउ-करिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे।।१।।
आणा-णिद्देसकरे, गुरूण-मुववाय-कारए।
इंगियागार संपण्णे, से विणीए-त्ति वुच्चइ।।२।।
आणा-ऽणिद्देसकरे, गुरूण-मुववाय-कारए।
पडिणीए असंबुद्धे, अविणीए त्ति वुच्चइ।।३।।
जहा सुणी पूइ-कण्णी, णिक्क-सिज्जइ सव्वसो।
एवं दुस्सील-पडिणीए, मुहरी णिक्क-सिज्जइ।।४।।
कण-कुण्डगं चइत्ताणं, विट्ठं भुंजइ सूयरो।
एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्सीले रमइ मिए।।५।।
सुणिया-भावं साणस्स, सूयरस्स णरस्स य।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं, इच्छंतो हिय-मप्पणो।।६।।
तम्हा विणय-मेसिज्जा, सीलं पडि-लभेज्जओ।
बुद्ध-पुत्त णियागट्ठी, ण णिक्क-सिज्जइ कण्हुइ।।७।।
णिसंते सियाऽमुहरी, बुद्धाणं अंतिए सया।
अट्ठ जुत्ताणि सिक्खिज्जा, णिरट्ठाणि उ वज्जए।।८।।
अणुसासिओ ण कुप्पिज्जा, खंतिं सेविज्ज पण्डिए।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं, हासं कीडं च वज्जए।।९।।
मा य चण्डालियं कासी, बहुयं मा य आलवे।
कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगओ।।१०।।

आहच्च चण्डालियं कट्टु, ण णिण्हविज्ज कयाइवि।
कडं कडेत्ति भासेज्जा, अकडं णो कडेत्ति य।।११।।
मा गलियस्सेव कसं, वयण-मिच्छे पुणो-पुणो।
कसं व दट्ठु-माइण्णो, पावगं परिवज्जए।।१२।।
अणासवा थूलवया कुसीला, मिउंपि चण्डं पकरंति सीसा।
चित्ताणुया लहु दक्खोव-वेया, पसायए ते हु दुरासयंऽपि।।१३।।
णापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा णालियं वए।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा, धारेज्ज पिय मप्पियं।।१४।।
अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा-दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य।।१५।।
वरं मे अप्पा-दंतो, संजमेण तवेण य।
माऽहं परेहिं दम्मंतो, बंधणेहिं वहेहि य।।१६।।
पडिणीयं च बुद्धाणं, वाया अदुव कम्मुणा।
आवी वा जइ वा रहस्से, णेव कुज्जा कयाइ वि।।१७।।
ण पक्खओ ण पुरओ, णेव किच्चाण पिट्ठओ।
ण जुंजे उरुणा उरुं, सयणे णो पडिस्सुणे।।१८।।
णेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिण्डं च संजए।
पाए पसारिए वावि, ण चिट्ठे गुरूणंतिए।।१९।।
आयरिएहिं वाहित्तो, तुसिणीओ ण कयाइवि।
पसायपेही णियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरूं सया।।२०।।
आलवंते लवंते वा, ण णिसीएज्ज कयाइ वि।
चइऊण-मासणं धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे।।२१।।
आसण गओ ण पुच्छेज्जा, णेव सेज्जागओ कया-इवि।
आगम्मु-क्कुडुओ संतो, पुच्छिज्जा पंजलीउडो।।२२।।

एवं विणय-जुत्तस्स, सुत्तं अत्थं च तदुभयं।
पुच्छ-माणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहा सुयं ।।२३।।
मुसं परिहरे भिक्खू, ण य ओहारिणिं वए।
भासा-दोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ।।२४।।
ण लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, ण णिरट्ठं ण मम्मयं।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्स-ऽन्तरेणवा ।।२५।।
समरेसु अगारेसु, संधीसु य महापहे।
एगो एगित्थिए सद्धिं, णेव चिट्ठे ण संलवे ।।२६।।
जं मे बुद्धाणु सासंति, सीएण फरुसेण वा।
मम लाभोत्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ।।२७।।
अणु-सासण-मोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं।
हियं तं मण्णइ पण्णो, वेसं होइ असाहुणो ।।२८।।
हियं विगय-भया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासणं।
वेसं तं होइ मूढाणं, खंति सोहिकरं पयं ।।२९।।
आसणे उव-चिट्ठेज्जा, अणुच्चे अकुक्कुए थिरे।
अप्पुट्ठाई णिरुट्ठाई, णिसीएज्ज-ऽप्पकुक्कुए ।।३०।।
कालेण णिक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ।।३१।।
परिवाडीए ण चिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसणं चरे।
पडि-रूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ।।३२।।
णाइदूर-मणासण्णे, णाऽण्णेसिं चक्खु-फासओ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा, लंघित्ता तं णाऽइक्कमे ।।३३।।
णाइ-उच्चे व ण णीए वा, णासण्णे णाइ-दूरओ।
फासुयं परकडं पिण्डं, पडिगाहेज्ज संजए ।।३४।।

अप्प-पाणेऽप्प-बीयम्मि, पडिच्छण्णम्मि संवुडे।
समयं संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं ।।३५।।
सु-कडित्ति सु-पक्किकत्ति, सुच्छिण्णे सु-हडे मडे।
सु-णिट्ठिए सु-लट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ।।३६।।
रमए पंडिए सासं, हयं भद्दं व वाहए।
बालं सम्मइ सासंतो, गलियस्सं व वाहए ।।३७।।
खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहाय मे।
कल्लाण-मणु-सासंतो, पाव-दिट्ठित्ति मण्णइ ।।३८।।
पुत्तो मे भाय-णाइत्ति, साहू कल्लाण-मण्णइ।
पाव-दिट्ठि उ अप्पाणं, सासं दासित्ति मण्णइ ।।३९।।
ण कोवए आयरियं, अप्पाणंपि ण कोवए।
बुद्धो-वघाई ण सिया, ण सिया तोत्त-गवेसए ।।४०।।
आयरियं कुवियं णच्चा, पत्तिएण पसायए।
विज्झवेज्ज पंजलीउडो, वएज्ज ण पुणोत्ति य ।।४१।।
धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहिं आयरियं सया।
तमायरंतो ववहारं, गरहं णाभिगच्छइ ।।४२।।
मणोगयं वक्कगयं, जाणित्ता-ऽयरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ।।४३।।
वित्ते अचोइए णिच्चं, खिप्पं हवइ सुचोइए।
जहोव-इट्ठं सुकयं, किच्चाइं कुव्वइ सया ।।४४।।
णच्चा णमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए।
हवइ किच्चाणं सरणं, भूयाणं जगई जहा ।।४५।।
पुज्जा जस्स पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुआ।
पसण्णा लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ।।४६।।

स पुज्ज सत्थे सुविणिय-संसए, मणोरुई चिट्ठइ कम्म-संपया।
तवो-समायारी-समाहि-संवुडे, महज्जुई पंच वयाइं पालिया ।।४७।।
स देव-गंधव्व-मणुस्स पूइए, चइत्तु देहं मल-पंक-पुव्वयं।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए ।।४८।।

।। विणयसुयं णामं पढमं अज्झयणं समत्तं ।।१।।

।। दुइअं परिसहज्झयणं ।।२।।

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया। जे भिक्खू सोच्चा णच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो णो विणिहण्णेज्जा।

कयरे खलु ते बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा णच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो णो विणिहण्णेज्जा?

इमे खलु ते बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा णच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो णो विणिहण्णेज्जा तंजहा-दिगिंछा-परीसहे[१] पिवासा-परीसहे[२] सीयपरीसहे[३] उसिण-परीसहे[४] दंस-मसय-परीसहे[५] अचेल-परीसहे[६] अरइ-परीसहे[७] इत्थी-परीसहे[८] चरिया-परीसहे[९] णिसीहिया-परीसहे[१०] सेज्जा-परीसहे[११] अक्कोस-परीसहे[१२] वह-परीसहे[१३] जायणा-परीसहे[१४] अलाभ-परीसहे[१५] रोग-परीसहे[१६] तणफास-परीसहे[१७] जल्ल-परीसहे[१८] सक्कार-पुरक्कार-परीसहे[१९] पण्णा-परीसहे[२०] अण्णाण परीसहे[२१] दंसण-परीसहे[२२]

परीसहाणं पविभत्ति, कासवेणं पवेइया।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे।।१।।
दिगिंछा-परिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामवं।
ण छिंदे ण छिंदावए, ण पए ण पयावए।।२।।
काली-पव्वंग-संकासे, किसे धमणि-संतए।
मायण्णे असण-पाणस्स, अदीण-मणसो चरे।।३।।
तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुंछी लज्ज-संजए।
सीओदगं ण सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे।।४।।
छिण्णा-वाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए।
परिसुक्क मुहाऽदीणे, तं तितिक्खे परीसहं।।५।।
चरंतं विरयं लूहं, सीयं फुसइ एगया।
णाइवेलं मुणी गच्छे, सोच्चाणं जिण-सासणं।।६।।
ण मे णिवारणं अत्थि, छवित्ताणं ण विज्जइ।
अहं तु अग्गिं सेवामि, इइ भिक्खू ण चिंतए।।७।।
उसिणं परियावेणं, परिदाहेण तज्जिए।
घिंसु वा परियावेणं, सायं णो परिदेवए।।८।।
उण्हाहि-तत्तो मेहावी, सिणाणं णोऽवि पत्थए।
गायं णो परिसिंचेज्जा, ण वीएज्जा य अप्पयं।।६।।
पुट्ठो य दंस-मसएहिं, समरे व महामुणी।
णागो संगाम सीसे वा, सूरो अभिहणे परं।।१०।।
ण संतसे ण वारेज्जा, मणंऽपि ण पओसए।
उवेहे ण हणे पाणे, भुंजंते मंस-सोणियं।।११।।
परिजुण्णेहिं वत्थेहिं, होक्खामित्ति अचेलए।
अदुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खू ण चिंतए।।

एगयाऽचेलए होइ, सचेले यावि एगया।
एयं धम्मं-हियं णच्चा, णाणी णो परिदेवए ! ॥१३॥
गामाणुगामं रीयंतं, अणगारं अकिंचणं।
अरई अणुप्पवे-सेज्जा, तं तितिक्खे परीसहं ॥१४॥
अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आय-रक्खिए।
धम्मारामे णिरारम्भे, उवसंते मुणी चरे ॥१५॥
संगो एस मणुस्साणं, जाओ लोगम्मि इत्थिओ।
जस्स एया परिण्णाया, सुकडं तस्स सामण्णं ॥१६॥
एव-मादाय मेहावी, पंकभूया उ इत्थिओ।
णो ताहिं विणिहण्णेज्जा चरेज्ज-ऽत्तगवेसए ॥१७॥
एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे।
गामे वा णगरे वावि, णिगमे वा रायहाणीए ॥१८॥
असमाणो चरे भिक्खू, णेव कुज्जा परिग्गहं।
असंसत्तो गिहत्थेहिं, अणिएओ परिव्वए ॥१९॥
सुसाणे सुण्णगारे वा, रुक्ख-मूले व एगओ।
अकुक्कुओ णिसीएज्जा, ण य वित्तासए परं ॥२०॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभि धारए।
संका-भीओ ण गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अण्ण-मासणं ॥२१॥
उच्चा-वयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खु थामवं।
णाइवेलं विहण्णेज्जा, पाव-दिट्ठी विहण्णइ ॥२२॥
पइरिक्कुव-स्सयं लद्धुं, कल्लाणं अदुव पावयं।
किमेग राइं करिस्सइ, एवं तत्थ-ऽहियासए ॥२३॥
अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं, ण तेसिं पडिसंजले।
सरिसो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू ण संजले ॥२४॥

सोच्चाणं फरुसा भासा, दारुणा गाम-कंटगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा, ण ताओ मणसीकरे ।।२५।।
हओ ण संजले भिक्खू, मणंऽपि ण पओसए ।
तितिक्खं परमं णच्चा, भिक्खू धम्मं समायरे ।।२६।।
समणं संजयं दंतं, हणिज्जा कोइ कत्थइ ।
णत्थि जीवस्स णासुत्ति, एवं पेहेज्ज संजए ।।२७।।
दुक्करं खलु भो! णिच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइयं होइ, णत्थि किंचि अजाइयं ।।२८।।
गोयरग्ग-पविट्ठस्स, पाणी णो सुप्पसारए ।
सेओ अगार-वासुत्ति, इइ भिक्खू ण चिंतए ।।२६।।
परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिंडे अलद्धे वा, णाणु-तप्पेज्ज पंडिए ।।३०।।
अज्जेवाहं ण लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंचिक्खे, अलाभो तं ण तज्जए ।।३१।।
णच्चा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहट्ठिए ।
अदीणो ठावए पण्णं, पुट्ठो तत्थ-ऽहियासए ।।३२।।
तेगिच्छं णाभिणंदेज्जा, संचिक्ख-ऽत्तगवेसए ।
एवं खु तस्स सामण्णं, जं ण कुज्जा ण कारवे ।।३३।।
अचेलगस्स लूहस्स, संजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सय-माणस्स, हुज्जा गाय-विराहणा ।।३४।।
आयवस्स णिवाएणं, अउला हवइ वेयणा ।
एवं णच्चा ण सेवंति, तंतुजं तण तज्जिया ।।३५।।
किलिण्ण-गाए मेहावी, पंकेण वा रएण वा
घिंसु वा परियावेणं, सायं णो

वेएज्ज णिज्जरा-पेही, आरियं धम्म-ऽणुत्तरं।
जाव सरीर-भेउत्ति, जल्लं काएण धारए ।।३७।।
अभिवायण-मब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा णिमंतणं।
जे ताइं पडिसेवंति, ण तेसिं पीहए मुणी ।।३८।।
अणु-क्कसाई अप्पिच्छे, अण्णाएसी अलोलुए।
रसेसु णाणुगिज्झेज्जा, णाणुतप्पेज्ज पण्णवं ।।३९।।
से णूणं मए पुव्वं, कम्मा-ऽणाण-फला कडा।
जेणाहं णाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुइ ।।४०।।
अह पच्छा उइज्जंति, कम्मा-ऽणाण-फला कडा।
एवमस्सासि अप्पाणं, णच्चा कम्म-विवागयं ।।४१।।
णिरट्ठ-गम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो।
जो सक्खं णाभिजाणामि, धम्मं कल्लाण-पावगं ।।४२।।
तवोवहाण-मादाय, पडिमं पडिवज्जओ।
एवं वि विहरओ मे, छउमं ण णियट्टइ ।।४३।।
णत्थि णूणं परे लोए, इड्ढी वावि तवस्सिणो।
अदुवा वंचिओ-मित्ति, इइ भिक्खू ण चिंतए ।।४४।।
अभू-जिणा अत्थि-जिणा, अदुवा वि भविस्सइ।
मुसं ते एव-माहंसु, इइ भिक्खू ण चिंतए ।।४५।।
एए परीसहा सव्वे, कासवेणं पवेइया।
जे भिक्खू ण विहम्मेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुइ ।।४६।।

।। दुइअं परीसहज्झयणं समत्तं ।।२।।

।। चाउरंगिज्जं णामं तइयं अज्झयणं ।।३।।

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जंतुणो।
माणुसत्तं सुई लद्धा, संजमम्मि य वीरियं।।१।।
समावण्णा णं संसारे, णाणा गोत्तासु जाइसु।
कम्मा णाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभया पया।।२।।
एगया देवलोएसु, णरएसु वि एगया।
एगया आसुरं कायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ।।३।।
एगया खत्तिओ होइ, तओ चण्डाल बुक्कसो।
तओ कीड-पयंगो य, तओ कुंथु-पिवीलिया।।४।।
एवमावट्ट-जोणीसु, पाणिणो कम्म-किव्विसा।
ण णिविज्जंति संसारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया।।५।।
कम्म-संगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया बहु-वेयणा।
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो।।६।।
कम्माणं तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ।
जीवा सोहि-मणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं।।७।।
माणुस्सं विग्गहं लद्धुं, सुई धम्मस्स दुल्लहा।
जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंति-महिंसयं।।८।।
आहच्च सवणं लद्धुं, सद्धा परम दुल्लहा।
सोच्चा णेआउयं मग्गं, बहवे परिभस्सई।।९।।
सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं।
बहवे रोयमाणा वि, णो य णं पडिवज्जए।।१०।।
माणुसत्तम्मि आयाओ, जो धम्मं सोच्च सद्दहे।
तवस्सी वीरियं लद्धुं, संवुडे णिद्धुणे रयं।।११।।

सोही उज्जुय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ।
णिव्वाणं परमं जाइ, घयसित्तिव्व पावए ॥१२॥
विगिंच कम्मुणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए।
सरीरं पाढवं हिच्चा, उड्ढं पक्कमइ दिसं ॥१३॥
विसालिसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तर-उत्तरा।
महासुक्का व दिप्पंता, मण्णंता अपुण-च्चवं ॥१४॥
अप्पिया देवकामाणं, काम-रूव-विउव्विणो।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति, पुव्वा वाससया बहू ॥१५॥
तत्थ ठिच्चा जहा-ठाणं, जक्खा आउक्खए चुया।
उवेंति माणुसं जोणिं, से दसंगे-ऽभिजायइ ॥१६॥
खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पसवो दास-पोरुसं।
चत्तारि काम-खंधाणि, तत्थ से उववज्जइ ॥१७॥
मित्तवं णायवं होइ, उच्चगोए य वण्णवं।
अप्पायंके महा-पण्णे, अभिजाए जसोबले ॥१८॥
भोच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउयं।
पुव्विं विसुद्ध-सद्धम्मे, केवलं बोहि बुज्झिया ॥१९॥
चउरंगं दुल्लहं णच्चा, संजमं पडिवज्जिया।
तवसा धुय कम्मंसे, सिद्धे हवइ सासए ॥२०॥

॥ इति चाउरंगिज्जं णाम तइअं अज्झयणं समत्तं ॥३॥

।। चउत्थं असंखयं अज्झयणं ।।४।।

असंखयं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु णत्थि ताणं ।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते, किण्णु-विहिंसा अजया गहिंति ।।१।।
जे पाव-कम्मेहिं धणं मणूसा, समाययंति अमइं गहाय ।
पहाय ते पास-पयट्टिए णरे, वेराणुबद्धा णरयं उवेंति ।।२।।
तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण ण मोक्ख अत्थि ।।३।।
संसार-मावण्ण परस्स अट्ठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले, ण बंधवा बंधवयं उवेंति ।।४।।
वित्तेण ताणं ण लभे पमत्ते, इमम्मि लोए अदुवा परत्था ।
दीव-प्पणट्ठेव अणंत-मोहे, णेयाउयं दट्ठु-मदट्ठुमेव ।।५।।
सुत्तेसु यावि पडिबुद्ध-जीवी, ण वीससे पंडिए आसुपण्णे ।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं, भारंड-पक्खीव चरेऽप्पमत्ते ।।६।।
चरे पयाइं परिसंकमाणो, जं किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
लाभंतरे जीविय बूहइत्ता, पच्छा परिण्णाय-मलावधंसी ।।७।।
छंदं-णिरोहेण उवेइ मोक्खं, आसे जहा सिक्खिय वम्मधारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरेऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्प-मुवेइ मोक्खं ।।८।।
स पुव्वमेवं ण लभेज्ज पच्छा, एसोवमा सासय वाइयाणं ।
विसीयइ सिढिले आउयम्मि, कालोवणीए सरीरस्स भेए ।।६।।
खिप्पं ण सक्केइ विवेगमेउं, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोयं समया-महेसी, अप्पाण रक्खी चरेऽप्पमत्तो ।।१०।।
मुहुं मुहुं मोह-गुणे जयतं, अणेग-रूवा समणं चरंतं ।
फासा फुसंति असमंजसं च, ण तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ।।११।।

मंदा य फासा बहुलोहणिज्जा, तहप्पगारेसु मणं ण कुज्जा।
रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं, मायं ण सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ।।१२।।
जेऽसंखया तच्छ परप्पवाई, ते पिज्ज-दोसाणुगया परज्झा।
एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो, कंखे गुणे जाव सरीरभेए ।।१३।।

।। इति असंखयं णाम चउत्थं अज्झयणं समत्तं ।।४।।

।। अकाम मरणिज्जं पंचमं अज्झयणं ।।५।।

अण्णवंसि महोहंसि, एगे तिण्णे दुरुत्तरे।
तत्थ एगे महापण्णे, इमं पण्ह-मुदाहरे ।।१।।
संतिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मारणंतिया।
अकाम-मरणं चेव, सकाम-मरणं तहा ।।२।।
बालाणं तु अकामं तु, मरणं असइं भवे।
पंडियाणं सकामं तु, उक्कोसेण सइं भवे ।।३।।
तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं।
काम-गिद्धे जहा बाले, भिसं कूराइं कुव्वइ ।।४।।
जे गिद्धे काम-भोगेसु, एगे कूडाय गच्छइ।
ण मे दिट्ठे परे-लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ।।५।।
हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा णत्थि वा पुणो ।।६।।
जणेण सद्धिं होक्खामि, इइ बाले पगब्भई।
काम-भोगाणुराएणं, केसं संपडिवज्जइ ।।७।।
तओ से दंडं समारम्भइ, तसेसु थावरेसु य।
अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगामं विहिंसइ ।।८।।

हिंसे बाले मुसावाई, माइल्ले पिसुणे सढे।
भुंजमाणे सुरं मंसं, सेय-मे यंति मण्णइ ।।६।।
कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु।
दुहओ मलं संचिणइ, सिसुणागोव्व मट्टियं ।।१०।।
तओ पुट्ठो आयंकेणं, गिलाणो परितप्पइ।
पभीओ पर-लोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ।।११।।
सुया मे णरए ठाणा, असीलाणं च जा गई।
बालाणं कूर-कम्माणं, पगाढा जत्थ वेयणा ।।१२।।
तत्थोव-वाइयं ठाणं, जहा-मेय मणुस्सुयं।
आहाकम्मेहिं गच्छंतो, सो पच्छा परितप्पइ ।।१३।।
जहा सागडिओ जाणं, समं हिच्चा महापहं।
विसमं मग्ग-मोइण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयइ ।।१४।।
एवं धम्मं विउक्कम्म, अहम्मं पडिवज्जिया।
बाले मच्चुमुहं पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयइ ।।१५।।
तओ से मरणंतम्मि, बाले संतस्सइ भया।
अकाम-मरणं मरइ, धुत्तेव कलिणा जिए ।।१६।।
एयं अकाम-मरणं, बालाणं तु पवेइयं।
इत्तो सकाम-मरणं, पंडियाणं सुणेह मे ।।१७।।
मरणंपि स-पुण्णाणं, जहा-मेयऽमणुस्सुयं।
विप्पसण्ण-मणाघायं, संजयाणं वुसीमओ ।।१८।।
ण इमं सव्वेसु भिक्खूसु, ण इमं सव्वेसु-ऽगारिसु।
णाणा-सीला अगारत्था, विसम-सीला य भिक्खुणो ।।१६।।
संति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था संजमुत्तरा।
गारत्थेहिं य सव्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा ।।२०।।

चीराजिणं णगिणिणं, जडी संघाडि मुंडिणं।
एयाणि वि ण तायंति, दुस्सीलं परियागयं ।।२१।।
पिंडो-लएव दुस्सीले, णरगाओ ण मुच्चइ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुव्वए कम्मई दिवं ।।२२।।
अगारि सामा-इयंगाइं, सड्ढी काएण फासए।
पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं ण हावए ।।२३।।
एवं सिक्खा-समावण्णे, गिहि-वासे वि सुव्वए।
मुच्चइ छवि-पव्वाओ, गच्छे जक्खस्स-लोगयं ।।२४।।
अह जे संवुडे भिक्खू, दोण्ह-मण्णयरे सिया।
सव्व-दुक्ख-प्पहीणे वा, देवे वावि महिड्ढिए ।।२५।।
उत्तराइं, विमोहाइं, जुई-मंताऽणु पुव्वसो।
समाइण्णाइं जक्खेहिं, आवासाइं जससिणो ।।२६।।
दीहाउया इड्ढिमंता, समिद्धा काम-रुविणो।
अहुणोव-वण्ण-संकासा, भुज्जो अच्चिमालि-प्पभा ।।२७।।
ताणि ठाणाणि गच्छंति, सिक्खित्ता संजमं तवं।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, जे संति परिणिव्वुडा ।।२८।।
तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं, संजयाणं-वुसीमओ।
ण संत-संति मरणंते, सीलवंता बहुस्सुया ।।२९।।
तुलिया विसेस-मादाय, दया-धम्मस्स खंतिए।
विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ।।३०।।
तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिस मंतिए।
विणएज्ज लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए ।।३१।।
अह कालम्मि संपत्ते, आघायाय समुस्सयं।
सकाम-मरणं मरइ, तिण्ह-मण्णयरं मुणी ।।३२।।

।। अकाम मरणिज्जं णामं पंचमं अज्झयणं समत्तं ।।५।।

।। खुड्डाग णियंठिज्जं छट्ठं अज्झयणं ।।६।।

जावंत-ऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्ख संभवा।
लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए।।१।।
समिक्ख पंडिए तम्हा, पास-जाइपहे बहू।
अप्पणा सच्च-मेसेज्जा, मित्तिं भूएसु कप्पए।।२।।
माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा।
णालं ते मम ताणाए, लुप्प-तस्स सकम्मुणा।।३।।
एयमट्ठं सपेहाए, पासे समिय-दंसणे।
छिंदे गेहिं सिणेहं च, ण कंखे पुव्व-संथवं।।४।।
गवासं मणि-कुण्डलं, पसवो दास-पोरुसं।
सव्वमेयं चइत्ताणं, काम-रूवी भविस्ससि।।५।।
थावरं जंगमं चेव, धणं-धन्नं उवक्खरं।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं, णालं दुक्खाउ मोयणे।।६।।
अज्झत्थं सव्वओ सव्वं, दिस्स पाणे पियायए।
ण हणे पाणिणो पाणे, भय-वेराओ उवरए।।७।।
आयाणं णरयं दिस्स, णायएज्ज तणामवि।
दोगुंछी अप्पणो पाए, दिण्णं भुंजेज्ज भोयणं।।८।।
इहमेगे उ मण्णंति, अप्पच्चक्खाय पावगं।
आयरियं विदित्ताणं, सव्व-दुक्खाण वि मुच्चइ।।९।।
भणंता अकरेंता य, बंध-मोक्ख-पइण्णिणो।
वाया-विरिय-मित्तेण, समासासेंति अप्पयं।।१०।।
ण चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणु-सासणं।
विसण्णा-पाव-कम्मेहिं, बाला पंडिय-माणिणो।।११।।

जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो।
मणसा काय-वक्केणं, सव्वे ते दुक्ख-सम्भवा ।।१२।।
आवण्णा दीह-मद्धाणं, संसारम्मि अणंतए।
तम्हा सव्व-दिसं पस्सं, अप्पमत्तो परिव्वए ।।१३।।
बहिया उड्ढ-मादाय, णावकंखे कयाइवि।
पुव्व-कम्म-क्खयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे ।।१४।।
विविच्च कम्मुणो हेउं, कालकंखी परिव्वए।
मायं पिंडस्स पाणस्स, कडं लद्धूण भक्खए ।।१५।।
सण्णिहिं च ण कुविज्जा, लेव-मायाए संजए।
पक्खी-पत्तं समादाय, णिरवेक्खो परिव्वए ।।१६।।
एसणा-समिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिण्ड-वायं गवेसए ।।१७।।
एवं से उदाहु अणुत्तर-णाणी, अणुत्तर-दंसी अणुत्तर-णाणं दंसण-धर।
अरहा णायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए ।।१८।।

।। खुड्डाग णियंठिज्जं णामं छट्ठं अज्झयणं समत्तं ।।६।।

।। एलयं सत्तमं अज्झयणं ।।७।।

जहाऽऽएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं।
ओयणं जवसं देज्जा, पोसेज्जावि सयंगणे ।।१।।
तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोयरे।
पीणिए विउले देहे, आएसं परिकंखए ।।२।।
जाव ण एइ आएसे, ताव जीवइ से दुही।
अह पत्तम्मि आएसे, सीसं छेत्तूण भुज्जइ ।।३।।
जहा से खलु ओरब्भे, आए साए समीहिए।
एवं बाले अहम्मिट्ठे, ईहई णरयाउयं ।।४।।

हिंसे बाले मुसावाई, अद्धाणंमि विलोवए ।
अण्ण-दत्तहरे तेणे, माई कण्णु हरे सढे ।।५।।
इत्थी-विसय-गिद्धे य, महारंभ-परिग्गहे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं, परिवूढे परं-दमे ।।६।।
अय-कक्कर भोई य, तुंदिल्ले चिय-लोहिए ।
आउयं णरए कंखे, जहाऽऽएसं व एलए ।।७।।
आसणं सयणं जाणं, वित्तं कामे य भुंजिया ।
दुस्साहडं धणं हिच्चा, बहुं संचिणिया रयं ।।८।।
तओ कम्मगुरू जंतू, पच्चुप्पण्ण-परायणे ।
अयव्व आगया-एसे, मरणंतम्मि सोयइ ।।९।।
तओ आउ-परिक्खीणे, चुयादेहा विहिंसगा ।
आसुरीयं दिसं बाला, गच्छंति अवसा तमं ।।१०।।
जहा कागिणिए हेउं, सहस्सं हारए णरो ।
अपत्थं अम्बगं भोच्चा, राया रज्जं तु हारए ।।११।।
एवं माणुस्सगा कामा, देव कामाण अंतिए ।
सहस्स-गुणिया भुज्जो, आउं कामा य दिव्विया ।।१२।।
अणेग-वासा-ण उया, जा सा पण्णवओ ठिई ।
जाइं जीयंति दुम्मेहा, ऊणे-वास-सयाउए ।।१३।।
जहा य तिण्णि वाणिया, मूलं घेत्तूण णिग्गया ।
एगोऽत्थ लहइ लाभं, एगो मूलेण आगओ ।।१४।।
एगो मूलंवि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ ।
ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ।।१५।।
माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे ।
मूल-च्छेएण जीवाणं, णरग-तिरिक्खत्तणं धुवं ।।१६।।

दुहओ गई बालस्स, आवइ वह-मूलिया ।
देवत्तं माणुसत्तं च, जं जिए लोलयासढे ।।१७।।
तओ जिए सइं होइ, दुविहं दुग्गइं गए ।
दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए सुचिरायवि ।।१८।।
एवं जियं संपेहाए, तुलिया बालं च पंडियं ।
मूलियं ते पवेसंति, माणुस्सं जोणि-मेंति जे ।।१९।।
वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे णरा गिहि-सुव्वया ।
उवेंति माणुसं जोणिं, कम्म सच्चा हु पाणिणो ।।२०।।
जेसिं तु विउला सिक्खा, मूलियं ते अइच्छिया ।
सीलवंता सविसेसा, अदीणा जंति देवयं ।।२१।।
एव-मद्दीणवं भिक्खू, अगारिं च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्च-मेलिक्खं, जिच्चा माणो ण संविदे ।।२२।।
जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण समं-मिणे ।
एवं माणुसग्गा कामा, देव-कामाण अंतिए ।।२३।।
कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सण्णि-रुद्धम्मि आउए ।
कस्स हेउं पुरा-काउं, जोग-क्खेमं ण संविदे ।।२४।।
इह कामाणि-यट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झइ ।
सोच्चा णेयाउयं मग्गं, जं भुज्जो परिभस्सइ ।।२५।।
इह काम-णियट्टस्स, अत्तट्ठे णावरज्झइ ।
पूइदेह-णिरोहणं, भवे देवेत्ति मे सुयं ।।२६।।
इड्ढी जुई जसो वण्णो, आउं सुहमणुत्तरं ।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जइ ।।२७।।
बालस्स पस्स बालत्तं, अहम्मं पडिवज्जिया ।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे, णरए उववज्जइ ।।२८।।

धीरस्स पस्स धीरत्तं, सव्व-धम्माणु-वत्तिणो।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जइ ।।२६।।
तुलियाण बालभावं, अबालं चेव पंडिए।
चइऊण बालभावं, अबालं सेवए मुणी ।।३०।।

।। एलयं णामं सत्तमं अज्झयणं समत्तं ।।७।।

।। काविलीयं अट्ठमं अज्झयणं ।।८।।

अधुवे असास-यम्मि, संसारम्मि दुक्ख पउराए।
किं णाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाहं दुग्गइ ण गच्छेज्जा? ।।१।।
विजहित्तु पुव्व संजोगं, ण सिणेहं कहिं वि कुव्वेज्जा।
असिणेह-सिणेह-करेहिं, दोस पओसेहिं मुच्चए भिक्खू ।।२।।
तो णाण-दंसण-समग्गो, हिय-णिस्सेसाय सव्व-जीवाणं।
तेसिं विमोक्खण-ट्ठाए, भासइ मुणिवरो विगय-मोहो ।।३।।
सव्वं गन्थं कलहं च, विप्पजहे तहा-विहं भिक्खू।
सव्वेसु काम-जाएसु, पासमाणो ण लिप्पई ताई ।।४।।
भोगा-मिस-दोस-विसण्णे, हिय-णिस्सेयस बुद्धि-वोच्चत्थे।
बाले य मंदिए मूढे, बज्झइ मच्छिया व खेलम्मि ।।५।।
दु-प्परिच्चया इमे कामा, णो सुजहा अधीर-पुरिसेहिं।
अह संति सुव्वया साहू, जे तरंति अतरं वणिया व ।।६।।
समणामु-एगे वयमाणा, पाणवहं मिया अयाणंता।
मंदा णरयं गच्छंति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ।।७।।
ण हु पाण-वहं अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्व-दुक्खाणं।
एव-मायरिएहिं अक्खायं, जेहिं इमो साहु-धम्मो पण्णत्तो ।।८।।
पाणे य णाइवाएज्जा, से समिइ त्ति वुच्चइ ताई।
तओ से पावयं कम्मं, णिज्जाइ उदगं व थलाओ ।।६।।

जग-णिस्सिएहिं भूएहिं, तस-णामेहिं थावरेहिं च।
णो तेसि-मारंभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव ।।१०।।
सुद्धेसणाओ णच्चाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घास मेसेज्जा, रस-गिद्धे ण सिया भिक्खाए ।।११।।
पंताणि चेव सेवेज्जा, सीय पिंडं पुराण-कुम्मासं।
अदु बुक्कसं पुलागं वा, जवणट्ठाए णिसेवए मूथुं ।।१२।।
जे लक्खणं च सुविणं च, अंग विज्जं च जे पउंजंति।
ण हु ते समणा वुच्चंति, एवं आयरिएहिं अक्खायं ।।१३।।
इह जीवियं अणियमेत्ता, पब्भट्ठा समाहि-जोएहिं।
ते काम-भोग-रस-गिद्धा, उववज्जंति आसुरे काए ।।१४।।
तत्तोऽवि य उव्वट्टित्ता, संसारं बहुं अणुपरियडंति।
बहु-कम्म-लेव-लित्ताणं, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ।।१५।।
कसिणं वि जो इमं लोयं, पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स।
तेणावि से ण संतुस्से, इइ दुप्पू-रए इमे आया ।।१६।।
जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढइ।
दो-मासकयं कज्जं, कोडीए वि ण णिट्ठियं ।।१७।।
णो रक्खसीसु गिज्झेज्जा, गंड-वच्छासु-ऽणेग-चित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता, खेल्लंति जहा व दासेहिं ।।१८।।
णारीसु णोव-गिज्झेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणगारे।
धम्मं च पेसलं णच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ।।१९।।
इइ एस धम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्ध पण्णेणं।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति, तेहिं आराहिया दुवे लोग ।।२०।।

।। काविलीयं णामं अट्ठमं ज्झयणं समत्तं ।।८।।

।। णवमं णमिपवज्जा अज्झयणं ।। ६।।

चइऊण देव-लोगाओ, उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि ।
उवसंत-मोहणिज्जो, सरइ पोराणियं जाइं ।।१।।
जाइं सरित्तु भयवं, सयं-संबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमइ णमी राया ।।२।।
सो देवलोग-सरिसे, अंतेउर-वरगओ वरे भोए ।
भुंजित्तु णमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ।।३।।
मिहिलं सपुर-जणवयं, बल-मोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिणिक्खंतो, एगंत-महिट्ठिओ भयवं ।।४।।
कोलाहलग-संभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयंतम्मि ।
तइया राय-रिसिम्मि, णमिम्मि अभिणिक्ख मंतम्मि ।।५।।
अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पंवज्जा ठाण-मुत्तमं ।
सक्को माहण-रूवेण, इमं वयण-मब्बवी ।।६।।
किण्णु-भो! अज्ज मिहिलाए कोलाहलग-संकुला ।
सुव्वंति दारूणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ।।७।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इण-मब्बवी ।।८।।
मिहिलाए चेइए वच्छे, सीय-च्छाए मणोरमे ।
पत्त-पुप्फ-फलोवेए, बहूणं बहु-गुणे सया ।।६।।
वाएण हीर-माणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कन्दंति भो खगा ।।१०।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ कारण चोइओ ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इण-मब्बवी ।।११।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं ।
भयवं अंतेउरं तेणं, कीस णं णाव-पेक्खह ।।१२।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इण-मब्बवी ।।१३।।
सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो णत्थि किंचणं ।
मिहिलाए डज्झ-माणीए, ण मे डज्झइ किंचणं ।।१४।।
चत्त-पुत्त-कलत्तस्स, णिव्वा-वारस्स भिक्खुणो ।
पियं ण विज्जइ किंचि, अप्पियं वि ण विज्जइ ।।१५।।
बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंत-मणुपस्सओ ।।१६।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इण-मब्बवी ।।१७।।
पागारं कारइत्ताणं, गोपुर-ट्टालगाणि य ।
उस्सूलग सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ।।१८।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इण-मब्बवी ।।१९।।
सद्धं णगरं किच्चा, तव संवर-मग्गलं ।
खंतिं णिउण-पागारं, तिगुत्तं दुप्प धंसयं ।।२०।।
धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमंथए ।।२१।।
तव णाराय जुत्तेण, भित्तूणं कम्म-कंचुयं ।
मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए ।।२२।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
ओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इण-मब्बवी ।।२३।।

पासाए कारइत्ताणं, वद्ध-माण-गिहाणि य ।
वालग्ग-पोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ।।२४।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।२५।।
संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं ।
जत्थेव गंतु-मिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ।।२६।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इण मब्बवी ।।२७।।
आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे ।
णगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ।।२८।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इण-मब्बवी ।।२९।।
असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा-दंडो पजुंजइ ।
अकारिणो ऽत्थ वज्झंति, मुच्चई कारओ जणो ।।३०।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।।३१।।
जे केइ पत्थिवा तुज्झं, णाणमंति णराहिवा ।
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ।।३२।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।३३।।
जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ।।३४।।
अप्पाण-मेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
अप्पणामेव-मप्पाणं, जिणित्ता सुहमेहए ।।३५।।

पंचिंदियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वं अप्पे जिए जियं ॥३६॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इण-मब्बवी ॥३७॥
जइत्ता विउले जण्णे, भोइत्ता समण-माहणे ।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥३८॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इण-मब्बवी ॥३९॥
जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ, अदितस्स-ऽवि किंचणं ॥४०॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इण-मब्बवी ॥४१॥
घोरासमं चइत्ताणं, अण्णं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसह-रओ, भवाहि मणुयाहिवा ॥४२॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इण-मब्बवी ॥४३॥
मासे मासे उ जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए ।
ण सो सुयक्खाय धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥४४॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इण-मब्बवी ॥४५॥
हिरण्णं सुवण्णं मणि-मुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं ।
कोसं वड्ढा वइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥४६॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इण-मब्बवी ॥४७॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

सुवण्ण-रूव्वस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलास समा असंखया ।
णरस्स लुद्धस्स ण तेहिं किंचि, इच्छा हु आगास समा अणंतिया ।।४८।।
पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं णाल-मेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ।।४९।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इण-मब्बवी ।।५०।।
अच्छेरग-मब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा ।
असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि ।।५१।।
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इण-मब्बवी ।।५२।।
सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसी-विसोवमा ।
कामे भोए पत्थेमाणा, अकामा जंति दोग्गइं ।।५३।।
अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गइ ।
माया गई-पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं ।।५४।।
अवउज्झिऊण माहण रूवं, विउव्विऊण ईंदत्तं ।
वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ।।५५।।
अहो ते णिज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
अहो ते णिरक्किया माया, अहो लोहो वसीकओ ।।५६।।
अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ।।५७।।
इहंसि उत्तमो भंते, पेच्छा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्त-मुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि णीरओ ।।५८।।
एवं अभित्थुणंतो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए ।
पयाहिणं करेंतो, पुणो पुणो वंदइ सक्को ।।५९।।

तो वंदिऊण पाए, चक्कंकुस लक्खणे मुणिवरस्स।
आगासेणु-प्पइओ, ललिय-चवल-कुंडल-तिरीडी ॥६०॥
णमी णमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं च वे देही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से णमी रायरिसी ॥६२॥

॥ णमिपव्वज्जा णामं णवमं अज्झयणं समत्तं ॥९॥

॥ दुमपत्तयं दसमं अज्झयणं ॥१०॥

दुम-पत्तए पंडुयए जहा, णिवडइ राइ-गणाण अच्चए।
एवं मणुयाणं जीवियं, समयं गोयम! मा पमायए॥१॥
कुसग्गे जह ओस-बिंदुए, थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए।
एवं मणुयाणं जीवियं, समयं गोयम! मा पमायए॥२॥
इइ इत्तरि-यम्मि आउए, जीवियए बहु-पच्चवायए।
विहुणाहि रयं पुरे कडं, समयं गोयम! मा पमायए॥३॥
दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिर कालेण वि सव्व पाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो, समयं गोयम! मा पमायए॥४॥
पुढवि-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए॥५॥
आउ-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए॥६॥
तेउ-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए॥७॥
वाउ-काय मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए॥८॥

卐 卐

वणस्सइ-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
काल-मणंत-दुरंतं, समयं गोयम ! मा पमायए।।६।।
बेइंदिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं-संखिज्ज-सण्णियं, समयं गोयम ! मा पमायए।।१०।।
तेइंदिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
काल संखिज्ज-सण्णियं, समयं गोयम ! मा पमायए।।११।।
चउरिंदिय काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्ज-सण्णियं, समयं गोयम ! मा पमायए।।१२।।
पंचिंदिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
सत्तट्ठ-भव-गहणे, समयं गोयम ! मा पमायए।।१३।।
देवे णेरईए य अइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
इक्केक्क-भव-गहणे, समयं गोयम ! मा पमायए।।१४।।
एवं भव-संसारे, संसरइ सुहा-सुहेहिं कम्मेहिं।
जीवो पमाय-बहुलो, समयं गोयम ! मा पमायए।।१५।।
लद्धूणवि माणुसत्तणं, आयरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं।
बहवे दसुया मिलेक्खुया, समयं गोयम ! मा पमायए।।१६।।
लद्धूणवि आयरियत्तणं, अहीण पंचिंदिय या हु दुल्लहा।
विगलिंदिय या हु दीसइ, समयं गोयम ! मा पमायए।।१७।।
अहीण पंचिंदियत्तं वि से लहे, उत्तम-धम्मसुई हु दुल्लहा।
कुतित्थि-णिसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायए।।१८।।
लद्धूण वि उत्तमं सुइं, सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा।
मिच्छत्त-णिसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायए।।१६।।
धम्मंवि हु सद्दहंतया, दुल्लहया काएण फासया।
इह काम-गुणेहिं मुच्छिया, समयं गोयम ! मा पमायए।।२०।।

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से सोय-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२१।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से चक्खु-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२२।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से घाण-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२३।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवंति ते।
से जिब्भ-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२४।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से फ़ास-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२५।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से सव्व-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२६।।
अरई गंडं विसूइया, आयंका विविहा फुसंति ते।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२७।।
वुच्छिंद सिणेह-मप्पणो, कुमुयं सारइयं व पाणियं।
से सव्व-सिणेह-वज्जिए, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२८।।
चिच्चाण धणं अ भारियं, पव्वइओ हि सि अणगारियं।
मा वंतं पुणोवि आविए, समयं गोयम! मा पमायए ।।२९।।
अवउज्झिय मित्त-बंधवं, विउलं चेव धणोह-संचयं।
मा तं बिइयं गवेसए, समयं गोयम! मा पमायए ।।३०।।
ण हु जिणे अज्ज दीसइ, बहुमए दीसइ मग्गदेसिए।
संपइ णेयाउए पहे, समयं गोयम! मा पमायए ।।३१।।
अवसोहियं कंटगा पहं, ओइण्णोऽसि पहं महालयं।
गच्छसि मग्गं विसोहिया, समयं गोयम! मा पमायए ।।३२।।

अबले जह भार-वाहए, मा मग्गे विसमे-ऽवगाहिया।
पच्छा पच्छाणुतावए, समयं गोयम! मा पमायए ।।३३।।
तिण्णो हु सि अण्णवं महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर पारं गमित्तए, समयं गोयम! मा पमायए ।।३४।।
अकलेवर सेणि मूसिया, सिद्धिं गोयम! लोयं गच्छसि।
खेमं च सिवं अणुत्तरं, समयं गोयम! मा पमायए ।।३५।।
बुद्धे परि-णिव्वुडे चरे, गाम गए णगरे व संजए।
संति-मग्गं च बूहए, समयं गोयम! मा पमायए ।।३६।।
बुद्धस्स णिसम्म भासियं, सुकहिय-मट्ठपओव-सोहियं।
रागं दोसं च छिंदिया, सिद्धिगइं गए गोयमे ।।३७।।

।। दुमपत्तयं णामं दसमं ज्झयणं समत्तं ।।१०।।

।। बहुस्सुयपुज्जं एगारसं अज्झयणं ।।११।।

संजोगा विप्प-मुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
आयारं पाउ-करिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ।।१।।
जे यावि होइ णिव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
अभिक्खणं उल्लवई, अविणीए अबहुस्सुए ।।२।।
अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा ण लब्भइ।
थंभा कोहा पमाएणं, रोगे-णालस्सएण य ।।३।।
अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खा सीलेत्ति वुच्चइ।
अहस्सिरे सया दंते, ण य मम्म-मुदाहरे ।।४।।
णासीले ण विसीले, ण सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए, सिक्खा-सीलेत्ति वुच्चइ ।।५।।
अह चउदसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ संजए।
अविणीए वुच्चइ सो उ, णिव्वाणं च ण गच्छइ ।।६।।

अभिक्खणं कोही हवइ, पबंधं च पकुव्वइ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुयं लद्धूण-मज्जइ ॥७॥
अवि पाव-परिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पइ।
सु प्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावयं ॥८॥
पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अवियत्ते, अविणीए त्ति वुच्चइ ॥६॥
अह पण्णरसहिं ठाणेहिं सुविणीएत्ति वुच्चइ।
णीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ॥१०॥
अप्पं च अहिक्खिवइ, पबंधं च ण कुव्वइ।
मेत्तिज्जमाणो भयइ, सुयं लद्धुं ण मज्जइ ॥११॥
ण य पाव-परिक्खेवी, ण य मित्तेसु कुप्पइ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासइ ॥१२॥
कलह-डमर-वज्जिए, बुद्धे अभिजाइए।
हिरिमं पडिसंलीणे, सुविणीए त्ति वुच्चइ ॥१३॥
वसे गुरुकुले णिच्चं, जोगवं उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धु-मरिहइ ॥१४॥
जहा संखम्मि पयं, णिहियं दुहओ वि विरायइ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥१५॥
जहा से कंबोयाणं, आइण्णे कंथए सिया।
आसे जवेण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१६॥
जहाइण्णा समारूढे, सूरे दढ-परक्कमे।
उभओ णंदि-घोसेणं, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१७॥
जहा करेणु-परिकिण्णो, कुंजरे सट्ठिहायणे।
बलवंते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१८॥

जहा से तिक्खसिंगे जायखंधे विरायइ।
वसहे जूहाहि-वई, एवं हवइ बहुस्सुए ।।१६।।
जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए।
सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२०।।
जहा से वासुदेवे, संख-चक्क-गदा-धरे।
अप्पडिहय-बले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२१।।
जहा से चाउरंते, चक्कवट्टी-महिड्ढिए।
चोद्दस रयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२२।।
जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२३।।
जहा से तिमिर-विद्धंसे, उत्तिट्ठंते दिवायरे।
जलंते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२४।।
जहा से उड्डुवई चंदे, णक्खत्त-परिवारिए।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२५।।
जहा से सामाइयाणं, कोट्ठागारे सुरक्खिए।
णाणा-धण्ण-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२६।।
जहा सा दुमाण पवरा, जंबू णाम सुदंसणा।
अणाढियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२७।।
जहा सा णईण पवरा, सलिला सागरं-गमा।
सीया णीलवंत-पवहा, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२८।।
जहा से णगाण पवरे, सुमहं मंदरे गिरी।
णाणोसहि-पज्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए ।।२६।।
जहा से सयंभू-रमणे, उदही अक्खओदए।
णाणा-रयण-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ।।३०।।

समुद्द-गम्भीर-समा दुरासया,अचक्किया केणइ दुप्पहंसया।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो,खवित्तु कम्मं गइ मुत्तमं गया ।।३१।
तम्हा सुय-महिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठ गवेसए।
जेणऽप्पाणं परं चेव, सिद्धिं संपाउणेज्जासि ।।३२।

।। बहुस्सुय पुज्जं णामं एगारसमज्झयणं समत्तं ।।११।।

।। हरिएसिज्जं णामं दुवालसमं अज्झयणं ।। १२।।

सोवाग-कुल-संभूओ, गुणुत्तर धरो मुणी।
हरिएस-बलो णाम, आसि भिक्खू जिइंदिओ ।।१।
इरि-एसण-भासाए, उच्चार-सिमिईसु य।
जओ आयाण-णिक्खेवे, संजओ सुसमाहिओ ।।२।
मण-गुत्तो वय-गुत्तो, काय-गुत्तो जिइंदिओ।
भिक्खट्ठा बम्भ-इज्जम्मि, जण्णवाडे उवट्ठिओ ।।३।।
तं पासिऊणं एज्जंतं, तवेण परिसोसियं।
पंतोवहि उवगरणं, उवहसंति अणारिया ।।४।।
जाईमय-पडिथद्धा, हिंसगा अजिइंदिया।
अबम्भ-चारिणो बाला, इमं वयण-मब्बवी ।।५।।
कयरे आगच्छइ दित्त-रूवे, काले विकराले फोक्कणासे।
ओमचेलए पंसु-पिसायभूए, संकर दूसं परिहरिय कंठे ।।६।।
कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे, काए व आसा-इह-मागओसि।
ओमचेलया पंसु-पिसायभूया, गच्छ-क्खलाहि किमिहं ठिओसि ।।७।।
जक्खे तहिं तिंदुय-रुक्खवासी, अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स।
पच्छाय-इत्ता णियगं सरीरं, इमाइं वयणाइ-मुदाहरित्था ।।८।।
समणो अहं संजओ बम्भयारी, विरओ धण-पयण-परिग्गहाओ।
पर प्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अण्णस्स अट्ठा इह-मागओमि ।।९।।

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य, अण्णं पभूयं भवयाण-मेयं ।
जाणाहि मे जायण जीविणुत्ति, सेसाव-सेसं लहऊ तवस्सी ।।१०।।
उवक्खडं भोयण माहणाणं, अत्तट्ठियं सिद्ध-मिहेग पक्खं ।
ण उ वयं एरिस-मण्णपाणं दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओसि ।।११।।
थलेसु बीयाइं ववंति कासगा, तहेव णिण्णेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह-मज्झं, आराहाए पुण्ण-मिणं खु खित्तं ।।१२।।
खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहंति पुण्णा ।
जे माहणा जाइ विज्जोव-वेया, ताइं तु खेत्ताइं सु पेसलाइं ।।१३।।
कोहो य माणो य वहो य जेसिं, मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।
ते माहणा जाइ विज्जा विहूणा, ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ।।१४।।
तुब्भेत्थ भो! भार धरा गिराणं, अट्ठं ण जाणेह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइं मुणिणो चरंति, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ।।१५।।
अज्झा-वयाणं पडिकूलभासी, पभास से किंणु सगासि अम्हं? ।
अवि एयं विणस्सउ अण्ण पाणं, ण य णं दाहामु तुमं णियण्ठा ।।१६।।
समिईहिं मज्झं सुसमाहि-यस्स, गुत्तीहि गुत्तस्स जिइंदियस्स ।
जइ मे ण दाहित्थ अहेसणिज्जं, किमज्ज जण्णाण लहित्थ लाहं ।।१७।।
के इत्थ खत्ता उवजोइया वा, अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
एयं खु दण्डेण फलेएण हंता, कंठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ।।१८।।
अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता, उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दंडेहिं वित्तेहिं कसेहिं चेव, समागया तं इसिं तालयंति ।।१६।।
रण्णो तहिं कोसलियस्स धूया, भद्दत्ति णामेण अणिंदियंगी ।
तं पासिया संजय हम्ममाणं; कुद्धे कुमारे परिणिव्ववेइ ।।२०।।
देवाभिओगेण णिओइएणं, दिण्णामु रण्णा मणसा ण झाया ।
णरिंद देविंदभि-वंदिएणं, जेणामि वंता इसिणा स एसो ।।२१।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

एसो हु सो उग्गतवो महप्पा, जिइंदिओ संजओ बम्भयारी ।
जो मे तया णेच्छइ दिज्जमाणिं, पिउणा सयं कोसलिएण रण्णा ।।२२।।
महाजसो एस महाणुभागो, घोरव्वओ घोर परक्कमो य ।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं, मा सव्वे तेएण भे णिद्दहेज्जा ।।२३।।
एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा, पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइं ।
इसिस्स वेयावडि-यट्ठयाए, जक्खा कुमारे वि णिवारयंति ।।२४।।
ते घोररूवा ठिय अंतलिक्खे, असुरा तहिं तं जणं तालयंति ।
ते भिण्णदेहे रुहिरं वमंते, पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ।।२५।।
गिरिं णहेहिं खणह, अयं दंतेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहिं हणह, जे भिक्खुं अवमण्णह ।।२६।।
आसीविसो उग्गतवो महेसी, घोरव्वओ घोर परक्कमो य ।
अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा, जे भिक्खु यं भत्तकाले वहेह ।।२७।।
सीसेण एयं सरणं उवेह, समागया सव्व जणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा, लोगंपि एसो कुविओ डहेज्जा ।।२८।।
अवहेडिय-पिट्ठिस-उत्तमंगे, पसारिया बाहु अकम्म चिट्ठे ।
णिब्भेरि-यच्छे रुहिरं वमंते, उड्ढंमुहे णिग्गय जीह-णेत्ते ।।२९।।
ते पासिया खंडिय कट्ठभूए, विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसिं पसाएइ सभारियाओ, हीलं च णिंदं च खमाह भंते! ।।३०।।
बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं, जं हीलिया तस्स खमाह भंते! ।
महप्पसाया इसिणो हवंति, ण हु मुणी कोव-परा हवंति ।।३१।।
पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च, मण-प्पदोसो ण मे अत्थि कोई ।
जक्खा हु वेयावडियं करेंति, तम्हा हु एए णिहया कुमारा ।।३२।।
अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा, तुब्भे ण वि कुप्पह भूइपण्णा ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो, समागया सव्व-जणेण अम्हे ।।३३।।

अच्चेमु ते महाभाग! ण ते किंचि ण अच्चिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूरं, णाणा-वंजण-संजुयं ।।३४।।
इमं च मे अत्थि पभूय-मण्णं, तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
बाढं त्ति पडिच्छइ भत्त-पाणं, मासस्स उ पारणए महप्पा ।।३५।।
तहियं गंधोदय-पुप्फवासं, दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं, आगासे अहोदाणं य घुट्ठं ।।३६।।
सक्खं खु दीसइ तवो-विसेसो, ण दीसई जाइ-विसेस कोई ।
सोवाग-पुत्तं हरिएस साहुं, जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ।।३७।।
किं माहणा जोइ समारंभंता, उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा ।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं, ण तं सुइट्ठं कुसला वयंति ।।३८।।
कुसं च जूवं तण-कट्ठ-मग्गिं, सायं च पायं उदगं फुसंता ।
पाणाइं भूयाइं विहेडय-ता, भुज्जोवि मंदा पकरेह पावं ।।३९।।
कहं चरे भिक्खु वयं जयामो, पावाइं कम्माइं पुणोल्लयामो ।
अक्खाहि णे संजय जक्ख-पूइया, कहं सुइट्ठं कुसला वयंति ।।४०।।
छज्जीवकाए असमारंभंता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माण-मायं, एयं परिण्णाय चरंति दंता ।।४१।।
सुसंवुडो पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणव-कंखमाणो ।
वोसट्ठकाया सुइ चत्तदेहा, महाजयं जयइ जण्णसिट्ठं ।।४२।।
के ते जोई के य ते जोइठाणे, का ते सुया किं य ते कारिसंगं ।
एहा य ते कयरा संति भिक्खू, कयरेण होमेण हुणासि जोइं ।।४३।।
तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।
कम्मेहा संजम-जोगसंती, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ।।४४।।
के ते हरए के य ते संति तित्थे, कहिं सिणाओ व रयं जहासि ।
आइक्ख णे संजय जक्ख-पूइया, इच्छामो णाउं भवओ सगासे ।।४५।।

धम्मे हरए बम्भे संति-तित्थे, अणाविले अत्त-पसण्ण लेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइ-भूओ पजहामि दोसं ।।४६।।
एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिं सिणाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ते ।।४७।।

।। हरिएसिज्जं णामं बारहं अज्झयणं समत्तं ।।१२।।

।। चित्तसंभूइज्जं तेरहमं अज्झयणं ।। १३।।

जाइ पराजिओ खलु,कासि णियाणं तु हत्थिण-पुरम्मि ।
चुलणीए बंभदत्तो, उववण्णो पउम-गुम्माओ ।।१।।
कम्पिल्ले सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरमि-तालम्मि ।
सेट्ठि-कुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ।।२।।
कंपिल्लम्मि य णयरे, समागया दो वि चित्त-संभूया ।
सुह-दुक्ख-फल-विवागं, कहेंति ते एक्क-मेक्कस्स ।।३।।
चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बंभदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं, इमं वयण-मब्बवी ।।४।।
आसीमो भायरा दोवि, अण्ण-मण्ण-वसाणुगा ।
अण्ण-मण्ण मणुरत्ता, अण्ण-मण्ण हिएसिणो ।।५।।
दासा दसण्णे आसी, मिया कालिंजरे णगे ।
हंसा मयंग-तीरे य, सोवागा कासि-भूमिए ।।६।।
देवा य देव-लोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया ।
इमा णो छट्ठिया जाई, अण्ण-मण्णेण जा विणा ।।७।।
कम्मा णियाण-प्पगडा, तुमे राय ! विचिंतिया ।
तेसिं फल-विवागेण, विप्पओग-मुवागया ।।८।।
सच्च-सोय-प्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
अज्ज परिभुंजामो, किंणु चित्ते वि से तहा? ।।९।।

सव्वं सुचिण्णं सफलं णराणं,कडाण कम्माण ण मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं,आया ममं पुण्ण-फलोववेए ।।१०।।
जाणासि संभूय! महाणुभागं, महिड्ढियं पुण्ण-फलोववेयं ।
चित्तंवि जाणाहि तहेव रायं, इड्ढी जुई तस्स वि य-प्पभूया ।।११।।
महत्थरूवा वयण-प्पभूया, गाहाणुगीया णर संघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सील-गुणोववेया, इहं जयंते समणोमि जाओ ।।१२।।
उच्चोअए महु कक्के य बम्भे, पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्त धणप्पभूयं, पसाहि पंचाल-गुणोववेयं ।।१३।।
णट्टेहि गीएहि य वाइएहिं, णारी जणाइं परिवारयंतो ।
भुंजाहि भोगाइं इमाइ भिक्खू, मम रोयइ पव्वज्जा हु दुक्खं ।।१४।।
तं पुव्व-णेहेण कयाणुरागं,णराहिवं कामगुणेसु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही,चित्तो इमं वयण-मुदाहरित्था ।।१५।।
सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं णट्टं विडंबियं ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ।।१६।।
बालाभिरामेसु दुहावहेसु,ण तं सुहं कामगुणेसु रायं ।
विरत्त-कामाण तवो-धणाणं,जं भिक्खु णं सीलगुणे रयाणं ।।१७।।
नरिंद! जाई अहमा णराणं,सोवाग-जाई दुहओ गयाणं ।
जहिं वयं सव्व-जणस्स वेस्सा,वसीअ सोवाग-णिवेसणेसु ।।१८।।
तीसे य जाईइ उ पावियाए, वुच्छामु सोवाग-णिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा, इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ।।१९।।
सो दाणिसिं राय! महाणुभागो, महिड्ढिओ पुण्ण-फलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइं असासयाइं, आयाणहेउं अभिणिक्ख-माहि ।।२०।।
इह जीविए राय! असासयम्मि, धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयइ मच्चु-मुहोवणीए,धम्मं अकाऊण परम्मि लोए ।।२१।।

जहेह सीहो व मियं गहाय,मच्चू णरं णेइ हु अंतकाले ।
ण तस्स माया व पिया व भाया,कालम्मि तम्मंसहरा भवंति ।।२२।।
ण तस्स दुक्खं-विभयंति णाइओ,ण मित्तवग्गा ण सुया ण बंधवा ।
एक्को सयं पच्चणु होइ दुक्खं,कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ।।२३।।
चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च,खेत्तं गिहं धण-धण्णं य सव्वं ।
सकम्म-बीओ अवसो पयाइ,परं भवं सुंदर पावगं वा ।।२४।।
तं एक्कगं तुच्छ-सरीरगं से,चिइगयं दहिय उ पावगेण ।
भज्जा य पुत्ता वि य णायओ वा,दायार-मण्णं अणुसंकमंति ।।२५।।
उवणिज्जइ जीविय-मप्पमायं,वण्णं जरा हरइ णरस्स रायं! ।
पंचालराया ! वयणं सुणाहि,मा कासी कम्माइं महालयाइं ।।२६।।
अहंवि जाणामि जहेह साहू, जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवंति, जे दुज्जया अज्जो अम्हा-रिसेहिं ।।२७।।
हत्थिण-पुरम्मि चित्ता ! दट्ठूणं णरवइं महिड्ढियं ।
काम-भोगेसु गिद्धेणं, णियाण-मसुहं कडं ।।२८।।
तस्स मे अपडिक्कन्तस्स, इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ।।२९।।
णागो जहा पंक जलाव-सण्णो,दट्ठुं थलं णाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा,ण भिक्खुणो मग्ग-मणुव्वयामो ।।३०।।
अच्चेइ कालो तरंति राइओ,ण यावि भोगा पुरिसाण णिच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसं चयंति,दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ।।३१।।
जइ तंसि भोगे चइउं असत्तो,अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं! ।
धम्मे ठिओ सव्व पयाणुकंपी,तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ।।३२।।
ण तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी,गिद्धोसि आरम्भ-परिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो,गच्छामि रायं ! आमन्तिओसि ।।३३।।

पंचालराया वि य बंभदत्तो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे, अणुत्तरे सो णरए पविट्ठो ।।३४।।
चित्तो वि कामेहिं विरत्तकामो, उदग्ग-चारित्त-तवो-महेसी ।
अणुत्तरं संजमं पालइत्ता, अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ।।३५।।

।। चित्तसम्भूइज्जं णामं तेरहमं ज्झयणं समत्तं।।१३।।

।। उसुयारिज्जं चोदहमं अज्झयणं।।१४।।

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि, केई चुया एग-विमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयार णामे, खाए समिद्धे सुरलोग-रम्मे ।।१।।
सकम्म-सेसेण पुराकएणं, कुलेसु-दग्गेसु य ते पसूया ।
णिव्विण्ण संसार भया जहा य, जिणिंद-मग्गं सरणं पवण्णा ।।२।।
पुंमत्त-मागम्म कुमार दो वि, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसाल-कित्ती य तहेसुयारो, रायत्थ देवी कमलावई य ।।३।।
जाई जरा-मच्चु भयाभिभूया, बहिं विहाराभि-णिविट्ठचित्ता ।
संसार चक्कस्स विमोक्खणट्ठा, दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ।।४।।
पिय-पुत्तगा दोण्णि वि माहणस्स, सकम्म सीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणियं तत्थ जाइं, तहा सुचिण्णं तव संजमं च ।।५।।
ते काम-भोगेसु असज्जमाणा, माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजाय सड्ढा, तायं उवागम्म इमं उदाहु ।।६।।
असासयं दट्ठु इमं विहारं, बहु-अंतरायं ण य दीहमाउ ।
तम्हा गिहंसि ण रइं लभामो, आमंतयामो चरिस्सामु मोणं ।।७।।
अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं, तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयंति, जहा ण होइ असुयाण लोगो ।।८।।
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं, आरण्णगा होइ मुणी पसत्था ।।९।।

सोयग्गिणा आय-गुणिं-धणेणं, मोहाणिला पज्जलणा हिएणं ।
संतत्तभावं परितप्पमाणं, लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ।।१०।।
पुरोहियं तं कमसोऽणुणंतं, णिमंत-यंतं च सुए धणेणं ।
जहक्कमं कामगुणेहिं चेव, कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ।।११।।
वेया अहीया ण हवंति ताणं, भुत्ता दिया-णिन्ति तमं तमेणं ।
जाया य पुत्ता ण हवंति ताणं, को णाम ते अणुमण्णेज्ज एयं ।।१२।।
खणमित्त सुक्खा बहुकाल दुक्खा, पगाम दुक्खा अणिगाम सुक्खा ।
संसार मोक्खस्स विपक्ख भूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ।।१३।।
परिव्वयंते अणियत्त कामे, अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अण्णप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चुं पुरिसो जरं च ।।१४।।
इमं च मे अत्थि इमं च णत्थि, इमं च मे किच्चं इमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं, हरा हरंति त्ति कहं पमाओ? ।।१५।।
धणं पभूयं सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सव्व साहीण-मिहेव तुब्भं ।।१६।।
धणेण किं धम्म-धुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहिं चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी, बहिं विहारा अभिगम्म भिक्खं ।।१७।।
जहा य अग्गी अरणी असंतो, खीरे घयं तेल्ल महातिलेसु ।
एमेव जाया सरीरंसि सत्ता, संमुच्छइ णासइ णावचिट्ठे ।।१८।।
णो इंदियग्गेज्झ अमुत्तभावा, अमुत्त भावा वि य होइ णिच्चो ।
अज्झत्थ-हेउं णिययस्स बंधो, संसार हेउं च वयंति बंधं ।।१९।।
जहा वयं धम्मं अजाणमाणा, पावं पुरा कम्म-मकासि मोहा ।
ओरुब्भमाणा परि-रक्खियंता, तं णेव भुज्जो वि समायरामो ।।२०।।
अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए ।
अमोहाहिं पडन्तीहिं गिहंसि ण रइं लभे ।।२१।।

केण अब्भाहओ लोगो, केण वा परिवारिओ।
का वा अमोहा वुत्ता, जाया! चिंतावरो हु मे ।।२२।।
मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय! वियाणह ।।२३।।
जा जा वच्चइ रयणी, ण सा पडिणियत्तई।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ ।।२४।।
जा जा वच्चइ रयणी, ण सा पडिणियत्तई।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ।।२५।।
एगओ संवसित्ताणं, दुहओ सम्मत्त-संजुया।
पच्छा जाया गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ।।२६।।
जस्सऽत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं।
जो जाणे ण मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ।।२७।।
अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो, जहिं पवण्णा ण पुणब्भवामो।
अणागयं णेव य अत्थि किंचि, सद्धा खमं णे विणइत्तु रागं ।।२८।।
पहीण पुत्तस्स हु णत्थि वासो, वासिट्ठि-भिक्खा यरियाइ कालो।
साहाहि रुक्खो लहइ समाहिं, छिण्णाहि साहाहि तमेव खाणुं ।।२६।।
पंखा विहूणोव्व जहेह पक्खी, भिच्चा विहूणोव्व रणे णरिंदो।
विवण्णसारो वणिओव्व पोए, पहीण-पुत्तोमि तहा अहंपि ।।३०।।
सुसंभिया कामगुणा इमे ते, संपिण्डिआ अग्गरस-प्पभूया।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं, पच्छा गमिस्सामु पहाण मग्गं ।।३१।।
भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ,ण जीवियट्ठा पजहामि भोए।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं,संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ।।३२।।
मा हु तुमं सोयरियाण संमरे,जुण्णो व हंसों पडिसोत्तगामी।
भुंजाहि भोगाइं मए समाणं,दुक्खं खु भिक्खा-यरिया विहारो ।।३३।।

जहा य भोइ तणुयं भुयंगो, णिम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए जाया पयहंति भोए,तेऽहं कहं णाणुगमिस्स-मेक्को? ।।३४।।
छिंदित्तु जालं अबलं व रोहिया, मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
धोरेय सीला तवसा उदारा, धीरा हु भिक्खायरियं चरंति ।।३५।।
णहेव कुंचा समइक्क-मंता, तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेंति पुत्ता य पईय मज्झं, तेऽहं कहं णाणुगमिस्स-मेक्का? ।।३६।।
पुरोहियं तं ससुयं सदारं, सोच्चाऽभि-णिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुम्बसारं विउलुत्तमं य, रायं अभिक्खं समुवाय देवी ।।३७।।
वंतासी पुरिसो रायं ! ण सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं, धणं आयाउमिच्छसि ।।३८।।
सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वंऽवि ते अपज्जत्तं, णेव ताणाय तं तव ।।३९।।
मरिहिसि रायं ! जया तया वा, मणोरमे कामगुणे पहाय ।
एक्को हु धम्मो णरदेव ताणं, ण विज्जइ अण्णमिहेह किंचि ।।४०।।
णाहं रमे पक्खिणी पंजरे वा, संताण छिण्णा चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा णिरामिसा, परिग्गहारंभ णियत्तदोसा ।।४१।।
दवग्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जंतुसु ।
अण्णे सत्ता पमोयंति, रागद्दोस वसं गया ।।४२।।
एवमेव वयं मूढा, कामभोगेसु मुच्छिया ।
डज्झमाणं ण बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जगं ।।४३।।
भोगे भोच्चा वमित्ता य, लहुभूय-विहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छंति, दिया कामकमा इव ।।४४।।
इमे य वद्धा फन्दन्ति, मम हत्थ-ऽज्जमागया ।
च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ।।४५।।

सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं णिरामिसं।
आमिसं सव्व-मुज्झित्ता, विहरिस्सामि णिरामिसा ।।४६।।
गिद्धोवमा उ णच्चाणं, कामे संसार-वड्ढणे।
उरगो सुवण्ण-पासेव्व, संकमाणो तणुं चरे ।।४७।।
णागोव्व बंधणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वए।
एयं पत्थं महारायं, उस्सुयारि त्ति मे सुयं ।।४८।।
चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए।
णिव्विसया णिरामिसा, णिण्णेहा णिप्परिग्गहा ।।४६।।
सम्मं धम्मं वियाणित्ता, चिच्चा कामगुणे वरे।
तवं पगिज्झ-ऽहक्खायं, घोरं घोर-परक्कमा ।।५०।।
एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्म-परायणा।
जम्म मच्चु भउव्विग्गा, दुक्खस्सन्त-गवेसिणो ।।५१।।
सासणे विगय मोहाणं, पुव्विं भावण-भाविया।
अचिरेणेव कालेण, दुक्खस्सन्त-मुवागया ।।५२।।
राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ।
माहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिणिव्वुडे ।।५३।।

।। उसुयारिज्जं चोदहमज्झयणं समत्तं।।१४।।

।। सभिक्खुयं पंचदहं अज्झयणं ।।१५।।

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं, सहिए उज्जु-कडे णियाण-छिण्णे।
संथवं जहिज्ज अकाम-कामे,अण्णाय-एसी परिव्वए स भिक्खू ।।१।।
राओव-रयं चरेज्ज लाढे,विरए वेय-वियाय-रक्खिए।
पण्णे अभिभूय सव्वदंसी,जे कम्हि वि ण मुच्छिए स भिक्खू ।।२।।
अक्कोस-वहं विइत्तु धीरे, मुणी चरे लाढे णिच्च-मायगुत्ते।
अव्वग्ग-मणे असंपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ।।३।।

पन्तं सयणासणं भइत्ता, सीउण्हं विविहं य दंस-मसगं।
अव्वग्ग-मणे असंपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ।।४।।
णो सक्कइ-मिच्छइ ण पूयं, णोऽवि य वंदणगं कुओ पसंसं।
से संजए सुव्वए तवस्सी, सहिए आय-गवेसए स भिक्खू ।।५।।
जेण पुणो जहाइ जीवियं, मोहं वा कसिणं णियच्छइ।
णर-णारिं पजहे सया तवस्सी, ण य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ।।६।।
छिण्णं सरं भोम-मंतलिक्खं, सुमिणं लक्खण-दण्ड वत्थु-विज्जं।
अंगवियारं सरस्स विज्जयं,जे विज्जाहिं ण जीवइ स भिक्खू ।।७।।
मंतं मूलं विविहं वेज्ज-चिंतं, वमण-विरेयण-धुमणेत्त-सिणाणं।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च, तं परिण्णाय परिव्वए स भिक्खू ।।८।।
खत्तिय-गण उग्गरायपुत्ता, माहण भोइय विविहा य सिप्पिणो।
णो तेसिं वयइ सिलोग पूयं, तं परिण्णाय परिव्वए स भिक्खू ।।९।।
गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा, अप्पवइएण व संथुया हविज्जा।
तेसिं इहलोइय-फलट्ठा, जो संथवं ण करेइ स भिक्खू ।।१०।।
सयणासण-पाण-भोयणं, विविहं खाइम-साइमं परेसिं।
अदए पडिसेहिए णियंठे, जे तत्थ ण पउस्सइ स भिक्खू ।।११।।
जं किंचि आहार-पाणगं विविहं,खाइमं-साइमं परेसिं लद्धुं।
जो तं तिविहेण णाणुकम्पे,मण-वय-काय-सुसंवुडे स भिक्खू ।।१२।।
आयामगं चेव जवोदणं च,सीयं सोवीर-जवोदगं च।
ण हीलए पिंडं णीरसं तु, पंत-कुलाइं परिव्वए स भिक्खू ।।१३।।
सद्दा विविहा भवंति लोए,दिव्वा माणुस्सगा तहा तिरिच्छा।
भीमा भय-भेरवा उराला,जो सोच्चा ण विहिज्जइ स भिक्खू ।।१४।।
वायं विविहं समिच्च लोए,सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा।
पण्णे अभिभूय सव्वदंसी,उवसंते अविहेडए स भिक्खू ।।१५।।

असिप्प-जीवी अगिहे अमित्ते,जिइंदिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहु अप्पभक्खी,चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ।।१६।।

।। सभिक्खुयं णामं पंचदहं अज्झयणं समत्तं।।१५।।

।। बंभचेरसमाहिठाणं सोलसमं अज्झयणं।। १६ ।।

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एव-मक्खायं इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेर-समाहि-ठाणा पण्णत्ता, जे भिक्खू सोच्चा णिसम्म संजम-बहुले, संवर-बहुले समाहि-बहुले, गुत्ते गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेर समाहिठाणा पण्णत्ता-जे भिक्खू सोच्चा णिसम्म संजम-बहुले संवर-बहुले समाहि-बहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेर समाहिठाणा पण्णत्ता, जे भिक्खू सोच्चा णिसम्म संजम-बहुले संवर-बहुले समाहि-बहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा। तंजहा- विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से णिग्गंथे। णो इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से णिग्गंथे।

तं कहमिति चे? आयरियाह। णिग्गंथस्स खलु इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणा-सणाइं सेवमाणस्स-

बंभयारिस्स बंभचेरे संकावा कंखावा विइगिच्छावा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियंवारोगायंकंहवेज्जा, केवलिपण्णत्ताओ धम्माओवा भंसेज्जा। तम्हा णो इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणा-सणाइं सेवित्ता हवइ, से णिग्गंथे।।१।।

णो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से णिग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह। णिग्गंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि पण्णत्ताओ धम्माओवा भंसेज्जा। तम्हा णो इत्थीणं कहं कहेज्जा।।२।।

णो इत्थीणं सद्धिं सण्णिसेज्जागए विहरित्ता हवइ, से णिग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह। णिग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सण्णिसेज्जा-गयस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीह-कालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि-पण्णत्ताओ धम्माओवा भंसेज्जा। तम्हा खलु णो णिग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सण्णिसेज्जागए विहरेज्जा।।३।।

णो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं

आलोइत्ता णिज्झाइत्ता हवइ, से णिग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह णिग्गंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोय-माणस्स णिज्झाय-माणस्स-बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि-पण्णत्ताओ धम्माओवा भंसेज्जा। तम्हा खलु णो णिग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएज्जा णिज्झाएज्जा।।४।।

णो इत्थीणं कुड्डु-तरंसिवा दूसं तरंसि वा, भित्तं तरंसि वा कूइय-सद्दं वा रुइय-सद्दं वा गीयसद्दं वा हसिय-सद्दं वा थणिय-सद्दं वा कंदिय-सद्दं वा विलविय-सद्दं वा सुणेत्ता हवइ से णिग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह णिग्गंथस्स खलु इत्थीणं कुड्डु-तरंसि वा, दूसं-तरंसि वा भित्तं-तरंसि वा कूइय-सद्दं वा रुइय-सद्दं वा गीयसद्दं वा हसिय-सद्दं वा थणिय-सद्दं वा कंदिय-सद्दं वा विलविय-सद्दं वा सुणेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीह-कालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि पण्णत्ताओ धम्माओवा भंसेज्जा। तम्हा खलु णो णिग्गंथे इत्थीणं कुड्डु-तरंसि वा दूसं-तरंसि वा भित्तं-तरंसि वा कूइय-सद्दं वा रुइय-सद्दं वा गीयसद्दं वा हसिय-सद्दं

वा थणिय-सद्दं वा कंदिय-सद्दं वा विलविय-सद्दं वा सुणेमाणे विहरेज्जा।।५।।

णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्व-कीलियं अणुसरित्ता हवइ, से णिग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह णिग्गंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसर-माणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि पण्णत्ताओ धम्माओवा भंसेज्जा। तम्हा खलु णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा।।६।।

णो पणीयं आहारं आहारित्ता हवइ, से णिग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह णिग्गंथस्स खलु पणीयं आहारं आहारे-माणस्स-बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलि पण्णत्ताओ धम्माओवा भंसेज्जा। तम्हा खलु णो णिग्गंथे पणीयं आहारं आहारेज्जा।।७।।

णो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ, से णिग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह णिग्गंथस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारे-माणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेदं

वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु णो णिग्गंथे अइमायाए पाणभोयणं आहारेज्जा॥८॥

णो विभूसाणुवाई हवइ, से णिग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह विभूसावत्तिए विभूसिय-सरीरे इत्थि-जणस्स अभिलस-णिज्जे हवइ। तओ णं तस्स इत्थि-जणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीह-कालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलि पण्णत्ताओ धम्माओवा भंसेज्जा। तम्हा खलु णो णिग्गंथे विभूसाणुवाई हविज्जा॥९॥

णो सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवाई हवइ, से णिग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह णिग्गंथस्स खलु सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवाईस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा,कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीह-कालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि पण्णत्ताओ धम्माओवा भंसेज्जा। तम्हा खलु णो सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवाइ हवेज्जा, से णिग्गंथे। दसमे बंभचेर समाहिठाणे हवइ। हवंति य इत्थ सिलोगा। तंजहा-

जं विवित्त-मणाइण्णं, रहियं इत्थि-जणेण य।
बंभचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु णिसेवए।।१।।
मण-पल्हाय-जणणी, काम-राग-विवड्ढणी।
बंभचेर रओ भिक्खू, थी-कहं तु विवज्जए।।२।।
समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं।
बंभचेर-रओ भिक्खू, णिच्च सो परिवज्जए।।३।।
अंग-पच्चंग-संठाणं, चारु-ल्लविय-पेहियं।
बंभचेर-रओ थीणं, चक्खु-गिज्झं विवज्जए।।४।।
कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणिय-कंदियं।
बंभचेर-रओ थीणं, सोय गिज्झं विवज्जए।।५।।
हासं किड्डं रइं दप्पं, सहभुत्ता-सियाणि य।
बंभचेर-रओ थीणं, णाणुचिंते कयाइवि।।६।।
पणीयं भत्त-पाणं तु, खिप्पं मय-विवड्ढणं।
बंभचेर-रओ भिक्खू, णिच्च सो परिवज्जए।।७।।
धम्म-लद्धं मियं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं।
णाइ-मत्तं तु भुंजेज्जा, बंभचेर-रओ सया।।८।।
विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीर-परिमण्डणं।
बंभचेर-रओ भिक्खू, सिंगारत्थं ण धारए।।६।।
सद्दे-रूवे य गंधे य, रसे-फासे तहेव य।
पंचविहे कामगुणे, णिच्च सो परिवज्जए।।१०।।
आलओ थी-जणा-इण्णो, थी-कहा य मणोरमा।
संथवो चेव णारीणं, तासिं इंदिय-दरिसणं।।११।।
कूइयं रुइयं गीयं, हास-भुत्ता-सियाणि य।
पणीयं भत्त-पाणं च, अइ-मायं पाण-भोयणं।।१२।।

गत्तभूसण-मिट्ठं च, कामभोगा य दुज्जया।
णरस्सत्त-गवेसिस्स, विसं तालउडं जहा।।१३।।
दुज्जए काम-भोगे य, णिच्च सो परिवज्जए।
संका-ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं।।१४।।
धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्म-सारही।
धम्मा - रामे - रए दन्ते, बंभचेर-समाहिए।।१५।।
देव-दाणव गंधव्वा, जक्ख-रक्खस्स-किन्नरा।
बम्भयारिं णमंसंति, दुक्करं जे करंति तं।।१६।।
एस धम्मे धुवे णिच्चे, सासए जिण-देसिए।
सिद्धा सिज्झंति चाणेणं, सिज्झिस्संति तहावरे।।१७।।

।। बम्भचेरसमाहिठाणा समत्ता।।१६।।

।। पावसमणिज्जं सत्तदहं अज्झयणं ।। १७।।

जे केइ उ पव्वइए णियंठे, धम्मं सुणित्ता विणओव-वण्णे।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं, विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु।।१।।
सेज्जा दढा पाउरणम्मि अत्थि, उप्पज्जइ भोत्तुं तहेव पाउं।
जाणामि जं वट्टइ आउसु त्ति, किं णाम काहामि सुएण भंते!।।२।।
जे केइ उ पव्वइए, णिद्दासीले पगाम-सो।
भोच्चा-पेच्चा सुहं सुवइ, पाव-समणे त्ति वुच्चइ।।३।।
आयरिय-उवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिंसइ बाले, पाव-समणेत्ति वुच्चइ।।४।।
आयरिय-उवज्झायाणं, सम्मं ण पडितप्पइ।
अप्पडि-पूयए थद्धे, पाव-समणेत्ति वुच्चइ।।५।।
सम्मद्दमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजए संजय-मण्णमाणे, पाव-समणेत्ति वुच्चइ।।६।।

संथारं फलगं पीढं, णिसेज्जं पायकम्बलं।
अप्पमज्जिय-मारुहइ, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥७॥
दव-दवस्स चरइ, पमत्ते य अभिक्खणं।
उल्लंघणे य चण्डे य, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥८॥
पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकम्बलं।
पडिलेहा-अणाउत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥९॥
पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु णिसामिया।
गुरु परिभावए णिच्चं, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥१०॥
बहुमाई पमुहरे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अवियत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥११॥
विवादं य उदीरेइ, अहम्मे अत्त-पण्णहा।
वुग्गहे कलहे रत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥१२॥
अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ णिसीयई।
आसणम्मि अणाउत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥१३॥
ससरक्ख-पाए सुवई, सेज्जं ण पडिलेहिए।
संथारए अणाउत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥१४॥
दुद्ध-दही-विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं।
अरए य तवो कम्मे, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥१५॥
अत्थन्तम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं।
चोइओ पडिचोएइ, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥१६॥
आयरिय-परिच्चाई, परपासण्ड-सेवए।
गाणंगणिए दुब्भूए, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥१७॥
सयं गेहं परिच्चिज्ज, पर गेहंसि वावरे।
मे. य ववहरई, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥१८॥

सण्णाइ-पिण्डं जेमेइ, णेच्छइ सामुदाणियं।
गिहि-णिसेज्जं च वाहेइ, पाव-समणेत्ति वुच्चइ ।।१६।।
एयारिसे पंच-कुसील-संवुडे, रूवंधरे मुणि-पवराण हेट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए, ण से इहं णेव परत्थ लोए ।।२०।।
जे वज्जए एए सया उ दोसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए, आराहए लोगमिणं तहा परं ।।२१।।

।। पावसमणिज्जं सत्तदहज्मझयणं समत्तं।।१७।।

।। संजइज्ज अट्ठारहमं अज्झयणं ।। १८ ।।

कम्पिल्ले णयरे राया, उदिण्ण-बल-वाहणे।
णामेणं संजओ णामं, मिगव्वं उवणिग्गए।।१।।
हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य।
पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए।।२।।
मिए छुहित्ता हयगओ, कम्पि-ल्लुज्जाण-केसरे।
भीए संते मिए तत्थ, वहेइ रस-मुच्छिए।।३।।
अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे।
सज्झाय-ज्झाण-संजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ।।४।।
अप्फोव-मण्डवम्मि, झायइ-क्खवियासवे।
तस्सागए मिगे पासं, वहेइ से णराहिवे।।५।।
अह आसगओ राया, खिप्प-मागम्म सो तहिं।
हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासइ।।६।।
अह राया तत्थ सम्भंतो, अणगारो मणाहओ।
मए उ मंद-पुण्णेणं, रस-गिद्धेण घत्तुणा।।७।।
आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो णिवो।
विणएण वंदए पाए, भगवं एत्थ मे खमे।।८।।

अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाण मस्सिए।
रायाणं ण पडिमंतेइ, तओ राया भयद्दुओ ।।६।।
संजओ अहमम्मीति, भगवं ! वाहराहि मे।
कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज णर-कोडिओ ।।१०।।
अभओ पत्थिवा ! तुब्भं, अभयदाया भवाहि य।
अणिच्चे जीव-लोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसि? ।।११।।
जया सव्वं परिच्चिवज्ज, गंतव्व-मवसस्स ते।
अणिच्चे जीव-लोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसि ।।१२।।
जीवियं चेव रूवं च, विज्जु-संपाय-चंचलं।
जत्थ तं मुज्झसि रायं, पेच्चत्थं णाव-बुज्झसे ।।१३।।
दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा।
जीवंत-मणु-जीवंति, मयं णाणुव्व-यन्ति य ।।१४।।
णीहरंति मयं पुत्ता, पियरं परम-दुक्खिया।
पियरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं ! तवं चरे ।।१५।।
तओ तेणऽज्जिए दव्वे, दारे य परि-रक्खिए।
कीलंतिऽण्णे णरा रायं, हट्ठ-तुट्ठ-मलंकिया ।।१६।।
तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं।
कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छइ उ परं भवं ।।१७।।
सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए।
महया संवेग-णिव्वेयं, समावण्णो णराहिवो ।।१८।।
'संजओ' चइउं रज्जं, णिक्खंतो जिण-सासणे।
'गद्दभालिस्स' भगवओ, अणगारस्स अंतिए ।।१६।।
रट्ठं पव्वइए, खत्तिओ परिभासइ।
ते दीसइ रूवं, पसण्णं ते तहा मणो ।।२०।।

किं णामे किं गोत्ते, कस्सट्ठाए व माहणे ।
कहं पडियरसी बुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसि ।।२१।।
संजओ णाम णामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो ।
'गद्दभाली' ममायरिया, विज्जा-चरण-पारगा ।।२२।।
किरियं अकिरियं विणयं, अण्णाणं च महामुणी ।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयण्णे किं पभासइ ।।२३।।
इइ पाउकरे बुद्धे, णायए परिणिव्वुए ।
विज्जा-चरण संपण्णे, सच्चे सच्च-परक्कमे ।।२४।।
पडंति णरए घोरे, जे णरा पाव-कारिणो ।
दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्म-मारियं ।।२५।।
माया-वुइय-मेयं तु, मुसा-भासा णिरत्थिया ।
संजममाणो-ऽवि अहं, वसामि इरियामि य ।।२६।।
सव्वेते विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे-लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ।।२७।।
अहमासी महापाणे, जुइमं वरिससस-ओवमे ।
जा सा पाली-महापाली, दिव्वा वरिससस-ओवमा ।।२८।।
से चुए बम्भ-लोगाओ, माणुसं भव-मागए ।
अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ।।२९।।
णाणारुइं च छंदं च, परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जा-मणुसंचरे ।।३०।।
पडिक्कमामि पसिणाणं, परमन्तेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ।।३१।।
जं च मे पुच्छसि काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे, तं णाणं जिण-सासणे ।।३२।।

किरियं च रोअए धीरो, अकिरियं परिवज्जए।
दिट्ठीए दिट्ठीसंपण्णे, धम्मं चरसु-दुच्चरं ॥३३॥
एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थ-धम्मोव-सोहियं।
'भरहोऽवि' भारहं वासं, चिच्चा कामाइं पव्वए ॥३४॥
'सगरोऽवि' सागरन्तं, भारहवासं णराहिवो।
इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाए परिणिव्वुडे ॥३५॥
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
पव्वज्ज-मब्भुव-गओ, मघवं णाम महाजसो ॥३६॥
'सणंकुमारो' मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सोऽवि राया तवं चरे ॥३७॥
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
'संती' संतिकरे लोए, पत्तो गइ-मणुत्तरं ॥३८॥
इक्खागु-राय-वसभो, 'कुंथू' णाम णरेसरो।
विक्खाय-कित्ती भगवं, पत्तो गइ-मणुत्तरं ॥३९॥
सागरन्तं चइत्ताणं, भरहवासं णरेसरो।
"अरो" य अरयं पत्तो, पत्तो गइ-मणुत्तरं ॥४०॥
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
चिच्चा य उत्तमे भोए, 'महापउमे' तवं चरे ॥४१॥
एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माण-णिसूरणो।
'हरिसेणो' मणुस्सिंदो, पत्तो गइ-मणुत्तरं ॥४२॥
अण्णिओ राय-सहस्सेहिं, सु-परिच्चाई दमं चरे।
'जयणामो' जिणक्खायं, पत्तो गइ-मणुत्तरं ॥४३॥
'दसण्ण-रज्जं' मुइयं, चइत्ताणं मुणी चरे।
'दसण्णभद्दो' णिक्खन्तो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥

'णमी' णमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुव-ट्ठिओ ।।४५।।
'करकण्डू' कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो।
'णमी राया' विदेहेसु, 'गंधारेसु' य णग्गई ।।४६।।
एए णरिंद-वसभा, णिक्खंता जिण-सासणे।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ।।४७।।
सोवीर- राय-वसभो, चइत्ताणं मुणी चरे।
'उछायणो' पव्वइओ, पत्तो गइ-मणुत्तरं ।।४८।।
तहेव 'कासीराया' वि, सेओ-सच्च-परक्कमे।
काम-भोगे परिच्चिज्ज, पहणे कम्म-महावणं ।।४६।।
तहेव 'विजओ' राया, अणट्ठा-कित्ति पव्वए।
रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ।।५०।।
तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा।
'महब्बलो' रायरिसी, अद्दाय सिरसा सिरिं ।।५१।।
कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे।
एए विसेस-मादाय, सूरा दढ-परक्कमा ।।५२।।
अच्चंत-णियाण-खमा, सच्चा मे भासिया वई।
अतरिन्सु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ।।५३।।
कहं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे।
सव्व-संग-विणिम्मुक्के, सिद्धे भवइ णीरए ।।५४।।

।। संजइज्जं अठारहंज्झयणं समत्तं ।।१८।।

।। मियापुत्तीयं एगूणवीसइमं अज्झयणं ।। १६।।

सुग्गीवे णयरे रम्मे, काण-णुज्जाण-सोहिए।
राया बलभद्दि त्ति, मिया तस्सग्ग-महिसी ।।१।।
तेसिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते-त्ति विस्सुए।
अम्मा-पिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ।।२।।
णंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं।
देवो दोगुन्दगो चेव, णिच्चं मुइय-माणसो ।।३।।
मणि-रयण-कुट्टिम-तले, पासाया-लोयणे ठिओ।
आलोएइ णगरस्स, चउक्क-त्तिय-चच्चरे ।।४।।
अह तत्थ अइच्छन्तं, पासइ समण-संजयं।
तव-णियम-संजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ।।५।।
तं पेहइ मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ।
कहिं मण्णे-रिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ।।६।।
साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झव-साणम्मि सोहणे।
मोहं गयस्स संतस्स, जाइसरणं समुप्पण्णं ।।७।।
देवलोग चुओ संतो, माणुसं भव-मागओ।
सण्णि णाण-समुप्पण्णे, जाइं सरइ पुराणियं ।।८।।
जाइसरणे समुप्पण्णे, मियापुत्ते महिड्ढिए।
सरइ पोराणियं जाइं, सामण्णं च पुराकयं ।।६।।
विसएसु अरज्जंतो, रज्जंतो संजमम्मि य।
अम्मा-पियर-मुवागम्म, इमं वयण-मब्बवी ।।१०।।
सुयाणिमेपंच-महव्वयाणि, णरएसु दुक्खं य तरिक्ख-जोणिसु।
णिव्विण्ण-कामोमिमहण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ।।११।।

अम्म-ताय ! मए भोगा, भुत्ता विस-फलोवमा ।
पच्छा कडुय-विवागा, अणुबंध दुहावहा ।।१२।।
इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइ-संभवं ।
असासया-वासमिणं, दुक्ख-केसाण भायणं ।।१३।।
असासए सरीरम्मि, रइं णोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेण-बुब्बुय-सण्णिभे ।।१४।।
माणुसत्ते असारम्मि, वाही-रोगाण आलए ।
जरा-मरण-घत्थम्मि, खणंवि ण रमामहं ।।१५।।
जम्म-दुक्खं जरा-दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुवो ।।१६।।
खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बंधवा ।
चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्व-मवसस्स मे ।।१७।।
जहा किंपाग-फलाणं, परिणामो ण सुंदरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो ण सुंदरो ।।१८।।
अद्धाणं जो महन्तं तु, अप्पाहेज्जो पवज्जइ ।
गच्छंतो सो दुही होइ, छुहा-तण्हाए-पीडिओ ।।१६।।
एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो दुही होइ, वाही-रोगेहिं-पीडिओ ।।२०।।
अद्धाणं जो महन्तं तु, सपाहेओ पवज्जइ ।
गच्छंतो सो सुही होइ, छुहा-तण्हा-विवज्जिओ ।।२१।।
एवं धम्मंऽवि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ।।२२।।
जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू ।
सार-भाण्डाणि णीणेइ, असारं अवउज्झइ ।।२३।।

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमण्णिओ ।।२४।।
तं बिन्तम्मा-पियरो, सामण्णं पुत्त! दुच्चरं।
गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं भिक्खुणो ।।२५।।
समया सव्व-भूएसु, सत्तु-मित्तेसु वा जगे।
पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करं ।।२६।।
णिच्चकाल-ऽप्पमत्तेणं, मुसावाय-विवज्जणं।
भासियव्वं हियं सच्चं, णिच्चा-उत्तेण दुक्करं ।।२७।।
दंत-सोहण-माइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं।
अणवज्जेस-णिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्करं ।।२८।।
विरई अबम्भ-चेरस्स, काम-भोग-रसण्णुणा।
उग्गं महव्वयं बम्भं, धारेयव्वं सुदुक्करं ।।२६।।
धण-धण्ण-पेस-वग्गेसु, परिग्गह-विवज्जणं।
सव्वारम्भ-परिच्चाओ, णिम्ममत्तं सुदुक्करं ।।३०।।
चउव्विहे वि आहारे, राइभोयण-वज्जणा।
सण्णिही-संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ।।३१।।
छुहा-तण्हा य सीउण्हं, दंस-मसग-वेयणा।
अक्कोसा दुक्ख-सेज्जा य, तण-फासा जल्लमेव य ।।३२।।
तालणा-तज्जणा चेव, वह बंध-परीसहा।
दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अला भया ।।३३।।
कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो।
दुक्खं बंभव्वयं घोरं, धारेउं य महप्पणो ।।३४।।
सुहोइओ तुमं पुत्ता!, सुकुमालो सुमज्जिओ।
ण हुसि पभू तुमं पुत्ता !, सामण्ण-मणुपालिया ।।३५।।

जावज्जीव-मविस्सामो, गुणाणं तु महब्भरो।
गुरुओ लोह-भारुव्व, जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ।।३६।।
आगासे गंग-सोउव्व, पडि सोउव्व दुत्तरो।
बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो य गुणोदही ।।३७।।
बालुया-कवले चेव, णिरस्साए उ संजमे।
असिधारा-गमणं चेव, दुक्करं चरिउं तवो ।।३८।।
अही वेगंत-दिट्ठीए, चरित्ते पुत्त! दुच्चरे।
जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं ।।३६।।
जहा अग्गि-सिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करं।
तहा दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ।।४०।।
जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो।
तहा दुक्खं करेउं जे, कीबेणं समणत्तणं ।।४१।।
जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मंदरो गिरी।
तहा णिहुयं णीसंकं, दुक्करं समणत्तणं ।।४२।।
जहा भूयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो।
तहा अणुव-सन्तेणं, दुक्करं दमसागरो ।।४३।।
भुंज माणुस्सए भोए, पंच-लक्खणए तुमं।
भुत्तभोगी तओ जाया, पच्छा धम्मं चरिस्ससि ।।४४।।
सो बिन्तऽम्मा-पियरो, एवमेयं जहाफुडं।
इह-लोए णिप्पिवासस्स, णत्थि किंचि वि दुक्करं ।।४५।।
सारीर-माणसा चेव, वेयणाओ अणन्तसो।
मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्ख-भयाणि य ।।४६।।
जरा मरण-कंतारे, चाउरंते भयागरे।
मए सोढाणि भीमाणि, जम्माइं मरणाणि य ।।४७।।

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणन्त-गुणो तहिं।
णरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए ॥४८॥
जहा इमं इहं सीयं, एत्तोऽणन्त गुणो तहिं।
णरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ॥४६॥
कंदन्तो कन्दु-कुम्भीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो।
हुयासणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥५०॥
महादवग्गि-संकासे, मरुम्मि वइर-वालुए।
कलम्ब-वालुयाए य, दड्ढ-पुव्वो अणंतसो ॥५१॥
रसंतो कन्दु कुम्भीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो।
करवत्त-कर-कयाईहिं, छिण्ण-पुव्वो अणंतसो ॥५२॥
अइ-तिक्ख-कंटगा-इण्णे, तुंगे सिम्बलि-पायवे।
खेवियं पासबद्धेणं, कड्ढो कड्ढाहिं दुक्करं ॥५३॥
महाजंतेसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं।
पीलिओऽमि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ॥५४॥
कूवंतो कोल सुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य।
पाडिओ फालिओ छिण्णो, विप्फुरंतो अणेगसो ॥५५॥
असीहिं-अयसि-वण्णेहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य।
छिण्णो भिण्णो विभिण्णो य, उववण्णो पाव-कम्मुणा ॥५६॥
अवसो लोह-रहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए।
चोइओ तोत्त-जुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥५७॥
हुआसणे जलंतम्मि, चियासु महिसो-विव।
दड्ढो पक्को य अवसो, पाव कम्मेहिं पाविओ ॥५८॥
बला-संडास-तुण्डेहिं, लोह-तुण्डेहिं पक्खिहिं।
विलुत्तो विलवंतोऽहं, ढंकगिद्धेहिं-अणंतसो ॥५६॥

तण्हा किलन्तो धावंतो, पत्तो वेयरणिं णइं।
जलं पाहिंत्ति चिंतन्तो, खुर-धाराहिं विवाइओ ।।६०।।
उण्हाभि-तत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं।
असि-पत्तेहिं पडन्तेहिं, छिण्ण-पुव्वो अणेगसो ।।६१।।
मुग्गरेहिं भुसुण्ढीहिं, सूलेहिं मुसलेहि य।
गया-संभग्ग-गत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणन्तसो ।।६२।।
खुरेहिं तिक्ख-धारेहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य।
कप्पिओ फालिओ छिण्णो, उक्कित्तो य अणेगसो ।।६३।।
पासेहिं कूड-जालेहिं, मिओ वा अवसो अहं।
वाहिओ बद्ध-रुद्धो वा, बहुसो चेव विवाइओ ।।६४।।
गलेहिं मगर-जालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं।
उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणन्तसो ।।६५।।
वीदंसएहिं जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव।
गहिओ लग्गो बद्धो य, मारिओ य अणंतसो ।।६६।।
कुहाड-फरसु-माईहिं, वड्डईहिं दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिण्णो, तच्छिओ य अणन्तसो ।।६७।।
चवेड-मुट्ठि माईहिं, कुमारेहिं अयं विव।
ताडिओ कुट्टिओ भिण्णो, चुण्णिओ य अणंतसो ।।६८।।
तत्ताइं तम्ब-लोहाइं, तउयाइं सीसगाणि य।
पाइओ कल-कलंताईं आरसंतो सुभेरवं ।।६९।।
तुहं पियाइं मंसाइं, खण्डाइं, सोल्लगाणि य।
खाविओमि समंसाइं, अग्गि वण्णाइं ऽणेगसो ।।७०।।
तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य।
पाइओमि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि य ।।७१।।

णिच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य।
परमा दुह संबद्धा, वेयणा वेदित्ता मए ॥७२॥
तिव्व-चंड-प्पगाढाओ, घोराओ अइ-दुस्सहा।
महब्भयाओ भीमाओ, णरएसु दुह वेइया मए ॥७३॥
जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेयणा।
एत्तो अणंत-गुणिया, णरएसु दुक्ख-वेयणा ॥७४॥
सव्व-भवेसु अस्साया, वेयणा वेइत्ता मए।
णिमेसंतर-मित्तंऽवि, जं साया णत्थि वेयणा ॥७५॥
तं बिंतम्मा-पियरो, छंदेणं पुत्त ! पव्वया।
णवरं पुण सामण्णे, दुक्खं णिप्पडि-कम्मया ॥७६॥
सो बिन्तम्मा-पियरो, एवमेयं जहा-फुडं।
पडिकम्मं को कुणइ, अरण्णे मिय-पक्खिणं ॥७७॥
एगब्भूए अरण्णे वा, जहा उ चरइ मिगो।
एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥७८॥
जहा मिगस्स आयंको, महारण्णम्मि जायइ।
अच्छंतं रुक्ख-मूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छिइ? ॥७९॥
को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छइ सुहं?।
को से भत्तं य पाणं वा, आहरित्तु पणामए ॥८०॥
जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं।
भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ॥८१॥
खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य।
मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छइ मिगचारियं ॥८२॥
एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए।
मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमइ दिसं ॥८३॥

जहा मिए एग अणेगचारी, अणेग-वासे धुव-गोयरे य।
एवं मुणी-गोयरियं पविट्ठे, णो हीलए णोवि य खिंसएज्जा ।।८४।।
मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं।
अम्मा-पिऊहिं ऽणुण्णाओ, जहाइ उवहिं तओ ।।८५।।
मिगचारियं चरिस्सामि, सव्व-दुक्ख विमोक्खणिं।
तुब्भेहिं अब्भ!ऽणुण्णाओ, गच्छ पुत्त! जहा-सुहं ।।८६।।
एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताणं बहुविहं।
ममत्तं छिंदइ ताहे, महाणागोव्व कंचुयं ।।८७।।
इड्ढिं वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं य णायओ।
रेणुयं व पडे-लग्गं, णिद्धुणित्ताण णिग्गओ ।।८८।।
पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-समिओ तिगुत्ति गुत्तो य।
सब्भिंतर-बाहिरओ, तवो-कम्मंसि उज्जुओ ।।८९।।
णिम्ममो णिरहंकारो, णिस्संगो चत्तगारवो।
समो य सव्व-भूएसु, तसेसु थावरेसु य ।।९०।।
लाभालाभे सुहे दुहे, जीविए मरणे तहा।
समो णिन्दा-पसंसासु, तहा माणाव-माणओ ।।९१।।
गारवेसु कसाएसु, दण्ड-सल्ल-भएसु य।
णियत्तो हास-सोगाओ, अणियाणो अबंधणो ।।९२।।
अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ।
वासी-चंदण कप्पो य, असणे अणसणे तहा ।।९३।।
अप्प-सत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवो।
अज्झप्प-ज्झाण-जोगेहिं, पसत्थ-दम-सासणे ।।९४।।
एवं णाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य।
भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावेत्तु अप्पयं ।।९५।।

बहुयाणि उ वासाणि, सामण्ण-मणुपालिया।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ।।९६।।
एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, मियापुत्ते जहा-रिसी ।।९७।।
महाप्पभावस्स महाजसस्स, मियाइ पुत्तस्स णिसम्म भासियं।
तवप्पहाणं-चरियं च उत्तमं,गइप्पहाणं च तिलोग विस्सुयं ।।९८।।
वियाणिया दुक्ख-विवड्ढणं धणं,ममत्त-बंधं च महाभयावहं।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेह णिव्वाण-गुणावहं-महं ।।९९।।

।। मियापुत्तीयं एगूणवीसइमज्झयणं समत्तं।।१९।।

।। महाणियंठिज्जं णामं वीसइमं अज्झयणं।। २०।।

सिद्धाणं णमो किच्चा, संजयाणं च भावओ।
अत्थ-धम्मगइं तच्चं, अणुसिट्ठिं सुणेह मे।।१।।
पभूय-रयणो राया, 'सेणिओ' मगहाहिवो।
विहारज्जत्तं णिज्जाओ, 'मण्डि कुच्छिंसि' चेइए।।२।।
णाणा दुम-लयाइण्णं, णाणा पक्खि-णिसेवियं।
णाणा कुसुम-संछण्णं, उज्जाणं णंदणोवमं।।३।।
तत्थ सो पासइ साहुं, संजयं सुसमाहियं।
णिसण्णं रूक्ख-मूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं।।४।।
तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए।
अच्चंत-परमो आसी, अउलो रूव विम्हओ।।५।।
अहो ! वण्णो, अहो ! रूवं, अहो ! अज्जस्स सोमया।
अहो ! खंती, अहो ! मुत्ती, अहो ! भोगे असंगया।।६।।
तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं।
णाइदूर-मणासण्णे, पंजली पडिपुच्छइ।।७।।

तरूणोसि अज्जो ! पव्वइओ, भोग-कालम्मि संजया ।
उवट्ठिओऽसि सामण्णे, एयमट्ठं सुणेमि-त्ता ।।८।।
अणाहोमि महाराय ! णाहो मज्झ ण विज्जइ ।
अणुकंपगं सुहिं वावि, कंचि णाभिसमे-महं ।।६।।
तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमंतस्स, कहं णाहो ण विज्जइ ।।१०।।
होमि णाहो भयंताणं, भोगे भुंजाहि संजया ।
मित्त-णाइ-परिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।।११।।
अप्पणाऽवि अणाहोऽसि, सेणिया मगहाहिवा ।
अप्पणा अणाहो संतो, कहं णाहो भविस्ससि ।।१२।।
एवं वुत्तो णरिंदो सो, सुसम्भन्तो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुय-पुव्वं, साहुणा विम्हयण्णिओ ।।१३।।
अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरियं च मे ।।१४।।
एरिसे सम्पयग्गम्मि, सव्व-काम समप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ, मा हु भंते! मुसं वए ।।१५।।
ण तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा ।
जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा णराहिवा! ।।१६।।
सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
जहा अणाहो भवइ, जहा मेयं पवत्तियं ।।१७।।
कोसम्बी णाम णयरी, पुराण-पुर-भेयणी ।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूय-धण संचओ ।।१८।।
पढमे वए महाराय ! अउला मे अच्छि-वेयणा ।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्व गत्तेसु पत्थिवा ।।१६।।

सत्थं जहा परम तिक्खं, सरीर-विवरन्तरे।
पविसेज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छि-वेयणा ।।२०।।
तियं मे अन्त-रिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई।
इंदासणि-समा घोरा, वेयणा परम दारूणा ।।२१।।
उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जा-मंत तिगिच्छया।
अबीया सत्थ-कुसला, मंत-मूल विसारया ।।२२।।
ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं।
ण य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ।।२३।।
पिया मे सव्व-सारं वि, दिज्जाहि मम कारणा।
ण य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।।२४।।
मायाऽवि मे महाराय! पुत्त सोग दुहट्टिया।
ण य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।।२५।।
भायरो मे महाराय! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा।
ण य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ।।२६।।
भइणीओ मे महाराय ! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा।
ण य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ।।२७।।
भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया।
अंसु-पुण्णेहिं णयणेहिं, उरं मे परिसिंचइ ।।२८।।
अण्णं पाणं च ण्हाणं च, गंध-मल्ल-विलेवणं।
मए णाय-मणायं वा, सा बाला णेव भुंजइ ।।२९।।
खणंऽवि मे महाराय ! पासाओ वि ण फिट्टइ।
ण य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।।३०।।
तओऽहं एव-माहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो।
५ । अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए ।।३१।।

सइं च जइ मुंचेज्जा, वेयणा विउला इओ।
खंतो दंतो णिरारम्भो, पव्वइए अणगारियं ।।३२।।
एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तोमि णराहिवा!।
परीय-त्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ।।३३।।
तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बंधवे।
खंतो दंतो णिरारम्भो, पव्वइओ अणगारियं ।।३४।।
तोऽहं णाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य।
सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाण थावराणं य ।।३५।।
अप्पा णई वेयरणी, अप्पा मे कूड-सामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे णन्दणं वणं ।।३६।।
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय, सुपट्ठिओ ।।३७।।
इमा हु अण्णावि अणाहया णिवा!, तमेग-चित्तो णिहुओ सुणेहि मे।
णियण्ठधम्मं लहियाण वि जहा, सीयंति एगे बहु कायरा णरा ।।३८।।
जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्मं च णो फासयई पमाया।
अणिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, ण मूलओ छिण्णइ बंधणं से ।।३६।।
आउत्तया जस्स य णत्थि कावि, इरियाए भासाए तहेसणाए।
आयाण-णिक्खेव-दुगुंछणाए, ण वीरजायं अणुजाइ मग्गं ।।४०।।
चिरंऽपि से मुण्डरूई भवित्ता, अथिरव्वए तव-णियमेहिं भट्ठे।
चिरंऽपि अप्पाण किलेसइत्ता, ण पारए होइ हु संपराए ।।४१।।
पोल्लेव मुट्ठी जह से असारे, अयनतिए कूड-कहावणे वा।
राढामणी वेरूलिय-प्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु ।।४२।।
कुसील-लिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय बूहइत्ता।
असंजए संजय-लप्पमाणे, विणिग्घाय-मागच्छइ से चिरं पि ।।४३।।

विसं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
एसोऽवि धम्मो विसओव-वण्णो, हणाइ वेयाल इवाविवण्णो ।।४४।।
जे लक्खणं सुविणं पउंजमाणो, णिमित्त-कोऊहल संपगाढे ।
कुहेड-विज्जासव-दार जीवी, ण गच्छइ सरणं तम्मि काले ।।४५।।
तमं-तमेणेव उ से असीले, सया दुही विप्परिया-मुवेइ ।
संधावइ णरग-तिरिक्ख जोणिं, मोणं विराहित्तु असाहुरूवे ।।४६।।
उद्देसियं कीयगडं णियागं, ण मुन्चइ किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्व-भक्खी भवित्ता, इओ चुओ गच्छइ कट्टु पावं ।।४७।।
ण तं अरी कंठ-छित्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पा ।
से णाहिइ मच्चु-मुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दया-विहूणो ।।४८।।
णिरट्ठिया णग्गरूई उ तस्स, जे उत्तमट्ठं विवियासमेइ ।
इमेवि से णत्थि परेवि लोए, दुहओवि से झिज्झइ तत्थ लोए ।।४९।।
एमेवऽहा छंद कुसील-रूवे, मग्गं विराहित्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोग-रसाणुगिद्धा, णिरट्ठसोया परियावमेइ ।।५०।।
सोच्चाण मेहावी सुभासियं इमं, अणुसासणं णाण-गुणोव-वेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महाणियन्ठाण वए पहेणं ।।५१।।
चरित्त-मायार-गुणण्णिए तओ, अणुत्तरं संजम पालियाणं ।
णिरासवे संख-वियाण कम्मं, उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ।।५२।।
एवुग्ग-दंतेऽवि महा तवोधणे, महामुणी महापइण्णे महायसे ।
महाणियंठिज्ज-मिणं महासुयं, से काहए महया वित्थरेणं ।।५३।।
तुट्ठो य सेणिओ राया, इण-मुदाहु कयंजली ।
अणाहयं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ।।५४।।
तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्स जम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी! ।
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य, जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ।।५५।।

तंऽसि णाहो अणाहाणं, सव्व-भूयाण संजया! ।
खामेमि ते महाभाग! इच्छामि अणुसासिउं ।।५६।।
पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाण-विग्घो य जो कओ ।
णिमंतिया य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ।।५७।।
एवं थुणित्ताणं स रायसीहो, अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
स ओरोहो सपरियणो सबंधवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ।।५८।।
ऊस-सिय-रोम-कूवो, काऊण य पयाहिणं ।
अभिवंदिऊण सिरसा, अइयाओ णराहिवो ।।५६।।
इयरोऽवि गुण-समिद्धो, तिगुत्ति-गुत्तो तिदंड-विरओ य ।
विहग-इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगय-मोहो ।।६०।।

।। महाणियंठिज्जं णामं वीसइमज्झयणं समत्तं ।।२०।।

।। समुद्दपालियं एगवीसइमं अज्झयणं ।। २१।।

चंपाए पालिए णाम, सावए आसी वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ।।१।।
णिग्गंथे पावयणे, सावए सेऽवि कोविए ।
पोएण ववहरंते, पिहुण्डं णगरमागए ।।२।।
पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूयरं ।
तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेस-मह पत्थिओ ।।३।।
अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्मि पसवइ ।
अह दारए तहिं जाए, समुद्दपालित्ति णामए ।।४।।
खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं ।
संवड्ढई घरे तस्स, दारए से सुहोइए ।।५।।
बावत्तरी-कलाओ य, सिक्खिए णीइ-कोविए ।
जोव्वणेण य संपण्णे, सुरूवे पियदंसणे ।।६।।

तस्स रूववइं भज्जं, पिया आणेइ रूविणिं।
पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुंदगो जहा ॥७॥
अह अण्णया कयाइ, पासायालोयणे ठिओ।
वज्झ-मण्डण-सोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥८॥
तं पासिऊण संविग्गो, समुद्दपालो इणमब्बवी।
अहोऽसुहाण कम्माणं, णिज्जाणं पावगं इमं ॥९॥
संबुद्धो सो तहिं भगवं, परम-संवेग-मागओ।
आपुच्छम्मा-पियरो, पव्वए अणगारियं ॥१०॥
जहित्तु संगं य-महाकिलेसं, महंत-मोहं कसिणं भयावहं।
परियाय धम्मं चाभि-रोयएज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥
अहिंस सच्चं च अतेणगं च, तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि,चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥१२॥
सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी, खंतिक्खमे संजय बंभयारी।
सावज्जजोगं परिवज्जयंतो, चरिज्ज भिक्खू सुसमाहि-इंदिए ॥१३॥
कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिय अप्पणो य।
सीहो व सद्देण ण संतसेज्जा, वय जोग सुच्चा ण असब्भमाहु ॥१४॥
उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पिय-मप्पियं सव्वं तितिक्खएज्जा।
ण सव्व सव्वत्थ-ऽभिरोयएज्जा,ण यावि पूयं गरहं च संजए ॥१५॥
अणेग-च्छंदामिह माणवेहिं, जे भावओ संपगरेइ भिक्खू।
भय-भेरवा तत्थ उइंति भीमा,दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥१६॥
परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीयंति जत्था बहु-कायरा णरा।
से तत्थ पत्ते ण वहिज्ज भिक्खू,संगामसीसे इव नागराया ॥१७॥
सीओसिणा दंस-मसगा य फासा,आयंका विविहा फुसंति देहं।
अकुक्कुओ तत्थ ऽहियासएज्जा,रयाइं खेवेज्ज पुरे कडाइं ॥१८॥

पहाय रागं य तहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
मेरुव्व वाएण अकम्पमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ।।१६।।
अणुण्णए णावणए महेसी, ण यावि पूयं गरहं च संजए ।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए, णिव्वाण-मग्गं विरए उवेइ ।।२०।।
अरइ-रइ-सहे पहीण-संथवे, विरए आय-हिए पहाणवं ।
परमट्ठ-पएहिं चिट्ठइ, छिण्णसोए अममे अकिंचणे ।।२१।।
विवित्त-लयणाइं भएज्ज ताई, णिरोव-लेवाइं असंथडाइं ।
इसीहिं चिण्णाइं महायसेहिं, काएण फासेज्ज परीसहाइं ।।२२।।
संणाण-णाणोवगए महेसी, अणुत्तरं चरिउं धम्म-संचयं ।
अणुत्तरे णाणधरे जसंसी, ओभासइ सूरि एवन्तलिक्खे ।।२३।।
दुविहं खवेऊण य पुण्ण-पावं, णिरंजणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्दं च महाभवोहं, 'समुद्दपाले' अपुणागमं गए ।।२४।।

।। समुद्दपालीयं एगवीसइमज्झयणं समत्तं ।।२१।।

।। रहणेमिज्जं बावीसइमं अज्झयणं ।। २२।।

'सोरिय पुरम्मि' णयरे, आसि राया महिड्ढिए ।
वसुदेवेत्ति नामेणं, राय-लक्खण-संजुए ।।१।।
तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा ।
तासिं दोण्हं वि दुवे पुत्ता, इट्ठा राम-केसवा ।।२।।
.सोरिय पुरम्मि णयरे, आसी राया महिड्ढिए ।
'समुद्दविजए' णामं, राय-लक्खण-संजुए ।।३।।
तस्स भज्जा 'सिवा' णाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
भगवं 'अरिट्ठणेमि त्ति', लोगणाहे दमीसरे ।।४।।
सो अरिट्ठणेमि-णामो अ, लक्खण-स्सर-संजुओ ।
अट्ठ-सहस्स लक्खण-धरो, गोयमो काल गच्छवी ।।५।।

वज्ज-रिसह संघयणो, सम-चउरंसो झसोयरो।
तस्स रायमई-कण्णं, भज्जं जायइ केसवो।।६।।
अह सा रायवर-कण्णा, सुसीला चारु-पेहिणी।
सव्व-लक्खण-संपण्णा, विज्जु-सोयामणि-प्पभा।।७।।
अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं।
इहा-गच्छउ कुमारो, जा से कण्णं ददामिऽहं।।८।।
सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कय-कोऊय-मंगलो।
दिव्व-जुयल-परिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ।।९।।
मत्तं च गंधहत्थिं च, वासुदेवस्स जेट्ठगं।
आरूढो सोहइ अहियं, सिरे चूडामणी जहा।।१०।।
अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिए।
दसार-चक्केण तओ, सव्वओ परिवारिओ।।११।।
चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं।
तुडियाणं सण्णिणाएणं दिव्वेणं गगणं फुसे।।१२।।
एयारिसीए इड्ढिए, जुईए उत्तमाइ य।
णियगाओ भवणाओ, णिज्जाओ वण्हि-पुंगवो।।१३।।
अह सो तत्थ णिज्जंतो, दिस्स पाणे भयद्दुए।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सण्णिरुद्धे सुदुक्खिए।।१४।।
जीवियन्तं तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए।
पासित्ता से महापण्णे, सारहिं इण-मब्बवी।।१५।।
कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सण्णिरुद्धा य अच्छहिं।।१६।।
अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो।
तुज्झं विवाह-कज्जम्मि, भोयावेउं बहुं जणं।।१७।।

सोऊण तस्स वयणं, बहु-पाणि-विणासणं।
चिंतेइ से महापण्णे, साणुक्कोसे जिएहि उ ।।१८।।
जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू-जिया।
ण मे एयं तु णिस्सेसं, परलोगे भविस्सइ ।।१६।।
सो कुण्डलाण जुयलं, सुत्तगं य महायसो।
आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ।।२०।।
मण परिणामो य कओ, देवा य जहोइयं समोइण्णा।
सव्विड्ढीइ सपरिसा, णिक्खमणं तस्स काउं जे ।।२१।।
देव-मणुस्स-परिवुडो, सिविया-रयणं तओ समारूढो।
णिक्खमिय बारगाओ, रेवययम्मि ठिओ भगवं ।।२२।।
उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाओ सीयाओ।
साहस्सीए परिवुडो, अह णिक्खमइ उ चित्ताहिं ।।२३।।
अह सो सुगंध-गंधिए, तुरियं मउअकुंचिए।
सयमेव लुंचइ केसे, पंच-मुट्ठीहिं समाहिओ ।।२४।।
वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं।
इच्छिय-मणोरहं तुरियं, पावसु तं दमीसरा! ।।२५।।
णाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेणं तवेण य।
खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ।।२६।।
एवं ते राम-केसवा, दसारा य बहू जणा।
अरिट्ठणेमिं वंदित्ता, अभिगया बारगापुरिं ।।२७।।
सोऊण रायकण्णा, पव्वज्जं सा जिणस्स उ।
णीहासा य णिराणन्दा, सोगेण उ समुच्छिया ।।२८।।
राईमई विचिंतेई, धिरत्थु मम जीवियं।
जाऽहं तेणं परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ।।२६।।

अह सा भमर-सण्णिभे, कुच्च-फणग-प्पसाहिए।
सयमेव लुंचइ केसे, धिइमंता ववस्सिया ॥३०॥
वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं।
संसार सायरं घोरं, तर कण्णे लहुं-लहुं ॥३१॥
सा पव्वइया संति, पव्वावेसी तहिं बहुं।
संयणं परियणं चेव, सीलवंता बहुस्सुया ॥३२॥
गिरिं रेवतयं जंती, वासेणुल्ला उ अंतरा।
वासंते अंधया-रम्मि, अंतो लयणस्स सा ठिया ॥३३॥
चीवराणि विसारंति, जहा-जायत्ति पासिया।
रहणेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइऽवि ॥३४॥
भीया य सा तहिं दट्ठुं, एगंते संजयं तयं।
बाहाहिं काउं संगोप्फं, वेवमाणी णिसीयइ ॥३५॥
अह सोऽवि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ।
भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्क-मुदाहरे ॥३६॥
रहणेमी अहं भद्दे!, सुरूवे चारु भासिणी।
ममं भयाहि सुयणु, ण ते पीला भविस्सइ ॥३७॥
एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं।
भुत्त-भोगी तओ पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सामो ॥३८॥
दट्ठुण रहणेमिं तं, भग्गुज्जोय पराजियं।
राईमई असंभन्ता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥३९॥
अह सा रायवर कण्णा, सुट्ठिया णियम-व्वए।
जाइ कुलं च सीलं च, रक्खमाणी तयं वए ॥४०॥
जइऽसि रूवेण वेसमणो, ललिएण णल-कुब्बरो।
तहाऽवि ते ण इच्छामि, जइसि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
णेच्छंति वन्तयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ।।४२।।
धिरत्थु तेऽजसो कामी !, जो तं जीविय कारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ।।४३।।
अहं च भोगरायस्स, तं चऽसि अंधग-वण्हिणो ।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं णिहुओ चर ।।४४।।
जइ तं काहिसी भावं, जा जा दिच्छसि णारिओ ।
वाया विद्धोव्व-हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ।।४५।।
गोवालो भण्डवालो वा, जहा तद्दव्व-ऽणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तंऽपि, सामण्णस्स भविस्ससि ।।४६।।
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासियं ।
अंकुसेण जहा णागो, धम्मे संपडिवाइओ ।।४७।।
कोहं माणं णिगिण्हित्ता, मायं लोहं य सव्वसो ।
इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसंहरे ।।४८।।
मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ ।
सामण्णं णिच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ।।४६।।
उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दोण्णिऽवि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ।।५०।।
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ।।५१।।

।। रहणेमिज्जं णामं बावीसइमं अज्झयणं समत्तं ।।२२।।

।। केसिगोयमिज्जं तेवीसइमं अज्झयणं ।। २३।।

जिणे पासित्ति णामेणं, अरहा लोग-पूइओ।
संबुद्धप्पा य सव्वण्णू, धम्म-तित्थयरे जिणे ।।१।।
तस्स लोग-पईवस्स, आसी सीसे महायसे।
केसी-कुमार-समणे, विज्जा-चरण-पारगे ।।२।।
ओहि-णाण सुए बुद्धे, सीस संघ-समाउले।
गामाणुगामं रीयंते, सावत्थिं पुरिमागए ।।३।।
तिन्दुयं णाम उज्जाणं, तम्मि णयर-मंडले।
फासुए सिज्ज-संथारे, तत्थ वास-मुवागए ।।४।।
अह तेणेव कालेणं, धम्म तित्थयरे जिणे।
भगवं वद्धमाणित्ति, सव्व-लोगम्मि विस्सुए ।।५।।
तस्स लोग-पईवस्स, आसी सीसे महायसे।
भगवं गोयमे णामं, विज्जा चरण पारगे ।।६।।
बारसंग-विऊ बुद्धे, सीस-संघ-समाउले।
गामाणुगामं रीयंते, सेऽवि सावत्थि-मागए ।।७।।
कोट्ठगं णाम उज्जाणं, तम्मि णगर मंडले।
फासुए सिज्ज-संथारे, तत्थ वास-मुवागए ।।८।।
केसी-कुमार समणे, गोयमे य महायसे।
उभओवि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ।।६।।
उभओ सीस-संघाणं, संजयाणं तवस्सिणं।
तत्थ चिंता समुप्पण्णा, गुणवंताण ताइणं ।।१०।।
केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो? ।
आयार-धम्म-प्पणिही, इमा वा सा व केरिसी? ।।११।।

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंच-सिक्खिओ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ।।१२।।
अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो संत-रूत्तरो।
एग-कज्ज पवण्णाणं, विसेसे किं णु कारणं? ।।१३।।
अह ते तत्थ सीसाणं, विण्णाय पवितक्कियं।
समागमे कय-मई, उभओ केसी-गोयमा ।।१४।।
गोयमो पडिरूवण्णू, सीस-संघ-समाउले।
जेट्ठं कुल-मवेक्खन्तो, तिंदुयं वण-मागओ ।।१५।।
केसी-कुमार समणे, गोयमं दिस्स-मागयं।
पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जइ ।।१६।।
पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुस-तणाणि य।
गोयमस्स णिसिज्जाए, खिप्पं संपणा-मए ।।१७।।
केसी कुमार समणे, गोयमे य महायसे।
उभओ णिसण्णा सोहंत्ति, चंद-सूरसम-प्पभा ।।१८।।
समागया बहू तत्थ, पासंडा कोउगा-सिया।
गिहत्थाणं अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ।।१६।।
देव दाणव-गंधव्वा, जक्ख रक्खस्स-किन्नरा।
अदिस्साणं च भूयाणं, आसी तत्थ समागमो ।।२०।।
पुच्छामि ते महाभाग! केसी गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी ।।२१।।
पुच्छ भंते! जहिच्छं ते, केसिं गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं अणुण्णाए, गोयमं इण-मब्बवी ।।२२।।
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंच-सिक्खिओ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ।।२३।।

एग-कज्ज-पवण्णाणं, विसेसे किण्णु कारणं?।
धम्मे दुविहे मेहावी ! कहं विप्पच्चओ ण ते?।।२४।।
तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी।
पण्णा समिक्खए धम्मं, तत्तं तत्त विणिच्छियं।।२५।।
पुरिमा उज्जु-जड्डा उ, वक्क जडा य पच्छिमा।
मज्झिमा उज्जु-पण्णा उ, तेण धम्मे दुहा कए।।२६।।
पुरिमाणं दुव्वि-सोज्झो उ, चरिमाणं दुरणु-पालओ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुवि-सोज्झो सुपालओ।।२७।।
साहु गोयम ! पण्णा ते , छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा।।२८।।
अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो संत-रूत्तरो।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा।।२६।।
एग-कज्ज-पवण्णाणं, विसेसे किं णु कारणं?।
लिंगे दुविहे मेहावी ! कहं विप्पच्चओ ण ते?।।३०।।
केसिमेवं बुवाणं तु, गोयमो इण-मब्बवी।
विण्णाणेण समागम्म, धम्म-साहण-मिच्छियं।।३१।।
पच्च-यत्थं च लोगस्स, णाणाविह विगप्पणं।
जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंग-पओयणं।।३२।।
अह भवे पइण्णा उ, मोक्ख-सब्भूय-साहणा।
णाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव णिच्छए।।३३।।
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।३४।।
अणेगाणं सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा!।
ते य ते अहिगच्छंति, कहं ते णिज्जिया तुमे?।।३५।।

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्व-सत्तू जिणामहं ॥३६॥
सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी ॥३७॥
एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य।
ते जिणित्तु जहा-णायं, विहरामि अहं मुणी! ॥३८॥
साहु गोयम! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥३९॥
दीसंति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसि मुणी? ॥४०॥
ते पासे सव्वसो छित्ता, णिहन्तूण उवायओ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अहं मुणी ॥४१॥
पासा य इइ के वुत्ता, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी ॥४२॥
राग-द्दोसा-दओ तिव्वा, णेहपासा भयंकरा।
ते छिंदित्तु जहाणायं, विहरामि जहक्कमं ॥४३॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥४४॥
अंतो-हियय-संभूया, लया चिट्ठइ गोयमा!।
फलेइ विस-भक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं? ॥४५॥
तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं।
विहरामि जहाणायं, मुक्कोमि विस-भक्खणं ॥४६॥
लया य इइ का वुत्ता, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी ॥४७॥

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीम-फलोदया।
तमुच्छित्तु जहाणायं, विहरामि महामुणी ॥४८॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥४९॥
संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा!।
जे डहन्ति सरीरत्था, कहं विज्झाविया तुमे? ॥५०॥
महामेह-प्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं।
सिंचामि सययं ते उ, सित्ता णो व डहंति मे ॥५१॥
अग्गी य इइ के वुत्ता, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी ॥५२॥
कसाया अग्गिणो वुत्ता; सुय-सील-तवो जलं।
सुयधाराभिहया संता, भिण्णा हु ण डहंति मे ॥५३॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥५४॥
अयं साहस्सिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ।
जंसि गोयम ! आरूढो, कहं तेण ण हीरसि? ॥५५॥
पहावन्तं णिगिण्हामि, सुयरस्सी समाहियं।
ण मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जइ ॥५६॥
आसे य इइ के वुत्ते, केसी गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी ॥५७॥
मणो साहस्सिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ।
तं सम्मं तु णिगिण्हामि, धम्म-सिक्खाइ कन्थगं ॥५८॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥५९॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

कुप्पहा बहवे लोए, जेहिं णासंति जन्तुवो।
अद्धाणे कहं वट्टन्तो, तं ण णाससि गोयमा! ॥६०॥
जे य मग्गेण गच्छंति, जे य उम्मग्ग-पट्ठिया।
ते सव्वे वेइया मज्झं, तो ण णस्सामहं मुणी! ॥६१॥
मग्गे य इइ के वुत्ते, केसी गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी ॥६२॥
कुप्पवयण पासंडी, सव्वे उम्मग्ग पट्ठिया।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥६४॥
महाउदग-वेगेणं, वुज्झ-माणाण पाणिणं।
सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मण्णसी मुणी! ॥६५॥
अत्थि एगो महादीवो, वारि-मज्झे महालओ।
महाउदग-वेगस्स, गई तत्थ ण विज्जइ ॥६६॥
दीवे य इइ के वुत्ते, केसी गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी ॥६७॥
जरा-मरण वेगेणं, वुज्झ-माणाण पाणिणं।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरण-मुत्तमं ॥६८॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥६९॥
अण्णवंसि महोहंसि, णावा विपरि-धावइ।
जंसि गोयम-मारूढो, कहं पारं गमिस्ससि? ॥७०॥
जा उ अस्साविणी णावा, ण सा पारस्स गामिणी।
जा णिरस्साविणी णावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥७१॥

णावा य इइ का वुत्ता, केसी गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इण-मब्बवी ॥७२॥
सरीरमाहु णावत्ति, जीवो वुच्चइ णाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो ॥७३॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥७४॥
अंधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू।
को करिस्सइ उज्जोयं, सव्व-लोगम्मि पाणिणं ॥७५॥
उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोय-प्पभंकरो।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्व-लोयम्मि पाणिणं ॥७६॥
भाणू य इइ के वुत्ते, केसी गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इण मब्बवी ॥७७॥
उग्गओ खीण-संसारो, सव्वण्णू जिणभक्खरो।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्व लोयम्मि पाणिणं ॥७८॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥७९॥
सरीर-माणसे दुक्खे, बज्झ-माणाण पाणिणं।
खेमं सिव-मणाबाहं, ठाणं किं मण्णसि मुणी? ॥८०॥
अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगग्गम्मि दुरारुहं।
जत्थ णत्थि जरा-मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥८१॥
ठाणे य इइ के वुत्ते, केसी गोयम-मव्ववी।
तओ केसिं वुवन्तं तु, गोयमो इण-मव्ववी ॥८२॥
णिव्वाणंति अवाहं-ति, सिद्धी लोगग्ग-मेव य।
ेमं सिवं अणावाहं, जं चरंति महेसिणो ॥८३॥

तं ठाणं सासयं वासं, लोगग्गम्मि दुरारूहं।
जं संपत्ता ण सोयंति, भवो-हन्तकरा मुणी ।।८४।।
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
णमो ते संसयातीत, सव्व-सुत्त महोयही ।।८५।।
एवं तु संसए छिण्णे, केसी घोर-परक्कमे।
अभिवंदित्ता सिरसा, गोयमं तु महायसं ।।८६।।
पंच महव्वय धम्मं, पडिवज्जइ भावओ।
पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ।।८७।।
केसी-गोयमओ णिच्चं, तम्मि आसि समागमे।
सुय सील समुक्करिसो, महत्थत्थ विणिच्छओ ।।८८।।
तोसिया परिसा सव्वा, सम्मग्गं समुवट्ठिया।
संथुया ते पसीयंतु, भयवं केसि-गोयमे ।।८९।।

।। केसिगोयमिज्जं णामं तेविसइमं अज्झयणं समत्तं ।।२३।।

।। समिइओ चउवीसइमं अज्झयणं ।। २४।।

अट्ठ पवयण-मायाओ, समिई गुत्ती तहेव य।
पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तीउ आहिया।।१।।
ईरिया-भासेसणा-दाणे, उच्चारे समिई इय।
मण-गुत्ती वय-गुत्ती, काय-गुत्ती य अट्ठमा।।२।।
एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया।
दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं।।३।।
आलम्बणेण कालेण, मग्गेण जयणाइ य।
चउकारण परिसुद्धं, संजए ईरियं रिए।।४।।
तत्थ आलम्बणं णाणं, दंसणं चरणं तहा।
काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पह वज्जिए।।५।।

दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा ।
जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ।।६।।
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खेत्तओ ।
कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ।।७।।
इंदियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिए ।।८।।
कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्त या ।
हासे भए मोहरिए, विकहासु तहवे य ।।९।।
एयाइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पण्णवं ।।१०।।
गवेसणाए गहणे य, परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहि-सेज्जाए, एए तिण्णि विसोहए ।।११।।
उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयम्मि चउक्कं, विसोहेज्ज जयं जई ।।१२।।
ओहोवहो-वग्गहियं, भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हंतो णिक्खिवंतो वा, पउंजेज्ज इमं विहिं ।।१३।।
चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए णिक्खिवेज्जा वा, दुहओ-वि समिए सया ।।१४।।
उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण-जल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं, अण्णं वावि तहाविहं ।।१५।।
अणावाय-मसंलोए, अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवाय-मसंलोए, आवाए चेव संलोए ।।१६।।
अणावाय-मसंलोए, परस्स-ऽणुव-घाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि, अचिर-काल-कयम्मि य ।।१७।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

वित्थिण्णे दूर-मोगाढे, णासण्णे बिल-वज्जिए।
तस-पाण-बीय-रहिए, उच्चा-राईणि वोसिरे ।।१८।।
एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया।
एत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्वसो ।।१६।।
सच्चा तहवे मोसा य, सच्चमोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य, मण-गुत्तिओ चउव्विहा ।।२०।।
सम्रंभ समारंभे, आरंभे य तहेव य।
मणं पवत्तमाणं तु, णियत्तेज्ज जयं जई ।।२१।।
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चमोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा ।।२२।।
सम्रंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य।
वयं पवत्तमाणं तु, णियत्तेज्ज जयं जई ।।२३।।
ठाणे णिसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे।
उल्लंघण-पल्लंघणे, इंदियाण य जुंजणे ।।२४।।
सम्रंभ-समारंभे, आरंभम्मि तहेव य।
कायं पवत्तमाणं तु, णियत्तेज्ज जयं जई ।।२५।।
एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे।
गुत्ती णियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ।।२६।।
एयाओ पवयण-माया, जे सम्मं आयरे मुणी।
सो खिप्पं सव्व संसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए ।।२७।।

।। समिईओ णामं चउवीसइमं अज्झयणं समत्तं।।२४।।

।। जण्णइज्जं पंचवीसइमं अज्झयणं।। २५।।

माहण-कुल संभूओ, आसी विप्पो महायसो।
जायाई जम्म-जण्णम्मि, 'जयघोसि त्ति' णामओ।।१।।
इंदिय-ग्गाम-णिग्गाही, मग्गगामी महामुणी।
गामाणुगामं रीयंते, पत्तो वाणारसिं पुरिं।।२।।
वाणारसीए बहिया, उज्जाणम्मि मणोरमे।
फासुए सेज्ज-संथारे, तत्थ वास-मुवागए।।३।।
अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे।
विजयघोसि त्ति णामेणं, जण्णं जयइ वेयवी।।४।।
अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमण पारणे।
विजय घोसस्स जण्णम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए।।५।।
समुवट्ठियं तहिं सन्तं, जायगो पडिसेहए।
ण हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू ! जायाहि अण्णओ।।६।।
जे य वेयविऊ विप्पा, जण्णट्ठा य जे. दिया।
जोइसंग-विऊ जे य, जे य धम्माणं पारगा।।७।।
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाण-मेव य।
तेसिं अण्णमिणं देयं, भो भिक्खू! सव्व-कामियं।।८।।
सो तत्थ एवं पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी।
ण वि रुट्ठो ण वि तुट्ठो, उत्तमट्ठ-गवेसओ।।९।।
णण्णट्ठं पाणहेउं वा, ण वि णिव्वाहणाय वा।
तेसिं विमोक्खण ट्ठाए, इमं वयण-मब्बवी।।१०।।
ण वि जाणासि वेयमुहं, ण वि जण्णाण जं मुहं।
णक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं।।११।।

जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य।
ण ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ।।१२।।
तस्सऽक्खेव-पमोक्खं तु, अचयन्तो तहिं दिओ।
सपरिसो पंजली होउं, पुच्छइ तं महामुणिं ।।१३।।
वेयाणं च मुहं बूहि, बूहि जण्णाण जं मुहं।
णक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ।।१४।।
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाण-मेव य।
एयं मे संसयं सव्वं, साहू ! कहसु पुच्छिओ ।।१५।।
अग्गिहुत्त-मुहा वेया, जण्णट्ठी वेयसा मुहं।
णक्खत्ताणं मुहं चंदो, धम्माणं कासवो मुहं ।।१६।।
जहा चन्दं गहाईया, चिट्ठंति पंजलीउडा।
वंदमाणा णमंसंता, उत्तमं मणहारिणो ।।१७।।
अजाणगा जण्णवाई, विज्जा-माहण-संपया।
मूढा सज्झाय-तवसा, भासच्छण्णा इवऽग्गिणो ।।१८।।
जो लोए बम्भणो वुत्तो, अग्गीव महिओ जहा।
सया कुसल-संदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ।।१६।।
जो ण सज्जइ आगन्तुं, पव्वयंतो ण सोयइ।
रमइ अज्ज-वयणम्मि, तं वयं बूम माहणं ।।२०।।
जायरूवं जहा-मट्ठं, णिद्धंत-मल-पावगं।
राग-द्दोस-भयाईयं, तं वयं बूम माहणं ।।२१।।
तवस्सियं किसं दन्तं, अवचिय-मंस-सोणियं।
सुव्वयं पत्त-णिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ।।२२।।
तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण य थावरे।
जो ण हिंसइ तिविहेणं, तं वयं बूम माहणं ।।२३।।

कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया।
मुसं ण वयइ जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥२४॥
चित्तमंत-मचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं।
ण गिण्हइ अदत्तं जे, तं वयं बूम माहणं ॥२५॥
दिव्व-माणुस्स-तेरिच्छं, जो ण सेवइ मेहुणं।
मणसा काय वक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥२६॥
जहा पोमं जले जायं, णोवलिप्पइ वारिणा।
एवं अलित्तं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥२७॥
अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं।
असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२८॥
जहित्ता पुव्व-संजोगं, णाइ-संगे य बंधवे।
जो ण सज्जइ भोगेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२९॥
पसुबंधा सव्व-वेया, जट्ठं च पावकम्मुणा।
ण तं तायंति दुस्सीलं, कम्माणि बलवंति हि ॥३०॥
ण वि मुंडिएण समणो, ण ओंकारेण बम्भणो।
ण मुणी रण्ण-वासेणं, कुस-चीरेण ण तावसो ॥३१॥
समयाए समणो होइ, बम्भचेरेण बम्भणो।
णाणेण य मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३२॥
कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ।
वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥३३॥
एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ।
सव्वकम्म विणिम्मुक्कं, तं वयं बूम माहणं ॥३४॥
एवं गुण समाउत्ता, जे भवंति दिओत्तमा।
ते समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाण-मेव य ॥३५॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

एवं तु संसए छिण्णे, विजयघोसे य माहणे।
समुदाय तओ तं तु, जयघोसं महामुणिं ॥३६॥
तुट्ठे य विजयघोसे, इण-मुदाहु कयंजली।
माहणत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥३७॥
तुब्भे जइया जण्णाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ।
जोइ-संग-विऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥३८॥
तुब्भे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाण-मेव य।
तमणुग्गहं करेहम्हं, भिक्खेणं भिक्खू उत्तमा ॥३९॥
ण कज्जं मज्झ भिक्खेण, खिप्पं णिक्खमसू-दिया।
मा भमिहिसि भयावट्टे, घोरे संसार-सागरे ॥४०॥
उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी णोवलिप्पइ।
भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥४१॥
उल्लो सुक्को य दो छूढा, गोलया मट्टिया-मया।
दोवि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोऽत्थ लग्गइ ॥४२॥
एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे णरा काम-लालसा।
विरत्ता उ ण लग्गंति, जहा से सुक्क गोलए ॥४३॥
एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अंतिए।
अणगारस्स णिक्खंतो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥४४॥
खवित्ता पुव्व कम्माइं, संजमेण तवेण य।
जयघोस विजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४५॥

॥ जण्णइज्जं णामं पंचवीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥२५॥

।। सामायारी छव्वीसइमं अज्झयणं।। २६।।

सामायारिं पवक्खामि, सव्व-दुक्ख विमोक्खणिं।
जं चरित्ताण णिग्गंथा, तिण्णा संसार-सागरं।।१।।
पढमा आवस्सिया णाम, बिइया य णिसीहिया।
आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा।।२।।
पंचमी छंदणा णाम, इच्छाकारो य छट्ठओ।
सत्तमो मिच्छाकारो उ, तहक्कारो य अट्ठमो।।३।।
अब्भुट्ठाणं य णवमं, दसमी उवसंपया।
एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइया।।४।।
गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा णिसीहियं।
आपुच्छणा सयं-करणे, परकरणे पडिपुच्छणा।।५।।
छंदणा दव्व-जाएणं, इच्छाकारो य सारणे।
मिच्छाकारो य णिंदाए, तहक्कारो पडिस्सुए।।६।।
अब्भुट्ठाण गुरुपूया, अच्छणे उवसंपया।।
एवं दु-पंच-संजुत्ता, सामायारी पवेइया।।७।।
पुव्वि-ल्लम्मि चउब्भाए, आइच्चम्मि समुट्ठिए।
भण्डयं पडिलेहित्ता, वंदित्ता य तओ गुरुं।।८।।
पुच्छिज्ज पंजलिउडो, किं कायव्वं मए इह।
इच्छं णिओइउं भंते !, वेयावच्चे व सज्झाए।।९।।
वेयावच्चे णिउत्तेणं, कायव्वं अगिलायओ।
सज्झाए वा णिउत्तेणं, सव्वदुक्ख विमोक्खणे।।१०।।
दिवसस्स चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि।।११।।

पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायइ।
तईयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं ।।१२।।
आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया।
चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ।।१३।।
अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं य दुरंगुलं।
वड्ढए हायए वावि, मासेणं चउरंगुलं ।।१४।।
आसाढ-बहुल-पक्खे, भद्दवए कत्तिए य पोसे य।
फग्गुण-वइसाहेसु य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ।।१५।।
जेट्ठामूले आसाढ-सावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा।
अट्ठहिं बीय-तइयम्मि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ।।१६।।
रइंवि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसुऽवि ।।१७।।
पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई।
तइयाए णिद्द-मोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ।।१८।।
जं णेइ जया रइं, णक्खत्तं तम्मि णह चउब्भाए।
सम्पत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओस कालम्मि ।।१९।।
तम्मेव य णक्खत्ते, गयण-चउब्भाग-सावसेसम्मि।
वेरत्तियंपि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ।।२०।।
पुव्वि-ल्लम्मि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भंडयं।
गुरुं वंदित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्ख-विमोक्खणं ।।२१।।
पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं।
अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ।।२२।।
मुहपत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं।
गोच्छग-लइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ।।२३।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे।
तो बिइयं पप्फोडे, तइयं च पुणो पमज्जिजज्जा ।।२४।।
अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबंधिं अमोसलिं चेव।
छ-प्पुरिमा णव खोडा, पाणी पाणि-विसोहणं ।।२५।।
आरभडा सम्मद्दा, वज्जेयव्वा य मोसली तइया।
पप्फोडणा चउत्थी, विक्खिता वेइया छट्ठी ।।२६।।
पसिढिल-पलम्ब-लोला, एगा-मोसा अणेग-रूव धुणा।
कुणइ पमाणि पमायं, संकिय-गणणोवगं कुज्जा ।।२७।।
अणूणाइ रित्त-पडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य।
पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि उ अप्पसत्थाइं ।।२८।।
पडिलेहणं कुणंतो, मिहो कहं कुणई जणवय-कहं वा।
देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ।।२९।।
पुढवी-आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ तसाणं।
पडिलेहणा-पमत्तो, छण्हं वि विराहओ होइ ।।३०।।
पुढवी-आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं।
पडिलेहणा-आउत्तो, छण्हं संरक्खओ होइ ।।३१।।
तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए।
छण्हं अण्ण-तराए, कारणम्मि समुट्ठिए ।।३२।।
वेयण[1] वेयावच्चे[2], इरियट्ठाए[3] य संजमट्ठाए[4]।
तह पाणवत्तियाए[5], छट्ठं पुण धम्मचिंताए[6] ।।३३।।
णिग्गंथो धिइमंतो, णिग्गंथी वि ण करेज्ज छहिं चेव।
ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्क-मणाइ से होइ ।।३४।।
आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बम्भचेर-गुत्तीसु।
पाणिदया तव-हेउं, सरीर-वोच्छेयण-ट्ठाए ।।३५।।

अवसेसं भण्डगं गिज्झा, चक्खुसा पडिलेहए।
परमद्ध जोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ।।३६।।
चउत्थीए पोरिसीए, णिक्खिवित्ताण भायणं।
सज्झायं च तओ कुज्जा, सव्व-भाव-विभावणं ।।३७।।
पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं।
पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ।।३८।।
पासवणुच्चार भूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं ।।३६।।
देवसियं य अइयारं, चिंतिज्जा अणुपुव्वसो।
णाणे य दंसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ।।४०।।
पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
देवसियं तु अइयारं, आलोएज्ज जहक्कम्मं ।।४१।।
पडिक्कमित्तु णिस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं ।।४२।।
पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
थुइ-मंगलं च काऊणं, कालं संपडिलेहए ।।४३।।
पढमं पोरिसि सज्झायं, बिइयं झाणं झियायइ।
तइयाए णिद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ।।४४।।
पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिया।
सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहंतो असंजए ।।४५।।
पोरिसीए चउब्भाए, वंदिऊण तओ गुरुं।
पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ।।४६।।
आगए काय-वोस्सग्गे, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणे।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं ।।४७।।

राइयं च अइयारं, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो।
णाणंमि दंसणंमि य, चरित्तंमि तवंमि य॥४८॥
पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
राइयं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कम्मं॥४६॥
पडिक्कमित्तु णिस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं॥५०॥
किं तवं पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचिंतए।
काउस्सगं तु पारित्ता, करिज्जा जिणसंथवं॥५१॥
पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
तवं संपडि-वज्जित्ता, कुज्जा सिद्धाण संथवं॥५२॥
एसा सामायारी, समासेण वियाहिया।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसार-सागरं॥५३॥

॥ सामायारी णामं छव्वीसइमज्झयणं समत्तं॥२६॥

॥ खलुंकिज्जं सत्तवीसइमं अज्झयणं ॥ २७॥

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए।
आइण्णे गणि-भावम्मि, समाहिं पडिसंधए॥१॥
वहणे वहमाणस्स, कंतारं अइवत्तई।
जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तई॥२॥
खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सइ।
असमाहिं च वेएइ, तोत्तओ य से भज्जइ॥३॥
एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विंधइ-ऽभिक्खणं।
एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पह-पट्ठिओ॥४॥
एगो पडइ पासेणं, णिवेसइ णिवज्जइ।
उक्कुद्दइ उप्फिडइ, सढे बालगवी वए॥५॥

माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं।
मय लक्खेण चिट्ठइ, वेगेण य पहावई।।६।।
छिण्णाले छिंदइ सेल्लिं, दुद्दंतो भंजए जुगं।
से वि य सुस्सुया-इत्ता, उज्जहित्ता पलायए।।७।।
खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा।
जोइया धम्म-जाणम्मि, भज्जंति धिइ-दुब्बला।।८।।
इड्ढी-गारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे।
साया-गारविए एगे, एगे सुचिर कोहणे।।६।।
भिक्खा-लसिए एगे, एगे ओमाण भीरुए।
थद्धे एगे-अणुसासम्मि, हेऊहिं कारणेहिं य।।१०।।
सोवि अंतर-भासिल्लो, दोसमेव पकुव्वइ।
आयरियाणं तु वयणं, पडिकूलेइ-ऽभिक्खणं।।११।।
ण सा ममं वियाणाइ, णवि सा मज्झ दाहिई।
णिग्गया होहिइ मण्णे, साहू अण्णोऽत्थ वज्जउ।।१२।।
पेसिया पलि उंचन्ति, ते परियंति समन्तओ।
रायवेट्ठिं च मण्णंता, करेंति भिउडिं मुहे।।१३।।
वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेण पोसिया।
जाय-पक्खा जहा हंसा, पक्कमंति दिसो दिसिं।।१४।।
अह सारही विचिंतेइ, खलुंकेहिं समागओ।
किं मज्झ दुट्ठ-सीसेहिं, अप्पा मे अवसीयइ।।१५।।
जारिसा मम सीसाउ, तारिसा गलि-गद्दहा।
गलि-गद्दहे जहित्ताणं, दढं पगिण्हइ तवं।।१६।।
मिउ-मद्दव संपण्णो, गम्भीरो सुसमाहिओ।
विहरइ महिं महप्पा, सील भूएण अप्पणा।।१७।।

।। खलुंकिज्जं णामं सत्तवीसइमज्झयणं समत्तं।।२७।।

।। मोक्खमग्गगई अट्ठावीसइमं अज्झयणं।। २८।।

मोक्ख-मग्ग-गइं तच्चं, सुणेह जिण-भासियं।
चउ-कारण संजुत्तं, णाण-दंसण-लक्खणं ।।१।।
णाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गुत्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वर-दंसिहिं ।।२।।
णाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एयं मग्ग-मणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं ।।३।।
तत्थ पंचविहं णाणं, सुयं आभिणि-बोहियं।
ओहि-णाणं तु तइयं, मण णाणं च केवलं ।।४।।
एयं पंचविहं णाणं, दव्वाण य गुणाण य।
पज्जवाणं च सव्वेसिं, णाणं णाणीहिं देसियं ।।५।।
गुणाण-मासओ दव्वं, एग-दव्वस्सिया गुणा।
लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे ।।६।।
धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गल-जंतवो।
एस लोगो-त्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वर-दंसिहिं ।।७।।
धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्क-माहियं।
अणंताणि य दव्वाणि, कालो पुग्गल-जंतवो ।।८।।
गइ-लक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाण-लक्खणो।
भायणं सव्व-दव्वाणं, णहं ओगाह-लक्खणं ।।९।।
वत्तणा-लक्खणो कालो, जीवो उवओग-लक्खणो।
णाणेणं दंसणेणं च, सुहेण य दुहेण य ।।१०।।
णाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ।।११।।
सद्दन्धयार-उज्जोओ, पभा छाया ऽऽतवो-इ वा।
वण्ण-रस-गंध-फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ।।१२।।

एगत्तं च पुहुत्तं च, संखा संठाण-मेव य।
संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खणं ।।१३।।
जीवाजीवा य बंधो य, पुण्णं पावाऽसवो तहा।
संवरो णिज्जरा मोक्खो, सन्त्येए तहिया णव ।।१४।।
तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं।
भावेण सद्दहंतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ।।१५।।
णिसग्गुवएस रुई, आणारुई सुत्त-बीयरुइ मेव।
अभिगम-वित्थार रुई, किरिया-संखेव धम्मरुई ।।१६।।
भूयत्थे-णाहि-गया, जीवाजीवा य पुण्ण-पावं च।
सह सम्मइयाऽसव-संवरो य, रोएइ उ णिसग्गो ।।१७।।
जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव।
एमेव णण्णहत्ति य, स णिसग्ग-रुइ-त्ति णायव्वो ।।१८।।
एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहई।
छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ-त्ति णायव्वो ।।१६।।
रागो दोसो मोहो, अण्णाणं जस्स अवगयं होइ।
आणाए रोयंतो, सो खलु आणारुई णामं ।।२०।।
जो सुत्त-महिज्जंतो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं।
अंगेण बाहिरेण व, सो सुत्त रुइ-त्ति णायव्वो ।।२१।।
एगेण अणेगाइं पयाइं, जो पसरइ उ सम्मत्तं।
उदए व्व तेल्लबिंदू, सो बीय-रुई-त्ति णायव्वो ।।२२।।
सो होइ अभिगम रुई, सुयणाणं जेण अत्थओ दिट्ठं।
एक्कारस अंगाइं, पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ।।२३।।
दव्वाण सव्वभावा, सव्व पमाणेहिं जस्स उवलद्धा।
सव्वाहिं णय-विहीहिं, वित्थार रुइ-त्ति णायव्वो ।।२४।।

दंसण-णाण-चरित्ते, तव-विणए सच्च-समिइ-गुत्तीसु ।
जो किरिया भाव-रुई, सो खलु किरिया रुई णाम ।।२५।।
अणभिग्ग-हिय-कुदिट्ठी, संखेव रुइ-त्ति होइ णायव्वो ।
अविसारओ पवयणे, अणभिग्ग-हिओ य सेसेसु ।।२६।।
जो अत्थिकाय-धम्मं, सुय-धम्मं खलु चरित्त-धम्मं च ।
सद्दहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ-त्ति णायव्वो ।।२७।।
परमत्थ संथवो वा, सुदिट्ठ परमत्थ-सेवणा वावि ।
वावण्ण कुदंसण-वज्जणा, य सम्मत्त सद्दहणा ।।२८।।
णत्थि चरित्तं सम्मत्त विहूणं, दंसणे उ भइयव्वं ।
सम्मत्त-चरित्ताइं, जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ।।२९।।
णादंसणिस्स णाणं, णाणेण विणा ण हुंति चरणगुणा ।
अगुणिस्स णत्थि मोक्खो, णत्थि अमोक्खस्स णिव्वाणं ।।३०।।
णिस्संकिय-णिक्कंखिय-णिव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उवबूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ।।३१।।
सामाइ-यत्थ पढमं, छेओ-वट्ठावणं भवे बीयं ।
परिहार-विसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च ।।३२।।
अकसाय-महक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ।।३३।।
तवो य दुविहो वुत्तो, बाहि-रब्भंतरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एव-मब्भंतरो तवो ।।३४।।
णाणेण जाणेइ भावे, दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण णिगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ ।।३५।।
खवित्ता पुव्व कम्माइं, संजमेण तवेण य ।
सव्वदुक्ख-पहीणट्ठा, पक्कमंति [illegible] णो ।।३६।।

।। मोक्खमग्गइ णामं [illegible] अज्झयणं [illegible]

।। सम्मत्तपरक्कमं एगूणतीसइमं अज्झयणं ।। २६ ।।

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एव-मक्खायं। इह खलु सम्मत्त-परक्कमे णामं अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए, जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वा-यंति सव्व-दुक्खाण-मंतं करेंति।

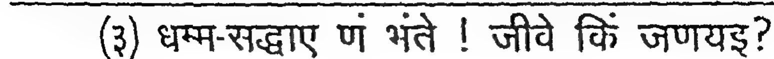
तस्स णं अयमट्ठे एव-माहिज्जइ, तंजहा-

संवेगे[१] णिव्वेए[२] धम्मसद्धा[३] गुरु-साहम्मिय-सुस्सू-सणया[४] आलोयणया[५] णिंदणया[६] गरिहणया[७] सामाइए[८] चउव्वीसत्थवे[९] वंदणे[१०] पडिक्कमणे[११] काउस्सग्गे[१२] पच्चक्खाणे[१३] थव'थुईमंगले[१४] कालापडिलेहणया[१५] पायच्छित्त-करणे[१६] खमावयणया[१७] सज्झाए[१८] वायणया[१९] पडिपुच्छणया[२०] परियट्टणया[२१] अणुप्पेहा[२२] धम्मकहा[२३] सुयस्स आराहणया[२४] एगग्ग-मण-संणिवेसणया[२५] संजमे[२६] तवे[२७] वोदाणे[२८] सुहसाए[२९] अप्पडि बद्धया[३०] विवित्त-सयणासण-सेवणया[३१] विणियट्टणया[३२] संभोग-पच्चक्खाणे[३३] उवहि-पच्चक्खाणे[३४] आहार-पच्चक्खाणे[३५] कसाय-पच्चक्खाणे[३६] जोग-पच्चक्खाणे[३७] सरीर-पच्चक्खाणे[३८] सहाय-पच्चक्खाणे[३९] भत्त-पच्चक्खाणे[४०] सब्भाव-पच्चक्खाणे[४१] पडिरूवणया[४२] वेयावच्चे[४३]

सव्वगुण-संपण्णया[४४] वीयरागया[४५] खंती[४६] मुत्ती[४७] मद्दवे[४८] अज्जवे[४९] भावसच्चे[५०] करणसच्चे[५१] जोगसच्चे[५२] मणगुत्तया[५३] वयगुत्तया[५४] कायगुत्तया[५५] मण-समाधारणया[५६] वय-समाधारणया[५७] काय-समाधारणया[५८] णाण-संपण्णया[५९] दंसण-संपण्णया[६०] चरित्त-संपण्णया[६१] सोइंदिय-णिग्गहे[६२] चक्खुंदिय-णिग्गहे[६३] घाणिंदिय-णिग्गहे[६४] जिब्भिंदिय-णिग्गहे[६५] फासिंदिय-णिग्गहे[६६] कोह-विजए[६७] माण-विजए[६८] माया-विजए[६९] लोह-विजए[७०] पेज्ज-दोस-मिच्छादंसण विजए[७१] सेलेसी[७२] अकम्मया[७३]।

(१) संवेगेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ। अणुत्तराए धम्म-सद्धाए संवेगं हव्व-मागच्छइ। अंणताणु-बंधि-कोह-माण-माया-लोहे खवेइ। णवं च कम्मं ण बंधइ । तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्त-विसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ। दंसण-विसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थे-गइए तेणेव भव-ग्गहणेणं सिज्झइ। विसोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं णाइक्कमइ।

(२) णिव्वेएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? णिव्वेएणं दिव्व-माणुस-तेरिच्छिएसु कामभोगेसु णिव्वेयं हव्व-मागच्छइ। सव्व-विसएसु विरज्जइ। सव्व-विसएसु विरज्जमाणे आरम्भ परिच्चायं करेइ। आरम्भ-परिच्चायं करेमाणे संसार मग्गं वोच्छिंदइ, सिद्धि-मग्गं पडिवण्णे य हवइ।



(३) धम्म-सद्धाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? धम्मसद्धाए णं साया-सोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। आगारधम्मं च णं चयइ। अणगारिए णं जीवे सारीर-माणसाणं दुक्खाणं छेयण-भेयण संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ, अव्वाबाहं च सुहं णिव्वत्तेइ।

(४) गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? गुरु-साहम्मिय- सुस्सूसणयाए णं विणय-पडिवत्तिं जणयइ। विणय पडिवण्णे य णं जीवे अणच्चा सायण-सीले नेरइय-तिरिक्ख जोणिय मणुस्स-देव-दुग्गइओ णिरुम्भइ।वण्ण-संजलण-भत्ति-बहुमाणयाए मणुस्स-देवसुग्गइओ णिबंधइ, सिद्धिं-सोग्गइं च विसोहेइ। पसत्थाइं च णं विणय-मूलाइं सव्व कज्जाइं साहेइ। अण्णे य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ।

(५) आलोयणाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? आलोयणाए णं माया-णियाण-मिच्छा दंसण-सल्लाणं, मोक्खमग्ग-विग्घाणं, अणंत-संसार-बंधणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च जणयइ। उज्जुभाव पडिवण्णे य णं जीवे अमाई इत्थी-वेय णपुंसग-वेयं च ण बंधइ। पुव्वबद्धं य णं णिज्जरेइ।

(६) णिंदणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? णिंदणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ। पच्छाणु-तावेणं

विरज्जमाणे करणगुण-सेढिं पडिवज्जइ। करणगुण सेढी-पडिवण्णे य णं अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ।

(७) गरहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो णियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ। पसत्थ जोग पडिवण्णे य णं अणगारे अणंतघाइ-पज्जवे खवेइ।

(८) सामाइएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सामाइएणं सावज्ज जोग-विरइं जणयइ।

(९) चउव्वीसत्थएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? चउव्वीसत्थएणं दंसण विसोहिं जणयइ।

(१०) वंदणएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? वंदणएणं णीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चा-गोयं कम्मं णिबंधइ, सोहग्गं च णं अपडिहयं आणाफलं णिव्वत्तेइ, दाहिणभावं च णं जणयइ।

(११) पडिक्कमणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? पडिक्कमणेणं वयछिद्दाणि पिहेइ। पिहिय-वयछिद्दे पुण जीवे णिरुद्धासवे असबल-चरित्ते अट्ठसु-पवयण-मायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ।

(१२) काउस्सग्गेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? काउस्सग्गेणं तीय-पडुप्पण्णं पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्ध

पायच्छित्ते य जीवे णिव्वुय-हियए ओहरिय-भरुव्व भारवहे पसत्थ-ज्झाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ।

(१३) पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? पच्चक्खाणेणं आसव-दाराइं णिरुम्भइ। पच्चक्खाणेणं इच्छा-णिरोहं जणयइ इच्छा-णिरोहं गए य णं जीवे सव्व-दव्वेसु विणीय-तण्हे सीइभूए विहरइ।

(१४) थव-थुइ मंगलेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? थव-थुइ मंगलेणं णाण-दंसण-चरित्त-बोहिलाभं जणयइ। णाण-दंसण-चरित्त बोहिलाभ संपण्णे य णं जीवे अंतकिरियं कप्प-विमाणोव-वत्तियं आराहणं आराहेइ।

(१५) काल-पडिलेहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? काल-पडिलेहणयाए णं णाणा-वरणिज्जं कम्मं खवेइ।

(१६) पायच्छित्त करणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? पायच्छित्त-करणेणं पावकम्म-विसोहिं जणयइ। णिरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयार-फलं च आराहेइ।

(१७) खमावणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? खमावणयाए णं पल्हायण-भावं जणयइ। पल्हायण-भावमुवगए य सव्व-पाण-भूय- जीव-सत्तेसु मित्तीभाव-मुप्पाएइ।

मित्तीभाव-मुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण णिब्भए भवइ।

(१८) सज्झाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? सज्झाएणं णाणा-वरणिज्जं कम्मं खवेइ।

(१६) वायणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? वायणाए णं णिज्जरं जणयइ। सुयस्स य अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टए। सुयस्स अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टमाणे तित्थ-धम्मं अवलम्बइ। तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।

(२०) पडिपुच्छणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थ-तदुभयाइं विसोहेइ। कंखा-मोहणिज्जं कम्मं वोच्छिंदइ।

(२१) परियट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? परियट्टणयाए णं वंजणाइं जणयइ। वंजणलद्धिं च उप्पाएइ।

(२२) अणुप्पेहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? अणुप्पेहाए णं आउय-वज्जाओ सत्तकम्म-प्पगडीओ धणिय-बंधण-बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ। दीहकाल-ट्ठिइयाओ हस्सकाल-ट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणु-भावाओ मंदाणु-भावाओ पकरेइ। बहु-पएसं-ग्गाओ अप्पपएस-ग्गाओ पकरेइ। आउयं च णं कम्मं सिया

बंधइ, सिया णो बंधइ। असाया-वेयणिज्जं च णं कम्मं णो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ। अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसार-कंतारं खिप्पामेव वीइवयइ।

(२३) धम्म-कहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? धम्म-कहाए णं णिज्जरं जणयइ। धम्म-कहाए णं पवयणं पभावेइ। पवयण-पभावेणं जीवे आगमेसरस्स भद्दत्ताए कम्मं णिबंधइ।

(२४) सुयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? सुयस्स-आराहणयाए णं अण्णाणं खवेइ, ण य संकिलिस्सइ।

(२५) एगग्ग-मण-संणि-वेसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? एगग्ग-मण-संणिवेसण-याए णं चित्तणिरोहं करेइ।

(२६) संजमेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ।

(२७) तवेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? तवेणं वोदाणं जणयइ।

(२८) वोदाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? वोदाणेणं अकिरियं जणयइ। अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिणिव्वायइ सव्व-दुक्खाण-मंतं करेइ।

(२६) सुह-साएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सुह-साएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ। अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगय-सोगे चरित्त-मोहणिज्जं कम्मं खवेइ।

(३०) अप्पडि-बद्धयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? अप्पडि-बद्धयाए णं णिस्संगत्तं जणयइ। णिस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्ग-चित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ।

(३१) विवित्त-सयणा-सणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? विवित्त-सयणा-सणयाए णं चरित्त-गुत्तिं जणयइ। चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढ-चरित्ते एगंत-रए मोक्खभाव पडिवण्णे अट्ठविह कम्मगण्ठिं णिज्जरेइ।

(३२) विणियट्टण-याए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? विणियट्टण-याए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ। पुव्व-बद्धाणं य णिज्जरणयाए पावं णियत्तेइ। तओ पच्छा चाउरन्तं संसार-कंतारं वीइवयइ।

(३३) संभोग-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? संभोग-पच्चक्खाणेणं आलम्बणाइं खवेइ। णिरा-लम्बणस्स य आययट्ठिया जोगा भवंति। सएणं लाभेणं संतुस्सइ, परलाभं णो आसाएइ, परलाभं णो तक्केइ, णो पीहेइ, णो पत्थेइ, णो अभिलसइ। परलाभं

अणस्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ।

(३४) उवहि-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? उवहि-पच्चक्खाणेणं अपलिमन्थं जणयइ। णिरुवहिए णं जीवे णिक्कंखी उवहि-मंतरेण य ण संकिलिस्सइ।

(३५) आहार-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? आहार-पच्चक्खाणेणं जीविया-संस-प्पओगं वोच्छिंदइ। जीविया-संसप्पओगं वोच्छिंदित्ता जीवे आहार-मंतरेणं ण संकिलिस्सइ।

(३६) कसाय-पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ? कसाय-पच्चक्खाणेणं वीयरागभावं जणयइ। वीयराग-भाव पडिवण्णे वि य णं जीवे सम-सुह-दुक्खे भवइ।

(३७) जोग-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? जोग-पच्चक्खाणेणं अजोगत्तं जणयइ। अजोगी णं जीवे णवं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं च णिज्जरेइ।

(३८) सरीर-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सरीर-पच्चक्खाणेणं सिद्धाइ-सय-गुणत्तणं णिव्वत्तेइ। सिद्धाइ-सयगुण-संपण्णे य णं जीवे लोगग्ग-भाव-मुवगए परमसुही भवइ।

(३६) सहाय-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सहाय-पच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ। एगीभाव-भूए वि य णं जीवे एगत्तं भावेमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्प-तुमं-तुमे संजम-बहुले संवर-बहुले समाहिए यावि भवइ।

(४०) भत्तपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? भत्त-पच्चक्खाणेणं अणेगाइं भव-सयाइं णिरुम्भइ।

(४१) सब्भाव-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सब्भाव-पच्चक्खाणेणं अणियट्टिं जणयइ। अणियट्टि-पडिवण्णे य अणगारे चत्तारि केवलि कम्मंसे खवेइ, तं जहा-वेयणिज्जं आउयं णामं गोयं। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वायइ सव्वदुक्खाण-मंतं करेइ।

(४२) पडिरूवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? पडिरूवयाए णं लाघवियं जणयइ। लहुभूए-णं जीवे अप्पमत्ते पागड-लिंगे पसत्थ-लिंगे विसुद्ध सम्मत्ते सत्त-समिइ-समत्ते सव्व पाण-भूय-जीव-सत्तेसु वीससणिज्ज-रूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए विउल-तव-समिइ समण्णागए यावि भवइ।

(४३) वेयावच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? वेया-वच्चेणं तित्थयर-णाम-गोत्तं कम्मं णिबंधइ।

(४४) सव्व-गुण संपण्णयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? सव्व-गुण संपण्णयाए णं अपुणरा वित्तिं जणयइ। अपुणरा-वित्तिं पत्तए य णं जीवे सारीर माणसाणं दुक्खाणं णो भागी भवइ।

(४५) वीयरागयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? वीयरागयाए-णं णेहाणु-बंधणाणि तण्हाणु-बंधणाणि य वोच्छिंदइ मणुण्णा-मणुण्णेसु सद्द-फरिस-रूव-रस-गंधेसु सचित्ता-चित्त-मीसएसु चेव विरज्जइ।

(४६) खंतीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? खंतीएणं परीसहे जिणेइ।

(४७) मुत्तीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ। अकिंचणे य जीवे अत्थ-लोलाणं पुरिसाणं अपत्थणिज्जे भवइ।

(४८) अज्जवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? अज्जवयाएणं काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसम्वायणं जणयइ। अविसंवायण संपण्णयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ।

(४६) मद्दवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? मद्दवयाए णं अणुस्सियत्तं जणयइ। अणुस्सियत्ते णं जीवे-मिउ-मद्दव संपण्णे अट्ठ-मय ट्ठाणाइं णिट्ठावेइ।

(५०) भावसच्चेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ। भाव-विसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहंत पण्णत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्टेइ। अरहंत पण्णत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्टित्ता परलोग धम्मस्स आराहए भवइ।

(५१) करण-सच्चे णं भंते ! जीवे किं जणयइ? करण सच्चेणं करण सत्तिं जणयइ। करण सच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ।

(५२) जोग-सच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? जोग सच्चेणं जोगं विसोहेइ।

(५३) मण-गुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? मण-गुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ। एगग्ग-चित्ते-णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ।

(५४) वय-गुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? वय-गुत्तयाए णं णिव्वियारं त्तं जणयइ। णिव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्प-जोग साहण-जुत्ते यावि हवइ।

(५५) काय गुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? काय गुत्तयाए णं संवरं जणयइ। संवरेणं काय-गुत्ते पुणो पावासव-णिरोहं करेइ।

(५६) मण समाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? मण समाहारण-याए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता णाण-पज्जवे जणयइ। णाण-पज्जवे जणइत्ता

सम्मत्तं विसोहेइ, मिच्छत्तं च णिज्जरेइ।

(५७) वय समाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? वय-समाहारणयाए णं वय-साहारण दंसण पज्जवे विसोहेइ । वय-साहारण-दंसण-पज्जवे विसोहित्ता सुलह-बोहियत्तं णिव्वत्तेइ, दुल्लह-बोहियत्तं णिज्जरेइ।

(५८) काय-समाहारणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? काय-समाहारणयाएं णं चरित्त-पज्जवे विसोहेइ, चरित्त-पज्जवे विसोहित्ता अहक्खाय-चरित्तं विसोहेइ। अहक्खाय-चरित्तं विसोहित्ता चत्तारि-केवलि कम्मं से खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वायइ सव्व-दुक्खाण-मंतं करेइ।

(५९) णाण-संपण्णयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? णाण-संपण्णयाए णं जीवे सव्व-भावाहिगमं जणयइ। णाण संपण्णे णं जीवे चाउरन्ते संसार-कंतारे ण विणस्सइ।

जहा सूई ससुत्ता, पडियावि ण विणस्सइ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारे ण विणस्सइ।।

णाण-विणय-तव-चरित्त-जोगे सम्पाउणइ ससमय-परसमय-विसारए य असंघायणिज्जे भवइ।

(६०) दंसण-संपण्णयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? दंसण-संपण्णयाए णं भव-मिच्छत्त-छेयणं करेइ,

परं ण विज्झायइ। परं-अविज्झायमाणे अणुत्तरेणं णाण-दंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ।

(६१) चरित्त-संपण्णयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? चरित्त-संपण्णयाए णं सेलेसी-भावं जणयइ। सेलेसिं पडिवण्णे य अणगारे चत्तारि केवलि कम्मं से खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वायइ सव्व-दुक्खाण-मंतं करेइ।

(६२) सोइंदिय-णिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सोइंदिय-णिग्गहेणं मणुण्णा-मणुण्णेसु सद्देसु राग-दोस-णिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं च णिज्जरेइ।

(६३) चक्खिंदिय-णिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? चक्खिंदिय-णिग्गहेणं मणुण्णा-मणुण्णेसु रूवेसु राग-दोस-णिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं च णिज्जरेइ।

(६४) घाणिंदिय-णिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? घाणिंदिय-णिग्गहेणं मणुण्णा-मणुण्णेसु गंधेसु राग-दोस -णिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं ण बंधइ, पुव्ववद्धं य णिज्जरेइ।

(६५) जिब्भिंदिय-णिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? जिब्भिंदिय-णिग्गहेणं मणुण्णा-मणुण्णेसु रसेसु

राग-दोस णिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं य णिज्जरेइ।

(६६) फासिंदिय-णिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? फासिंदिय-णिग्गहेणं मणुण्णा-मणुण्णेसु फासेसु राग-दोस-णिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं य णिज्जरेइ।

(६७) कोह विजए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? कोह विजए णं खन्तिं जणयइ, कोह वेयणिज्जं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं य णिज्जरेइ।

(६८) माण-विजए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? माण-विजए णं मद्दवं जणयइ, माण-वेयणिज्जं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं य णिज्जरेइ।

(६९) माया-विजए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? माया-विजए णं अज्जवं जणयइ। माया-वेयणिज्जं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं य णिज्जरेइ।

(७०) लोह-विजए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? लोभ-विजएणं संतोसं जणयइ, लोह-वेयणिज्जं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं य णिज्जरेइ।

(७१) पेज्ज-दोस मिच्छा-दंसण विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? पेज्ज-दोस मिच्छादंसण-विजएणं णाण-दंसण - चरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ। अट्ठविहस्स

कम्मरस्स कम्मगण्ठि विमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणु-पुव्वीए अट्ठवीसइ-विहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पंचविहं णाणा-वरणिज्जं, णव-विहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं, एए तिण्णिऽवि कम्मं से जुगवं खवेइ। तओ पच्छा अणुत्तरं अण्णत्तं कसिणं-पडिपुण्णं णिरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोग-प्पभावं केवलवर णाण-दंसणं समुप्पाडेइ। जाव सजोगी भवइ, ताव इरियावहियं कम्मं णिबंधइ सुहफरिसं दुसमय ठिइयं। तंजहा पढम समए बद्धं बिइय-समए वेइयं, तइय-समए णिज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं णिज्जिण्णं सेयाले य अकम्मं या वि भवइ।

(७२) अहआउयं पालइत्ता अंतो-मुहुत्तद्धाव-सेसाए जोग-णिरोहं करेमाणे सुहुम किरियं अप्पडिवाइं सुक्क-ज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मण-जोगं णिरुम्भइ, वयजोगं णिरुम्भइ, काय-जोगं णिरुम्भइ, आण-पाण णिरोहं करेइ, ईसि पंच रहस्सक्ख-रुच्चारण-द्धाए य णं अणगारे समुच्छिण्ण-किरियं अणियट्टि-सुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं णामं गोत्तं य एए चत्तारि कम्मं से जुगवं खवेइ।

(७३) तओ ओरालिय-तेय-कम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जु-सेढिपत्ते अफुसमाण

गई उड्ढं एग-समएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चई परिणिव्वायइ सव्व-दुक्खाणं अंतं करेइ।

एस खलु सम्मत्त-परक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पण्णविए परूविए दंसिए णिदंसिए उवदंसिए।। त्तिबेमि।।

।। सम्मत्तपरक्कमं णामं अज्झयणं समत्तं ।।२९।।

।। तवमग्गं णामं तीसइमं अज्झयणं।। ३०।।

जहा उ पावगं कम्मं, राग-दोस समज्जियं।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्ग-मणो सुण।।१।।
पाणिवह-मुसावाया, अदत्त-मेहुण-परिग्गहा विरओ।
राईभोयण-विरओ, जीवो भवइ अणासवो।।२।।
पंच-समिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइंदिओ।
अगारवो य णिस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो।।३।।
एएसिं तु विवच्चासे, राग दोस-समज्जियं।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्ग-मणो सुण।।४।।
जहा महा-तलायस्स, सण्णिरुद्धे जलागमे।
उस्सिच-णाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे।।५।।
एवं तु संजयस्सा-वि, पावकम्म-णिरासवे।
भव-कोडी संचियं कम्मं, तवसा णिज्ज-रिज्जइ।।६।।
सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहि-रब्भन्तरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एव-मब्भंतरो तवो।।७।।
अणसण-मूणोयरिया, भिक्खायरिया य रस परिच्चाओ।
काय-किलेसो संलीणया, य बज्झो तवो होइ।।८।।

इत्तरिय मरण-काला य, अणसणा दुविहा भवे।
इत्तरिय सावकंखा, णिरवकंखा उ बिइज्जिया ।।८।।
जो सो इत्तरिय-तवो, सो समासेण छव्विहो।
सेढि तवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ।।९।।
तत्तो य वग्ग-वग्गो, पंचमो छट्ठओ पइण्ण तवो।
मण-इच्छिय चित्तत्थो, णायव्वो होइ इत्तरिओ ।।१०।।
जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया।
सवियार-मवियारा, कायचिट्ठं पई भवे ।।११।।
अहवा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया।
णीहारि-मणीहारी, आहारच्छेओ दोसु वि ।।१२।।
ओमोयरणं पंचहा, समासेण वियाहियं।
दव्वओ खेत्त कालेणं, भावेणं पज्जवेहि य ।।१३।।
जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे।
जहण्णे-णेग सित्थाई, एवं दव्वेण ऊ भवे ।।१४।।
गामे णगरे तह रायहाणि, णिगमे य आगरे पल्ली।
खेडे कब्बड-दोणमुह, पट्टण-मडम्ब-सम्बाहे ।।१५।।
आसम-पए विहारे, सण्णिवेसे समाय-घोसे य।
थलिसेणा-खंधारे, सत्थे संवट्ट-कोट्टे य ।।१६।।
वाडेसु वा रत्थासु वा, घरेसु वा एवमित्तियं खेत्तं।
कप्पइ उ एवमाई, एवं खेत्तेण उ भवे ।।१७।।
पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्ति-पयंग-वीहिया चेव।
सम्बुक्का वट्टाय य गंतु, पच्छागया छट्ठा ।।१८।।
दिवसस्स पोरुसीणं, चउण्हं-वि उ जत्तिओ भवे कालो।
एवं चरमाणो खलु, कालोमाणं मुणेयव्वं ।।१९।।

अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घास-मेसन्तो ।
चऊभागूणाए वा, एवं कालेण उ भवे ॥२०॥
इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वा णालंकिओ वावि ।
अण्णयर-वयत्थो वा, अण्णयरेणं व वत्थेणं ॥२१॥
अण्णेण विसेसेणं, वण्णेणं भाव मणु-मुयंते उ ।
एवं चरमाणो खलु, भावोमाणं मुणेयव्वं ॥२२॥
दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।
एएहिं ओमचरओ, पज्जव-चरओ भवे भिक्खू ॥२३॥
अट्ठविह-गोयरग्गं तु, तहा सत्तेव एसणा ।
अभिग्गहा य जे अण्णे, भिक्खायरिय-माहिया ॥२४॥
खीर-दहि-सप्पि-माई, पणीयं पाणभोयणं ।
परिवज्जणं रसाणं तु, भणियं रस विवज्जणं ॥२५॥
ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा ।
उग्गा जहा धरिज्जंति, काय-किलेसं तमाहियं ॥२६॥
एगंत-मणावाए, इत्थी-पसु-विवज्जिए ।
सयणासण-सेवणया, विवित्त सयणासणं ॥२७॥
एसो बाहिरगं तवो, समासेण वियाहिओ ।
अब्भिन्तरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥२८॥
पायच्छितं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं य विउस्सग्गो, एसो अब्भिन्तरो तवो ॥२९॥
आलोयणा-रिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं ।
जं भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं ॥३०॥
अब्भुट्ठाणं अंजलि-करणं, तहेवासण-दायणं ।
गुरुभत्ति-भाव-सुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥३१॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

आयरिय-माईए, वेया-वच्चम्मि दसविहे।
आसेवणं जहाथामं, वेयावच्चं तमाहियं ॥३२॥
वायणा पुच्छणा चेव, तहेव परियट्टणा।
अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ पंचहा भवे ॥३३॥
अट्ट-रुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए।
धम्म-सुक्काइं झाणाइं, झाणं तं तु बुहा वए ॥३४॥
सयणासण ठाणे वा, जे उ भिक्खू ण वावरे।
कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥३५॥
एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी।
सो खिप्पं सव्व संसारा, विप्पमुच्चइ पंडिओ ॥३६॥

॥तव मग्गं णामं तीसइ मं अज्झयणं सम्मत्तं॥३०॥

॥ चरणविही एगतीसइमं अज्झयणं॥ ३१॥

चरण-विहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसार-सागरं ॥१॥
एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं।
असंजमे णियत्तिं य, संजमे य पवत्तणं ॥२॥
रागे दोसे य दो पावे, पावकम्म-पवत्तणे।
जे भिक्खू रुंभइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ॥३॥
दंडाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं।
जे भिक्खू चयई णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ॥४॥
दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छ-माणुसे।
जे भिक्खू सहइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ॥५॥
विगहा-कसाय-सण्णाणं, झाणाणं च दुयं तहा।
जे भिक्खू वज्जइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ॥६॥

वएसु इंदियत्थेसु, समिईसु किरियासु य।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।७।।
लेसासु छसु काएसु, छक्के आहार-कारणे।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।८।।
पिंडोग्गह पडिमासु, भय-ट्ठाणेसु सत्तसु।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।९।।
मएसु बम्भ-गुत्तीसु, भिक्खु-धम्मम्मि दसविहे।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।१०।।
उवासगाणं पडिमासु, भिक्खूणं पडिमासु य।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।११।।
किरियासु भूय-गामेसु, परमा-हम्मिएसु य।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।१२।।
गाहा-सोलसएहिं, तहा असंजमम्मि य।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।१३।।
बम्भम्मि णाय-ज्झयणेसु, ठाणेसु य असमाहिए।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।१४।।
एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।१५।।
तेवीसाए सूय-गडेसु, रूवाहिएसु सुरेसु य।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।१६।।
पणवीस-भावणासु, उद्देसेसु दसाइणं।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।१७।।
अणगार-गुणेहिं च, पगप्पम्मि तहेव य।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।१८।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

पावसुय-प्पसंगेसु, मोह-ठाणेसु चेव य।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।१९।।
सिद्धाइ गुण जोगेसु, तेत्ती-सासायणासु य।
जे भिक्खू जयइ णिच्चं, से ण अच्छइ मंडले ।।२०।।
इय एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया।
खिप्पं सो सव्व-संसारा, विप्प मुच्चइ पंडिओ ।।२१।।

।। चरणविही णामं अज्झयणं सम्मत्तं ।।३१।।

।। पमायट्ठाणं णामं बत्तीसइमं अज्झयणं।। ३२।।

अच्चंत-कालस्स समूलगस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्ण-चित्ता, सुणेह एगंत-हियं हियत्थं ।।१।।
णाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अण्णाण मोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगंत सोक्खं समुवेइ मोक्खं ।।२।।
तस्सेस मग्गो गुरु विद्धसेवा, विवज्जणा बाल-जणस्स दूरा ।
सज्झाय-एगंत-णिसेवणा य, सुत्तत्थ संचिंतणया धिई य ।।३।।
आहार-मिच्छे मिय-मेसणिज्जं, सहाय-मिच्छे णिउणत्थ बुद्धिं ।
णिकेय-मिच्छेज्ज विवेग-जोगं, समाहि-कामे समणे तवस्सी ।।४।।
ण वा लभेज्जा णिउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एग्गो-वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ।।५।।
जहा य अंड-प्पभवा बलागा, अंडं बलाग-प्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोहं य तण्हाययणं वयंति ।।६।।
रागो य दोसोवि य कम्मबीयं, कम्मं च मोह-प्पभवं वयंति ।
कम्मं च जाइ-मरणस्स मूलं, दुक्खं च जाइ-मरणं वयंति ।।७।।
दुक्खं हयं जस्स ण होइ मोहो, मोहो हओ जस्स ण होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स ण होइ लोहो, लोहो हओ जस्स ण किंचणाइं ।।८।।

रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तु-कामेण समूल-जालं।
जे जे उवाया पडिवज्जि-यव्वा, ते कित्त-इस्सामि अहाणुपुव्विं ।।६।।
रसा-पगामं ण णिसेवि-यव्वा, पायं रसा दित्तिकरा णराणं।
दित्तं य कामा सम-भिद्दवंति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी ।।१०।।
जहा दवग्गी पउ-रिंधणे वणे, समारुओ णोवसमं उवेइ।
एविन्दियग्गी वि पगाम-भोइणो, ण बंभयारिस्स हियाय कस्सई ।।११।।
विवित्त सेज्जासण जंतियाणं, ओमासणाणं दमि-इंदियाणं।
ण रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहि-रिवोसहेहिं ।।१२।।
जहा बिराला-वसहस्स मूले, ण मूसगाणं वसही पसत्था।
एमेव इत्थी णिलयस्स मज्झे, ण बम्भयारिस्स खमो णिवासो ।।१३।।
ण रूव-लावण्ण-विलास-हासं, ण जं पियं-इंगिय-पेहियं वा।
इत्थीण चित्तंसि णिवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ।।१४।।
अदंसणं चेव अपत्थणं य, अचिंतणं चेव अकित्तणं च।
इत्थी जणस्सारिय झाण जुग्गं, हियं सया बम्भ-वए रयाणं ।।१५।।
कामं तु देवीहिं विभूसियाहिं, ण चाइया खोभइउं तिगुत्ता।
तहावि एगंत-हियं ति णच्चा, विवित्त-वासो मुणिणं पसत्थो ।।१६।।
मोक्खाभि-कंखिस्स उ माणवस्स, संसार भीरुस्स ठियस्स धम्मे।
णेयारिसं दुत्तर-मत्थि-लोए, जहि-त्थिओ बाल मणोहराओ ।।१७।।
एए य संगे समइक्क-मित्ता, सुहुत्तरा चेव भवंति सेसा।
जहा महासागर-मुत्तरित्ता, णई भवे अवि गंगासमाणा ।।१८।।
कामाणुगिद्धि-प्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।
जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्सन्तगं गच्छइ वीयरागो ।।१६।।
जहा य किंपाग-फला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
ते खुड्डए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ।।२०।।

जे इंदियाणं विसया मणुण्णा, ण तेसु भावं णिसिरे कयाइ ।
ण यामणुण्णेसु मणंपि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ।।२१।।
चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति, तं राग हेउं तु मणुण्ण-माहु ।
तं दोस-हेउं अमणुण्ण-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।।२२।।
रूवस्स चक्खुं गहणं वयंति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुण्ण-माहु, दोसस्स-हेउं अमणुण्ण-माहु ।।२३।।
रूवेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे से जह वा पयंगे, आलोय-लोले समुवेइ मच्चुं ।।२४।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंत-दोसेण सएण जंतू, ण किंचि रूवं अवरज्झइ से ।।२५।।
एगंत रत्ते रुइरंसि रूवे, अतालिसे से कुणइ पओसं ।
दुक्खस्स सम्पील-मुवेइ बाले, ण लिप्पइ तेण मुणी विरागो ।।२६।।
रूवाणु गासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेग-रूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठ-गुरू किलिट्ठे ।।२७।।
रूवाणु-वाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खण-संणिओगे ।
वए वियोगे य कहं सुहं से, सम्भोग-काले य अतित्तलाभे ।।२८।।
रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो ण उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोहाविले आययई अदत्तं ।।२९।।
तण्हाभि-भूयस्स अदत्त-हारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभ-दोसा, तत्था वि दुक्खा ण विमुच्चइ से ।।३०।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ।।३१।।
रूवाणु-रत्तस्स णरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोव-भोगेवि किलेस-दुक्खं, णिव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ।।३२।।

एमेव रूवम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोह परम्पराओ।
पदुट्ठ-चित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ।।३३।।
रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोह-परम्परेण।
ण लिप्पइ भव मज्झेवि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।।३४।।
सोयस्स सद्दं गहणं वयंति, तं राग-हेउं तु मणुण्ण-माहु।
तं दोस-हेउं अमणुण्ण-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।।३५।।
सद्दस्स सोयं गहणं वयंति, सोयस्स सद्दं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुण्ण-माहु, दोसस्स हेउं अमणुण्ण-माहु ।।३६।।
सद्देसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे हरिण-मिगेव मुद्धे, सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ।।३७।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंत दोसेण सएण जंतू, ण किंचि सद्दं अवरज्झइ से ।।३८।।
एगंत-रत्ते रुइरंसि सद्दे, अतालिसे से कुणइ पओसं।
दुक्खस्स सम्पील-मुवेइ बाले, ण लिप्पइ तेण मुणी विरागो ।।३९।।
सद्दाणु-गासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अतट्ठ-गुरू किलिट्ठे ।।४०।।
सद्दाणु-वाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खण संणिओगे।
वए वियोगे य कहं सुहं से, संभोग-काले य अतित्तलाभे ।।४१।।
सद्दे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो ण उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययइ अदत्तं ।।४२।।
तण्हाभि-भूयस्स अदत्त हारिणो, सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोह-दोसा, तत्थावि दुक्खा ण विमुच्चइ से ।।४३।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, सद्दे अइओ दुहीओ अणिस्सो ।।४४।।

सद्दाणु-रत्तस्स णरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोव-भोगेवि किलेस-दुक्खं, णिव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ।।४५।।
एमेव सद्दम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोह परम्पराओ ।
पदुट्ठ-चित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ।।४६।।
सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोह परम्परेण ।
ण लिप्पइ भव मज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।।४७।।
घाणस्स गंधं गहणं वयंति, तं राग-हेउं तु मणुण्ण माहु ।
तं दोस-हेउं अमणुण्ण-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।।४८।।
गंधस्स घाणं गहणं वयंति, घाणस्स गन्धं गहणं वयंति ।
रागस्स-हेउं समणुण्ण-माहु, दोसस्स हेउं अमणुण्ण-माहु ।।४९।।
गंधेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे ओसहि गंध-गिद्धे, सप्पे बिलाओ विव णिक्खमंते ।।५०।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंत दोसेण सएण जंतू, ण किंचि गंधं अवरुज्झइ से ।।५१।।
एगंत रत्ते रुइरंसि गंधे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सम्पील-मुवेइ बाले, ण लिप्पइ तेण मुणी विरागो ।।५२।।
गंधाणु-गासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अतट्ठगुरू किलिट्ठे ।।५३।।
गंधाणु-वाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खण सण्णिओगे ।
वए वियोगे य कहं सुहं से, संभोग काले य अईय लाभे ।।५४।।
गंधे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो ण उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठि दोसेण दुही परस्स, लोहाविले आययई अदत्तं ।।५५।।
तण्हाभि-भूयस्स अदत्त हारिणो, गंधे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोह दोसा, तत्थावि दुक्खा ण विमुच्चई से ।।५६।।

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, गंधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ।।५७।।
गंधाणु रत्तस्स णरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोव-भोगे वि किलेस-दुक्खं, णिव्वत्तइ जस्स कएण दुक्खं ।।५८।।
एमेव गंधम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोह परम्पराओ ।
पुदुट्ठ चित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ।।५९।।
गंधे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोह-परम्परेण ।
ण लिप्पइ भव मज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।।६०।।
जिब्भाए रसं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुण्ण-माहु ।
तं दोस-हेउं अमणुण्ण-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।।६१।।
रसस्स जिब्भं गहणं वयन्ति, जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुण्ण-माहु, दोसस्स हेउं अमणुण्ण-माहु ।।६२।।
रसेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिस विभिण्ण काए, मच्छे जहा आमिस भोग-गिद्धे ।।६३।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंत दोसेण सएण जंतू, ण किंचि रसं अवरुज्झइ से ।।६४।।
एगंत रत्ते रूइरे रसम्मि, अतालिसे से कुणइ पओसं ।
दुक्खस्स संपील-मुवेइ बाले, ण लिप्पइ तेण मुणी विरागो ।।६५।।
रसाणु-गासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परियावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठ-गुरू किलिट्ठे ।।६६।।
रसाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खण सण्णिओगे ।
वए वियोगे य कहं सुहं से, संभोग काले य अतित्तलाभे ।।६७।।
रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोव-सत्तो ण उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोहाविले आययइ अदत्तं ।।६८।।

तण्हाभि-भूयस्स अदत्त-हारिणो, रसे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभ-दोसा, तत्थावि दुक्खा ण विमुच्चइ से ।।६६।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओग काले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, रसे अइओ दुहिओ अणिस्सो ।।७०।।
रसाणु-रत्तस्स णरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोव-भोगे वि किलेस-दुक्खं, णिव्वत्तइ जस्स कएण दुक्खं ।।७१।।
एमेव रसम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोह परम्पराओ ।
पदुट्ठ चित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ।।७२।।
रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोह परम्परेण ।
ण लिप्पइ भव-मज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।।७३।।
कायस्स फासं गहणं वयंति, तं राग-हेउं तु मणुण्ण-माहु ।
तं दोस-हेउं अमणुण्ण-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।।७४।।
फासस्स कायं गहणं वयंति, कायस्स फासं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुण्ण-माहु, दोसस्स हेउं अमणुण्ण-माहु ।।७५।।
फासेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीय जलाव-सण्णे, गाहग्गहीए महिसेव रण्णे ।।७६।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंत दोसेण सएण जंतू, ण किंचि फासं अवरुज्झइ से ।।७७।।
एगंत रत्ते रुइरंसि फासे, अयालिसे से कुणइ पओसं ।
दुक्खस्स संपील-मुवेइ वाले, ण लिप्पइ तेण मुणी विरागो ।।७८।।
फासाणु गासाणु गए य जीवे, चराचरे हिंसइयऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परियावेइ वाले, पीलेइ अत्तट्ठ गुरू किलिट्ठे ।।७६।।
फासाणु-वाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खण सण्णिओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोग-काले य अइयलाभे ।।८०।।

फासे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो ण उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोहाविले आययइ अदत्तं ।।८१।।
तण्हाभि-भूयस्स अदत्त हारिणो, फासे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभ दोसा, तत्थावि दुक्खा ण विमुच्चइ से ।।८२।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओग काले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ।।८३।।
फासाणु रत्तस्स णरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेस-दुक्खं, णिव्वत्तइ जस्स कएण दुक्खं ।।८४।।
एमेव फासम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोह परम्पराओ।
पदुट्ठ चित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ।।८५।।
फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोह परम्परेण।
ण लिप्पइ भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।।८६।।
मणस्स भावं गहणं वयंति, तं राग-हेउं तु मणुण्ण-माहु।
तं दोस-हेउं अमणुण्ण-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।।८७।।
भावस्स मणं गहणं वयंति, मणस्स भावं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुण्ण-माहु, दोसस्स हेउं अमणुण्ण-माहु ।।८८।।
भावेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
→ रागाउरे काम-गुणेसु गिद्धे, करेणु मग्गावहिए व णागे ।।८९।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंत दोसेण सएण जंतू, ण किंचि भावं अवरुज्झइ से ।।९०।।
एगंत रत्ते रुइरंसि भावे, अतालिसे से कुणइ पओसं।
दुक्खस्स संपील-मुवेइ बाले, ण लिप्पइ तेण मुणी विरागो ।।९१।।
भावाणु-गासाणु-गए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठ-गुरू किलिट्ठे ।।९२।।

भावाणु-वाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खण सण्णिओगे।
वए वियोगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अइएलाभे ।।६३।।
भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो ण उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययइ अदत्तं ।।६४।।
तण्हाभि-भूयस्स अदत्त हारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोहदोसा, तथावि दुक्खा ण विमुच्चइ से ।।६५।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, भावे अइओ दुहिओ अणिस्सो ।।६६।।
भावाणु रत्तस्स णरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेस-दुक्खं, णिव्वत्तइ जस्स कएण दुक्खं ।।६७।।
एमेव भावम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोह परम्पराओ।
पदुट्ठ चित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ।।६८।।
भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोह परम्परेण।
ण लिप्पइ भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।।६६।।
एविन्दियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो।
ते चेव थोवंपि कयाइ दुक्खं, ण वीयरागस्स करेंति किंचि ।।१००।।
ण कामभोगा समयं उवेंति, ण यावि भोगा विगइं उवेन्ति।
जे तप्पओसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ।।१०१।।
कोहं य माणं य तहेव मायं, लोहं दुगुच्छं अरइं रइं य।
हासं भयं सोग-पुमित्थि वेयं, णपुंस वेयं विविहे य भावे ।।१०२।।
आवज्जई एव-मणेगरूवे, एवं विहे कामगुणेसु रत्तो।
अण्णे य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ।।१०३।।
कप्पं ण इच्छिज्ज सहाय-लिच्छू, पच्छाणुतावे ण तवप्पभावं।
एवं वियारे अमियप्पयारे, आवज्जइ इंदिय-चोर-वस्से ।।१०४।।

तओ से जायंति पओ-यणाइं, णिमज्जिउं मोह-महण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्ख विणोय-णट्ठा, तप्पच्चयं उज्जमए य रागी ।।१०५।।
विरज्ज-माणस्स य इंदियत्था, सद्दाइया तावइय-प्पगारा ।
ण तस्स सव्वे वि मणुण्णयं वा, णिव्वत्तयंती अमणुण्ण यं वा ।।१०६।।
एवं ससंकप्प-विकप्पणासुं, संजायई समय-मुवट्ठियस्स ।
अत्थे य संकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा ।।१०७।।
स वीयरागो कय-सव्व-किच्चो, खवेइ णाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसण-मावरेइ, जं चन्तरायं पकरेइ कम्मं ।।१०८।।
सव्वं तओ जाणइ पासइ य, अमोहणे होइ णिरन्तराए ।
अणासवे झाण समाहि जुत्ते, आउक्खए मोक्ख-मुवेइ सुद्धे ।।१०६।।
सो तस्स सव्वंस्स दुहस्स मुक्को, जं बाहई सययं जंतु-मेयं ।
दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो, तो होइ अच्चंत-सुही कयत्थो ।।१०१।।
अणाइ काल-प्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्ख-मग्गो ।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता, कमेण अच्चंत सुही भवंति ।।१११।।

।। पमायट्ठाणं णामं अज्झयणं सम्मत्तं ।।३२।।

।। कम्मप्पयडी णामं तेत्तीसइमं अज्झयणं ।। ३३ ।।

अट्ठ कम्माइं वोच्छामि, आणुपुव्विं जहाक्कमं ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो, संसारे परिवट्टइ ।।१।।
णाणस्सा-वरणिज्जं, दंसणावरणं तहा ।
वेयणिज्जं तहा मोहं, आउकम्मं तहेव य ।।२।।
णामकम्मं च गोयं च, अंतरायं तहेव य ।
एवमेयाइं कम्माइं, अट्ठेव उ समासओ ।।३।।
णाणावरणं पंचविहं, सुयं आभिणि-बोहियं ।
ओहिणाणं य तइयं, मणणाणं य केवलं ।।४।।

णिद्दा तहेव पयला, णिद्दाणिद्दा पयल-पयला य।
तत्तो य थीणगिद्धी उ, पंचमा होइ णायव्वा ।।५।।
चक्खु-मचक्खू ओहिस्स, दंसणे केवले य आवरणे।
एवं तु णव-विगप्पं, णायव्वं दंसणावरणं ।।६।।
वेयणीयं वि य दुविहं, साय-मसायं य आहियं।
सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ।।७।।
मोहणिज्जं वि दुविहं, दंसणे चरणे तहा।
दंसणे तिविहं वुत्तं, चरणे दुविहं भवे ।।८।।
सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं, सम्मा-मिच्छत्त-मेव य।
एयाओ तिण्णि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ।।९।।
चरित्त-मोहणं कम्मं, दुविहं तु वियाहियं।
कसाय मोहणिज्जं तु, णोकसायं तहेव य ।।१०।।
सोलसविह-भेएणं, कम्मं तु कसायजं।
सत्तविहं णवविहं वा, कम्मं य णोकसायजं ।।११।।
णेरइय-तिरिक्खाउं, मणुस्साउं तहेव य।
देवाउ यं चउत्थं तु, आउं कम्मं चउव्विहं ।।१२।।
णामकम्मं तु दुविहं, सुह-मसुहं च आहियं।
सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्सवि ।।१३।।
गोयं कम्मं दुविहं, उच्चं णीयं च आहियं।
उच्चं अट्ठविहं होइ, एवं णीयं-वि आहियं ।।१४।।
दाणे लाभे य भोगे य, उवभोगे वीरिए तहा।
पंचविह-मन्तरायं, समासेण वियाहियं ।।१५।।
एयाओ मूल पयडीओ, उत्तराओ य आहिया।
पएसग्गं खेत्तकाले य, भावं य उत्तरं सुण ।।१६।।

सव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्ग-मणन्तगं।
गंठिय-सत्ताईयं, अंतो सिद्धाण आहियं।।१७।।
सव्व जीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं।।१८।।
उदही-सरिस-णामाणं, तीसई कोडिकोडीओ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अंतो मुहुत्तं जहण्णिया।।१६।।
आवरणिज्जाण दुण्हं वि, वेयणिज्जे तहेव य।
अंतराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया।।२०।।
उदही सरिस-णामाणं, सत्तरिं कोडि-कोडीओ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतो-मुहुत्तं जहण्णिया।।२१।।
तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया।
ठिई उ आउ-कम्मस्स, अंतो-मुहुत्तं जहण्णिया।।२२।।
उदही सरिस-णामाणं, वीसई कोडि-कोडीओ।
णाम-गोत्ताणं उक्कोसा, अट्ठ-मुहुत्तं जहण्णिया।।२३।।
सिद्धाण-णन्तभागो य, अणुभागा हवंति उ।
सव्वेसु वि पएसग्गं, सव्व-जीवेसु अइच्छियं।।२४।।
तम्हा एएसिं कम्माणं, अणुभागा वियाणिया।
एएसिं संवरे चेव, खवणे य जए बुहो।।२५।।

।। कम्मप्पयडी णामं अज्झयणं सम्मत्तं।।३३।।

।। लेसज्झयणं णामं चोत्तीसइमं अज्झयणं।। ३४।।

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्विं जहक्कमं।
छण्हं वि कम्म लेसाणं, अणुभावे सुणेह मे।।१।।
णामाइं वण्ण-रस-गंध,-फास-परिणाम-लक्खणं।
ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे।।२।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

किण्हा णीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य।
सुक्क-लेस्सा य छट्ठा य, णामाइं तु जहक्कमं ।।३।।
जीमूय-णिद्ध संकासा, गवल-रिट्ठग-सण्णिभा।
खंजांजण-णयण-णिभा, किण्ह-लेसा उ वण्णओ ।।४।।
णीलासोग-संकासा, चासपिच्छ-समप्पभा।
वेरुलिय-णिद्ध संकासा, णील-लेसा उ वण्णओ ।।५।।
अयसी-पुप्फ संकासा, कोइलच्छद-सण्णिभा।
पारेवय गीव णिभा, काऊलेसा उ वण्णओ ।।६।।
हिंगुलय-धाउ संकासा, तरुणाइच्च-सण्णिभा।
सुयतुंड-पईव-णिभा, तेऊलेसा उ वण्णओ ।।७।।
हरियाल-भेय संकासा, हलिद्दा-भेय समप्पभा।
सणासण-कुसुम-णिभा, पम्ह-लेसा उ वण्णओ ।।८।।
संखंक कुन्द संकासा, खीरपूर-समप्पभा।
रयय-हार-संकासा, सुक्क-लेस्सा उ वण्णओ ।।६।।
जह कडुय-तुम्बग रसो, णिम्बरसो कडुय रोहिणि-रसो वा।
एत्तोवि अणंतगुणो, रसो य किण्हाए णायव्वो ।।१०।।
जह तिगडुयस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थि-पिप्पलीए वा।
एत्तोवि अणंतगुणो, रसो उ णीलाए णायव्वो ।।११।।
जह तरुण-अम्बग रसो, तुवर-कविट्ठस्स वावि जारिसओ।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ काऊए णायव्वो ।।१२।।
जह परिणयम्बग-रसो, पक्क-कविट्ठस्स वावि जारिसओ।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ तेऊए णायव्वो ।।१३।।
वर-वारुणीए व रसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ।
महु मेरयस्स व रसो, एत्तो पम्हाए परएणं ।।१४।।

खज्जूर-मुद्दिय रसो, खीर-रसो खंड सक्कर रसो वा ।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ सुक्काए णायव्वो ।।१५।।
जह गो-मडस्स गंधो, सुणग-मडस्स व जहा अहि-मडस्स ।
एत्तो वि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ।।१६।।
जह सुरहि-कुसुम-गंधो, गंध-वासाणं पिस्समाणाणं ।
एत्तो वि अणंतगुणो, पसत्थ लेसाण तिण्हं वि ।।१७।।
जह करगयस्स फासो, गो-जिब्भाए य सागपत्ताणं ।
एत्तोवि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ।।१८।।
जह बूरस्स व फासो, णव-णीयस्स व सिरीस-कुसुमाणं ।
एत्तो वि अणंतगुणो, पसत्थ-लेसाण तिण्हं वि ।।१६।।
तिविहो व णवविहो वा, सत्तावीसइ विहेक्कसीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ।।२०।।
पंचासव-प्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य ।
तिव्वारम्भ-परिणओ, खुद्दो साहसिओ णरो ।।२१।।
णिद्धंस-परिणामो, णिस्संसो अजिइंदिओ ।
एयजोग-समाउत्तो, 'किण्हलेसं' तु परिणमे ।।२२।।
इस्सा अमरिस अतवो, अविज्जमाया अहीरिया ।
गेही पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुए साय-गवेसए य ।।२३।।
आरम्भाओ अविरओ, खुद्दो-साहस्सिओ णरो ।
एयजोग-समाउत्तो, 'णीललेसं' तु परिणमे ।।२४।।
वंके वंक-समायारे, णियडिल्ले अणुज्जुए ।
पलिउंचग ओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ।।२५।।
उप्फालग-दुट्ठवाई य, तेणे यावि य मच्छरी ।
एयजोग समाउत्तो, 'काऊलेसं' तु परिणमे ।।२६।।

णीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले।
विणीय-विणए दंते, जोगवं उवहाणवं ॥२७॥
पियधम्मे दढधम्मे, अवज्ज-भीरू हिएसए।
एयजोग-समाउत्तो, 'तेऊलेसं' तु परिणमे ॥२८॥
पयणु-कोहमाणे य, मायालोहे य पयणुए।
पसंत-चित्ते दंतप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥२९॥
तहा पयणुवाई य, उवसंते जिइंदिए।
एयजोग-समाउत्तो, 'पम्हलेसं' तु परिणमे ॥३०॥
अट्ट-रुद्दाणि वज्जित्ता, धम्म-सुक्काणि झायए।
पसंत-चित्ते दंतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥३१॥
सरागे वीयरागे वा, उवसंते जिइंदिए।
एयजोग-समाउत्तो, 'सुक्क-लेसं' तु परिणमे ॥३२॥
असंखिज्जा-णोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया।
संखाईया लोगा, लेसाण हवंति ठाणाइं ॥३३॥
मुहुत्तद्धं तु जहण्णा, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तऽहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, णायव्वा 'किण्ह-लेसाए' ॥३४॥
मुहुत्तद्धं तु जहण्णा, दसउदही पलिय-मसंखभाग-मब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, णायव्वा 'णीललेसाए' ॥३५॥
मुहुत्तद्धं तु जहण्णा, तिण्णुदही पलिय-मसंखभाग-मब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, णायव्वा 'काउलेसाए' ॥३६॥
मुहुत्तद्धं तु जहण्णा, दोण्णुदही पलिय-मसंखभाग-मब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, णायव्वा 'तेउ लेसाए' ॥३७॥
मुहुत्तद्धं तु जहण्णा, दस उदही होइ मुहुत्त-मब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, णायव्वा 'पम्हलेसाए' ॥३८॥

मुहुत्तद्धं तु जहण्णा, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, णायव्वा 'सुक्कलेसाए'।।३९।।
एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ।
चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं तु वोच्छामि।।४०।।
दसवास-सहस्साइं, काऊए ठिई जहण्णिया होइ।
तिण्णुदही-पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा।।४१।।
तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागो जहण्णेण णीलठिई।
दसउदही पलिओवम, असंखभागं य उक्कोसा।।४२।।
दसउदही पलिओवम, असंखभागं जहण्णिया होइ।
तेत्तीस सागराइं, उक्कोसा होइ किण्हाए।।४३।।
एसा णेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ।
तेण परं वोच्छामि, तिरिय मणुस्साण देवाणं।।४४।।
अंतोमुहुत्त-मद्धं, लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ।
तिरियाण णराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं।।४५।।
मुहुत्तद्धं तु जहण्णा, उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ।
णवहिं वरिसेहिं ऊणा, णायव्वा सुक्कलेसाए।।४६।।
एसा तिरिय-णराणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाणं।।४७।।
दसवास-सहस्साइं, किण्हाए ठिई जहण्णिया होइ।
पलिय-मसंखिज्ज इमो, उक्कोसा होइ किण्हाए।।४८।।
जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समय-मब्भहिया।
जहण्णेणं णीलाए, पलिय-मसंखं य उक्कोसा।।४९।।
जा णीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समय-मब्भहिया।
जहण्णेणं काऊए, पलिय-मसंखं य उक्कोसा।।५०।।

तेण परं वोच्छामि, तेऊ लेसा जहा सुर-गणाणं ।
भवणवइ वाणमंतर, जोइस-वेमाणियाणं य ।।५१।।
पलिओवमं जहण्णा, उक्कोसा सागरा उ दुण्णहिया ।
पलिय-मसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ।।५२।।
दस वास सहस्साइं, तेऊए ठिई जहण्णिया होइ ।
दुण्णुदही पलिओवम, असंखभागं य उक्कोसा ।।५३।।
जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समय मब्भहिया ।
जहण्णेणं पम्हाए, दस उ मुहुत्ताहियाइ य उक्कोसा ।।५४।।
जा पम्हाए ठिई खलु, उककोसा सा उ समय-मब्भहिया ।
जहण्णेणं सुक्काए, तेत्तीस मुहुत्त-मब्भहिया ।।५५।।
किण्हा णीला काऊ, तिण्णि वि एयाओ अहम्म लेस्साओ ।
एयाहि तिहि वि जीवो, दुग्गइं उववज्जई ।।५६।।
तेऊ, पम्हा, सुक्का, तिण्णि वि एयाओ धम्म-लेसाओ ।
एयाहि तिहि वि जीवो, सुग्गइं उववज्जई ।।५७।।
लेस्साहिं सव्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
ण हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ।।५८।।
लेस्साहिं सव्वाहिं, चरिमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
ण हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ।।५६।।
अंत मुहुत्तम्मि गए, अंत-मुहुत्तम्मि सेसए चेव ।
लेस्साहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छंति परलोयं ।।६०।।
तम्हा एयासिं लेस्साणं, आणुभावे वियाणिया ।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओ-ऽहिट्ठिए मुणी ।।६१।।

।। लेसज्झयणं णामं चोत्तीसइमं अज्झयणं सम्मत्तं ।।३४।।

।। अणगार णामं पंचतीसइमं अज्झयणं।। ३५ ।।

सुणेह मे एगग्ग-मणा, मग्गं बुद्धेहिं देसियं।
जमायरंतो भिक्खू, दुक्खाणन्त-करे भवे।।१।।
गिहवासं परिच्चिवज्जा, पव्वज्जा-मस्सिए मुणी।
इमे संगे वियाणिज्जा, जेहिं सज्जंति माणवा।।२।।
तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबंभ-सेवणं।
इच्छा-कामं य लोहं य, संजओ परिवज्जए।।३।।
मणोहरं चित्ताघरं, मल्ल-धूवेण वासियं।
सकवाडं पण्डु-रुल्लोयं, मणसा वि ण पत्थए।।४।।
इंदियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए।
दुक्कराइं णिवारेउं, कामराग विवड्ढणे।।५।।
सुसाणे सुण्णगारे वा, रुक्खमूलेव इक्कओ।
पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभि-रोयए।।६।।
फासुयम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए।
तत्थ संकप्पए वासं, भिक्खू परम संजए।।७।।
ण सयं गिहाइं कुव्विज्जा, णेव अण्णेहिं कारए।
गिहकम्म-समारम्भे, भूयाणं दिस्सए वहो।।८।।
तसाणं थावराणं य, सुहुमाणं बायराण य।
तम्हा गिह-समारम्भं, संजओ परिवज्जए।।६।।
तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य।
पाणभूय दयट्ठाए, ण पए ण पयावए।।१०।।
जल-धण्ण-णिस्सिया जीवा, पुढवी-कट्ठ-णिस्सिया।
हम्मंति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू ण पयावए।।११।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

विसप्पे सव्वओ-धारे, बहुपाणि विणासणे।
णत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं ण दीवए।।१२।।
हिरण्णं जायरूवं य, मणसा वि ण पत्थए।
समलेट्ठु कंचणे भिक्खू, विरए कय-विक्कए।।१३।।
किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ।
कय-विक्कयम्मि वट्टंतो, भिक्खू ण भवइ तारिसो।।१४।।
भिक्खियव्वं ण केयव्वं, भिक्खुणा भिक्ख-वत्तिणा।
कय-विक्कओ महादोसो, भिक्खवित्ती सुहावहा।।१५।।
समुयाणं उंछ-मेसिज्जि, जहासुत्त-मणिन्दियं।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे, पिण्डवायं चरे मुणी।।१६।।
अलोले ण रसे गिद्धे, जिब्भादंते अमुच्छिए।
ण रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी।।१७।।
अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूयणं तहा।
इड्ढी सक्कार सम्माणं, मणसा वि ण पत्थए।।१८।।
सुक्कज्झाणं झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ।।१९।।
णिज्जूहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्ठिए।
चइऊण माणुसं बोन्दिं, पहू दुक्खा विमुच्चई।।२०।।
णिमम्मे णिरहंकारे, वीयरागो अणासवो।
संपत्तो केवलं णाणं, सासयं परिणिव्वुए।।२१।।

।। अणगार णामं पंचतीसइमं अज्झयणं सम्मत्तं।।३५।।

।। जीवाजीवविभत्ती णामं छत्तीसइमं अज्झयणं।। ३६ ।।

जीवाजीव-विभत्तिं, सुणेह मे एगमणा-इओ।
जं जाणिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ संजमे।।१।।
जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए।
अजीव-देस-मागासे, अलोए से वियाहिए।।२।।
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा।
परूवणा तेसिं भवे, जीवाण-मजीवाण य।।३।।
रूविणो चेव अरूवी य, अजीवा दुविहा भवे।
अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा।।४।।
धम्मत्थि-काए तद्देसे, तप्पएसे य आहिए।
अहम्मे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए।।५।।
आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए।
अद्धा समए चेव, अरूवी दसहा भवे।।६।।
धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया।
लोगालोगे य आगासे, समए समय-खेत्तिए।।७।।
धम्माधम्मागासा, तिण्णि वि एए अणाइया।
अपज्जवसिया चेव, सव्वद्धं तु वियाहिया।।८।।
समए वि सन्तइं पप्प, एवमेव वियाहिए।
आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिए वि य।।९।।
खंधा य खंधदेसा य, तप्पएसा तहेव य।
परमाणुणो य बोद्धव्वा, रूविणो य चउव्विहा।।१०।।
एगत्तेण पुहुत्तेण, खंधा य परमाणु य।
लोगेगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ।।११।।

सुहुमा सव्व लोगम्मि, लोग-देसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं।।१२।।
सन्तइं पप्प तेऽणाइ, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।१३।।
असंखकाल-मुक्कोसं, एक्को समयं जहण्णयं।
अजीवाण य रूवीणं, ठिई एसा वियाहिया।।१४।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, एक्कं समयं जहण्णयं।
अजीवाण य रूवीणं, अन्तरेयं वियाहियं।।१५।।
वण्णओ गंधओ चेव, रसओ फासओ तहा।
संठाणओ य विण्णेओ, परिणामो तेसिं पंचहा।।१६।।
वण्णओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया।
किण्हा णीला य लोहिया, हलिद्दा सुक्किला तहा।।१७।।
गंधओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया।
सुब्भिगंध परिणामा, दुब्भिगंधा तहेव य।।१८।।
रसओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया।
तित्त-कडुय-कसाया, अम्बिला महुरा तहा।।१९।।
फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिया।
कक्खडा मउआ चेव, गरुआ लहुया तहा।।२०।।
सीया उण्हा य णिद्धा य, तहा लुक्खा य आहिया।
इय फास परिणया एए, पुग्गला समुदाहिया।।२१।।
संठाणओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया।
परिमंडला य वट्टा य, तंसा चउरंस-मायया।।२२।।
वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।२३।।

वण्णओ जे भवे णीले, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।२४।।
वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।२५।।
वण्णओ पीयए जे उ, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।२६।।
वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।२७।।
गंधओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।२८।।
गंधओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।२६।।
रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।३०।।
रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।३१।।
रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।३२।।
रसओ अम्बिले जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।३३।।
रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।३४।।
फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।।३५।।

फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३६॥
फासओ गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३७॥
फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३८॥
फासओ सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३९॥
फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥४०॥
फासओ णिद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥४१॥
फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥४२॥
परिमण्डल संठाणे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४३॥
संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४४॥
संठाणओ भवे तंसे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४५॥
संठाणओ जे चउरंसे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४६॥
जे आयय संठाणे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४७॥

एसा अजीव-विभत्ती, समासेण वियाहिया।
इत्तो जीव विभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो ।।४८।।
संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया।
सिद्धा-णेगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ।।४६।।
इत्थी पुरिस-सिद्धा य, तहेव य णपुंसगा।
सलिंगे अण्णलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ।।५०।।
उक्को-सोगाह-णाए य, जहण्ण मज्झिमाइ य।
उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्दम्मि जलम्मि य ।।५१।।
दस य णपुंसएसु, वीसं इत्थियासु य।
पुरिसेसु य अट्ठसयं, समए-णेगेण सिज्झई ।।५२।।
चत्तारि य गिहलिंगे, अण्णलिंगे दसेव य।
सलिंगेण अट्ठसयं, समए-णेगेण सिज्झई ।।५३।।
उक्को-सोगाहणाए य, सिज्झंते जुगवं दुवे।
चत्तारि जहण्णाए, जव मज्झे अट्ठुत्तरं सयं ।।५४।।
चउ रुड्ढलोए य दुवे समुद्दे, तओ जले वीसमहे तहेव य।
सयं च अट्ठुत्तरं तिरियलोए, समए-णेगेण सिज्झई धुवं ।।५५।।
कहिं पडिहया सिद्धा, कहिं सिद्धा पइट्ठिया।
कहिं बोंदिं चइत्ताणं, कत्थ गंतूण सिज्झई ।।५६।।
अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोंदिं चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिज्झई ।।५७।।
बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे।
ईसि-पब्भार-णामा उ, पुढवी छत्त-संठिया ।।५८।।
पणयाल-सय-सहस्सा, जोयणाणं तु आयया।
तावइयं चेव वित्थिण्णा, तिगुणो तस्सेव परिरओ ।।५६।।

अट्ठजोयण-बाहुल्ला, सा मज्झम्मि वियाहिया।
परिहायंती चरिमन्ते, मच्छि-पत्ताउ तणुयरी ॥६०॥
अज्जुण-सुवण्णग-मई, सा पुढवी णिम्मला सहावेणं।
उत्ताणग-च्छत्तग-संठिया य, भणिया जिणवरेहिं ॥६१॥
संखंक-कुन्द-संकासा, पण्डुरा णिम्मला सुहा।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयंतो उ वियाहिओ ॥६२॥
जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणो-गाहणा भवे ॥६३॥
तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगग्गम्मि पइट्ठिया।
भव-प्पवंच-उम्मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥६४॥
उस्सेहो जस्स जो होइ, भवम्मि चरिमम्मि उ।
तिभाग-हीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥
एगत्तेण साईया, अपज्जवसिया वि य।
पुहुत्तेण अणाइया, अपज्जवसिया वि य ॥६६॥
अरूविणो जीवघणा, णाणदंसण सण्णिया।
अउलं सुहं संपत्ता, उवमा जस्स णत्थि उ ॥६७॥
लोगेगदेसे ते सव्वे, णाणदंसण-सण्णिया।
संसारपार णित्थिण्णा, सिद्धिं वरगइं गया ॥६८॥
संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया।
तसा य थावरा चेव, थावरा तिविहा तहिं ॥६९॥
पुढवी आउ जीवा य, तहेव य वणस्सई।
इच्चेए थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥७०॥
दुविहा पुढवी जीवा य, सुहुमा वायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥७१॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया।
सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ।।७२।।
किण्हा णीला य रुहिरा य, हालिद्दा सुक्किला तहा।
पण्डु-पणग मट्टिया, खरा छत्तीसई विहा ।।७३।।
पुढवी य सक्करा वालुया य, उवले सिला य लोणूसे।
अय-तम्ब तउय-सीसग, रुप्प-सुवण्णे य वइरे य ।।७४।।
हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला सासगंजण-पवाले।
अब्भ-पडलब्भ-बालुय, बायरकाए मणिविहाणे ।।७५।।
गोमेज्जए य रुयगे, अंके फलिहे य लोहियक्खे य।
मरगय-मसारगल्ले, भुयमोयग-इंदणीले य ।।७६।।
चंदण-गेरुय हंसगब्भे, पुलए सोगंधिए य बोधव्वे।
चंदप्पह वेरुलिए, जलकंते सूरकंते य ।।७७।।
एए खर पुढवीए, भेया छत्तीस-माहिया।
एगविह-मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।।७८।।
सुहुमा सव्व लोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ।।७९।।
सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जव-सिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।।८०।।
बावीस-सहस्साइं, वासा-णुक्कोसिया भवे।
आउ-ठिई पुढवीणं, अंतो-मुहुत्तं जहण्णया ।।८१।।
असंखकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णया।
कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ ।।८२।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, पुढवी जीवाण अन्तरं ।।८३।।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥८४॥
दुविहा आऊ जीवा उ, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥८५॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया।
सुद्धोदए य उस्से य, हरतणू महिया हिमे ॥८६॥
एगविह-मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्व लोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥८७॥
सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जव-सिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥८८॥
सत्तेव सहस्साइं, वासा-णुक्कोसिया भवे।
आउठिई आऊणं, अंतो मुहुत्तं जहण्णिया ॥८९॥
असंखकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णयं।
कायठिई आऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥९०॥
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, आऊ जीवाण अन्तरं ॥९१॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस फासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥९२॥
दुविहा वणस्सई जीवा, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जता, एवमेए दुहा पुणो ॥९३॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया।
साहारण-सरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥९४॥
पत्तेग सरीरा उ, ऽणेगहा ते पकित्तिया।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥९५॥

वलया पव्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तिणा।
हरिय-काया उ बोधव्वा, पत्तेगाइ वियाहिया ।।९६।।
साहारण सरीरा उ ऽणेगहा ते पकित्तिया।
आलुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ।।९७।।
हरिली सिरिली सिरिस्सिरिली, जावई-केय कंदली।
पलण्डु लसण-कंदे य, कंदली य कुहुव्वए ।।९८।।
लोहिणी हूयथी हूय, कुहगा य तहेव य।
कण्हे य वज्जकंदे य, कंदे सूरणए तहा ।।९९।।
अस्स-कण्णी य बोधव्वा, सीह-कण्णी तहेव य।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य, णेगहा एवमायओ ।।१००।।
एगविह-मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्व-लोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।।१०१।।
सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जव-सिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जव-सिया वि य ।।१०२।।
दस चेव सहस्साइं, वासा-णुक्कोसिया भवे।
वणस्सईणं आउं तु, अंतो मुहुत्तं जहण्णियं ।।१०३।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णिया।
कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ।।१०४।।
असंखकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, पणग जीवाण अन्तरं ।।१०५।।
एएसिं वण्णाओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।।१०६।।
इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया।
इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ।।१०७।।

तेऊ वाऊ य बोधव्वा, उराला य तसा तहा।
इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१०८॥
दुविहा तेऊ जीवा उ, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०९॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, णेगहा ते वियाहिया।
इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चिजाला तहेव य ॥११०॥
उक्का विज्जू य बोधव्वा, णेगहा एव-मायओ।
एगविह-मणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥
सुहुमा सव्व-लोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।
इत्तो काल-विभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥११२॥
सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जव-सिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जव-सिया वि य ॥११३॥
तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई तेऊणं, अंतो-मुहुत्तं जहण्णिया ॥११४॥
असंखकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णिया।
कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥११५॥
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतो-मुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, तेऊ जीवाण अन्तरं ॥११६॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥११७॥
दुविहा वाउ जीवा उ, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया।
मण्डलिया, घणगुंजा सुद्धवाया य ॥११९॥

संवट्टग-वाया य, णोगहा एव-मायओ।
एगविह-मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया।।१२०।।
सुहुमा सव्व लोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।
इत्तो काल विभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं।।१२१।।
सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।१२२।।
तिण्णेव-सहस्साइं, वासा-णुक्कोसिया भवे।
आउठिई वाऊणं, अंतो-मुहुत्तं जहण्णिया।।१२३।।
असंखकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णया।
कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ।।१२४।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, वाऊ-जीवाण अन्तरं।।१२५।।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो।।१२६।।
उराला तसा जे उ, चउहा ते पकित्तिया।
बेइंदिया-तेइंदिया, चउरो पंचिंदिया चेव।।१२७।।
बेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे।।१२८।।
किमिणो सोमंगला चेव, अलसा माइ-वाहया।
वासीमुहा य सिप्पिया, संखा संखणगा तहा।।१२९।।
पल्लोयाणु-ल्लया चेव, तहेव य वराडगा।
जलूगा जालगा चेव, चंदणा य तहेव य।।१३०।।
इइ बेइंदिया एए, ऽणेगहा एव-मायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, ण सव्वत्थ वियाहिया।।१३१।।

सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जव-सिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जव-सिया वि य।।१३२।।
वासाइं बारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया।
बेइंदिय आउठिई, अंतो मुहुत्तं जहण्णिया।।१३३।।
संखिज्ज काल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णियं।
बेइंदिय कायठिई, तं कायं तु अमुंचओ।।१३४।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णयं।
बेइंदिय जीवाणं, अन्तरं य वियाहियं।।१३५।।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो।।१३६।।
तेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे।।१३७।।
कुंथु पिवीलि उड्डंसा, उक्कलु-द्देहिया तहा।
तणहारा कट्ठहारा य, मालूगा पत्ताहारगा।।१३८।।
कप्पासट्ठिम्मि जाया, तिंदुगा तउस-मिंजगा।
सदावरी य गुम्मी य, बोद्धव्वा इंदगाइया।।१३९।।
इंदगोवग-माईया, णेगहा एव मायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, ण सव्वत्थ वियाहिया।।१४०।।
सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जव-सिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जव-सिया वि य।।१४१।।
एगूण-पण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया।
तेइंदिय-आउठिई, अंतो मुहुत्तं जहण्णिया।।१४२।।
संखिज्ज-काल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया।
तेइंदिय कायठिई, तं कायं तु अमुंचओ।।१४३।।

अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णयं।
तेइंदिय जीवाणं, अंतरं तु वियाहियं।।१४४।।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो।।१४५।।
चउरिंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे।।१४६।।
अंधिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा।
भमरे कीड-पयंगे य, ढिंकुणे कुंकणे तहा।।१४७।।
कुक्कुडे सिंगरीडी य, णंदावत्ते य विच्छिए।
डोले भिंगिरीडी य, विरली अच्छि-वेहए।।१४८।।
अच्छिले माहए अच्छि, रोडए, विचित्ते चित्तपत्तए।
ओहिंजलिया जलकारी य, णीयया तंबगाइया।।१४९।।
इय चउरिंदिया एए, णेग-विहा एव-मायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, ण सव्वत्थ वियाहिया लोगस्स ए गदेसम्मि· ते सव्वे परिकितिआ।।१५०।।
सन्तइं पप्प-णाईया, अपज्जव-सिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।१५१।।
छच्चेव य मासाउ, उक्कोसण वियाहिया।
चउरिंदिय आउठिई, अंतो मुहुत्तं जहण्णिया।।१५२।।
संखिज्ज काल-मुक्कोसं, अंतो-मुहुत्तं जहण्णयं।
चउरिंदिय कायठिई, तं कायं तु अमुंचओ।।१५३।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, अंतरं च वियाहियं।।१५४।।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो।।१५५।।

पंचिंदिया उ जे जीवा, चउविहा ते वियाहिया।
णेरइया तिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया।।१५६।।
णेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तासु भवे।
रयणाभा-सक्कराभा, वालुयाभा य आहिया।।१५७।।
पंकाभा धूमाभा, तमा-तमतमा तहा।
इइ णेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया।।१५८।।
धम्मा वंसगा सिला, तहा अंजण-रिट्ठगा।
मघा माघवइ चेव, णारइया य वियाहिया।।१५९।।
रयणाई गोत्तओ चेव, तहा घम्माइ णामओ।
इइ णेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया।।१६०।।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ वियाहिया।
इत्तो काल-विभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।१६१।।
संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।१६२।।
सागरोव-ममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया।
पढमाए जहण्णेणं, दसवास-सहस्सिया।।१६३।।
तिण्णेव-सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
दोच्चाए जहण्णेणं, एगं तु सागरोवमं।।१६४।।
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
तइयाए जहण्णेणं, तिण्णेव सागरोवमा।।१६५।।
दस सागरोवमाऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
चउत्थीए जहण्णेणं, सत्तेव सागरोवमा।।१६६।।
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
पंचमाए जहण्णेणं, दस चेव सागरोवमा।।१६७।।

बावीस-सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
छट्ठीए-जहण्णेणं, सत्तरस-सागरोवमा।।१६८।।
तेत्तीस-सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
सत्तमाए-जहण्णेणं, बावीसं सागरोवमा।।१६९।।
जा चेव उ आउठिई, णेरइयाणं वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई, जहण्णुक्कोसिया भवे।।१७०।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतो मुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, णेरइयाणं तु अंतरं।।१७१।।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो।।१७२।।
पंचिंदिय तिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया।
समुच्छिम तिरिक्खाओ, गब्भ वक्कंतिया तहा।।१७३।।
दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा।
णहयरा य बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे।।१७४।।
मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा।
सुंसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलयराहिया।।१७५।।
लोगेगदेसे ते सव्वे, ण सव्वत्थ वियाहिया।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।१७६।।
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।१७७।।
एंगा य पुव्वकोडीओ, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया।।१७८।।
पुव्वकोडिपुहुत्तं तु, उक्कोसेण वियाहिया।
कायठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया।।१७९।।

अणंतकाल मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, जलयराणं तु अंतरं।।१८०।।
एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसओ फासओ।
संठाणा देसओ वावि, विहाणाइं सहस्सो।।१८१।।
चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे।
चउप्पया चउविहा, ते मे कित्तयओ सुण।।१८२।।
एगखुरा दुखुरा चेव, गण्डीपया सणप्पया।
हयमाइ गोणमाइ, गयमाइ-सीहमाइणो।।१८३।।
भुओरग परिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे।
गोहाई अहिमाई य, एक्केक्काऽणेगहा भवे।।१८४।।
लोएगदेसे ते सव्वे, ण सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।१८५।।
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।१८६।।
पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया।।१८७।।
पुव्वकोडि पुहुत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया।
कायठिई थलयराणं, अंतरं तेसिमं भवे।।१८८।।
अणंतकाल मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, थलयराणं तु अंतरं।।१८९।।
एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसओ फासओ।
संठाणा देसओ वावि, विहाणाइं सहस्सो।।१९०।।
चम्मे उ लोमपक्खी य, तइया समुग्ग पक्खिया।
विययपक्खी य बोधव्वा, पक्खिणो य चउव्विहा।।१९१।।

लोगेगदेसे ते सव्वे, ण सव्वत्थ वियाहिया।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।१६२।।
संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।१६३।।
पलिओवमस्स भागो, असंखेज्ज इमो भवे।
आउठिई खहयराणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया।।१६४।।
असंखभागो पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया।
पुव्वकोडी पुहुत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया।।१६५।।
कायठिई खहयराणं, अंतरं तेसिमं भवे।
अणंतकाल मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णयं।।१६६।।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो।।१६७।।
मणुया दुविह भेया उ, ते मे कित्तयओ सुण।
संमुच्छिमा य मणुया, गब्भवक्कंतिया तहा।।१६८।।
गब्भवक्कंतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया।
कम्म अकम्म भूमा य, अंतरद्दीवया तहा।।१६६।।
पण्णरस तीसविहा, भेया दु अट्ठवीसइं।
संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया।।२००।।
संमुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिआ।।२०१।।
संतइं पप्प-णाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।२०२।।
पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया।।२०३।।

पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया।
पुव्वकोडि पुहुत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया॥२०४॥
कायठिई मणुयाणं, अंतरं तेसिमं भवे।
अणंतकाल मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णयं॥२०५॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो॥२०६॥
देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण।
भोमिज्ज-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया तहा॥२०७॥
दसहा उ भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो।
पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा॥२०८॥
असुरा णाग सुवण्णा, विज्जू अग्गी य वियाहिया।
दीवोदहि दिसा वाया, थणिया भवणवासिणो॥२०९॥
पिसायभूया जक्खा य, रक्खसा किण्णरा किंपुरिसा।
महोरगा य गंधव्वा, अट्ठविहा वाणमंतरा॥२१०॥
चंदा सूरा य णक्खत्ता, गहा तारागणा तहा।
ठिया वि चारिणो चेव, पंचहा जोइसालया॥२११॥
वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया।
कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पाईया तहेव य॥२१२॥
कप्पोवगा बारसहा, सोम्मीसाणगा तहा।
सणंकुमार माहिंदा, बंभलोगा य लंतगा॥२१३॥
महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा।
आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा॥२१४॥
कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया।
गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं॥२१५॥

हेट्ठिमा-हेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमा मज्झिमा तहा।
हेट्ठिमा उवरिमा चेव, मज्झिमाहेट्ठिमा तहा।।२१६।।
मज्झिमा-मज्झिमा चेव, मज्झिमा-उवरिमा तहा।
उवरिमा-हेट्ठिमा चेव, उवरिमा-मज्झिमा तहा।।२१७।।
उवरिमा-उवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा।
विजया वेजयंता य, जयंता अपराजिया।।२१८।।
सव्वट्ठ सिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा।
इय वेमाणिया एए, णेगहा एवमायओ।।२१६।।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वेवि वियाहिया।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।२२०।।
संतइं पप्प णाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।२२१।।
साहियं सागरं एक्कं, उक्कोसेण ठिई भवे।
भोमेज्जाणं जहण्णेणं, दसवास सहस्सिया।।२२२।।
पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
वंतराणं जहण्णेणं, दसवास सहस्सिया।।२२३।।
पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं।
पलिओव मट्ठभागो, जोइसेसु जहण्णिया।।२२४।।
दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिया।
सोहम्मम्मि जहण्णेणं, एगं च पलिओवमं।।२२५।।
सागरा साहिया दुण्णि, उक्कोसेण वियाहिया।
ईसाणम्मि जहण्णेणं, साहियं पलिओवमं।।२२६।।
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे।
सणंकुमारे जहण्णेणं, दुण्णि उ सागरोवमा।।२२७।।

साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेण ठिई भवे।
माहिंदम्मि जहण्णेणं, साहिया दुण्णि सागरा।।२२८।।
दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
बम्भलोए जहण्णोणं, सत्त उ सागरोवमा।।२२९।।
चउदस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
लंतगम्मि जहण्णोणं, दस उ सागरोवमा।।२३०।।
सत्तरस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
महासुक्के जहण्णोणं, चोद्दस सागरोवमा।।२३१।।
अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
सहस्सारम्मि जहण्णोणं, सत्तरस सागरोवमा।।२३२।।
सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
आणयम्मि जहण्णोणं, अट्ठारस सागरोवमा।।२३३।।
वीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
पाणयम्मि जहण्णेणं, सागरा अउणवीसई।।२३४।।
सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
आरणम्मि जहण्णोणं, वीसई सागरोवमा।।२३५।।
बावीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
अच्चुयम्मि जहण्णोणं, सागरा इक्कवीसई।।२३६।।
तेवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
पढमम्मि जहण्णोणं, बावीसं सागरोवमा।।२३७।।
चउवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
बिइयम्मि जहण्णोणं, तेवीसं सागरोवमा।।२३८।।
पणवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
तइयम्मि जहण्णोणं, चउवीसं सागरोवमा।।२३९।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

छव्वीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
चउत्थम्मि जहण्णेणं, सागरा पणवीसई।।२४०।।
सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
पंचमम्मि जहण्णेणं, सागरा उ छवीसई।।२४१।।
सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
छट्ठम्मि जहण्णेणं, सागरा सत्तावीसई।।२४२।।
सागरा अउणतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
सत्तमम्मि जहण्णेणं, सागरा अट्ठवीसई।।२४३।।
तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
अट्ठमम्मि जहण्णेणं, सागरा अउणतीसई।।२४४।।
सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
णवमम्मि जहण्णेणं, तीसई सागरोवमा।।२४५।।
तेत्तीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
चउसुंवि विजयाईसु, जहण्णे णेक्क तीसई।।२४६।।
अजहण्ण मणुक्कोसा, तेत्तीसं सागरोवमा।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया।।२४७।।
जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई, जहण्णमुक्कोसिया भवे।।२४८।।
अणंतकाल मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णयं।
विजढम्मि सए काए, देवाणं हुज्ज अंतरं।।२४६।।
अणंतकाल मुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहण्णयं।
आणयाईण देवाणं (कप्पाणं), गेविज्जाणं तु अंतरं।।२५०।।
संखिज्जसागरुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहण्णयं।
अणुत्तराणं य देवाणं, अन्तरं तु वियाहियं।।२५१।।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो॥२५२॥
संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया।
रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहा वि य॥२५३॥
इय जीव मजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य।
सव्व णयाण मणुमए, रमेज्ज संजमे मुणी॥२५४॥
तओ बहूणि वासाणि, सामण्ण मणुपालिया।
इमेण कम्म जोगेण, अप्पाणं संलिहे मुणी॥२५५॥
बारसेव उ वासाइं, संलेहुक्कोसिया भवे।
संवच्छरमज्झिमिया, छम्मासा य जहण्णिया॥२५६॥
पढमे वासचउक्कम्मि, विगइ णिज्जूहणं करे।
बिइए वास चउक्कम्मि, विचित्तं तु तवं चरे॥२५७॥
एगंतरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे।
तओ संवच्छरद्धं तु, णाइविगिट्ठं तवं चरे॥२५८॥
तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे।
परिमियं चेव आयामं, तम्मि संवच्छरे करे॥२५९॥
कोडीसहिय मायामं, कट्टु संवच्छरे मुणी।
मासद्ध मासिएणं तु, आहारेणं तवं चरे॥२६०॥
कंदप्प माभिओगं य, किव्विसियं मोह मासुरत्तं च।
एयाओ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिया होंति॥२६१॥
मिच्छादंसण रत्ता, सणियाणा उ हिंसगा।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही॥२६२॥
सम्मद्दंसणरत्ता, अणियाणा सुक्कलेस मोगाढा।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही॥२६३॥

मिच्छादंसणरत्ता, सणियाणा कण्हलेसमोगाढा।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही।।२६४।।
जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेंति भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी।।२६५।।
बाल मरणाणि बहुसो, अकाम मरणाणि चेव य बहूयाणि।
मरिहंति ते वराया, जिणवयणं जे ण जाणंति।।२६६।।
बहुआगम विण्णाणा, समाहि उप्पायगा य गुणगाही।
एएणं कारणेणं, अरिहा आलोयणं सोउं।।२६७।।
कंदप्प कुक्कुयाइं तह, सील सहाव-हास विगहाइं।
विम्हावेंतो य परं, कंदप्पं भावणं कुणइ।।२६८।।
मंता जोगं काउं, भूइकम्मं च जे पउंजंति।
साय-रस-इड्ढिहेउं, अभिओगं भावणं कुणइ।।२६९।।
णाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं।
माई अवण्णवाई, किव्विसियं भावणं कुणइ।।२७०।।
अणुबद्ध रोसपसरो, तह य णिमित्तम्मि होइ पडिसेवी।
एएहिं कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणइ।।२७१।।
सत्थगहणं विसभक्खणं च, जलणं च जलपवेसो य।
अणायार भंडसेवी, जम्मण मरणाणि बंधंति।।२७२।।
इय पाउकरे बुद्धे, णायए परिणिव्वुए।
छत्तीसं उत्तरज्झाए, भव सिद्धीय संमए।।२७३।।

।। जीवाजीवविभत्ती णामं छत्तीसइमं अज्झयणं समत्तं।।३६।।

।। उत्तरज्झयणं सुत्तं समत्तं।।

श्री नन्दी-सूत्रम्

जयइ जगजीव-जोणी, वियाणओ, जगगुरू जगाणंदो ।
जगणाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ।।१।।
जयइ सुयाणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ।।२।।
भद्दं सव्व-जगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स ।
भद्दं सुरासुर-णमंसियस्स, भद्दं धूय-रयस्स ।।३।।
गुण-भवण-गहण सुय-रयण,-भरिय, दंसण विसुद्ध-रत्थागा ।
संघ-णगर ! भद्दं ते, अखंड चारित्त-पागारा ।।४।।
संजम-तव-तुंबारयस्स, णमो सम्मत्त-पारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघ-चक्कस्स ।।५।।
भद्दं सील-पडागूसियस्स, तव-णियम-तुरय-जुत्तस्स ।
संघ-रहस्स भगवओ, सज्झाय सुणंदि-घोसस्स ।।६।।
कम्मरय-जलोहविणिग्गयस्स, सुयरयण-दीह-णालस्स ।
पंच-महव्वय थिर-कण्णियस्स, गुण-केसरालस्स ।।७।।
सावग-जण-महुयर-परि-वुडस्स, जिण-सूर-तेय-बुद्धस्स ।
संघ-पउमस्स भद्दं, समण-गण-सहस्स-पत्तस्स ।।८।।
तव-संजम-मयलंछण, अकिरिय-राहु-मुह-दुद्धरिस णिच्चं ।
जय संघचंद ! णिम्मल, सम्मत्त-विसुद्ध-जोण्हागा ।।९।।
पर-तित्थिय-गह-पहा-णासगस्स, तवतेय-दित्त-लेसस्स ।
णाणुज्जोयस्स जए, भद्दं दम-संघ सूरस्स ।।१०।।
भद्दं धिइ-वेला-परिगयस्स, सज्झाय-जोग-मगरस्स ।
अक्खोहस्स भगवओ, संघ-समुद्दस्स रुंदस्स ।।११।।

सम्मद्दंसण-वर-वइर-दढ-रूढ-गाढावगाढ पेढस्स ।
धम्मवर-रयण-मंडिय, चामीयर-मेहलागस्स ।।१२।।
णिय-मूसिय-कणय,सिलाय-लुज्जल-जलंत-चित्तकूडस्स ।
णंदण-वण-मणहर सुरभि,सील-गंधुद्धुमायस्स ।।१३।।
जीवदया-सुंदर-कंद-रुद्दरिय,मुणिवर-मइंद-इण्णस्स ।
हेउ-सय-धाउ-पगलंत,रयणदित्तोसहि-गुहस्स ।।१४।।
संवर-वर-जल-पग-लिय,उज्झर-पविरायमाण-हारस्स ।
सावग-जण-पउर-रवन्त-मोर-णच्चंत-कुहरस्स ।।१५।।
विणय-णय-पवर-मुणिवर,फुरंत-विज्जुज्जलंत-सिहरस्स ।
विविह-गुण-कप्प-रुक्खग,फलभर-कुसुमाउल-वणस्स ।।१६।।
णाण-वर-रयण-दिप्पंत, कंत-वेरुलिय-विमल-चूलस्स ।
वंदामि विणय-पणओ, संघ-महामंदर-गिरिस्स ।।१७।।
गुण-रयणुज्जल-कडयं, सील सुगंधि-तव-मंडिउद्देसं ।
सुय-बारसंग-सिहरं, संघ-महामंदरं वंदे ।।१८।।
णगर-रह-चक्क-पउमे, चंदे सूरे समुद्द-मेरुम्मि ।
जो उवमिज्जइ सययं, तं संघ-गुणायरं वंदे ।।१६।।
वंदे उसभं अजियं, संभव-मभिणन्दण-सुमइ-सुप्पभ-सुपासं ।
ससि-पुप्फदंत-सीयल-सिज्जंसं वासुपुज्जं च ।।२०।।
विमल-मणंतं च धम्मं, संतिं, कुंथुं अरं च मल्लिं च ।
मुणिसुव्वय-णमि णेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।२१।।
पढमित्थ इंदभूई, बीए पुण होइ अग्गिभूइत्ति ।
तइए य वाउभूई, तओ वियत्ते सुहम्मे य ।।२२।।
मंडिअ मोरियपुत्ते, अकंपिए चेव अयलभाया य ।
मेयज्जे य पहासे य, गणहरा हुंति वीरस्स ।।२३।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

णिव्वुइ-पह-सासणयं, जयइ सया सव्व-भाव-देसणयं ।
कु-समय-मय-णासणयं, जिणिंदवर-वीर-सासणयं ।।२४।।
सुहम्मं अग्गिवेसाणं, जंबूणामं च कासवं ।
पभवं कच्चायणं वंदे, वच्छं सिज्जंभवं तहा ।।२५।।
जसभद्दं तुंगियं वंदे, संभूयं चेव माढरं ।
भद्दबाहुं च पाइण्णं, थूलभद्दं च गोयमं ।।२६।।
एलावच्च-सगोत्तं, वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ।
तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स सरिव्वयं वंदे ।।२७।।
हारिय गुत्तं साइं च, वंदिमो हारियं च सामज्जं ।
वंदे कोसिय-गोत्तं, संडिल्लं अज्ज-जीयधरं ।।२८।।
तिसमुद्द-खायकित्तिं, दीव-समुद्देसु गहिय पेयालं ।
वंदे अज्जसमुद्दं, अक्खुभिय समुद्द गंभीरं ।।२९।।
भणगं करगं झरगं पभावगं णाण-दंसण-गुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं, सुयसागर-पारगं धीरं ।।३०।।
वंदामि अज्जधम्मं, तत्तो वंदे य भद्दगुत्तं च ।
तत्तो य अज्जवइरं, तवणियम-गुणेहिं वइरसमं ।।३१।।
वंदामि अज्जरक्खिय खमणे, रक्खियचरित्त सव्वस्से ।
रयण करंडग भूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं ।।३२।।
णाणम्मि दंसणम्मि य, तव विणए णिच्चकाल मुज्जुत्तं ।
अज्जं णंदिल खवणं, सिरसा वंदे पसण्ण मणं ।।३३।।
वड्ढउ वायग वंसो, जसवंसो अज्जणाग हत्थीणं ।
वागरण करण भंगिय, कम्मपयडी पहाणाणं ।।३४।।
जच्चंजण धाउ समप्पहाणं, मुद्दिय कुवलय णिहाणं ।
वड्ढउ वायग वंसो, रेवई णक्खत्त णामाणं ।।३५।।

अयलपुरा णिक्खंते, कालियसुय आणुओगिए धीरे ।
बंभद्दीवग सीहे, वायग पयमुत्तमं पत्ते ।।३६।।
जेसिं इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ड भरहम्मि ।
बहुणयर णिग्गय जसे, ते वंदे खंदिलायरिए ।।३७।।
तत्तो हिमवंत महंत विक्कमे, धिइ परक्कम मणंते ।
सज्झाय-मणंतधरे, हिमवंते वंदिमो सिरसा ।।३८।।
कालियसुय अणुओगस्स, धारए धारए य पुव्वाणं ।
हिमवंत खमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए ।।३६।।
मिउ-मद्दव-संपण्णे, आणुपुव्वि वायगत्तणं पत्ते ।
ओहसुय समायारे, णागज्जुण-वायए वंदे ।।४०।।
गोविन्दाणंपि णमो, अणुओगे विउल धारिणिन्दाणं ।
णिच्चं खंतिदयाणं, परूवणे दुल्लभिन्दाणं ।।४१।।
तत्तो य भूयदिण्णं, णिच्चं तवसंजमे अणिव्विण्णं ।
पंडियजण सम्माण्णं, वंदामो संजम-विहिण्णू ।।४२।।
वरकणग-तविय-चंपग-विमउलवर-कमलगब्भ-सरिवण्णे ।
भवियजण हियय दइए, दयागुण विसारए धीरे ।।४३।।
अड्ड भरहप्पहाणे, बहुविह सज्झाय सुमुणिय-पहाणे ।
अणुओगिय वरवसभे, णाइल कुलवंस-णंदिकरे ।।४४।।
जग भूय हियप्प गब्भे, वंदेऽहं भूयदिण्ण-मायरिए ।
भवभय-वुच्छेयकरे, सीसे णागज्जुण-रिसीणं ।।४५।।
सुमुणिय णिच्चाणिच्चं, सुमुणिय सुत्तत्थ-धारयं वंदे ।
सब्भावुब्भाव-णया, तत्थं, लोहिच्च-णामाणं ।।४६।।
अत्थ-महत्थक्खाणिं, सुसमण-वक्खाण-कहण-णिव्वाणिं ।
पयईए महुरवाणिं, पयओ पणमामि दूसगणिं ।।४७।।

तवणियम-सच्च-संजम,-विणयज्जव-खंति मद्दव-रयाणं ।
सीलगुण-गद्दियाणं अणुओग-जुगप्पहाणाणं ॥४८॥
सुकुमाल कोमल-तले, तेसिं पणमामि लक्खण पसत्थे ।
पाए पावयणीणं, पडिच्छय सयएहिं पणिवइए ॥४६॥
जे अण्णे भगवंते, कालियसुय-अणुओगिए धीरे ।
ते पणमिऊण सिरसा, णाणस्स परूवणं वोच्छं ॥५०॥
सेलघण, कुडग, चालणि, परिपूणग, हंस, महिस, मेसे य ।
मसग, जलूग, बिराली, जाहग, गो, भेरी, आभीरी ॥५१॥
सा समासओ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा-जाणिया,
अजाणिया, दुव्वियड्ढा । जाणिया जहा-
खीरमिव जहा हंसा, जे घुट्टंति इह गुरु ।
गुण-समिद्धा। दोसे य विवज्जंति, तं जाणसु ॥५२॥
जाणियं परिसं अजाणिया जहा-
जो होइ पगइ महुरा, मियछावय सीह कुक्कुडय भूआ ।
रयणमिव असंठविया, अजाणिया सा भवे परिसा ॥५३॥
दुव्वियड्ढा जहा-
ण य कत्थइ णिम्माओ, ण य पुच्छइ परिभवस्स दोसेणं ।
वत्थिव्व वायपुण्णो, फुट्टइ गामिल्ल य दुव्वियड्ढा ॥५४॥

सूत्र-१. णाणं पंचविहं पण्णत्तं,-तंजहा-आभिणिबोहिय-णाणं, सुयणाणं, ओहिणाणं, मणपज्जव णाणं, केवल णाणं।

सूत्र-२. तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-पच्चक्खं च परोक्खं च।

सूत्र-३. से किं तं पच्चक्खं? पच्चक्खं दुविहं

पण्णत्तं, तंजहा-इंदिय पच्चक्खं, णोइंदिय पच्चक्खं च।

सूत्र-४. से किं तं इंदिय पच्चक्खं? इंदिय पच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं, तंजहा-सोइंदिय पच्चक्खं, चक्खिंदिय पच्चक्खं,घाणिंदिय पच्चक्खं, जिब्भिंदिय पच्चक्खं, फासिंदिय पच्चक्खं, से तं इंदिय पच्चक्खं।

सूत्र-५. से किं तं णोइंदिय पच्चक्खं? णोइंदिय पच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं तंजहा-ओहिणाण पच्चक्खं, मणपज्जव- णाण पच्चक्खं, केवलणाण पच्चक्खं।

सूत्र-६. से किं तं ओहिणाण पच्चक्खं? ओहिणाण-पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-भव पच्चइयं च खाओवसमियं च।

सूत्र-७. से किं तं भव पच्चइयं? भव पच्चइयं दुण्हं, तं जहा-देवाण य णेरइयाण य।

सूत्र-८. से किं तं खाओवसमियं? खाओवसमियं दुण्हं, तं जहा-मणुस्साण य पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण य। को हेऊ खाओवसमियं ? खाओवसमियं तया-वरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिणाणं समुप्पज्जइ।

सूत्र-९. अहवा गुण पडिवण्णस्स अणगारस्स ओहिणाणं समुप्पज्जइ, तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-आणुगामियं[१], अणाणुगामियं[२], वड्ढमाणयं[३], हीयमाणयं[४], पडिवाइयं[५], अपडिवाइयं[६]।

सूत्र-१०. से किं तं आणुगामियंओहिणाणं? आणुगामियं ओहिणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा- अंतगयं

च, मज्झगयं च। से किं तं अंतगयं? अंतगयं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा-पुरओ-अंतगयं, मग्गओ-अंतगयं, पासओ-अंतगयं।

से किं तं पुरओ अंतगयं? पुरओ अंतगयं-से जहा णामए केइ पुरिसे उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा, मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा, पुरओ काउं पणुल्लेमाणे पणुल्लेमाणे गच्छेज्जा, से त्तं पुरओ अंतगयं।

से किं तं मग्गओ अंतगयं? मग्गओ अंतगयं-से जहा णामए केइ पुरिसे उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा, मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा, मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छिज्जा से त्तं मग्गओ अंतगयं।

से किं तं पासओ अंतगयं? पासओ अंतगयं-से जहा णामए केइ पुरिसे उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा, मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा, पासओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छिज्जा, से त्तं पासओ अंतगयं, से त्तं अंतगयं।

से किं तं मज्झगयं? मज्झगयं से जहा णामए केइ पुरिसे उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा, मणिं वा, पइवं वा, जोइं वा, मत्थए काउं समुव्वहमाणे समुव्वहमाणे गच्छिज्जा, से त्तं मज्झगयं।

अंतगयस्स मज्झगयस्स य-को पइविसेसो? गोयमा! पुरओ अंतगएणं ओहिणाणेणं पुरओ चेव संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ

पासइ। मग्गओ अंतगएणं ओहिणाणेणं मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा, असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। पासओ-अंतगएणं ओहिणाणेणं पासओ चेव संखिज्जाणि वा, असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। मज्झगएणं ओहिणाणेणं सव्वओ समंता संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। से त्तं आणुगामियं ओहिणाणं।

सूत्र-११. से किं तं अणाणुगामियं ओहिणाणं? अणाणुगामियं ओहिणाणं से जहा णामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं, परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं जाणइ पासइ, अण्णत्थगए ण जाणइ ण पासइ, एवामेव अणाणुगामियं ओहिणाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ; अण्णत्थगए ण जाणइ ण पासइ। से त्तं अणाणुगामियं ओहिणाणं।

सूत्र-१२. से किं तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं? वड्ढमाणयं ओहिणाणं पसत्थेसु अज्झवसाय-ट्ठाणेसु वड्ढमाणस्स वड्ढमाण-चरित्तस्स, विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण-चरित्तस्स, सव्वओ समंता ओहि वड्ढइ -

जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणग-जीवस्स ।
ओगाहणा जहण्णा ओहीखित्तं जहण्णं तु ॥५५॥
सव्व बहुअगणिजीवा णिरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु ।
खित्तं सव्व दिसागं परमोही खेत्तणि द्दिट्ठो ॥५६॥

अंगुल-मावलियाणं भाग-मसंखिज्ज दोसु संखिज्जा ।
अंगुल-मावलियंतो आवलिया अंगुल पुहुत्तं ॥५७॥
हत्थम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ।
जोयण दिवस-पुहुत्तं, पक्खंतो पण्णवीसाओ ॥५८॥
भरहम्मि अद्धमासो, जम्बु-द्दीवम्मि साहिओ मासो ।
वासं च मणुय लोए, वासपुहुत्तं च रुयगम्मि ॥५९॥
संखिज्जम्मि उ काले, दीव समुद्दावि हुंति संखिज्जा ।
कालम्मि असंखिज्जे, दीव-समुद्दा उ भइयव्वा ॥६०॥
काले चउण्हं वुड्ढी, कालो भइयव्वो खित्त वुड्ढीए ।
वुड्ढीए दव्व-पज्जव, भइयव्वा खित्त-काला उ ॥६१॥
सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं ।
अंगुल सेढीमित्ते, ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ॥६२॥
से त्तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं।

सूत्र-१३. से किं तं हीयमाणयं ओहिणाणं? हीयमाणयं ओहिणाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसाण ट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाण-चरित्तस्स संकिलिस्स-माणस्स संकिलिस्स-माणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही परिहायइ से त्तं हीयमाणयं ओहिणाणं।

सूत्र-१४. से किं तं पडिवाइ ओहिणाणं? पडिवाइ ओहिणाणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जय भागं वा, संखिज्जयभागं वा, बालग्गं वा बालग्ग-पुहुत्तं वा, लिक्खं वा लिक्ख पुहुत्तं वा, जूयं वा जूय-पुहुत्तं वा, जवं वा जवपुहुत्तं वा, अंगुलं वा, अंगुल पुहुत्तं वा, पायं वा, पाय-पुहुत्तं वा, विहत्थिं वा विहत्थि पुहुत्तं वा, रयणिं वा

रयणि-पुहुत्तं वा, कुच्छिं वा कुच्छि-पुहुत्तं वा, धणुं वा, धणु-पुहुत्तं वा, गाउयं वा गाउय-पुहुत्तं वा, जोयणं वा जोयण-पुहुत्तं वा, जोयणसयं वा जोयणसय पुहुत्तं वा, जोयण-सहस्सं वा जोयण-सहस्स-पुहुत्तं वा, जोयण-लक्खं वा जोयण-लक्खपुहुत्तं वा, जोयण-कोडिं वा जोयण-कोडिपुहुत्तं वा, जोयण-कोडाकोडिं वा जोयण-कोडाकोडि-पुहुत्तं वा, जोयणसंखिज्जं वा जोयण-संखिज्ज-पुहुत्तं वा जोयण-असंखेज्जं वा जोयण-असंखेज्ज-पुहुत्तं वा उक्कोसेणं लोगं वा पासित्ता णं पडिवइज्जा। से तं पडिवाइ ओहिणाणं।

सूत्र-१५. से किं तं अपडिवाइ ओहिणाणं? अपडिवाइ ओहिणाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगास-पएसं जाणइ पासइ, तेण परं अपडिवाइ ओहिणाणं। से त्तं अपडिवाइ ओहिणाणं।

सूत्र-१६. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।तत्थ दव्वओणं-ओहिणाणी जहण्णेणं अणंताइं रूवि-दव्वाइं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं सव्वाइं रूवि-दव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओणं -ओहिणाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइ-भागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलोगे लोग-प्पमाण-मित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ। कालओणं-ओहिणाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखिज्जइ-भागं जाणइ पासइ। उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय-मणागयं च कालं जाणइ पासइ। भावओणं-

ओहिणाणी जहण्णेणं अणंते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेण वि अणंते भावे जाणइ पासइ। सव्वभावाण-मणंतभागं जाणइ पासइ।

ओही भव-पच्चइओ, गुण-पच्चइओ य वण्णिओ दुविहो।
तस्स य बहू विगप्पा, दव्वे खित्ते य काले य।।६३।।
णेरइय-देव-तित्थंकरा य, ओहिस्सऽबाहिरा हुंति।
पासंति सव्वओ खलु, सेसा देसेण पासंति।।६४।।
से त्तं ओहिणाण-पच्चक्खं।

सूत्र-१७. से किं तं मणपज्जव णाणं? मणपज्जव णाणे णं भंते!किं मणुस्साणं उप्पज्जइ, अमणुस्साणं? गोयमा! मणुस्साणं उप्पज्जइ णो अमणुस्साणं।

जइ मणुस्साणं उप्पज्जइ किं संमुच्छिम-मणुस्साणं गब्भ-वक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा! गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं उवज्जइ, णो संमुच्छिम मणुस्साणं जइ गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं उप्पज्जइ किं कम्मभूमिय गब्भवक्क तियं मणुस्साणं,?
तियमणुस्साणं, अकम्म-भूमिय-गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा ! कम्मभमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं उप्पज्जई।णो अकम्मभू मिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं। णो अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं। जइ कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, किं संखेज्ज-वासाउय- कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय -मणुस्साणं?, असंखिज्ज वासाउय कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा! संखेज्ज-वासाउय

कम्मभूमिय गब्भ-वक्कंतिय -मणुस्साणं, णो असंखेज्ज-वासाउय कम्मभूमिय-गब्भ-वक्कंतिय- मणुस्साणं। जइ संखेज्ज-वासाउय- कम्मभूमिय गब्भवक्कं-तिय-मणुस्साणं? किं पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं? अपज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्म भूमिय-गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं? गोयमा! पज्जत्तग संखेज्ज-वासाउय कम्मभूमि- य-गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, णो अपज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय कम्म भूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं। जइ पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, किं सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं? मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं? सम्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं, णो मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय-गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं, णो सम्ममिच्छदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं। जइ सम्मदिट्ठि पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं, किं संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं? असंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं? संजयासंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज

वासाउय-कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं? गोयमा! संजयसम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय-गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं, णो असंजय सम्मद्दि-ट्ठि पज्जत्तग-संखेज्ज वासाउय कम्म-भूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,णो संजयासंजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं। जइ संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग-संखेज्ज वासाउय-कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं, किं पमत्त-संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं? अपमत्तसंजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं? गोयमा! अपमत्तसंजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं, णो पमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय-कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं।

जइ अपमत्तसंजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज-वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, किं इड्ढिपत्त-अपमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्म भूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, अणिड्ढिपत्त-अपमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्म भूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं? गोयमा! इड्ढिपत्त अपमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं, णो अणिड्ढिपत्त अपमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग

संखेज्ज-वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, मणपज्जवणाणं समुप्पज्जइ।।

सूत्र-१८. तं च दुविहं उप्पज्जइ तंजहा- उज्जुमई य, विउलमई य। तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते अणंत पएसिए खंधे जाणइ पासइ। ते चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ। खित्तओ णं उज्जुमई य जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जय भागं उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयण-प्पभाए पुढवीए उवरिम-हेट्ठिल्ले-खुड्डग-पयरे उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिम तले, तिरियं जाव अंतो-मणुस्स-खित्ते अड्ढाइज्जेसु दीव समुद्देसु पण्णरस्ससु कम्म भूमिसु तीसाए अकम्म भूमिसु छप्पण्णाए अंतरदीवगेसु सण्णि पंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अड्ढाईज्जेहि-मंगुलेहिं अब्भहिय तरागं विउल तरागं विसुद्ध तरागं वितिमिर तरागं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं उज्जुमई जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखिज्जय भागं उक्कोसेणावि पलिओवमस्स असंखिज्जय भागं अईय-मणागयं वा कालं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहिय तरागं विउल तरागं विसुद्ध तरागं वितिमिर तरागं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्व भावाणं अणंत भागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहिय तरागं विउल तरागं

विसुद्ध तरागं वितिमिर तरागं भावं जाणइ पासइ।
मणपज्जव णाणं पुण, जण मणपरिचिंतियत्थ पागडणं।
माणुस्स खित्त णिबद्धं, गुण पच्चइयं चरित्तवओ।।६५।।

से त्तं मण पज्जव णाणं।

सूत्र-१६. से किं तं केवलणाणं? केवलणाणं दुविहं पण्णतं तं जहा-भवत्थ केवलणाणं च सिद्ध केवलणाणं च। से किं तं भवत्थ केवलणाणं? भवत्थ केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं। तं जहा-सजोगि भवत्थ केवलणाणं च अजोगि भवत्थ-केवलणाणं च।

से किं तं सजोगि भवत्थ केवलणाणं? सजोगि भवत्थ केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-पढम-समय सजोगि भवत्थ-केवलणाणं च अपढम-समय-सजोगि भवत्थ-केवलणाणं च। अहवा चरमसमय-सजोगि भवत्थ-केवलणाणं च अचरम समय सजोगि भवत्थ केवलणाणं च। से त्तं सजोगि भवत्थ केवलणाणं।

से किं तं अजोगि भवत्थ केवलणाणं? अजोगि भवत्थ केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पढम समय-अजोगि भवत्थ केवलणाणं च, अपढम समय-अजोगि भवत्थ केवलणाणं च। अहवा चरम-समय- अजोगी भवत्थ केवलवाणं च, अचरमसमय- अजोगि भवत्थ केवलणाणं च, से तं अजोगि भवत्थ केवलणाणं, से तं भवत्थ केवलणाणं।

सूत्र-२०. से किं तं सिद्ध केवलणाणं? सिद्ध केवलणाणं दुविहं-पण्णत्तं-तंजहा-अणंतर सिद्ध केवलणाणं

च परंपरसिद्ध केवलणाणं च।

सूत्र-२१. से किं तं अणंतरसिद्ध केवलणाणं? अणंतर सिद्ध केवलणाणं पण्णरस विहं पण्णत्तं। तं जहा-तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा, तित्थयर सिद्धा, अतित्थयर सिद्धा, सयंबुद्ध सिद्धा, पत्तेयबुद्ध सिद्धा, बुद्धबोहिय सिद्धा, इत्थिलिंग सिद्धा, पुरिसलिंग सिद्धा, णपुंसगलिंग सिद्धा, सलिंग सिद्धा, अण्णलिंग सिद्धा, गिहिलिंग सिद्धा, एगसिद्धा, अणेगसिद्धा, से त्तं अणंतरसिद्ध केवलणाणं।

सूत्र-२२. से किं तं परंपरसिद्ध केवलणाणं? परंपरसिद्ध केवलणाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा- अपढम समय सिद्ध केवलणाणं दुसमय सिद्ध केवलणाणं, तिसमय सिद्ध केवलणाणं, चउसमय सिद्ध केवलणाणं, जाव दससमय सिद्ध केवलणाणं, संखिज्जसमय सिद्ध केवलणाणं,असंखिज्जसमय सिद्ध केवलणाणं, अणंत-समय-सिद्ध केवलणाणं, से त्तं परंपरसिद्ध केवलणाणं, से त्तं सिद्ध केवलणाणं।

सूत्र-२३. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं केवलणाणी सव्व दव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं केवलणाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ। कालओणं केवल णाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं केवलणाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ।

अह सव्व-दव्व-परिणाम भाव-विण्णत्ति-कारणमणंतं ।
सासय-मप्पडिवाइ, एगविहं केवलं णाणं ।।६६।।
केवलणाणेणऽत्थे, णाउं जे तत्थ पण्णवणाजोग्गा ।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोग-सुयं हवइ सेसं ।।६७।।

से तं केवलणाणं, से तं णोइंदिय पच्चक्खं, से तं पच्चक्ख णाणं।

सूत्र २४. से किं तं परोक्ख णाणं? परोक्ख णाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-आभिणिबोहिय णाण परोक्खं च, सुयणाण परोक्खं च। जत्थ आभिणिबोहिय णाण परोक्खं, तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुयणाणं तत्थ आभिणिबोहिय णाणं, दोऽवि एयाइं अण्णमण्ण मणुगयाइं, तहवि पुण-इत्थ आयरिया णाणत्तं पण्णवयंति। आभिणि बुज्झइत्ति आभिणिबोहिय णाणं, सुणेइत्ति सुयणाणं, मइपुव्वं जेण सुयं, ण मई सुय पुव्विया।

सूत्र-२५. अविसेसिया मई, मइणाणं च, मइ अण्णाणं च। विसेसिया सम्मद्दिट्ठिस्स मई मइणाणं। मिच्छाद्दिट्ठिस्स मई मइ अण्णाणं। अविसेसियं सुयं सुयणाणं च, सुयअण्णाणं च। विसेसियं सुयं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सुयं सुय अण्णाणं।

सूत्र-२६. से किं तं आभिणिबोहिय णाणं? आभिणिबोहिय णाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-सुय णिस्सियं च, असुय णिस्सियं च । से किं तं असुय णिस्सियं ? [illegible] णिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-

उप्पत्तिया[१], वेणइया[२], कम्मिया[३], परिणामिया[४]।
बुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पंचमा णोव लब्भई।।६८।।
पुव्व-मदिट्ठ-मस्सुय-मवेइय, तक्खण विसुद्ध-गहियत्था।
अव्वाहय-फलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया णाम।।६६।।
भरह-सिल[१], मिंढ[२],कुक्कुड[३], तिल[४], वालुय[५], हत्थि[६], अगड[७],वणसंडे[८]।
पायस[६], अइया[१०], पत्ते[११], खाडहिला[१२], पंचपियरो[१३] य,।।७०।।
भरहसिल[१], पणिय[१], रुक्खे[१], खुड्डग[१], पड[१], सरड[१], काय[१], उच्चारे[१]।
गय[६], घयण[१०], गोल[११], खंभे[१२], खुड्डग[१३], मग्गि[१४], त्थि[१५], पइ[१६], पुत्ते[१७] .।।७१।।
महुसित्थ[१८], मुद्दियं[१६], अंके[२०] णाणए[२१], भिक्खू[२२], चेडगणिहाणे[२३]।
सिक्खा य[२४], अत्थसत्थे[२५] इच्छा य महं[२६], सयसहस्से[२७]।।७२।।
भर-णित्थरण-समत्था, तिवग्ग सुत्तत्थ गहिय पेयाला।
उभओलोग फलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी।।७३।।
णिमित्ते[१], अत्थसत्थे[२] य, लेहे[३], गणिए[४] य, कूव[५], अस्से[६] य।
गद्दभ[७], लक्खण[८], गंठी[६], अगए[१०], रहिए[११] य, गणिया[१२] य।।७४।।
सीया साडी दीहं च, तणं, अवसव्वयं च कुंचस्स[१३]।
णिव्वोदए[१४] य गोणे, घोडग पडणं च रुक्खाओ[१५]।।७५।।
उवओगदिट्ठ सारा, कम्मपसंग परिघोलण विसाला।
साहुक्कार फलवई, कम्म समुत्था हवइ बुद्धी।।७६।।
हेरण्णिए[१], करिसए[२], कोलिय[३], डोवे[४] य, मुत्ति[५], घय[६], पवए[७]।
तुण्णाए[८], वड्ढइ[६] य, पूयइ[१०], घड[११], चित्तकारे[१२] य।।७७।।
अणुमाणहेउ दिट्ठंत साहिया, वयविवाग परिणामा।
हिय णिस्सेयस फलवई, बुद्धी परिणामिया णाम।।७८।।
अभए[१], सिट्ठि[२], कुमारे[३], देवी[४], उदिओदए, हवइ राया[५]।
साहू य णंदिसेणे[६], धणदत्ते[७], सावग[८], अमच्चे[६]।।७६।।

खमए[१०], असच्चपुत्ते[११], चाणक्के[१२], चेव थूलभद्दे[१३] य ।
णासिक सुंदरिणंदे[१४], वइरे[१५], परिणामिया बुद्धी ।।८०।।
चलणाहण[१६], आमंडे[१७], मणीय[१८], सप्पे[१९] य, खग्गि[२०], थूभिंदे[२१] ।
परिणामियबुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ।।८१।।

से त्तं अस्सुय णिरिस्सियं।

सूत्र-२७. से किं तं सुय णिरिस्सियं? सुय णिरिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं। तंजहा-उग्गहे[१], ईहा[२], अवाओ[३], धारणा[४]।

से किं ते उग्गहे? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य।

सूत्र-२८. से किं तं वंजणुग्गहे? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते। तंजहा-सोइंदिय वंजणुग्गहे, घाणिंदिय वंजणुग्गहे जिब्भिंदिय वंजणुग्गहे फासिंदिय वंजणुग्गहे। से तं वंजणुग्गहे।

सूत्र-२९. से किं तं अत्थुग्गहे? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते; तं जहा सोइंदिय अत्थुग्गहे, चक्खिदिय अत्थुग्गहे, घाणिंदिय अत्थुग्गहे, जिब्भिंदिय अत्थुग्गहे, फासिंदिय अत्थुग्गहे, णोइंदिय अत्थुग्गहे।

सूत्र-३०. तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणा घोसा णाणा वंजणा पंच णामधिज्जा भवंति, तं जहा-ओगेण्हणया, उवधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा। से तं उग्गहे।

सूत्र-३१. से किं तं ईहा? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, जहा-सोइंदिय ईहा, चक्खिंदिय ईहा, घाणिंदिय ईहा,

जिब्भिंदिय ईहा, फासिंदिय ईहा, णोइंदिय ईहा, तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणा घोसा, णाणा वंजणा पंच णामधिज्जा भवंति, तं जहा-आभोगणया[१], मग्गणया[२] गवेसणया[३], चिंता[४], वीमंसा[५]। से तं ईहा।

सूत्र-३२. से किं तं अवाए? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-सोइंदिय अवाए, चक्खिंदिय अवाए, घाणिंदिय अवाए, जिब्भिंदिय अवाए, फासिंदिय अवाए, णोइंदिय अवाए। तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधिज़्जा भवंति, तं जहा-आउट्टणया[१], पच्चाउट्टणया[२], अवाए[३], बुद्धी[४], विण्णाणे[५]। से तं अवाए।

सूत्र-३३. से किं तं धारणा? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा-सोइंदिय धारणा, चक्खिंदिय धारणा, घाणिंदिय धारणा, जिब्भिंदिय धारणा, फासिंदिय धारणा, णोइंदिय धारणा। तीसेणं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणा वंजणा पंच णामधिज्जा भवंति, तं जहा-धरणा[१], साधारणा[२], ठवणा[३], पइट्ठा[४], कोट्ठे[५], से तं धारणा।

सूत्र-३४. उग्गहे इक्क समइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।

सूत्र-३५. एवं अट्ठावीसइ विहस्स आभिणिबोहिय-णाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिवोहग दिट्ठंतेणं मल्लग दिट्ठंतेण य। से किं तं पडिवोहग दिट्ठंतेणं? पडिबोहग दिट्ठंतेणं से जहा णामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुतं पडिबोहिज्जा-अमुगा अमुगत्ति। तत्थ

चोयगे पण्णवयं एवं वयासी-किं एगसमय पविट्ठा पुग्गला गहण मागच्छंति? दुसमय पविट्ठा पुग्गला गहण मागच्छंति? जाव दससमय पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति? संखिज्ज समय पविट्ठा पुग्गला गहण मागच्छंति? असंखिज्ज समय पविट्ठा पुग्गला गहण मागच्छंति? एवं वयंतं चोयगं पण्णवए एवं वयासी-णो एगसमय पविट्ठा पुग्गला गहण मागच्छंति, णो दुसमय पविट्ठा गहण मागच्छंति, जाव णो दस समय पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति, णो संखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति, असंखिज्ज समय पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति, से तं पडिबोहग दिट्ठंतेणं।

से किं तं मल्लग दिट्ठंतेणं मल्लगदिट्ठंतेणं से जहा णामए के इ पुरिसे आवाग सीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खेविज्जा, से णट्ठे, अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि णट्ठे एवं पक्खि-प्पमाणेसु पक्खि-प्पमाणेसु होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं रावेहिइत्ति ; होही से उदगबिंदू, जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति ; होही से उदगबिंदू। जे णं तं मल्लगं भरिहिति, होही से उदगबिंदू। जे णं मल्लगं पवाहेहिति, एवामेव पक्खि प्पमाणेहिं पक्खि प्पमाणेहिं अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ, ताहे हुं त्ति करेइ, णो चेव णं जाणइ के एस सद्दाइ? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दाइ, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ। तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा

कालं, असंखिज्जं वा कालं।

से जहा णामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सद्दं सुणिज्जा, तेणं सद्दोत्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ; तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस सद्दे, तओ णं अवायं पविसइ; तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।

से जहा णामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, तेणं रूवेत्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस रूवत्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस रूवेत्ति, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं।

से जहा णामए केइ पुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा, तेणं गंधत्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस गधेत्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।

से जहा णामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा, तेणं रसोत्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस रसेत्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं,

असंखिज्जं वा कालं।

से जहा णामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा तेणं फासेत्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस फासओत्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस फासे। तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं।

से जहा णामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा, तेणं सुमिणेत्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस सुमिणेत्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस सुमिणे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं। से तं मल्लगदिट्ठंतेणं।

सूत्र-३६. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहिय णाणी आएसेणं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ, ण पासइ। खेत्तओ णं आभिणिबोहिय णाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ, ण पासइ। कालओ णं आभिणिबोहिय णाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ, ण पासइ। भावओ णं आभिणिबोहिय णाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ, ण पासइ।

उग्गह ईहाऽवाओ य, धारणा एव हुंति चत्तारि ।
आभिणिबोहिय णाणस्स, भेयवत्थू समासेणं ।।८२।।

अत्थाणं उग्गहणम्मि, उग्गहो तह वियालणे ईहा ।
ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं बिंति ॥८३॥
उग्गहं इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु ।
काल मसंखं संखं च, धारणा होइ णायव्वा ॥८४॥
पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु ।
गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥८५॥
भासा समसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ ।
वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ णियमा पराघाए ॥८६॥
ईहा-अपोह-वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा ।
सण्णा सई मई पण्णा, सव्वं आभिणिबोहियं ॥८७॥
से तं आभिणिबोहिय णाण परोक्खं। (से तं मइणाणं)।

सूत्र-३७. से किं तं सुयणाण परोक्खं? सुय णाण परोक्खं चोद्दस विहं पण्णत्तं, तंजहा-अक्खरसुयं[१], अणक्खरसुयं[२], सण्णिसुयं[३], असण्णिसुयं[४], सम्मसुयं[५], मिच्छासुयं[६], साइयं[७], अणाइयं[८], सपज्जवसियं[९], अपज्जवसियं[१०], गमियं[११],अगमियं[१२], अंगपविट्ठं[१३], अणंगपविट्ठं[१४]।

सूत्र-३८. से किं तं अक्खरसुयं? अक्खर सुयं तिविहं पण्णत्तं, तंजहा-सण्णक्खरं, वंजणक्खरं, लद्धिअक्खरं। से किं तं सण्णक्खरं? सण्णक्खरं-अक्खरस्स संठाणागिई, से तं सण्णक्खरं। से किं तं वंजणक्खरं? वंजणक्खरं-अक्खरस्स वंजणाभिलावो, से तं वंजणक्खरं। से किं तं लद्धिअक्खरं? लद्धिअक्खरं-अक्खर-लद्धियस्स लद्धि-अक्खरं समुप्पज्जइ, तं

सोइंदिय लद्धिअक्खरं, चक्खिंदिय लद्धिअक्खरं, घाणिंदिय लद्धिअक्खरं, रसणिंदिय लद्धिअक्खरं, फासिंदिय लद्धिअक्खरं, णोइंदिय लद्धिअक्खरं, से तं लद्धिअक्खरं। से तं अक्खरसुयं ।

से किं तं अणक्खरसुयं? अणक्खर सुयं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा-

ऊससियं णीससियं, णिच्छूढं खासियं च छीयं च।
णिस्सिंघिय-मणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं।।८८।।

से तं अणक्खरसुयं।

सूत्र-३६. से किं तं सण्णिसुयं? सण्णिसुयं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा-कालिओवएसेणं, हेऊवएसेणं, दिट्ठिवाओवएसेणं। से किं तं कालिओवएसेणं? कालिओवएसेणं-जस्स णं अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं सण्णीत्ति लब्भइ। जस्स णं णत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं असण्णीति लब्भइ। से त्तं कालिओवएसेणं। से किं तं हेऊवएसेणं? हेऊवएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंधारण पुव्विया करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ। जस्स णं णत्थि अभिसंधारण पुव्विया करणसत्ती से णं असण्णीति लब्भइ। से तं हेऊवएसेणं। से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णि सुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भइ, असण्णि सुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भइ। से तं दिट्ठिवाओवएसेणं। से तं सण्णिसुयं। से तं असण्णिसुयं।

सूत्र-४०. से किं तं सम्मसुयं ?सम्मसुयं जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं- उप्पण्ण णाण- दंसण-धरेहिं तेलुक्क-णिरिक्खिय महिय पूइएहिं तीय पडुप्पण्ण मणागय जाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं, तं जहा-आयारो[1], सुयगडो[2], ठाणं[3], समवाओ[4], विवाह पण्णत्ती[5], णायाधम्म कहाओ[6], उवासग दसाओ[7], अंतगड दसाओ[8] अणुत्तरोव वाइय दसाओ[9], पण्हा वागरणाइं[10], विवागसुयं[11], दिट्ठिवाओ[12], इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं चोद्दस पुव्विस्स सम्मसुयं, अभिण्ण दस पुव्विस्स सम्मसुयं, तेणं परं भिण्णेसु भयणा। से तं सम्मसुयं।

सूत्र-४१. से किं तं मिच्छासुयं? मिच्छासुयं जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छा दिट्ठिएहिं सच्छंद बुद्धि मइ-विग्गप्पियं, तंजहा-भारहं[1], रामायणं[2], भीमासुरुक्कं[3], कोडिल्लयं[4] सगड भद्दियाआ[5], खोड (घोडग) मुहं[6], कप्पासियं[7], णागसुहुमं[8], कणगसत्तरी[9], वइसेसियं[10], बुद्धवयणं[11], तेरासियं[12], काविलियं[13], लोगाययं[14], सट्ठितंतं[15], माढरं[16], पुराणं[17], वागरणं[18], भागवयं[19], पायंजली[20], पुस्सदेवयं[21], लेहं[22], गणियं[23], सउणरुयं[24], णाडयाइं[25], अहवा बावत्तरि कलाओ, चत्तारि य वेया संगोवंगा। एयाइं मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छत्त परिग्गहियाइं मिच्छासुयं। एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्त परिग्गहियाइं सम्मसुयं। अहवा मिच्छदिट्ठिस्स वि एयाइं चेव सम्मसुयं, कम्हा? सम्मत्त हेउत्तणओ, जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं

चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्ख दिट्ठिओ चयंति। से तं मिच्छा सुयं।

सूत्र-४२. से किं तं साइयं सपज्जवसियं? अणाइयं अपज्जवसियं च? इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं वुच्छित्ति णयट्ठयाए साइयं सपज्जवसियं, अवुच्छित्ति णयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसियं। तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।

तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंचेरवयाइं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं। कालओ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, णो उस्सप्पिणिं णोओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं। भावओ णं जे जया जिण पण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, तयाते भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसियं खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, अहवा भव सिद्धियस्स सुयं साइयं सपज्जवसियं च, अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अपज्जवसियं च। सव्वागास पएसग्गं सव्वागास पएसेहिं अणंत गुणियं पज्जवग्गक्खरं णिप्फज्जइ, सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंतभागो, णिच्चुग्घाडियो चिट्ठइ जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा ते णं जीवो अजीवत्तं पाविज्जा, सुट्ठुविमेह-समुदए, होइ पभा

चंद सूराणं। से तं साइयं सपज्जवसियं। से तं अणाइयं अपज्जवसियं।

सूत्र-४३. से किं तं गमियं? गमियं दिट्ठिवाओ। से किं तं अगमियं? अगमियं कालियं सुयं। से तं गमियं। से तं अगमियं। अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं। तं जहा-अंगपविट्ठं, अंगबाहिरं च। से किं तं अंगबाहिरं? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं। तंजहा-आवस्सयं च, आवस्सय-वइरित्तं च। से किं तं आवस्सयं? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं। तं जहा-सामाइयं[1], चउवीसत्थओ[2], वंदणयं[3], पडिक्कमणं[4], काउस्सग्गो[5], पच्चक्खाणं[6], से तं आवस्सयं।

से किं तं आवस्सय वइरित्तं? आवस्सय वइरित्तं दुविहं पण्णत्तं। तंजहा-कालियं च, उक्कालियं च। से किं तं उक्कालियं? उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं। तंजहा-दसवेयालियं[1], कप्पियाकप्पियं[2], चुल्लकप्पसुयं[3], महाकप्पसुयं[4], उववाइयं[5], रायसेणियं[6], जीवाभिगमो[7], पण्णवणा[8], महापण्णवणा[9], पमायप्पमायं[10], णंदी[11], अणुओगदाराइं[12], देविंदत्थओ[13], तंदुलवेयालियं[14], चंदाविज्जयं[15], सूरपण्णत्ती[16], पोरिसिमंडलं[17], मंडलपवेसो[18], विज्जाचरण-विणिच्छओ[19], गणिविज्जा[20], झाणविभत्ती[21], मरणविभत्ती[22], आयविसोही[23], वीयरागसुयं[24], संलेहणासुयं[25], विहारकप्पो[26], चरणविही[27], आउर पच्चक्खाणं[28], महापच्चक्खाणं[29], एवमाइ, से त्तं उक्कालियं।

से किं तं कालियं? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा-उत्तरज्झयणं[१], दसाओ[२], कप्पो[३], ववहारो[४], णिसीहं[५], महाणिसीहं[६], इसिभासियाइं[७], जम्बूदीवपण्णत्ती[८], दीवसागर पण्णत्ती[९], चंदपण्णत्ती[१०], खुड्डिया -विमाणपविभत्ती[११], महल्लिया- विमाणपविभत्ती[१२], अंगचूलिया[१३], वग्गचूलिया[१४], विवाहचूलिया[१५], अरुणोववाए[१६], वरुणोववाए[१७], गरुलोववाए[१८], धरणोववाए[१९], वेसमणोववाए[२०], देलंधरोववाए[२१], देविंदोववाए[२२], उट्ठाणसुयं[२३], समुट्ठाणसुयं[२४], णागपरियावणियाओ[२५], णिरयावलियाओ-, कप्पियाओ[२६], कप्पवडंसियाओ[२७], पुप्फियाओ[२८], पुप्फचूलियाओ[२९], वण्हीदसाओ[३०] आसीविस भावणाणं[१], दिट्ठिविस भावणाणं[२], सुमिण भावणाणं[३] महासुमिण भावणाणं[४], तेयग्गि णिसग्गाणं[५], एवमाइयाइं चउरासीइं पइण्णग सहस्साइं भगवओ अरहओ उसह सामिस्स आइ -तित्थयरस्स। तहा संखिज्जाइं पइण्णग सहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दस पइण्णग सहस्साइं भगवओ वद्धमाण सामिस्स, अहवा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णग सहस्साइं, पत्तेयबुद्धा वि तत्तिया चेव। से तं कालियं। से तं आवस्सय वइरित्तं। से तं अणंगपविट्ठं।

सूत्र-४४. से किं तं अंगपविट्ठं? अंगपविट्ठं दुवालस विहं पण्णत्तं, तं जहा-आयारो[१], सूयगडो[२], ठाणं[३],

समवाओ[४], विवाहपण्णत्ती[५], णायाधम्मकहाओ[६], उवासग दसाओ[७], अंतगड दसाओ[८], अणुत्तरोववाइय दसाओ[९], पण्हावागरणाइं[१०], विवागसुयं[११], दिट्ठिवाओ[१२]।

सूत्र-४५. से किं तं आयारे? आयारे णं समणाणं णिग्गंथाणं आयार-गोयर - विणय- वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण- करण- जाया माया वित्तीओ आघविज्जंति।

से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-णाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे। आयारे णं परित्ता-वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा, पंचासीइ उद्देसणकाला, पंचासीइ समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड- णिबद्ध णिकाइया जिण पण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ पण्णविज्जइ, परूविज्जइ, दंसिज्जइ, णिदंसिज्जइ उवदंसिज्जइ। से तं आयारे (१)।

सूत्र-४६. से किं तं सूयगडे? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवासूइज्जंति,

ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमय-परसमए सूइज्जइ, सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइ सयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणिय वाईणं बत्तीसाए वेणइय वाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडिय सयाणं बूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ। सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा, अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तित्तीसं उद्देसणकाला, तित्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पय सहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड- णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया एवं विण्णाया, एवं चरण करणपरूवणा आघविज्जइ पण्णविज्जइ, परूविज्जइ, दंसिज्जइ, णिदंसिज्जइ उवदंसिज्जइ। से तं सूयगडे ।(२)

सूत्र-४७. से किं तं ठाणे? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमय-परसमए ठाविज्जइ, लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ। ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा, कुण्डाइं, गुहाओ, आगरा, दहा, णईओ,

आघविज्जंति। ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाण विवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ। ठाणे णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ; संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे दसअज्झयणा, एगवीसं उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरि पय सहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरण परूवणा आघविज्जइ[६]। से तं ठाणे। (३)

सूत्र-४८. से किं तं समवाए? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति जीवाजीवा समासिज्जंति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय परसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ अलोए समासिज्जइ लोयालोए समासिज्जइ। समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाण सय विवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ, दुवालस विहस्स य गणि पिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ। समवायस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ

णिज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे, एगे सुयक्खधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले सय सहस्से पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड - णिबद्ध- णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया एवं चरण करण परूवणा आघविज्जइ[६]। से तं समवाए। (४)

सूत्र-४६. से किं तं विवाहे? विवाहे णं जीवा वियाहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति, ससमए विआहिज्जइ, परसमए विआहिज्जइ, ससमय-परसमए विआहिज्जइ, लोए विआहिज्जइ अलोए विआहिज्जइ, लोयालोए विआहिज्जइ। विवाहस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ णिज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए दस उद्देसग सहस्साइं, दस समुद्देसग सहस्साइं, छत्तीस वागरण सहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीइं पय सहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा, सासय- कड णिवद्ध-णिकाइया

जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया। एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ[६]। से तं विवाहे। (५)

सूत्र-५०. से किं तं णायाधम्म कहाओ? णायाधम्म कहासु णं णायाणं णगराइं[१], उज्जाणाइं[२], चेइयाइं[३], वणसंडाइं[४], समोसरणाइं[५], रायाणो[६], अम्मापियरो[७], धम्मायरिया[८], धम्मकहाओ[९], इहलोइय परलोइया इड्ढिविसेसा[१०], भोगपरिच्चाया[११], पव्वज्जाओ[१२], परिआया[१३], सुयपरिग्गहा[१४], तवोवहाणाइं[१५], संलेहणाओ[१६], भत्तपच्चक्खाणाइं[१७], पाओवगमणाइं[१८], देवलोगगमणाइं[१९] सुकुलपच्चायाईओ[२०], पुणबोहिलाभा[२१], अंतकिरियाओ[२२] य आधविज्जंति। दस धम्म कहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच-पंच अक्खाइया-सयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच-पंच उवक्खाइया सयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच-पंच-अक्खाइय-उवक्खाइया सयाइं, एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणग कोडीओ हवंतित्ति समक्खायं। णायाधम्म कहाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ णिज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा, एगूणवीसं अज्झयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा,

अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरण परूवणा आघविज्जइ[६]। से तं णायाधम्म कहाओ। (६)

सूत्र-५१. से किं तं उवासग दसाओ? उवासग दसासु णं समणोवासयाणं णगराइं[१], उज्जाणाइं[२], चेइयाइं[३], वणसंडाइं[४] समोसरणाइं[५], रायाणो[६], अम्मापियरो[७]; धम्मायरिया[८], धम्मकहाओ[९] इहलोइय परलोइया इड्ढिविसेसा[१०], भोगपरिच्चाया[११], पव्वज्जाओ[१२] परियाया[१३], सुयपरिग्गहा[१४], तवोवहाणाइं[१५], सील-व्वय-गुण-वेरमण- पच्चक्खाण- पोसहोववास- पडिवज्जणया[१६], पडिमाओ[१७], उवसग्गा[१८], संलेहणाओ[१९], भत्तपच्चक्खाणाइं[२०], पाओवगमणाइं[२१], देवलोग गमणाइं[२२] सुकुलपच्चायाईओ[२३], पुणबोहिलाभा[२४], अंतकिरियाओ य आघविज्जंति। उवासगदसाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता

भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण परूवणा आघविज्जइ। से तं उवासगदसाओ। (७)

सूत्र-५२. से किं तं अंतगड दसाओ? अंतगड दसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं, वणसंडाइं समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय परलोइया इड्डिविसेसा, भोगपरिपच्चाया, पव्वज्जाओ, परियाया, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं पाओव गमणाइं, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति। अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खधे, अट्ठ-वग्गा, अट्ठ-उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसण काला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड- णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण परूवणा आघविज्जइ। से तं अंतगड दसाओ। (८)

सूत्र-५३. से किं तं अणुत्तरोववाइय दसाओ?

अणुत्तरोववाइय दसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय परलोइया इड्डिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, अणुत्तरोववायइत्ति उववत्ती, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति। अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्टयाए णवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, तिण्णि वग्गा, तिण्णि उद्देसणकाला, तिण्णि समुद्देसणकाला, संखेज्जाई पयसहस्साई पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से तं अणुत्तरोववाइय दसाओ। (६)

सूत्र-५४. से किं तं पण्हा वागरणाइं? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणा-पसिणसयं ; तं जहा-अंगुट्ठ

परिणाइं, बाहु पसिणाइं, अद्दाग पसिणाइं, अण्णे वि विचित्ता विज्जाइसया, णागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति, पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्टयाए दसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण परूवणा आघविज्जइ। से तं पण्हावागरणाइं। (१०)

सूत्र-५५. से किं तं विवागसुयं? विवागसुए णं सुकड दुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ। तत्थ णं दस दुहविवागा, दस सुहविवागा। से किं तं दुहविवागा? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं णगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइय परलोइया इड्ढिविसेसा, णिरय गमणाइं। संसारभव पवंचा दुह परंपराओ, दुकुलपच्चायाईओ, दुल्लह बोहियत्तं, आघविज्जंति। से तं दुहविवागा। से किं तं सुहविवागा?

सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं णगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय परलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परियागा सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओव गमणाइं, देवलोग गमणाइं, सुय परंपराओ, सुकुलपच्चाईओ, पुण बोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति, विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खंधे, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण परूवणा आघविज्जइ। से तं विवागसुयं। (११)

सूत्र-५६. से किं तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाए णं सव्वभाव परूवणा आघविज्जइ, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-परिकम्मे[१], सुत्ताइं[२], पुव्वगए[३], अणुओगे[४], चूलिया[५]। से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-सिद्धसेणिया परिकम्मे[१], मणुस्स सेणिया-परिकम्मे[२],

पुट्ठसेणिया-परिकम्मे[३], ओगाढ-सेणिया-परिकम्मे[४], उवसंपज्जण सेणिया-परिकम्मे[५], विप्पजहण-सेणिया-परिकम्मे[६] चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे। से किं तं सिद्धसेणिया-परिकम्मे? सिद्धसेणिया-परिकम्मे चउद्दस विहे पण्णत्ते, तं जहा-माउयापयाइं[१], एगट्ठियपयाइं[२], अट्ठ पयाइं[३], पाढोआगासपयाइं[४] केउभूयं[५], रासिबद्धं[६], एगगुणं[७], दुगुणं[८], तिगुणं[९], केउभूयं[१०], पडिग्गहो[११], संसारपडिग्गहो[१२], णंदावत्तं[१३], सिद्धावत्तं[१४]। से तं सिद्धसेणिया-परिकम्मे। (१)

से किं तं मणुस्स सेणिया परिकम्मे? मणुस्स-सेणिया-परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा-माउयापयाइं[१], एगट्ठिययापयाइं[२], अट्ठपयाइं[३], पाढोआगासपयाइं[४] केउभूयं[५], रासिबद्धं[६], एगगुणं[७] दुगुणं[८], तिगुणं[९], केउभूयं[१०] पडिग्गहो[११], संसारपडिग्गहो[१२], णंदावत्तं[१३], मणुस्सावत्तं[१४]। से तं मणुस्स-सेणिया-परिकम्मे। (२)

से किं तं पुट्ठसेणिया-परिकम्मे? पुट्ठसेणिया परिकम्मे इक्कारस विहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं[१] केउभूयं[२], रासिबद्धं[३], एगगुणं[४], दुगुणं[५], तिगुणं[६], केउभूयं[७] पडिग्गहो[८], संसारपडिग्गहो[९], णंदावत्तं[१०], पुट्ठावत्तं[११]। से तं पुट्ठसेणिया-परिकम्मे। (३)

से किं तं ओगाढ सेणिया-परिकम्मे? ओगाढ सेणिया-परिकम्मे इक्कारस विहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं[१] केउभूयं[२], रासिबद्धं[३], एगगुणं[४], दुगुणं[५], तिगुणं[६], केउभूयं[७] पडिग्गहो[८], संसारपडिग्गहो[९], ... वत्तं

ओगाढावत्तं[११]। से तं ओगाढसेणिया परिकम्मे।(४)

से किं तं उवसंपज्जण सेणिया-परिकम्मे? उवसंपज्जण-सेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं[१] केउभूयं[२], रासिबद्धं[३], एगगुणं[४], दुगुणं[५], तिगुणं[६], केउभूयं[७] पडिग्गहो[८], संसारपडिग्गहो[९], णंदावत्तं[१०], उवसंपज्जणावत्तं[११]। से तं उवसंपज्जण सेणिया-परिकम्मे।(५)

से किं तं विप्पजहण सेणिया-परिकम्मे? विप्पजहण-सेणिया-परिकम्मे इक्कारस विहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं[१] केउभूयं[२], रासिबद्धं[३], एगगुणं[४], दुगुणं[५], तिगुणं[६], केउभूयं[७] पडिग्गहो[८], संसारपडिग्गहो[९], णंदावत्तं[१०],विप्पजहणावत्तं[११]। से तं विप्पजहणसेणिया -परिकम्मे।(६)

से किं तं चुयाचुय सेणिया-परिकम्मे? चुयाचुय सेणिया परिकम्मे इक्कारस विहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढो आगासपयाइं[१] केउभूयं[२], रासिबद्धं[३], एगगुणं[४], दुगुणं[५], तिगुणं[६], केउभूयं[७] पडिग्गहो[८], संसारपडिग्गहो[९], णंदावत्तं[१०], चुयाचुयवत्तं[११]। से तं चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे। (७)

छचउक्क णइयाइं, सत्त तेरासियाइं। से तं परिकम्मे। (१)

से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं वावीसं पण्णत्ताइं। तं जहा-उज्जुसुयं[१], परिणयापरिणयं[२], बहुभंगियं[३], विजयचरियं[४], अणंतरं[५], परंपरं[६], आसाणं[७], संजूहं[८], संभिण्णं[९], आहव्वायं[१०], सोवत्थियावत्तं[११], णंदावत्तं[१२],

बहुलं[13], पुट्ठापुट्ठं[14], वियावत्तं[15] एवंभूयं[16], दुयावत्तं[17] वत्तमाणपयं[18], समभिरूढं[19], सव्वओभद्दं[20], परस्सासं[21], दुप्पडिग्गहं[22], इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेय णइयाणि ससमय सुत्त परिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेय णइयाणि आजीविय सुत्त परिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिग णइयाणि तेरासिय-सुत्त-परिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्क णइयाणि ससमय सुत्त परिवाडीए, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीई सुत्ताइं भवंतित्ति मक्खायइं। से तं सुत्ताइं। (२)

से किं तं पुव्वगए? पुव्वगए चउद्दस विहे पण्णत्ते, तं जहा-उप्पायपुव्वं[1], अग्गाणीयं[2], वीरियं[3], अत्थिणत्थि प्पवायं[4], णाण प्पवायं[5], सच्चप्पवायं[6], आयप्पवायं[7], कम्मप्पवायं[8], पच्चक्खाणप्पवायं[9] (पच्चक्खाणं) विज्जाणुप्पवायं[10], अवंझं[11] पाणाऊ[12], किरियाविसालं[13], लोकबिंदुसारं[14]। उप्पाय पुव्वस्स णं दस-वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता[1]। अग्गाणीय पुव्वस्स णं चोद्दस वत्थू, दुवालस चूलिया-वत्थू पण्णत्ता[2]। वीरिय पुव्वस्स णं अट्ठ-वत्थू अट्ठ-चूलियावत्थू पण्णत्ता[3]। अत्थिणत्थि प्पवाय पुव्वस्स णं अट्ठारस्स वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता[4]। णाणप्पवाय पुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता[5]। सच्चप्पवाय पुव्वस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता[6] आयप्पवाय पुव्वस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता[7]। कम्मप्पवाय पुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता[8]। पच्चक्खाण पुव्वस्स णं वीसं

वत्थू पण्णत्ता[९]। विज्जाणुप्पवाय पुव्वस्स णं पण्णरस वत्थू पण्णत्ता[१०]। अवंझ पुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता[११]। पाणाऊ पुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता[१२]। किरिया विसालं पुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता[१३]। लोकबिंदुसार पुव्वस्स णं पण्णवीसं वत्थू पण्णता[१४]।

दस[१], चोद्दस[२], अट्ठ[३], अट्ठारसेव[४], बारस[५], दुवे[६] य, वत्थूणि ।
सोलस[७], तीसा[८], वीसा[९], पण्णरस[१०], अणुप्पवायम्मि ।।८६।।
बारस एक्कारसमे[११], बारसमे तेरसेव[१२] वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे[१३], चोद्दसमे पण्णवीसाओ[१४] ।।६०।।
चत्तारि[१], दुवालस[२], अट्ठ[३] चेव दस[४] चेव चुल्ल वत्थूणि ।
आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चूलिया णत्थि ।।६१।।

से तं पुव्वगए। (३)

मूलपढमाणुओगे कहिया, से तं मूल पढमाणुओगे।

से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे अणेग विहे पण्णत्ते तंजहा-कुलगर गंडियाओ, तित्थयर गंडियाओ, चक्कवट्टि गंडियाओ, दसार गंडियाओ, बलदेव गंडियाओ, वासुदेव गंडियाओ, गणधर गंडियाओ, भद्दबाहु गंडियाओ, तवोकम्म गंडियाओ, हरिवंस गंडियाओ, उस्सप्पिणी गंडियाओ, ओसप्पिणी गंडियाओ चित्तंतर गंडियाओअमर-णर-तिरिय-णिरय-गइ गमण विविह परियट्टणाणुओगेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति, पण्णविज्जंति। से तं गंडियाणुओगे, से तं अणुओगे। (४)

से किं तं चूलियाओ? चूलियाओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिया, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं। से तं चूलियाओ।(५)

दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ। से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडापाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध णिकाइया जिण पण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण परूवणा आघविज्जइ, से तं दिट्ठिवाए।।१२।।

वत्थू पण्णत्ता[9]। विज्जाणुप्पवाय पुव्वस्स णं पण्णरस वत्थू पण्णत्ता[10]। अवंझ पुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता[11]। पाणाऊ पुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता[12]। किरिया विसालं पुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता[13]। लोकबिंदुसार पुव्वस्स णं पण्णवीसं वत्थू पण्णत्ता[14]।

दस[1], चोद्दस[2], अट्ठ[3], अट्ठारसेव[4], बारस[5], दुवे[6] य, वत्थूणि ।
सोलस[7], तीसा[8], वीसा[9], पण्णरस[10], अणुप्पवायम्मि ।।८६।।
बारस एक्कारसमे[11], बारसमे तेरसेव[12] वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे[13], चोद्दसमे पण्णवीसाओ[14] ।।६०।।
चत्तारि[1], दुवालस[2], अट्ठ[3] चेव दस[4] चेव चुल्ल वत्थूणि ।
आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चूलिया णत्थि ।।६१।।

से तं पुव्वगए। (३)

से किं तं अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-मूल पढमाणुओगे, य गंडियाणुओगे य। से किं तं मूल पढमाणुओगे? मूल पढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा, देवलोगमणाइं, आउं, चवणाइं, जम्मणाणि, अभिसेया, रायवर सिरीओ, पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलणाणुप्पयाओ, तित्थ पवत्तणाणि य, सीसा, गणा, गणहरा, अज्जापवणीओ संघस्स चउविहस्स जं च परिमाणं, जिण मणपज्जव ओहिणाणी, सम्मत्तसुय णाणिणो य वाई, अणुत्तरगई य, उत्तर वेउव्विणो य मुणिणो, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिरं च कालं, पाओवगया जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता अंतगडे, मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघ विप्पमुक्के मुक्ख सुह-मणुत्तरं च पत्ते, एवमण्णे य एवमाइ भावा

मूलपढमाणुओगे कहिया, से तं मूल पढमाणुओगे।

से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे अणेग विहे पण्णत्ते तंजहा-कुलगर गंडियाओ, तित्थयर गंडियाओ, चक्कवट्टि गंडियाओ, दसार गंडियाओ, बलदेव गंडियाओ, वासुदेव गंडियाओ, गणधर गंडियाओ, भद्दबाहु गंडियाओ, तवोकम्म गंडियाओ, हरिवंस गंडियाओ, उस्सप्पिणी गंडियाओ, ओसप्पिणी गंडियाओ चित्तंतर गंडियाओअमर-णर-तिरिय-णिरय-गइ गमण विविह परियट्टणाणुओगेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति, पण्णविज्जंति। से तं गंडियाणुओगे, से तं अणुओगे। (४)

से किं तं चूलियाओ? चूलियाओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिया, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं। से तं चूलियाओ।(५)

दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ। से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडापाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध णिकाइया जिण पण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण परूवणा आघविज्जइ, से तं दिट्ठिवाए।।१२।।

सूत्र-५७. इच्चेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा, अणंता अजीवा, अणंता भवसिद्धिया, अणंता अभवसिद्धिया, अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता-

भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव।
जीवाजीवा भवियमभविया, सिद्धा असिद्धा य।।६२।।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टिंसु। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टिस्संति।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसार कंतारं वीईवइंसु। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पणकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसार कंतारं वीईवइस्संति।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवइ, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च, भवइ य भविस्सइ य, धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे। से जहा णामए पंच अत्थिकाए ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ, च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, णियए, सासए,

अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे, एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे।

से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्व भाव जाणइ पासइ।

सूत्र-५८.

अक्खर सण्णी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च।
गमियं अंगपविट्ठं, सत्त वि एए सपडिवक्खा ।।६३।।
आगम सत्थग्गहणं, जं बुद्धि गुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
बिंति सुय णाण लंभं, तं पुव्व विसारया धीरा ।।६४।।
सुस्सूसइ[1] पडिपुच्छइ[2], सुणेइ[3] गिण्हइ[4] य, ईहए[5] यावि।
तत्तो अपोहए वा, धारेइ करेइ वा सम्मं ।।६५।।
मूअं[1] हुंकारं[2] वा, वाढंक्कारं[3] पडिपुच्छ[4] वीमंसा[5]।
तत्तो पसंग पारायणं[6] च, परिणिट्ठ[7] सत्तमए ।।६६।।
सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ णिज्जुत्ति मीसिओ भणिओ।
तइओ य णिरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ।।६७।।

से तं अंगपविट्ठं। से तं सुयणाणं। से तं परोक्खणाणं। से तं णाणं।

।। णंदीसुत्तं समत्तं।।

सूत्र-५७. इच्चेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा, अणंता अजीवा, अणंता भवसिद्धिया, अणंता अभवसिद्धिया, अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता-

भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव।
जीवाजीवा भवियमभविया, सिद्धा असिद्धा य।।६२।।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टिंसु। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टिस्संति।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसार कंतारं वीईवइंसु। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पणकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसार कंतारं वीईवइस्संति।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवइ, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च, भवइ य भविस्सइ य, धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे। से जहा णामए पंच अत्थिकाए ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, णियए, सासए,

अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे, एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे।

से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्व भाव जाणइ पासइ।

सूत्र-५८.

अक्खर सण्णी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च।
गमियं अंगपविट्ठं, सत्त वि एए सपडिवक्खा।।६३।।
आगम सत्थग्गहणं, जं बुद्धि गुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
बिंति सुय णाण लंभं, तं पुव्व विसारया धीरा।।६४।।
सुस्सूसइ[1] पडिपुच्छइ[2], सुणेइ[3] गिण्हइ[4] य, ईहए[5] यावि।
तत्तो अपोहए वा, धारेइ करेइ वा सम्मं।।६५।।
मूअं[1] हुंकारं[2] वा, वाढंक्कारं[3] पडिपुच्छ[4] वीमंसा[5]।
तत्तो पसंग पारायणं[6] च, परिणिट्ठ[7] सत्तमए।।६६।।
सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ णिज्जुत्ति मीसिओ भणिओ।
तइओ य णिरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे।।६७।।

से तं अंगपविट्ठं। से तं सुयणाणं। से तं परोक्खणाणं। से तं णाणं।

।। णंदीसुत्तं समत्तं।।

श्री अणुत्तरोववाइयदसाओ-सूत्र

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, अज्ज-सुहम्मस्स समोसरणं, परिसा णिग्गया, जाव जंबू पज्जुवासइ, एवं वयासी-जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं[1] अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड-दसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, णवमस्स णं भंते! अंगस्स अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ।।१।।

तएणं से सुहम्मे अणगारे, जंबू अणगारं एवं वयासी एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोव वाइय दसाणं तिण्णि वग्गा पण्णत्ता।

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं तओ वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता?

एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव वाइय दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा-

जालि[1], मयालि[2], उवयालि[3], पुरिससेणे[4] य वारिसेणे[5] य।
दीहदंते[6] य, लट्ठदंते[7] य, वेहल्ले[8], वेहासे[9], अभएति य कुमारे[10] ।।२।।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव-वाइय दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा

पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे रिद्धित्थि-मिय-समिद्धे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा। जाली कुमारो जहा मेहो। जाव अट्ठट्ठओ दाओ, जाव उप्पिं पासाय विहरइ। सामी समोसढे, सेणिओ णिग्गओ, जहा मेहो तहा जाली वि णिग्गओ, तहेव णिक्खंतो, जहा मेहो, तहा जाली वि एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ गुण-रयणं तवा-कम्मं।

एवं चेव जा खंदग-वत्तव्वया, सा चेव चिंतणा, आपुच्छणा, थेरेहिं सद्धिं विउलं तहेव दुरूहइ, णवरं सोलस्स वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमाई सोहम्मीसाण जाव आरणाच्चुए कप्पे णवय गेवेज्जे विमाण-पत्थडे उड्ढं दूरं वीईवइत्ता विजय विमाणे देवत्ताए उववण्णे।।३।।

तएणं ते थेरा भगवंता जालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता, परिणिव्वाण-वत्तियं काउसग्गं करेंति-काउसग्गं करित्ता पत्त चीवराइं गिण्हंति गिण्हित्ता तहेव ओयरंति। जाव इमे से आयार भंडए।।४।।

भंते त्ति ! भगवं गोयमे जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जालि णामं अणगारे पगइ भद्दए। से णं जाली अणगारे कालगए कहिं गए ? कहिं

उववण्णे? एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी तहेव जहा खंदयस्स जाव कालगए उड्ढं चंदिम जाव विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे।।५।।

जालिस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता

से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छिंहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गोंयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्व दुक्खाण मंतं-करिस्सइ। एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं पढम वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।।६।।

एवं सेसाण वि णवण्हं भाणियव्वं। णवरं सत्त धारिणिसुया, वेहल्ल-वेहासा चेल्लणाए, अभओ णंदाए आइल्लाणं पंचण्हं सोलस-वासाइं सामण्ण-परियाओ, तिण्हं बारस-वासाइं, दोण्हं पंच-वासाइं। आइल्लाणं पंचण्हं आणुपुव्वीए उववाओ विजए वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे। दीहदंते सव्वट्ठसिद्धे, उक्कमेणं सेसा। अभओ विजए। सेसं जहा पढमे। अभयस्स णाणत्तं, रायगिहे णयरे, सेणिए राया, णंदादेवी माया, सेसं तहेव। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।।सूत्र १।।

।। पढमं वग्गस्स दस आज्झयणा समत्ता।।

बिओ-वग्गो

जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्सणंभंते ! वग्गस्स अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते।।१।।

एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता। तं जहा-

दीहसेणे[१] महासेणे[२], लट्ठदंते[३] य गूढदंते[४] य।
सुद्धदंते[५] य हल्ले[६], दुमे[७] दुमसेणे[८] महादुमसेणे[९] य आहिए।।१।।
सीहे[१०] य सीहसेणे[११] य, महासीहसेणे[१२] य आहिए।
पुण्णसेणे[१३] य बोधव्वे, तेरसमे होइ अज्झयणे।।२।।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव-वाइय दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता। दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे जहा जाली तहा जम्मं, बालत्तणं, कलाओ, णवरं दीहसेणे कुमारे। सव्वेब वत्तव्वया, जहा-जालिस्स जाव अंतं काहिइ। एवं तेरसण्हं वि, रायगिहे णयरे, सेणिओ पिया, धारिणी माया। तेरसण्हं वि सोलस वासा परियाओ, मासियाए संलेहणाए आणुपुव्वीए

उववाओ, विजए दोण्णि, वेजयंते दोण्णि, जयंते दोण्णि, अपराजिए दोण्णि, सेसा महादुम सेणमाइए पंच सव्वट्ठ सिद्धे। एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोसु वि वग्गेसु त्ति बेमि।।२।।

।। बीओ वग्गो समत्तो ।।

तच्चो-वग्गो

जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं दोच्चस्स णं वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोव वाइय-दसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अजझयणा पण्णत्ता तं जहा -

धण्णे[१] य सुणक्खत्ते[२] य, इसिदासे[३] य आहिए।
पेल्लए[४] रामपुत्ते[५] य, चंदिमा[६] पिट्ठिमाइया[७]।।१।।
पेढालपुत्ते[८] अणगारे, णवमे पोट्ठिले[९] इ य।
वेहल्ले[१०] दसमे वुत्ते, इमे य दस आहिया।।२, सुत्र-१।।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोव वाइय-दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी णामं णयरी होत्था। रिद्धित्थिमिय समिद्धा, सहसंब-वणे-उज्जाणे सव्वओ य पुप्फ फल समिद्धे।

जियसत्तू राया तत्थ णं काकंदीए णयरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया। तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धण्णे णामं दारए होत्था, अहीण जाव सुरूवे, पंचधाई-परिग्गहिए, तंजहा-खीर धाईए। जहा महब्बलो जाव बावत्तरिं कलाओ अहीए जाव अलं भोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था।।२।।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारयं उम्मुक्क बालभावं जाव भोगसमत्थं वा वि जाणित्ता बत्तीसं पासाय वडिंसए कारेइ अब्भुग्गय मूसिए जाव तेसिं मज्झे एगं भवणं अणेग-खंभ-सय-सण्णि-विट्ठं। जाव बत्तीसाए इब्भवर कण्णगाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेइ, गिण्हावित्ता बत्तीसाओ दाओ जाव उप्पिं पासाय वडिंसए फुट्टंतेहिं जाव विहरइ।।३।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा णिग्गया, जहा कोणिओ तहा जियसत्तू णिग्गओ। तए णं तस्स धण्णस्स दारयस्स तं महया जणसद्दं वा जहा जमाली तहा णिग्गओ, णवरं पायविहारेणं जाव जं णवरं अम्मया भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, जहा सुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंधं करेह ।।४।।

तए णं से धण्णे दारए जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ, मुच्छिया, वुत्त-पडिवुत्तिया, जहा महब्बलो जाव जाहे णो संचाएइ, जहा थावच्चा पुत्तो, जियसत्तुं आपुच्छइ, छत्तचामराओ; सयमेव जियसत्तू णिक्खमणं करेइ, जहा

थावच्चा पुत्तस्स कण्हो, जाव पव्वइए, अणगारे जाए, ईरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।।५।।

तएणं से धण्णे अणगारे, जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तए। छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि कप्पइ मे आयंबिलं पडिग्गाहित्तए, णो चेव णं अणायंबिलं, तंवि य संसट्ठेणं णो चेव णं असंसट्ठेणं, तं पि य णं उज्झिय धम्मियं णो चेव णं अणुज्झिय-धम्मियं,। तंपि यं जं अण्णे बहवे समण माहण-अतिहि-किवण-वणिमगा णावकंखंति। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह।

तएणं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ-तुट्ठ जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।६।।

तएणं से धण्णे अणगारे पढम छट्ठ खमण पारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ । जाव जेणेव काकंदी णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काकंदीए णयरीए उच्चणीय मज्झिमाइं कुलाइं
चर समुयाणस्स भिक्खायरियं जाव अडमाणे आयंबिलं णो आणायंबिलं जाव णावकंखइ। तए णं से धण्णे अणगारे ताए अब्भुज्जयाए पयययाए पयत्ताए पग्गहिय

याए एसणाए एसमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं ण लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं ण लभइ।

तए णं से धण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसाई अपरितंतजोगी जयण घडण-जोग-चरित्ते अहापज्जत्तं समुदाणं पडिगाहेइ पडिगाहित्ता काकंदीओ णयरीओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जहा गोयमे जाव पडिदंसेइ। तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए जाव अणज्झोव वण्णे बिलमिव पणग भूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेइ आहारित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।७।।

तए णं से समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं काकंदीए णयरीओ सहसंब-वणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय विहारं विहरइ। तए णं से धण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइय-माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं से धण्णे अणगारे तेणं उरालेणं तवो कम्मेणं जहा खंदओ जाव सुहुय हुयासणे इव भासरासि पडिच्छण्णे तवेणं तव तेयसिरीए अईव अईव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ।।८।।

धण्णस्स णं अणगारस्स पायाणं अयमेयारूवे तवरूव-लावण्णे होत्था, से जहाणामए रुक्ख छल्लीइ वा, कट्ठ पाउयाइ वा, जरग्गउवाहणाइ वा, एवा

धण्णस्स अणगारस्स पाया सुक्का, लुक्खा णिम्मंसा अट्ठिचम्म छिरत्ताए पण्णायंति, णो चेव णं मंस सोणियात्तए। धण्णस्स णं अणगारस्स पायंगुलियाणं अयमेयारूवे से जहा णामए कल संग-लियाइ वा, मुग्ग संग-लियाइ वा मास संगलियाइ वा, तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी मिलायमाणी चिट्ठइ,। एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पायंगुलियाओ सुक्काओ जाव णो मंस सोणियत्ताए।।६।।

धण्णस्स जंघाणं अयमेयारूवे से जहा णामए-काक जंघाइ वा, कंक जंघाइ वा, ढेणियालिया जंघाइ वा, जाव णो सोणियत्ताए। धण्णस्स जाणूणं अयमेयारूवे से जहा-कालि पोरेइ वा, मयूर पोरेइ वा, ढेणियालिया पोरेइ वा, एवं जाव णो सोणियत्ताए। धण्णस्स उरुस्स अयमेयारूवे से जहा णामए-साम करिल्लेइ वा, बोरी करिल्लेइ वा, सल्लइय करिल्लेइ वा, सामलि करिल्लेइ, वा, तरुणिए उण्हे जाव चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स उरु जाव णो सोणियत्ताए।।१०।।

धण्णस्स कडिपत्तस्स इमेया रूवे से जहाणामए-उट्ट पाएइ वा, जरग्ग पाएइ वा, महिस पाएइ वा, जाव णो सोणियत्ताए। धण्णस्स उदर भायणस्स इमेयारूवे से जहाणामए-सुक्क दिएइ वा, भज्जणय-कभल्लेइ वा, कट्ट कोलंबए इ वा, एवामेव उदरं सुक्कं जाव। धण्णस्स पांसुलिय कडयाणं इमेयारूवे से जहा णामए-थासयावलीइ वा, पाणावलीइ वा, मुंडावलीइ वा, सुण्डावलीइ वा

गोलावलीइ वा एवामेव। धण्णस्स पिट्ठकरंडयाणं अयमेयारूवे से जहाणामए-कण्णावल्लीइ वा, गोलावलीइ वा, वट्टयावलीइ वा, एवामेव जाव। धण्णस्स उर कडयस्स अयमेयारूवे से जहाणामए-चित्तकट्टरेइ वा, वियणपत्तेइ वा, तालियंटपत्तेइ वा, एवामेव ।।११।।

धण्णस्स बाहाणं अयमेयारूवे से जहा णामए-समि संगलियाइ वा बाहाया संग लियाइ वा, अगत्थिय-संगलियाइ वा, एवामेव। धण्णस्स हत्थाणं अयमेयारूवे से जहा णामए-सुक्क छगणियाइ वा, वडपत्तेइ वा, पलास पत्तेइ वा एवामेव। धण्णस्स हत्थंगुलियाणं अयमेयारूवे से जहा णामए-कलाय संगलियाइ वा, मुग्ग संगलियाइ वा मास संगलियाइ वा, तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी एवामेव।

धण्णस्स गीवाए अयमेया रूवे से जहा णामए-करग -गीवाइ वा, कुंडिया-गीवाइ वा,कोत्थ-वणाइ वा उच्चट्ठव ण एइ वा एवामेव। धण्णस्स णं हणुयाए अयमेयारूवे से जहा णामए-लाउय-फलेइ वा, हकुव-फलेइ वा, अंब -गट्ठियाइ वा एवामेव। धण्णस्स उट्ठाणं अयमेयारूवे से जहा णामए-सुक्क जलोयाइ वा, सिलेस-गुलियाइ वा, अलत्तग -गुलियाइ वा, अंबाडग पेसीयाइवा एवामेव। धण्णस्स जिब्भाए अयमेयारूवे से जहा-णामए-वड-पत्तेइ वा, पलास पत्तेइ वा (उंबरपत्तेइ वा) साग पत्तेइ वा एवामेव।।१२।।

धण्णस्स णासाए से जहा णामए-अंबग पेसि[illegible]

वा अंबाडग पेसियाइ वा, माउलुंग-पेसियाइ वा, तरुणियाइ वा, एवामेव। धण्णस्स अच्छीणं से जहा णामए-वीणा छिड्डेइ वा, बद्धीसग छिड्डेइ वा, पाभाइय तारिगाइ वा, एवामेव। धण्णस्स कण्णाणें से जहा णामए-मूला छल्लियाइ वा, वालुंक छल्लियाइ वा, कारेल्लय छल्लियाइ वा, एवामेव। धण्णस्स अणगारस्स सीसस्से से जहा णामए-तरुणग लाउएइ वा, तरुण गएलालुयइ वा, सिण्हालएइ वा तरुणाए जाव चिट्ठइ एवामेव । धण्णस्स अणगारस्स सीसं सुक्कं-लुक्खं-णिम्मंसं अट्ठिचम्म च्छिरत्ताए पण्णायइ णो चेव णं मंस सोणियत्ताए एवं सव्वत्थ णवरं, उयरभायण -कण्ण जीहा-उट्ठा एएसिं अट्ठी ण भण्णइ, चम्म-च्छिरत्ताए पण्णायइ त्ति भण्णइ।।१३।।

धण्णे णं अणगारे णं सुक्केणं, भुक्खेणं, पायं जंघोरुणा विगय-तडि-करालेणं कडि कडाहेणं, पिट्ठमवस्सिएणं, उदर भायणेणं, जोइज्जमाणेहिं, पांसुलि कडएहिं, अक्खसुत्त मालाइ वा, गणिज्जमालाइ वा गणेज्जमाणेहिं पिट्ठि करंडग संधीहिं, गंगा तरंग भूएणं, उर-कडग-देस-भाएणं सुक्क-सप्प समाणेहिं, बाहाहिं, सिढिल -कडाली-विव लंबंतेहिय अग्गहत्थेहिं, कापण वाइओ विव वेवमाणीए सीस-घडीए, पव्वाय-वयण-कमले, उब्भड घडामुहे , (उच्छुद) णयणकोसे, जीवं जीवेणं गच्छइ, जीवं जीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ भासं भासिस्सामित्ति गिलाइ । से जहा णामए-इंगाल सगडियाइ वा, जहा खंदओ तहा

जाव हुयासणे इव भास-रासि पलिच्छण्णे, तवेणं तेएणं अईव अईव तवतेय-सिरीए उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा णिग्गया, सेणिओ णिग्गओ, धम्मकहा,। परिसा पडिगया । तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इमेसिं णं भंते ! इंदभूइ-पामोक्खाणं चउदसण्हं समण साहस्सीणं कयरे अणगारे महादुक्कर कारए चेव महाणिज्जरयराए चेव? एवं खलु सेणिया! इमासिं इंदभूइ पामोक्खाणं चोद्दसण्हं समण साहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्कर कारए चेव, महाणिज्जरयराए चेव।

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, इमासिं चउद्दसण्हं समण साहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्कर कारए चेव महाणिज्जरयराए चेव ? एवं खलु सेणिया! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी णामं णयरी होत्था, जाव उप्पिं पासाय वडिंसए विहरइ। तए णं अहं अण्णया कयाइं पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे, गामाणुगामं दुइज्जमाणे जेणेव काकंदी णयरी जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहा-पडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरामि। परिसा णिग्गया, तहेव जाव पव्वइए जाव बिलमिव जाव आहारेइ।

धण्णस्स अणगारस्स पायाणं सरीर वण्णओ सव्वो जाव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं सेणिया! एवं वुच्चइ-इमासिं चउदसण्हं समणसाहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्कर कारए महाणिज्जरयाए चेव।।१५।।

तएणं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव धण्णे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, धण्णं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ-करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-''धण्णेऽसि णं तुम देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे, सुकयत्थे, कयलक्खणे, सुलद्धेणं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म जीविय फले''-त्ति कट्टु वंदइ, णमंसइ ,वंदित्ता, णमंसित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव ,उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।।१७ सू-४।।

तएणं तस्स धण्णस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता-वररत्त काल-समयंसि धम्म जागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था, एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जहा खंदओ तहेव चिंता आपुच्छणं, थेरेहिं सद्धिं विउलं दुरुहइ। मासियाए संलेहणाए णवमास परि[illegible]ओ

जाव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम जाव णवय गेविज्ज विजय विमाणपत्थडे उड्ढ दूरं वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे।

थेरा तहेव ओयरंति जाव इमे से आयारभंडए।

भंते त्ति! भगवं गोयमे तहेव आपुच्छइ जहा खंदयस्स भगवं वागरेइ जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववण्णे।

धण्णस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।।५२।।

से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ।

तं एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।।सू.५।।

।। पढमं अज्झयणं सम्मत्तं।।

बीयं अज्झयणं

जइ णं भंते! उक्खेवओ एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदीए णयरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ अड्ढा तीसेणं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुणक्खत्ते णामं दारए होत्था, अहीण जाव सुरूवे, पंचधाइ-परिक्खित्ते जहा धण्णो तहा बत्तीसओ दाओ

जाव उप्पिं पासाय वडिंसए विहरइ

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसड्ढे जहा धण्णे तहा सुणक्खत्तो वि णिग्गए जहा थावच्चा पुत्तस्स तहा णिक्खमणं जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

तएणं से सुणक्खत्ते अणगारे जं चेव दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं अभिग्गहं । तहेव जाव बिलमिव-पणग भूएणं आहारं आहारेइ, संजमेणं जाव विहरइ। बहिया जणवय विहारं विहरइ,। एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तएणं से सुणक्खत्ते अणगारे तेणं उरालेणं जहा खंदओ।।१।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, राया णिग्गओ, धम्मकहा, राया पडिगओ, परिसा पडिगया।

तएणं तस्स सुणक्खत्तस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता वररत्तकाल समयंसि धम्मजागरियं जहा खंदयस्स। बहूवासा परियाओ।

गोयम पुच्छा, तहेव कहेइ जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता से णं भंते जाव महाविदेहेवासे सिज्झिहिइ।

।। इति बीयं अज्झयणं सम्मत्तं ।।२।।

।। ३-१० अज्झयणं ।।

एवं खलु जम्बू ! सुणक्खत्त गमेणं सेसा वि अट्ठ भाणियव्वा, णवरं आणुपुव्वीए-दोण्णि रायगिहे, दोण्णि साएए, दोण्णि वाणिय, गामे, णवमो हत्थिणापुरे, दसमो रायगिहे।

णवण्हं भद्दाओ जणणीओ, णवण्हं वि बत्तीसा ओ दाओ। णवण्हं वि णिक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं, वेहल्लस्स पिया करेइ,णव मास धण्णे सेसाणं बहुवासा ,मासं संलेहणा सव्वट्ठसिद्धे सव्वे महाविदेहवासे सिज्झिस्संति। एवं दस अज्झयणाणि।

एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयसंबुद्धेणं लोग णाहेणं लोगप्पईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरण दएणं, जीव दएणं, बोहि दएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टिणा अप्पडिहय क्के वर-णाण-दंसण धरेणं जिणेणं जाणएणं बुद्धेणं बोहएणं मु णं मोयगेणं तिण्णेणं तारएणं सिव-मयल-मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावत्तियं सिद्धिगइ णामधेयं ठाणं संपत्तेणं अणुत्तरोव वाइय दसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। अणुत्तरोव वाइय दसाओ समत्ताओ अणुत्तरोव वाइय दसाणं एगो सुयखंधो तिण्णि वग्गा, तिसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, । तत्थ पढमे वग्गे दस उद्देसगा बिइए वग्गे तेरस उद्देसगा,। तइए वग्गे दस उद्देसगा, सेसं जहा धम्मकहा णं णायव्वा।। इति।।

।। अणुत्तरोववाइयदसाओ समत्ताओ।।

मोक्ष-मार्ग (मोक्ख मग्गं)

कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेणं मईमया? ।
जं मग्गं उज्जुं पावित्ता, ओहं तरइ दुत्तरं ॥१॥
तं मग्गं अणुत्तरं सुद्धं सव्व दुक्ख विमोक्खणं ।
जाणासि णं जहा भिक्खू! तं णो बूहि महामुणी ॥२॥
जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुवा माणुसा ।
तेसिं तु कयरं मग्गं, आइखेज्ज? कहाहि णो ॥३॥
जइ वो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुवा माणुसा ।
तेसिमं पडिसाहिज्जा, मग्गसारं सुणेह मे ॥४॥
ओणुपुव्वेण महाघोरं, कासवेण पवेइयं ।
जमायाय इओ पुव्वं, समुद्दं ववहारिणो ॥५॥
अत्तरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ।
तं सोच्चा पडिवक्खामि, जंतवो तं सुणेह मे ॥६॥
पुढवी जीवा पुढो सत्ता, आउ जीवा तहाऽगणी ।
वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥७॥
अहावरा तसा पाणा, एवं छक्काय आहिया ।
एयावए जीवकाए णावरे कोइ विज्जई ॥८॥
सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मइमं पडिलेहिया ।
सव्वे अक्कंत दुक्खा य, अत्तो सव्वे ण हिंसया ॥९॥

एयं खु णाणिणो सारं, जं ण हिंसइ किंचणं ।
अहिंसा समयं चेव, एयावंतं वियाणिया ।।१०।।
उड्ढं अहे य तिरियं, जे केइ तस थावरा ।
सव्वत्थ विरइं कुज्जा, संति णिव्वाण माहियं ।।११।।
पभू दोसे णिराकिच्चा, ण विरुज्झेज्ज केणइ ।
मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो ।।१२।।
संवुडे से महापण्णे, धीरे दत्तेसणं चरे ।
एसणा समिए णिच्चं, वज्जयंते अणेसणं ।।१३।।
भूयाइं च समारंभ, तमुद्दिस्सा य जं कडं ।
तारिसं तु ण गिण्हेज्जा, अण्णपाणं सुसंजए ।।१४।।
पूइकम्मं ण सेविज्जा, एस धम्मे वुसीमओ ।
जं किंचि अभिकंखेज्जा, सव्वसो तं ण कप्पए ।।१५।।
हणंतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइंदिए ।
ठाणाइं संति सड्ढीणं, गामेसु णगरेसु वा ।।१६।।
तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णंति णो वए ।
अहवा णत्थि पुण्णं ति, एवमेयं महब्भयं ।।१७।।
दाणट्ठया य जे पाणा, हम्मंति तस-थावरा ।
तेसिं सारक्खणट्ठाए, तम्हा अत्थि त्ति णो वए ।।१८।।
जेसिं तं उवकप्पंति, अण्णपाणं तहाविहं ।
तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा णत्थि त्ति णो वए ।।१९।।

जे य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं।
जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते ।।२०।।
दुहओ वि ते ण भासंति, अत्थि वा णत्थि वा पुणो।
आयं रयस्स हेच्चा णं, णिव्वाणं पाउणंति ते ।।२१।।
णिव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताणं व चंदिमा।
तम्हा सया जए दंते, णिव्वाणं संधए मुणी ।।२२।।
बुज्झ माणाणं पाणाणं, किच्चंताणं सकम्मुणा।
आघाइ साहु तं दीवं, पइट्ठेसा पवुच्चइ ।।२३।।
आयगुत्ते सया दंते, छिण्णसोए अणासवे।
जे धम्मं सुद्ध-मक्खाइ, पडिपुण्ण-मणेलिसं ।।२४।।
तमेव अविजाणंता अबुद्धा बुद्धमाणिणो।
बुद्धा मोत्ति य मण्णंता, अंते एए समाहिए ।।२५।।
ते य बीओदगं चेव, तमुद्दिस्सा य जं कडं।
भोच्चा झाणं झियायंति, अखेयण्णा-ऽसमाहिया ।।२६।।
जहा ढंका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही।
मच्छेसणं झियायंति, झाणं ते कलुसाहमं ।।२७।।
एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
विसएसणं झियायंति, कंका वा कलुसाहमा ।।२८।।
सुद्धं मग्गं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मई।
उम्मग्ग-गया दुक्खं, घायमेसंति तं तहा ।।२९।।

जहा आसाविणिं णावं, जाइअंधो दुरूहिया।
इच्छइ पारमाग तुं, अंतरा य विसीयइ ।।३०।।
एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
सोयं कसिण-मावण्णा, आगंतारो महब्भयं ।।३१।।
इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेइयं।
तरे सोयं महाघोरं अत्तताए परिव्वए ।।३२।।
विरए गाम-धम्मेहिं, जे केई जगई जगा।
तेसिं अत्तुव-मायाए, थामं कुव्वं परिव्वए ।।३३।।
अइमाणं च मायं च, तं परिण्णाय पंडिए।
सव्वमेयं णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मुणी ।।३४।।
संधए साहुधम्मं च, पावधम्मं णिराकरे।
उवहाण वीरिए भिक्खू, कोहं माणं ण पत्थए ।।३५।।
जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।
संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा ।।३६।।
अह णं वय-मावण्णं, फ़ासा उच्चावया फुसे।
ण तेसु विणिहण्णेज्जा, वाएणे व महागिरी ।।३७।।
संवुडे से महापण्णे, धीरे दत्तेसणं चरे।
णिव्वुडे कालमाकंखी, एवं केवलिणो मयं ।।३८।।

।। इति सूत्रकृतांगे मोक्षमार्गणामं एकादशमध्ययनम् ।।

चउसरणपइण्णा

सावज्ज जोग विरई[1], उक्कित्तण[2], गुणवओ य पडिवत्ती[3]।
खलिअस्स णिंदणा[4], वणतिगिच्छ[5], गुणधारणा[6] चेव ।।१।।
चारित्तस्स विसोही, कीरइ सामाइएण किल इह यं।
सावज्जेयर जोगाण, वज्जणा सेवण त्तणओ ।।२।।
दंसणायार विसोही, चउवीसत्थएण किच्चइ य।
अच्चब्भुअ गुण-कित्तण रूवेणं जिणवरिंदाणं ।।३।।
णाणाईआ उ गुणा, तस्सं पण्ण पडिवत्ति करणाओ।
वंदणएणं विहिणा, कीरइ सोही उ तेसिं तु ।।४।।
खलिअस्स य तेसिं पुणो, विहणा जं णिंदणाइ पडिक्कमणं।
तेण पडिक्कमणेणं, तेसिं वि अ कीरए सोही ।।५।।
चरणाइयाइया णं जहक्कमं वण तिगिच्छ रूवेणं।
पडिक्कमणासुद्धाणं, सोही तह काउसग्गेणं ।।६।।
गुणधारण रूवेणं, पच्चक्खाणेण तवइयारस्स।
विरिआयारस्स पुणो, सव्वेहिं वि कीरए सोही ।।७।।
गय वसह सीह अभिसेअ, दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं।
पउमसर सागर, विमाण-भवण रयणुच्चय सिहिं च ।।८।।
अमरिंद णरिंद मुणिंद, वंदियं वंदिउं महावीरं।
कुसलाणुबंधि-बंधुर मद्ययणं कित्तइस्सामि ।।९।।
चउसरण गमण दुक्कड, गरिहा, सुकडाणु मोयणा चेव।
एस गणो अणवरयं, कायव्वो कुसल हेउत्ति ।।१०।।
अरिहंत सिद्ध साहू, केवलि कहिओ सुहावहो धम्मो।
एए चउरो चउगइ, हरणा, सरणं लहइ धण्णो ।।११।।

अह सो जिणभत्ति-भरु,च्छरंत-रोमंच-कंचुअ-करालो ।
पहरिस पण-उम्मीसं, सीसंमि कयंजली भणइ ।।१२।।
रागद्दोसारीणं हंता, कम्मट्ठगाइ अरिहंता ।
विसय-कसायारीणं, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१३।।
रायसिरि मुवक्कमित्ता, तवचरणं दुच्चरं अणुचरित्ता ।
केवल सिरि-मरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१४।।
थुइ वंदण मरहंता, अमरिंद-णरिंद पूअ मरहंता ।
सासयं सुह-मरहंता, अरिहंता हुंतु मम सरणं ।।१५।।
परमणगयं-मुणंता, जोइंद महिंद झाण-मरहंता ।
धम्मकहं अरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१६।।
सव्व जिआण महिंसमं, अरहंता सच्चवयण-मरहंता ।
बंभव्वय-मरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१७।।
ओसरण-मवसरित्ता, चउत्तीसं अइसए णिसेवित्ता ।
धम्मकहं य कहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१८।।
एगाइ गिराऽणेगे, संदेहे देहिणं समंच्छित्ता ।
तिहुयण-मणुसासंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१६।।
वयणा-मएण भुवणं, णिव्वावंता गुणेसु ठावंता ।
जिअ लोअ-मुद्धरंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।२०।।
अच्चब्भूय गुणवंते, णिअ जससससहर पसाहि अ दि अंते ।
णिअय-मणाई अणंते, पडिवण्णो सरण-मरिहंते ।।२१।।
उज्झिअ जर मरणाणं समत्त दुक्खत्त सत्त-सरणाणं ।
तिहुअण जण सुहयाणं, अरिहंताणं णमो ताणं ।।२२।।
अरिहंत-सरण-मल-सुद्धि, लद्ध-सुविसुद्ध-सिद्ध वहुमाणो ।
पणय-सिर-रइय-कर-कमल,-सेहरो सहरिसं भणइ ।।२३।।

कम्मट्ठ क्खयसिद्धा, साहा विअणाण दंसण समिद्धा।
सव्वट्ठ लद्धिसिद्धा, ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ।।२४।।
तिअ लोअ मत्थयत्था, परम पयत्था अचिंत सामत्था।
मंगलसिद्ध पयत्था, सिद्धा सरणं सुह पसत्था ।।२५।।
मूलुक्खय पडिवक्खा, अमूढ लक्खा सजोगि पच्चक्खा।
साहावि अत्त सुक्खा, सिद्धा सरणं परममुक्खा ।।२६।।
पडिपीलिअ पडिणीया, समग्ग झाणग्गि दड्ढ भवबीआ।
जोईसर सरणीया, सिद्धा सरणं सुमरणीया ।।२७।।
पाविय परमाणंदा, गुण-णीसंदा दीण्ण भवकंदा।
लहुई कय-रविचंदा, सिद्धा सरणं खविअ दंदा ।।२८।।
उवलद्ध परमबंभा, दुल्लह ल भा विमुक्क सारंभा।
भुवणघर धरण खंभा, सिद्धा सरणं णिरारंभा ।।२६।।
सिद्ध सरणेण णयबंभ, हेउ, साहु गुण जणिअ-अणुराओ।
मेइणी मिलंत-सुपसत्थ मत्थओ तत्थिमं भणइ ।।३०।।
जिअ लोअ बंधुणो कुगइ, सिंधुणो पारगा महाभागा।
णाणाइएहिं सिवसुक्ख साहगा साहूणो सरणं ।।३१।।
केवलिणो परमोही, विउलमई सुअहरा जिणमयंमि।
आयरिय उवज्झाया, ते सव्वे साहूणो सरणं ।।३२।।
चउदस-दस-णव पुव्वी, दुवाल सि क्कारसंगिणो जे य।
जिणकप्पा हालंदिअ, परिहार-विसुद्धि-साहू य ।।३३।।
खीरासव महुआसव, संभिण्णसोअकुट्ठ वुद्धि उ।
चारण वेउव्वि पयाणुसारिणो साहूणो सरणं ।।३४।।
उज्झिय वइरेविरोहा, णिच्च-मदोहा पसंत मुह-सोहा।
अभिमय-गुण संदोहा, हय मोहा साहूणो सरणं ।।३५।।

खंडिअ सिणेह दामा, अकामधामा णिकाम सुहकामा।
सुपुरिस-मणाभिरामा, आयारामा मुणी सरणं।।३६।।
मिल्हिअ विसय कसाया, उज्झिय घर घरणि संग सुहसाया।
अकलिअ हरिस विसाया, साहू सरणं गयपमाया।।३७।।
हिंसाइ दोससुण्णा, कय कारुण्णा सयंभुरुप्पण्णा।
अजरामर पहखुण्णा, साहू सरणं सुकय-पुण्णा।।३८।।
कामविंडबण चुक्का, कलिमल मुक्का विमुक्क-चोरिक्का।
पाव रय सु रयरिक्का, साहू गुणरयण चच्चिक्का।।३६।।
साहुत्त सुट्ठिया जं, आयरियाई तओ य ते साहू।
साहु भणिएण गहिया, तम्हा ते साहुणो सरणं।।४०।।
पडिवण्ण साहुसरणो, सरणं काउं पुणो वि जिणधम्मं।
पहरिस रोमंच पवंच कं चुअं चिअ तणू भणइ।।४१।।
पवर-सुकएहिं पत्तं, पत्तेहि वि णवरि केहि वि ण पत्तं।
तं केवलि पण्णत्तं, धम्मं सरणं पवण्णोऽहं।।४२।।
पत्तेण अपत्तेण य, पत्ताणि अ, जेण णर सुर सुहाइं।
मुक्खसुहं पुण पत्तेण, णवरि धम्मो स मे सरणं।।४३।।
णिद्दलिअ कलुस कम्मो, कय सुह जम्मो खलीकय-अहम्मो।
पमुह परिणाम-रम्मो, सरणं मे होउ जिणधम्मो।।४४।।
काल त्तएवि ण मयं, जम्मण-जरमरण वाहि सयं-समयं।
अमयंव बहुमयं, जिणमयं च सरणं पवण्णोऽहं।।४५।।
पसमिअ कामपमोहं, दिट्ठादिट्ठेसु ण कलिअ विरोहं।
सिवसुह फलय-ममोहं, धम्मं सरणं पवण्णोऽहं।।४६।।
णरय-गइ-गमण रोहं, गुणसंदोहं पवाइ णिक्खोहं।।
णिहणिअ वम्मह जोहं, धम्मं सरणं पवण्णोऽहं।।४७।।

भासुर-सुवण्ण-सुंदर,-रयणालंकार-गारव-महग्घं ।
णिहिमिव दोगच्चहरं, धम्मं जिणदेसिअं वंदे ॥४८॥
चउसरण गमण संचिअ, सुचरिअ रोमंच अंचिअ सरीरो ।
कय दुक्कड गरिहा, असुह,कम्मक्खय कंखिरो भणइ ॥४९॥
इहभविअ मण्ण भविअं, मिच्छत्त पवत्तणं जमहि-गरणं ।
जिण पवयण पडिकुट्ठं, दुट्ठं गरिहामि तं पावं ॥५०॥
मिच्छत्त-तमंधेणं, अरिहंताइसु अवण्ण-वयणं जं ।
अण्णाणेणं विरइयं, इण्हिं गरिहामि तं पावं ॥५१॥
सुअ-धम्मसंघ साहुसु, पावं पडिणीअयाइ जं रइअं ।
अण्णेसु अ पावेसु, इण्हिं गरिहामि तं पावं ॥५२॥
अण्णेसु अ जीवेसु, मित्ती-करुणाइ-गोयरेसु कयं ।
परिआवणाइ दुक्खं, इण्हिं गरिहामि तं पावं ॥५३॥
जं मण वय काएहिं कय, कारिअ-अणुमईहिं आयरियं ।
धम्म विरुद्ध-मसुद्धं, सव्वं गरिहामि तं पावं ॥५४॥
अह सो दुक्कड गरिहा, दलिउ-क्कड दुक्कडो फुडं भणइ ।
सुकडाणुराय-समुइण्ण, पुण्ण पुलयंकुर-करालो ॥५५॥
अरिहंत्तं अरिहंतेसु, जं च सिद्धत्तणं च सिद्धेसु ।
आयारं आयरिए, उवज्झायत्तं उवज्झाए ॥५६॥
साहूण साहु चरिअं, देस विरइं च सावय जणाणं ।
अणुमण्णे सव्वेसिं, सम्मत्तं समदिट्ठीणं ॥५७॥
अहवा सव्वं विअ,-वीयराय वयणाणुसारि जं सुकडं ।
कालत्तए वि तिविहं, अणुमोएमो तयं सव्वं ॥५८॥
सुह परिणामो णिच्चं, चउसरण गमाइ आयरं जीवो ।
कुसल पयडीउ वंधइ, वद्धाउ सुहाणु-वंधाउ ॥५९॥

मंदणुभावा बद्धा, तिव्वणु-भावाउ कुणइ ता चेव।
असुहाउ णिरणुबंधाउ, कुणइ तिव्वाओ मंदाओ ।।५९।।
ता एयं कायव्वं, बुहेहि णिच्चंपि संकिलेसम्मि।
होइ तिकालं सम्मं, असंकिलेसम्मि सुकयफलं ।।६०।।
चउरंगो जिणधम्मो, ण कओ चउरंग सरणमवि ण कयं।
चउरंग भवच्छेओ, ण कओ हा ! हारिओ जम्मो ।।६१।।
इअ जीव पमाय महारि,वीरभद्दं तमेय मज्झयणं।
झाएसु तिसंझमवंझ-कारणं णिव्वुइ सुहाणं ।।६२।।

।। चउसरण पइण्णं समत्तं।।

卐

घंटाकर्ण मंत्र

ॐ घंटाकर्णो महावीरः, सर्व व्याधि विनाशकः
विस्फोटक भयं प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबलः।।१।।

यत्र त्वं तिष्ठसे देव ! लिखितोऽक्षर पंक्तिभिः
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वात पित्त कफोद्भवाः।।२।।

तत्र राज भयं नास्ति, यान्ति कर्णे जपात्क्षयम्
शाकिनी भूत वेताला, राक्षसाः प्रभवन्ति न।।३।।

नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दश्यते, अग्नि चौर भयं नास्ति,
ॐ ह्रीँ श्रीँ घंटाकर्णः ! नमोऽस्तु ते ! ॐ नरवीर ! ठः ठः ठः स्वाहा !।।४।।

नोट : घंटाकर्ण मंत्र का प्रतिदिन २१ बार जाप करना चाहिये।

श्री तत्त्वार्थ-सूत्र

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः।।१।।तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। तन्निसर्गा-दधिगमाद्वा।।३।। जीवा-ऽजीवाऽश्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा मोक्षास्तत्त्वम् ।।४।। नाम स्थापना- द्रव्य- भावतस्त- न्नयासः ।।५।। प्रमाण-नयै- रधिगमः।।६।। निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः।।७।। सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर भावाल्प-बहुत्वैश्च।।८।। मतिश्रुता वधि-मनःपर्याय-केवलानि ज्ञानम्।।९।। तत्प्रमाणे।।१०।। आद्ये परोक्षम्।।११।।प्रत्यक्ष-मन्यत्।।१२।। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्य-नर्थान्तरम्।।१३।। तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम्।।१४।। अवग्रहेहा-ऽवाय- धारणाः।।१५।। बहुबहुविध-क्षिप्रा-निश्रिता-ऽसंदिग्ध- ध्रुवाणां सेतराणाम्।।१६।। अर्थस्य। व्यंजनस्याऽवग्रहः।।१८।। न चक्षु-रनिन्द्रियाभ्याम्।।१९।। श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक द्वादश भेदम् ।।२०।। द्विविधोऽवधिः ।।२१।। तत्र भवप्रत्ययो नारक-देवानाम्।।२२।। यथोक्त-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्।।२३।। ऋजु-विपुलमति मनः पर्यायः।।२४।। विशुद्ध्य-प्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।।२५।। विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्यो-ऽवधिमनः पर्याययोः।।२६।।

मतिश्रुतयो-र्निबन्धः सर्वद्रव्येष्व-सर्वपर्यायेषु।।२७।। रूपिष्ववधेः।।२८।। तदनन्तभागे मनः पर्यायस्य।।२६।। सर्वद्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य।।३०।। एकादीनि भाज्यानि युगपदे-कस्मिन्ना चतुर्भ्यः ।।३१।। मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ।।३२।। सदसतोर-विशेषाद्यदृच्छोपलब्धे-रुन्मत्तवत् ।।३३।। नैगम- संग्रह-व्यवहार ऋजु-सूत्र शब्दा (शब्द समभिरूढैवंभूता)नयाः।।३४।। आद्यशब्दौ द्वि त्रिभेदौ।।३५।।

।। इति प्रथमोऽध्यायः।।

द्वितीयोऽध्यायः

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च।।१।। द्विनवाष्टा- दशैक-विंशति- त्रिभेदा यथाक्रमम्।।२।। सम्यक्त्व-चारित्रे ।।३।। ज्ञानदर्शन-दान-लाभ- भोगोपभोग-वीर्याणि च।।४।। ज्ञानाज्ञान-दर्शन-दानादि-लब्धयश चतुस्त्रि-त्रि-पंचभेदाः यथाक्रमं सम्यक्त्व-चारित्र- संयमासंयमाश्च।।५।। गति-कषाय-लिंगमिथ्या - दर्शना ऽज्ञाना संयताऽसिद्धत्व-लेश्याश्चतुश्चतुरूत्र्येकै कै-कैक-षड्भेदाः।।६।। जीवभव्याभव्यत्वादीनि च।।७।। उपयोगो लक्षणम्।।८।। स द्विविधो ऽष्ट-चतुर्भेदः।।६।। संसारिणो मुक्ताश्च।।१०।। समनस्का-मनस्काः।।११।।

संसारिणस्त्रस- स्थावराः ।।१२।। पृथिव्यम्बु-वनस्पतयः स्थावराः ।।१३।। तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः ।।१४।। **पंचेन्द्रियाणि ।।१५।। द्विविधानि ।।१६।।** निर्वृत्त्युपकरणेद्रव्येन्द्रियम् ।।१७।। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।।१८।। उपयोगः स्पर्शादिषु ।।१६।। स्पर्शन -रसन-घ्राण-चक्षुःश्रोत्राणि ।।२०।। स्पर्शरस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तेषामर्थाः ।।२१।। श्रुतमनिन्द्रियस्य ।।२२।। वाय्वन्तानामेकम् ।।२३।। कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकैक-वृद्धानि ।।२४।। संज्ञिनः समनस्काः ।।२५।। विग्रह-गतौ कर्मयोगः ।।२६।। अनुश्रेणि गतिः ।।२७।। अविग्रहा जीवस्य ।।२८।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ।।२६।। एकसमयोऽविग्रहः ।।३०।। एकं द्वौ वाऽनाहारकः ।।३१।। सम्मूर्च्छन-गर्भोपपाता जन्म ।।३२।। न सचित्त-शीत-संवृत्ताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योयः ।।३३।। जराय्वण्ड-पोतजानां गर्भः ।।३४।। नारक-देवाना मुपपातः ।।३५।। शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ।।३६।। औदारिक-वैक्रियाऽऽहारक -तैजस-कार्मणानि शरीराणि ।।३७।। परं परं सूक्ष्मम् ।।३८।। प्रदेशतो ऽसंख्येय गुणं प्राक्तैजसात् ।।३६।। अनन्तगुणे परे ।।४०।। अप्रतिघाते ।।४१।। अनादि- सम्बन्धे च ।।४२।। सर्वस्य ।।४३।। तदादीनि भाज्यानि

युगपदेकस्याचतुर्भ्यः ।।४४।। निरूपभोगमन्त्यम् ।।४५।। गर्भ-सम्मूर्च्छन-जमाद्यम् ।।४६।। वैक्रिय मौपपातिकम् ।।४७।। लब्धि-प्रत्ययं च।।४८।। शुभं विशुद्ध मव्याघाति चाहारकं चतुर्दश-पूवधरस्यैव।।४६।। नारक सम्मूर्छिनो नपुंसकानि।।५०।। न देवाः।।५१।। औपपातिक चरम देहोत्तम- पुरुषा ऽसंख्येय-वर्षायुषो-ऽनपवर्त्यायुषः ।।५२।।

।। इति द्वितीयोऽध्यायः।।

तृतीयोऽध्यायः

रत्न शर्करा-वालुका-पंक-धूम-तमोमहातमःप्रभा भूमयो धनाम्बु-वाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः।।१।। तासु -नारकाः।।२।। नित्याशुभतर-लेश्या- परिणाम-देह-वेदना- विक्रियाः।।३।। परस्परो दीरित दुःखाः।।४।। संक्लिष्टासुरो दीरित-दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः।।५।। तेष्वेक-त्रिसप्त- दश-सप्तदश- द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाः सत्त्वानां परा स्थितिः।।६।। जंबूद्वीप-लवणादयः शुभ-नामानो द्वीप समुद्राः ।।७।। द्विर्द्वि विष्कम्भाः पूर्व पूर्व-परिक्षेपिणो वलयाकृतयः।।८।। तन्मध्ये मेरुनाभि-वृत्तो योजनशत- सहस्त्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः।।६।। तत्र भरत - हैमवत- हरिविदेह-रम्यक-हैरण्यवतैरावत-वर्षाः क्षेत्राणि।।१०।। तद्विभाजिनः

पूर्वापरायता हिमवन्महाहिम वन्निषध नील रुक्मि शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः।।११।। द्विर्धातकी खण्डे।।१२।। पुष्करार्धे च।।१३।। प्राङ् मानुषोत्तरान्- मनुष्याः।।१४।। आर्या म्लेच्छाश्च।।१५।। भरतैरावत-विदेहाः कर्मभूमयो-ऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः।।१६।। नृस्थिति परापरे त्रिपल्योपमान-र्मुहूर्ते।।१७।। तिर्यग्योनीनां च।।१८।।

।। इति तृतीयोऽध्यायः।।

चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्चतु-र्निकायाः।।१।। तृतीयः पीतलेश्यः।।२।। दशाष्ट पंच-द्वादश-विकल्पाः कल्पोपपन्न-पर्यन्ताः।।३।। इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषद्यात्म-रक्षलोक-पालानीक-प्रकीर्णकाभि योग्य-किल्विषिकाश्चैकशः।।४।। त्रायस्त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यंतर-ज्योतिष्काः।।५।। पूर्वयोर्द्वीन्द्राः।।६।। पीतान्त-लेश्याः।।७।। काय-प्रवीचारा आ ऐशानात्।।८।। शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः प्रवीचारा द्वयो र्द्वयोः।।९।। परेऽप्रवीचाराः।।१०।। भवनवासिनो -ऽसुर-नाग-विद्युत्-सुपर्णाऽग्नि-वात स्तनितोदधि-द्वीप दिक्कुमाराः।।११।। व्यंतराः किन्नर-किम्पुरुष महोरग-गान्धर्व-यक्ष-राक्षस भूत पिशाचाः।।१२।। ज्योतिष्काः सूर्याश्चन्द्रमसो ग्रह-नक्षत्र-

प्रकीर्ण-तारकाश्च।।१३।। मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो नृलोके।।१४।। तत्कृतः कालविभागः।।१५।। बहिरवस्थिताः।।१६।। वैमानिकाः।।१७।। कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च।।१८।। उपर्युपरि।।१९।। साधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र ब्रह्मलोक-लांतक-महाशुक्र-सहस्त्रा रेष्वानत- प्राणतयोरारणाच्युतयो र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय वैजयन्त जयन्ता ऽपराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च।।२०।। स्थिति प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि विषयतोऽधिकाः ।।२१।। गतिशरीर-परिग्रहाऽभिमानतो हीनाः ।।२२।। (उच्छ्वासाहार-वेदनोपपातानुभावतश्च साध्याः)।।२३।। पीतप भ शुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु।।२४।। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः।।२५।। ब्रह्मलोकालया लोकान्तिकाः।।२६।। सारस्वतादित्य वह्न्यरुण-गदतोय-तुषिताव्याबाध-मरुतो ऽरिष्टाश्च।।२७।। विजयादिषु द्विचरमाः।।२८।। औपपातिक मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः।।२९।। स्थितिः।।३०।। भवनेषु दक्षिणार्धाधि-पतीनां पल्योपम-मध्यर्धम्।।३१।। शेषाणां पादोने।।३२।। असुरेन्द्रयोः सागरोपम-मधिकं च।।३३।। सौधर्मादिषु यथाक्रमम्।।३४।। सागरोपमे।।३५।। अधिके च।।३६।। सप्त सानत्कुमारे।।३७।। विशेषास्त्रि-सप्त-दशैकादश-

-त्रयोदश-पंचदशभि रधिकानि च।।३८।। आरणाच्युता दूर्ध्व मेकैकेन नवसु-ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धे च।।३९।। अपरा पल्योपममधिकं च।।४०।। सागरोपमे।।४१।। अधिके च।।४२।। परतः परतः पूर्वापूर्वाऽनन्तरा।।४३।। नारकाणां च द्वितीयादिषु।।४४।। दशवर्ष-सहस्त्राणि प्रथमायाम्।।४५।। भवनेषु च।।४६।। व्यन्तराणां च।।४७।। परा पल्योपमम्।।४८।। ज्योतिष्काणामधिकम्।।४९।। ग्रहाणामेकम्।।५०।। नक्षत्रणामर्द्धम्।।५१।। तारकाणां चतुर्भागः।।५२।। जघन्या त्वष्टभागः।।५३।। चतुर्भागः शेषाणाम्।।५४।।

।।इति चतुर्थोऽध्यायः।।

पंचमोऽध्यायः

अजीवकाया धर्माऽधर्माकाश-पुद्गलाः।।१।। द्रव्याणि जीवाश्च।।२।। नित्यावस्थितान्य-रूपाणि।।३।। रूपिणः पुद्गलाः।।४।। आऽऽकाशादेक-द्रव्याणि।।५।। निष्क्रियाणि च।।६।। असंख्येयाः प्रदेशा धर्माऽध र्मयोः।।७।। जीवस्य च।।८।। आकाशस्य ऽनन्ताः।।९।। संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानाम्।।१०।। नाणोः।।११।। लोकाकाशेऽवगाहः।।१२।। धर्माऽधर्मयोः कृत्स्ने।।१३।। एक प्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम्।।१४।। असंख्येय-भागादिषु जीवानाम्।।१५।। प्रदेश

संहार-विसर्गाभ्यां प्रदीपवत्।।१६।। गतिस्थित्युपग्रहो धर्माऽधर्मयो रुपकारः।।१७।। आकाशस्या ऽवगाहः ।।१८।। शरीर वाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गलानाम्।।१६।। सुख दुःख-जीवित मरणोप-ग्रहाश्च।।२०।। परस्परोपग्रहो जीवानाम्।।२१।। वर्त्तना परिणामः क्रिया परत्वापरत्वे च कालस्य।।२२।। स्पर्श रस गन्ध वर्णवन्तः पुद्गलाः।।२३।। शब्द बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य- -संस्थान-भेद तमश्छाया-ऽऽतपोद्द्योत-वन्तश्च।।२४।। अणवः स्कन्धाश्च।।२५।। संघात-भेदेभ्यः उत्पद्यन्ते।।२६।। भेदादणुः।।२७।। भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषाः।।२८।। उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य-युक्तं सत्।।२६।। तद्भावाव्ययं नित्यम्।।३०।। अर्पितानर्पित सिद्धेः।।३१।। स्निग्ध-रूक्षत्वाद्न्धः।।३२।। न जघन्य-गुणानाम्।।३३।। गुणसाम्ये सदृशानाम्।।३४।। द्व्यधिकादि-गुणानां तु।।३५।। बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ।।३६।। गुण-पर्याय-वद् द्रव्यम्।।३७।। कालश्चेत्येके।।३८।। सोऽनन्त-समयः।।३६।। द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः।।४०।। तद्भावः परिणामः।।४१।। अनादिरादिमांश्च।।४२।। रूपिष्वादिमान्।।४३।। योगोपयोगौ जीवेषु।।४४।।

।। इति पंचमोऽध्यायः।।

षष्ठोऽध्यायः

काय-वाङ्-मनःकर्म योगः।।१।। स आस्रवः।।२।। शुभः पुण्यस्य।।३।। अशुभः पापस्य।।४।। सकषायाकषाययोः सांपरायिकेर्या पथयोः।।५।। इन्द्रिय-कषायाव्रत-क्रियाः पंच-चतुः पंच-पंच-विंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः ।।६।। तीव्रमंद-ज्ञाताज्ञात-भाव-वीर्याधि-करण- विशेषेभ्य स्तद्विशेषः।।७।।अधिकरणं-जीवाऽजीवाः ।।८।। आद्यं संरम्भ-समारम्भा रम्भ-योग-कृत- कारिताऽनुमत-कषाय- विशेषैस्त्रि स्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः।।६।। निवर्तना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा द्वि-चतु-र्द्वि-त्रि-भेदाः परम्।।१०।। तत्प्रदोष-निह्नव-मात्सर्यान्त रायासादनोप घाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः।।११।। दुःख शोकतापा-क्रन्दन-वध-परिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्य-सद्वेद्यस्य।।१२।। भूतव्रत्यनुकम्पा दानं सराग-संयमादि-योगः क्षांतिः शौचमिति सद्वेद्यस्य।।१३।। केवलिश्रुत- संघ- धर्म-देवावर्ण-वादो दर्शनमोहस्य।।१४।। कषायोदयात्तीव्रात्म-परिणामश्चारित्रमोहस्य।।१५।। बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः।।१६।। माया तैर्यग्योनस्य।।१७।। अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं स्वभाव-मार्दवार्जवं च मानुषस्य।।१८।। निःशील-व्रतत्वं

च सर्वेषां।।१६।। सराग-संयम संयमा - संयमा ऽकाम-निर्जरा-बाल-तपांसि-देवस्य।।२०।। योग-वक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः।।२१।। विपरीतं शुभस्य।।२२।। दर्शन विशुद्धि-र्विनय-सम्पन्नता शीलव्रतेष्व नतिचारो-ऽभीक्ष्णं ज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्याग-तपसी संघ-साधु-समाधि- वैयावृत्य-करण-मर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन -भक्ति रावश्यका परिहाणि-र्मार्गप्रभावना प्रवचन-वत्सलत्व -मिति तीर्थकृत्त्वस्य।।२३।। परात्म निन्दा-प्रशंसे सदसद् गुणाच्छादनोद् भावने च नीचैर्गोत्रस्य।।२४।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यनुत्सेकौ-चोत्तरस्य।।२५।। विघ्नकरण -मन्तरायस्य।।२६।।

।। इति षष्ठोऽध्यायः।।

सप्तमोऽध्यायः

हिंसाऽनृत-स्तेया - ब्रह्म परिग्रहेभ्यो विरति-र्व्रतम्।।१।। देशसर्वतो ऽणुमहती।।२।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पंच पंच।।३।। हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्य-दर्शनम्।।४।। दुःखमेव वा।।५।। मैत्री प्रमोद कारुण्य- माध्यस्थ्यानि सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्यमाना-ऽविनेयेषु।।६।। जगत्काय-स्वभावौ च संवेग-वैराग्यार्थम्।।७।। प्रमत्त-योगात्-प्राणव्यपरोपणं हिंसा।।८।। असदभिधान

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

-मनृतम्।।९।। अदत्तादानं स्तेयम्।।१०।। मैथुन-मब्रह्म ।।११।। मूर्च्छा-परिग्रहः।।१२।। निःशल्योव्रती।।१३।। अगार्यनगारश्च।।१४।। अणुव्रतोऽगारी।।१५।। दिग्देशाऽनर्थदण्ड-विरति-सामायिक पौषधोपवासोप -भोग परिभोग-परिमाणा -ऽतिथि-संविभाग-व्रत-सम्पन्नश्च।।१६।। मारणान्तिकीं संलेखनां जोषिता।।१७।। शंका- कांक्षा-विचिकित्सा-ऽन्यदृष्टि-प्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टे -रतिचाराः।।१८।। व्रतशीलेषु-पंच पंच यथाक्रमम्।।१९।। बन्ध वध-च्छ विच्छेदाऽतिभारारोपणा ऽन्नपान-निरोधाः ।।२०।। मिथ्योपदेश-रहस्याभ्याख्यान-कूटलेख-क्रियान्यासापहार- साकार-मंत्रभेदाः।।२१।। स्तेन-प्रयोग-तदाहृतादान विरुद्ध-राज्यातिक्रम हीनाधिक-मानोन्मान प्रतिरूपक व्यवहाराः ।।२२।। परविवाह-करणेत्व-रपरिगृहीता-ऽपरिगृहीता-गमना ऽनङ्गक्रीड़ा -तीव्रकामाभिनिवेशाः।।२३।। क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य सुवर्ण-धनधान्य- दासी-दास-कुप्य-प्रमाणातिक्रमाः।।२४।। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्-व्यतिक्रम -क्षेत्रवृद्धि स्मृत्यन्तर्धानानि।।२५।। आनयन प्रेष्य-प्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गल-प्रक्षेपाः।।२६।। कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौख-र्याऽसमीक्ष्याधि-करणोपभोगाधिकत्वानि ।।२७।। योग-दुष्प्रणिधानानादर-स्मृत्यनुप-स्थापनानि।।२८।।

अप्रत्यवेक्षिता प्रमा-र्जितोत्सर्गादान निक्षेप संस्तारोप क्रमणाना- दर-स्मृत्यनुप स्थापनानि।।२६।।सचित्त-सम्बद्ध सम्मिश्राऽभिषव-दुष्पक्वाहाराः ।।३०।।सचित्त-निक्षेप पिधान- परव्यपदेश-मात्सर्य- कालातिक्रमाः।।३१।। जीवित-मरणाशंसा-मित्रानुराग- सुखानुबन्ध निदान-करणानि।।३२।। अनुग्रहार्थं स्वस्याति-सर्गो दानम्।।३३।। विधि द्रव्य-दातृ-पात्र -विशेषात्तद्विशेषः।।३४।।

।। इति सप्तमोध्यायः।।

अष्टमोऽध्यायः

मिथ्यादर्शनाऽविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध हेतवः।।१।। सकषायत्वा ज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते।।२।। स बन्धः।।३।। प्रकृति-स्थित्यनुभाव-प्रदेशास्तद्विधयः।।४।। आद्यो ज्ञान-दर्शनावरण वेदनीय-मोहनीयाऽयुष्क-नाम-गोत्रान्तरायाः।।५।। पंच नव द्व्यष्टाविंशति-चतु- र्द्वि चत्वारिंशद्-द्वि-पंचभेदा-यथाक्रमम्।।६।। मत्यादीनाम् ।।७।। चक्षु रचक्षुरवधि-केवलानां निद्रानिद्रा-निद्रा प्रचला -प्रचलाप्रचला- स्त्यानगृद्धि-वेदनीयानि च।।८।। सदसद्वेद्ये ।।६।।दर्शन-चारित्र-मोहनीय-कषाय नोकषाय वेदनीयाख्या- स्त्रि-द्वि-षोड्श-नवभेदाः सम्य-कत्व-मिथ्यात्व- -तदुभयानि कषाय नोकषायावनन्तानु-बन्ध्य प्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरण संज्वलन विकल्पाश्चैकशः क्रोध

मान माया लोभा हास्य रत्यरति -शोक भय जुगुप्सा स्त्री पुंनपुंसक वेदाः ।।१०।। नारकतैर्यग्योन-मानुष दैवानि ।।११।। गति जाति शरीरांगोपांग निर्माण -बन्धनसंघात संस्थान संहनन -स्पर्श रस गंध वर्णानुपूर्व्य गुरुलघू पघात पराघातातपोद्यो- तोच्छ्वास विहायो गतयः प्रत्येक शरीर त्रस-सुभग सुस्वर-शुभ सूक्ष्म पर्याप्त स्थिरादेय यशांसि सेतराणि तीर्थकृत्वं च।।१२।। उच्चै र्नीचैश्च।।१३।। दानादीनाम्।।१४।। आदितस्तिसृणा-मन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम कोटीकोटयः परा स्थितिः।।१५।। सप्तति र्मोहनीयस्य।।१६।। नामगोत्रयो र्विंशतिः।।१७।। त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाण्यायुष्कस्य।।१८। अपरा द्वादश मुहूर्त्ता वेदनीयस्य।।१६।। नामगोत्रयो रष्टौ ।।२०।। शेषाणामन्त र्मुहूर्त्तम्।।२१।। विपाकोऽनु-भावः।।२२।। स यथानाम्।।२३।। ततश्च निर्जरा।।२४।। नाम प्रत्ययाः सर्वतो योग विशेषात्सूक्ष्मैक क्षेत्रावगाढ स्थिताः सर्वात्म-प्रदेशेष्वनन्तानन्त प्रदेशाः।।२५।।सद्वेद्य सम्यक्त्व हास्य-रति पुरुषवेद शुभायु र्नामगोत्रणि पुण्यम्।।२६।।

।। इति अष्टमोऽध्यायः।।

नवमोऽध्यायः

आस्त्रव निरोधः संवरः।।१।। स गुप्ति समिति धर्मानु
-प्रेक्षा परीषह जय चारित्रैः।।२।। तपसा निर्जरा च।।३।।
सम्यग्योग निग्रहो गुप्तिः।।४।। ईर्या भाषैषणादान
निक्षेपोत्सर्गाः समितयः।।५।। उत्तमः क्षमा मार्दवार्जव
शौच सत्य - संयम तपस्त्यागाऽऽकिंचन्य ब्रह्मचर्याणि
धर्मः।।६।। अनित्याशरण
संसारैकत्वान्यत्वाशुचित्वाऽस्त्रवसंवर निर्जरा- लोकबोधि
दुर्लभ धर्मस्वाख्या तत्त्वानुचिन्तन मनुप्रेक्षाः ।।७।। मार्गा
च्यवन निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः।।८।। क्षुत्पिपासा
शीतोष्ण दंशमशक नाग्न्यारति स्त्री
चर्यानिषद्या-शय्याक्रोशवध- याचनाऽलाभ - रोग तृणस्पर्श
मल सत्कार पुरस्कार-प्रज्ञाऽज्ञानाऽदर्शनानि ।।६।।
सूक्ष्मसम्पराय च्छ द्म स्थ वीतराग-योश्चतुर्दश।।१०।।
एकादश जिने।।११।। बादर सम्पराये सर्वे।।१२।।
ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने।।१३।। दर्शनमोहान्तराययो
रदर्शनालाभौ।।१४।। चारित्रमोहे नाग्न्यारति स्त्री निषद्या-
क्रोश याचना सत्कार पुरस्काराः।।१५।। वेदनीये
शेषाः।।१६।। एकादयो भाज्या युगपदैकोन
विंशतेः।।१७।। सामायिक च्छेदोपस्थाप्यपरिहार

विशुद्धि-सूक्ष्मसम्पराय-यथाख्यातानि चारित्रम्।।१८।। अनशनावमौदर्य वृत्तिपरिसंख्यान - रसपरित्याग विविक्त-शय्यासन कायक्लेशा बाह्यं तपः।।१६।। प्रायश्चित्त विनय वैयावृत्य-स्वाध्याय व्युत्सर्ग ध्यानान्युत्तरम् ।।२०।। नव चतुर्दश-पंच द्विभेदं यथाक्रमं प्राग्ध्यानात्।।२१।। आलोचन प्रतिक्रमण तदुभय विवेक -व्युत्सर्ग तपश्छेद- परिहारोपस्थापनानि।।२२।। ज्ञान दर्शन चारित्रोपचाराः।।२३।। आचार्योपाध्याय तपस्वि शैक्षक ग्लान गण कुल संघ साधु -समनोज्ञानाम्।।२४।। वाचना प्रच्छना ऽनुप्रेक्षाऽऽम्नाय - धर्मोपदेशाः।।२५।। बाह्याभ्यन्तरोपध्योः।।२६।। उत्तम संहननस्यैकाग्र चिन्तानिरोधो ध्यानम् ।।२७।। आ मुहूर्त्तात्।।२८।। आर्त्तरौद्रधर्म शुक्लानि ।।२६।। परे मोक्षहेतू।।३०।। आर्त्तम मनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति समन्वाहारः।।३१।। वेदनायाश्च।।३२।। विपरीतं मनोज्ञानाम्।।३३।। निदानं च।।३४।। तदविरत देशविरत- प्रमत्त संयतानाम्।।३५।। हिंसाऽनृत स्तेय विषय संरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत देशवितयोः ।।३६।। आज्ञाऽपाय विपाकसंस्थान विचयाय धर्म-मप्रमत्तासंयतस्य।।३७।। उपशान्त क्षीण कषाययोश्च।।३८।। शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः।।३६।। परे केवलिनः।।४०।। पृथक्त्वैकत्व वितर्कसूक्ष्म- क्रिया प्रतिपाति व्युपरतक्रियाऽनिवृत्तीनि।।४१।। तत् त्र्येककाययोगाऽयोगानाम्।।४२।। एकाश्रये सवितर्के

पूर्वे।।४३।। अविचारं द्वितीयम्।।४४।। वितर्कः श्रुतम्।।४५।। विचारोऽर्थ- व्यंजनयोगसंक्रान्तिः।।४६।। सम्यग्दृष्टि श्रावकविरतानन्त वियोजक दर्शनमोह क्षपकोपशम- कोपशान्त मोह क्षपकक्षीण-मोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येय गुणनिर्जराः।।४७।। पुलाक बकुश- कुशील निर्ग्रन्थ स्नातका निर्ग्रन्थाः।।४८।। संयमश्रुत प्रति- सेवनातीर्थलिंग लेश्योपपात स्थान विकल्पतः साध्याः।।४९।। *।। इति नवमोऽध्यायः।।*

दशमोऽध्यायः

मोहक्षयाज्ज्ञान दर्शनावरणान्तराय क्षयाच्च केवलम्।।१।। बन्धहेत्वभाव निर्जराभ्याम्।।२।। कृत्स्न कर्मक्षयो मोक्षः।।३।। औपशमिका दि भव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः।।४।। तदनन्तर-मूर्ध्वं गच्छत्या-लोकान्तात्।।५।। पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्-बंधच्छेदात्तथा- गति परिणामाच्च तद्गतिः।।६।। क्षेत्र काल गति लिंगतीर्थ चारित्र प्रत्येक बुद्ध बोधित ज्ञानाव-गाहनान्तर संख्याल्प बहुत्वतःसाध्याः ।।७।।

।। इति दशमोऽध्यायः।।

।। श्री तत्त्वार्थ सूत्र सम्पूर्णम्।।

श्री भक्तामर स्तोत्रं

(आचार्य मानतुंगकृत)

सर्व विघ्न नाशक

भक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रभाणा-
मुद्द्योतकं दलित पाप तमो वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन पादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्।।१।।

सकल रोग नाशक

यः संस्तुतः सकल वाङ्मय तव बोधा-
दुद्-भूत बुद्धि पटुभिः सुरलोक नाथैः।
स्तोत्रैर् जगत् त्रितय चित्त हरै रुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेद्रम्।।२।।

सर्वसिद्धिदायक

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार् चित्त पादपीठ,
स्तोतुं समुद्यत मतिर् विगत त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल संस्थित-मिन्दु बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।।३।।

जलजन्तु मोचक

वक्तुं गुणान् गुण समुद्र शशांक कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुर गुरु प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त काल पवनोद्धत नक्र-चक्रं,
को वा तरीतु मल मम्बु निधिं भुजाभ्याम्।।४।।

लोचक कष्ट मोचक

सोऽहं तथापि तव भक्ति वशान् मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति रपि प्रवृतः
प्रीत्याऽऽत्म वीर्य मविचार्य मृगो मृगेन्द्रम्,
नाभ्येति किं निज शिशोः परिपाल-नार्थम्।।५।।

विद्याप्रसारक

अल्प श्रुतं-श्रुत-वतां परिहास-धाम,
त्वद्-भक्ति-रेव मुखरी -कुरुते बलान्-माम्।
यत् कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका निकरैक हेतु।।६।।

सर्व दुरित संकट क्षुद्रोपद्रव निवारक

त्वत् संस्तवेन भव संतति-सन्नि-बद्धं,
पापं क्षणात् क्षय-मुपैति शरीर भाजाम्।
आक्रान्त्त लोक-मलि नील-मशेष माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम्।।७।।

सर्वारिष्ट निवारक

मत्वेति नाथ! तव संस्त वनं मयेद-
मारभ्यते तनु धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी दलेषु,
मुक्ता फल-द्युति मुपैति ननूद बिन्दुः।।८।।

भय नाशक

आस्तां तव स्तवन मस्त समस्त-दोषं,
त्वत् संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्त्रा किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा करेषु जल जानि विकाश-भांजि।।६।।

कुक्कर विष निवारण

नात्यद् भुतं भुवन भूषण! भूतनाथ!
भूतैर् गुणैर् भुवि भवन्त मभिष्टु वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्या श्रितं य इह नात्म समं करोति।।१०।।

वियुक्त व्यक्ति मेलापक

दृष्ट्वा भवन्त मनि मेष-विलोक नीयं
नान्यत्रा तोष मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर द्युति-दुग्ध सिन्धोः,
क्षारं जलं जल निधे रसितुं कः इच्छेत्।।११।।

मदोन्मत हस्तिमदमारक

यैः शान्त राग रुचिभिः परमाणु भिरत्वं,
निर्मा· पितस् त्रि भुवनैक-ललाम भूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्य णवः पृथिव्यां,
यत्ते समान मपरं न हि रूप मस्ति।।१२।।

लक्ष्मी प्राप्ति स्वशरीर रक्षक

वक्त्रं क्व ते सुर-नरो रग नेत्र हारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रि तयोप-मानम्।
बिम्बं कलंक मंलिनं क्व निशा करस्य,
यद् वासरे भवति पाण्डु पलाश कल्पम्।।१३।।

आधि-व्याधि नाशक

सम्पूर्ण मण्डल-शशांक कला कलाप!
शुभ्रा गुणास् त्रिभुवनं तव लंघ यंति।
ये संश्रितास् त्रि-जगदीश्वर! नाथमेकं
कस्तान् निवारयति संचारतो यथेष्टम्।।१४।।

सम्मान सौभाग्य प्रदायक

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांग नाभिर्-
नीतं मना गपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त काल मरुता चलिता चलेन,
किं मन्द राद्रि शिखरं चलितं कदाचित्?।।१५।।

सर्वविजय दायक

निर्धूम-वर्ति-रप वर्जित-तैलपूरः,
कृत्स्नं जगत् त्रय मिदं प्रकटी करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता चलानां
दीपा ऽपरस् त्वमसि नाथ! जगत् प्रकाशः।।१६।।

卐 卐

सर्वरोग निवारक

नास्तं .कदाचि दुपयासि न राहु गम्यः,
स्पष्टी करोषि सहसा युग पज्ज गन्ति।
नाम्भो धरो दर निरुद्ध महा प्रभावः,
सूर्याति शायि महि मासि मुनीन्द्र! लोके।।१७।।

शत्रुसैन्य स्तम्भक

नित्योदयं दलित मोह महान्ध कारं,
गम्यं न राहु वदनस्य न वारि दानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज मनल्प कान्ति,
विद्यो तयज् जगद पूर्व शशांक बिम्बम्।।१८।।

तंत्रप्रभाव रोधक

किं शर्व रीषु शशि नाऽपि विवस्वता वा?
युष्मन् मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ।
निष्पन्न शालि वन शालिनि जीव लोके
कार्यं कियज्जल धरैर् जल भार-नम्रैः।।१६।।

सन्तति सम्पत्तिसौभाग्य प्रसाधक

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृता वकाशं,
नैवं तथा हरि हरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन् मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं
तु काच शकले किरणा कुलेऽपि।।२०।।

वशीकरण व सौभाग्य साधक

मन्ये वरं हरि हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्त रेऽपि।।२१।।

भूतपिशाच आदि बाधा निरोधक

स्त्रीणां शतानि शतशो जन यन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदु पमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुर दंशु जालम्।।२२।।

प्रेतबाधा निवारक

त्वा मा मनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य वर्ण ममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्य गुप लभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिव पदस्य मुनीन्द्र! पन्था।।२३।।

मस्तिष्क रोग नाशक

त्वा मव्ययं विभु मचिन्त्य मसंख्य माद्यं,
ब्रह्माणं मीश्वर मनन्त मनंग केतुम्।
योगीश्वरं विदित योग मनेक मेकं
ज्ञान स्वरूप ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।२४।।

दृष्टिदोष निवारक

बुद्धस् त्वमेव विबुधार् चित! बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन त्रय-शंकर त्वात्,।
धाताऽसि धीर! शिव मार्ग विधेर् विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषो त्तमोऽसि।।२५।।

अर्द्धशिर पीडा निवारक

तुभ्यं नमस् त्रि भुवनार्ति हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति तला मल भूषणाय।
तुभ्यं नमस् त्रिजगतः परमे श्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय।।२६।।

शत्रुन्मूलक

को विस् मयोऽत्र यदि नाम गुणैर् शेषैस्-
त्वं संश्रितो निरव काश तया मुनीश!
दोषै रुपात्त-विविधाश्रय-जात गर्वैः,
स्वप् नान्तरेऽपि न कदाचिद पीक्षि तोऽसि।।२७।।

सर्वमनोरथ प्रपूरक

उच्चै-रशोक तरु-संश्रित-मुन् मयूख-
माभाति रूप ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टो ल्लसत् किरण मस्त-तमो वितानं,
बिम्बं रवे रिव पयोधर पार्श्व वर्ति।।२८।।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

नेत्र पीड़ा विनाशक

सिंहासने मणि मयूख शिखा विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकाव दातम्।
बिम्बं वियद्-विलस दंशु लता-वितानं,
तुंगो दयाद्रि-शिर-सीव सहस्त्र रश्मेः।।२६।।

शत्रु-स्तंभक

कुन्दाव दात-चल चामर-चारु शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कल धौत कान्तम्।
उद्यच्छ शाङ्क-शुचिनिर्झर-वारि धार-
मुच्चैस् तटं सुरगिरे रिव शात कौम्भम्।।३०।।

राज-सम्मानदायक

छत्र त्रयं तव विभाति शशांक कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ता फल प्रकर जाल विवृद्ध शोभं,
प्रख्या पयत् त्रिजगतः परमेश्वर त्वम्।।३१।।

संग्रहणी संहारक

गम्भीर तार-रव पूरित दिग् विभागस्-
त्रैलोक्य लोक-शुभ संगम भूति दक्षः।
सद्धर्म राज जय घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर् ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।३२।।

सर्व ज्वर संहारक

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-
सन्तान कादि कुसुमोत् कर-वृष्टि रुद्धा।
गन्धोद बिन्दु-शुभ मन्द-मरुत् प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।३३।।

गर्भ संरक्षक

शुम्भत् प्रभा वलय-भूरि विभा विभोस्ते,
लोक त्रय-द्युति मतां द्युति माक्षि पन्ती।
प्रोद्यद्-दिवाकर-निरन्तर भूरि संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा मपि सोम सौम्याम्।।३४।।

ईति भीति निवारक

स्वर्गा पवर्ग गम मार्ग विमार्ग णेष्टः,
सद्धर्म तत्त्व कथनैक-पटुस् त्रिलोक्याः।
दिव्य ध्वनिर् भवन्ति ते विशदार्थ सर्व-
भाषा स्वभाव-परिणाम गुणैः प्रयोज्यः।।३५।।

लक्ष्मीदायक

उन्निद्र हेम नव पंकज पुंज कान्ति,
पर्युल्ल सन् नख मयूख शिखाऽभि रामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्प यन्ति।।३६।।

दुर्जन स्तम्भक

इत्थं यथा तव विभूतिर भू ज्जिनेन्द्र!
धर्मोप देशन विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिन कृतः प्रहतान्ध कारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकाशि नोऽपि।।३७।।

हस्तिमद भंजक वैभववर्द्धक

श्च्यौ तन् मदा विल विलोल कपोल मूल-
मत्त भ्रमद्-भ्रमर नाद-विवृद्ध कोपम्।
ऐरा वताभ मिभ मुद्धत् माप तन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा श्रिता नाम्।।३८।।

सिंह शक्ति संहारक

भिन्नेभ-कुम्भ-गल दुज्जवल-शोणि ताक्त-
मुक्ता फल-प्रकर-भूषित भूमि भागः।
बद्धक्रमः क्रम गतं हरिणाधि पोऽपि
नाक्रामति क्रम युगाचल संश्रितं ते।।३६।।

अग्नि प्रकोप शामक

कल्पान्त काल-पवनो द्धत-वह्निकल्पं
दावानलं ज्वलित मुज्ज्वल मुत्स् फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सु मिव सम्मुख मा पतन्तं
त्वन्नाम कीर्तन जलं शम यत्य शेषम्।।४०।।

भुजंगभयभंजक

रक्ते क्षणं समद कोकिल-कण्ठ नीलं
क्रोधो द्धतं फणिन मुत् फण माप तन्तम्।
आक्रामति क्रम युगेन निरस्त शंकस्-
त्वन्नाम नाग दमनी हृदि यस्य पुंसः।।४१।।

युद्धभय विनायक

वल्ग त्तुरंग-गज गर्जित-भीम नाद-
माजौ बलं बलवता मपि भूपती नाम्।।
उद्यद् दिवाकर मयूख शिखा पविद्धं,
त्वत् कीर्तना त्तम इवाशु भिद्रा मुपैति।।४२।।

सर्वशांतिदायक

कुन्ताग्र-भिन्न गज-शोणित वारि वाह-
वेगाव तार-तरणा तुर योध-भीमे।
युद्धे जयं विजित दुर्जय जेय पक्षास्-
त्वत् पाद-पंकज वना श्रयिणो लभन्ते।।४३।।

सर्वविपत्ति विनाशक

अम्भो निधौ क्षुभित भीषण नक्र चक्र-
पाठीन पीठ भय-दोल्वण वाडवाग्नौ।
रंग त्तरंग शिखर स्थित-यान पात्रास्
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।४४।।

जलोदर रोग नाशक

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुप-गताश् च्युत जीविताशाः।
त्वत् पाद-पंकज-रजोऽमृत-दिग्ध देहा,
मर्त्या भवन्ति मकर ध्वज तुल्य रूपाः।।४५।।

बंधन (कारागार) विमोचक

आपाद-कण्ठ-मुरु शृंखल-वेष्टि तांगा,
गाढं बृहन् निगड कोटि निघृष्ट जंघाः।
त्वन्-नाम मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत बन्ध भया भवन्ति।।४६।।

अस्त्र शस्त्र स्तम्भक

मत्ता-द्विपेन्द्र-मृगराज-दवा-नलाहि-
संग्राम वारिधि-महोदर बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमु-पयाति भयं भियेव
यस्ता वकं स्तव-मिमं मतिमान धीते।।४७।।

सर्वसिद्धिदायक

स्तोत्र स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर् निबद्धां,
भक्त्या मया विविध वर्ण विचित्र पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कंठ गता मजस्रं
तं मानतुंग मवशा समुपैत्ति लक्ष्मीः।।४८।।

श्री कल्याणमन्दिर-स्त्रोतम्

कल्याण-मन्दिर-मुदार-मवद्य-भेदि,
भीता भयप्रद-मनिन्दित-मंघ्रि-पद्मं।
संसार-सागर-निमज्ज-दशेष-जन्तु-
पोतायमान-मभिनम्य जिनेश्वरस्य।।१।।

यस्य स्वयं सुरगुरु-र्गरिमाम्बु-राशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत मति र्न विभु-र्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय-धूमकेतो-
स्तस्याह-मेष किल संस्तवनं करिष्ये।।२।।

सामान्य-तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः?।।३।।

मोह-क्षयादनु-भवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधे-र्ननु-रत्नराशिः?।।४।।

अभ्युद्यतो-ऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य?।
बालोऽपि किं न निज वाहुयुगं वितत्य।

विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बु-राशेः? ।।५।।

ये योगिना-मपि न यान्ति गुणास्तवेश,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः? ।
जाता तदेव-मसमीक्षित-कारितेयं,
जल्पन्ति वा निज गिरा ननु पक्षिणोऽपि ।।६।।

आस्ता-मचिन्त्य महिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रा-तपो-पहत पान्थ जनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्म सरसः सरसो-ऽनिलोऽपि ।।७।।

हृद् वर्तिनी त्वयि विभो ! शिथिली भवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजंग ममया इव मध्यभाग-
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य ।।८।।

मुच्यन्त एव मनुजा सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव शतैस् त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गो स्वामिनि स्फुरित तेजसि दृष्टमात्रे,
चोरै-रिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ।।९।।

त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्-वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।
यद्वा दृतिरत्तरति यज्जल-मेष नून-
मन्त-र्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ।।१०।।

यस्मिन् हर-प्रभृत-योऽपि हत-प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुत-भुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन?।।११।।

स्वामिन् ननल्प गरिमाण-मपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः?
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति लाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः।।१२।।

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास् तदा वत कथं किल कर्मचौराः?
प्लोषत्य-मुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नील द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी।।१३।।

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्म रूप-
मन्वेष यन्ति हृदयाम्बुज कोशदेशे
पूतस्य निर्मल रुचे र्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः।।१४।।

ध्याना-ज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म दशां व्रजन्ति।
तीव्रानला-दुपल भाव मपास्य लोके,
चामीकरत्व-मचिरादिव धातुभेदाः।।१५।।

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभा-व्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूप-मथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः।।१६।।
आत्मा मनीषिभि-रयं त्वदभेद-बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीय-मप्यमृत-मित्यनु-चिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष-विकार-मपाकरोति।।१७।।
त्वामेव वीत-तमसं परवादि-नोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादि-धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभि-रीश ! सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण।।१८।।
धर्मोपदेश-समये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरु-रप्यशोकः।
अभ्युद्-गते दिनपतौ समही-रुहोऽपि,
किं वा विबोध-मुपयाति न जीवलोकः।।१६।।
चित्रं विभो ! कथम-वाङ्-मुख-वृन्तमेव,
विष्वक् पतत्य-विरला सुर-पुष्पवृष्टिः?
त्वद् गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !
गच्छन्ति नून-मध एव हि बन्धनानि।।२०।।

स्थाने गभीर हृदयोदधि संभवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परमसंमद संगभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्य जरामरत्वम्।।२१।।

स्वामिन् ! सुदूर-मवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुंगवाय,
ते नून-मूर्ध्व-गतयः खलु शुद्धभावाः।।२२।।

श्यामं गभीर-गिर-मुज्ज्वल-हेमरत्न-
सिंहा-सनस्थ-मिह भव्य-शिखण्डिन-स्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्त-मुच्चैश्-
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बु-वाहम्।।२३।।

उद्-गच्छता तव शिति-द्युति मंडलेन,
लुप्त-च्छद-च्छविरशोक-तरुर्बभूव।
सान्निध्य-तोऽपि यदि वा तव वीतराग !,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।२४।।

भो भो ! प्रमाद-मवधूय भजध्व-मेन-
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभि नभः सुर दुन्दुभिस्ते।।२५।।

उद्योति-तेषु भवता भुवनेषु नाथ !,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता-कलाप-कलि-तोच्छ्वसि-तातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृत-तनु-र्ध्रुव-मभ्युपेतः।।२६।।
स्वेन प्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन,
कान्ति-प्रताप-यश सा-मिव संचयेन।
माणिक्य-हेम-रजत-प्रविनर्मितेन,
साल-त्रयेण भगवन्नभितो विभासि।।२७।।
दिव्यस्रजो जिन ! नमस्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव।।२८।।
त्वं नाथ ! जन्म-जलधे-र्विपराङ्-मुखोऽपि,
यत्तार-यस्य-सुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाक शून्यः।।२६।।
विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतरस्त्वं,
किं वाक्षर-प्रकृतिरप्य लिपिस्त्वमीश !।
अज्ञान-वत्यपि सदैव कथञ्चिंदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकासहेतुः।।३०।।

प्राग्भार-सभृत-नभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापि-तानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तरस्त्वमीभि-रयमेव परं दुरात्मा।।३१।।

यद्-गर्ज-दूर्जित-घनौघ-मदभ्र-भीमं,
भ्रश्यत्तडि न्मुसल-मांसल-घोर-धारम्।
दैत्यैन मुक्त-मथ दुस्तर-वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तर-वारि-कृत्यम्।।३२।।

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्यमुण्ड-
प्रालम्ब-भृद-भयद-वक्त्र-विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्त-मपीरितो यः,
सोऽस्या-ऽभवत्प्रतिभवं भव-दुःखहेतुः।।३३।।

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मल-देहदेशाः!
पाद-द्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः।।३४।।

अस्मिन्नपार-भववारि-निधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मन्त्रे,
किं वा विपद्विपधरी सविधं समेति?।।३५।।

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !,
मन्ये मया महित-मीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निकेतन-महं मथिताशयानाम्।।३६।।
नूनं न मोह-तिमिरावृत-लोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलो-कितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः
प्रोद्योत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते?।।३७।।
आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन बान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः।।३८।।
त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्य पुण्य वसते ! वशिनां वरेण्य !।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखांकुरो द्दलन-तत्परतां विधेहि।।३६।।
निःसंख्य सार शरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित रिपु प्रथिताव दातम्।
त्वत्पाद पंकजमपि प्रणिधान वंध्यो,
वध्योऽस्मि चेद् भुवन पावन ! हा हतोऽस्मि।।४०।।

देवेन्द्र वन्द्य ! विदिताखिल वस्तुसार !,
संसार तारक ! विभो ! भुवनाधि नाथ !।
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि,
सीदन्त-मद्य भयद व्यसनाम्बु राशेः।।४१।।

यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रि सरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्तत संचितायाः।
तन्मे त्वदेक शरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।४२।।

इत्थं समाहित-धियो विधि-वज्जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत्पुलक कंचुकि तांगभागाः।
त्वद्बिम्ब निर्मल मुखाम्बुज बद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयंति भव्याः।।४३।।

जननयन कुमुदचन्द्र-प्रभास्वरा स्वर्ग संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल-निचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।४४।।

रत्नाकर पंचविंशतिः

श्रेयः श्रियां मंगलकेलि सद्म!,नरेन्द्र देवेन्द्र नतांघ्रि पद्मः!।
सर्वज्ञ! सर्वातिशय प्रधान!, चिरञ्जय ज्ञान कलानिधान!।।१।।
जगत्त्रयाधार! कृपावतार!, दुर्वार संसार विकार वैद्य!।
श्री वीतराग! त्वयि मुग्धभावा; द्विज्ञ प्रभो! विज्ञ पयामि किंचित्।।२।।
किं बाललीला कलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः।
तथा यथार्थं कथयामि नाथ!, निजाशयं सानुशय स्तवाग्रे।।३।।
दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभि तप्तम्।
शुभो न भावोऽप्य भवद् भवेऽस्मिन्, विभो मया भ्रांत महो-मुधैव।।४।।
दग्धोऽग्निना क्रोध मयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्य महोरगेण।
ग्रस्तोऽभिमाना जगरेण माया-जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम्।।५।।
कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश! सुखं न मेऽभूत्।
अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय।।६।।
मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त !, त्वदास्य पीयूष मयूख लाभात्।
द्रुतं महाऽऽनन्द रसं कठोर-मस्मादृशां देव! तदश्मतोऽपि।।७।।
त्वत्तः सुदुष्प्राप्य मिदं मयाऽऽप्तं, रत्नत्रयं भूरि भवभ्रमेण।
प्रमाद निद्रा वशतो गतं तत्, कस्याऽग्रतो नायक! पुत्करोमि।।८।।
वैराग्यरंगो परवंचनाय, धर्मोपदेशो जन रंजनाय।
वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत, कियद् ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश!।।६।।
परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजन वीक्षणेन।
चेतः परापाय विचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं।।१०।।
विडम्बितं यत्स्मर घस्मरार्ति-दशा वशात्स्वं विषयान्धलेन।
प्रकाशितं तद् भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि।।११।।

ध्वस्तोऽन्य मन्त्रैः परमेष्ठि मन्त्रः कुशास्त्र वाक्यै र्निहताग मोक्तिः।
कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसंगा-दवांछि हि नाथ ! मतिभ्रमो मे।।१२।।
विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः।
कटाक्ष वक्षो ज गभीर नाभि, कटी त टीयाः सुदृशां विलासाः।।१३।।
लोलेक्षणा वक्त्र निरीक्षणेन, यो मानसे राग लवो विलग्नः।
न शुद्धसिद्धांत पयोधि मध्ये, धौतोप्य गात्तारक कारणं किं।।१४।।
अंगं न चंगं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः।
स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च कापि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं।।१५।।
आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि-र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः।
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मेः स्वामिन्महामोहविडम्बना मे।।१६।।
नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयं।
अधारिकर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव धिग्माम्।।१७।।
न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्ध धर्मश्च न साधुधर्मः।
लब्ध्वापि मानुष्य मिदं समस्तं, कृतं मयाऽरण्य विलाप तुल्यं।।१८।।
चक्रे मया ऽसतस्वऽपि कामधेनु-कल्पद्रुम चिन्तामणिपु स्पृहार्त्तिः।
न जैनधर्मे स्फुट शर्मदेऽपि, जिनेश-मे पश्य विमूढभावं।।१६।।
सद्भोग लीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च।
दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं मय काऽधमेन।।२०।।
स्थितं नं साधो र्हृदि साधुवत्तात्, परोप कारान्न यशोऽर्जितं च।
कृतं न तीर्थोद्धरणादि कृत्यं, मया मुधा हारित मेव जन्म।।२१।।
वैराग्यरंगो न गुरुदितेपु, न दुर्जनानां वचनेपु शान्तिः।
नाध्यात्म लेशो मम कोऽपि देव, तार्यः कथंकार मयम्भवाब्धिः।।२२।।
पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये।
यदीदृशोऽहं ममतेन नष्टा, भूतोद् भवद् भावि भवत्रयीश!।।२३।।

किं वा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्, पूज्य त्वदग्रे चरितं स्वकीयं।
जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप, निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र।।२४।।

शार्दूल-दीनोद्धार धुरन्धर स्त्वदंपरो ! नास्ते मदन्यः कृपा।
पात्रं नात्र जने जिनेश्वर! तथाऽप्येतां न याचे श्रियं।।
किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं।
श्री रत्नाकर मंगलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये।।२५।।

श्री महावीराष्टकम् स्तोत्रम्

(भागेन्दु कृत)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचित्तः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत् साक्षी मार्ग-प्रकटनपरो भानुरिव यो,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ।।१।।

आताम्रं यच्चक्षुः कमल-युगलं स्पन्दरहितं,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाऽभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वाति विमला,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।२।।

नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट-मणि-भा-जाल-जटिलं,
लसत्पादा-म्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भव-ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।३।।

यदच्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत् स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा ?
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।४।।

कनत्स्वर्णा-भासो-ऽप्यपगत-तनुर् ज्ञान-निवहो,
विचित्रा-त्मा-ऽप्येको नृपतिवर-सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्माऽपि श्रीमान् विगत-भवरागोऽद्-भुतगतिर्,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।५।।

यदीया वाग्गंगा विविध नय-कल्लोल विमला,
बृह-ज्ज्ञानाम्भोर्भिजगति जनतां या स्नपयति।
इदानी-मप्येषा बुधजन-मरालैः परिचिता,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।६।।

अनिर्वारोद्रेकस् त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्था-यामापि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनः,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।७।।

महामोहांतक-प्रशमन-पराऽऽकस्मिक-भिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदितमहिमा मंगल-करः।
शरण्यः साधूनां भव-भय-भृतामुत्तमगुणो,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।८।।

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या भागेन्दुनाकृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्।।

卐

श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ-स्त्रोतम्

किं कर्पूर-मयं सुधा-रसमयं, किं चन्द्र रोचिर्मयं,
किं लावण्य-मयं महा-मणिमयं, कारुण्य केलि मयम्।
विश्वानन्द-मयं महोदय-मयं, शोभा-मयं चिन्मयं,
शुक्ल ध्यानमयं वपुर् जिनपतेर्, भूयाद् भवा-लम्बनम्।।१।।

पातालं कलयन् धरां धवलयन्, नाकाश मा-पूरयन्,
दिक् चक्रं क्रमयन् सुरासुर नर, श्रेणिं च विस्मापयन्।
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः, फेनच्छला लोलयन्,
श्री चिन्तामणि-पार्श्व संभव यशो, हंसश्चिरं राजते।।२।।

पुण्यानां विपणिस् तमो दिनमणिः, कामेभ कुम्भे सृणिः,
मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्र-करिणीः, ज्योतिः प्रकाशारणिः।
दाने देव मणिर् नतोत्तम जन, श्रेणिः कृपा-सारिणी,
विश्वानन्द सुधा-घृणिर् भव-भिदे, श्री पार्श्व चिन्तामणिः।।३।।

श्री चिन्तामणि पार्श्व विश्व जनता, संजीवनस् त्वं मया,
दृष्टस् तात! ततः श्रियः समभवन्, नाशक्रमा-चक्रिणम्।
मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर् बहुविधं, सिद्धं मनोवांछितं,
दुर् दैवं दुरितं च दुर्दिन भयं, कष्टं प्रणष्टं मम।।४।।

यस्य प्रौढतम-प्रताप तपनः, प्रोद्दाम धामा जगज्-
जंघालः कलिकाल केलि दलनो, मोहान्ध विध्वन्सकः।
नित्योद्योत पदं समस्त कमला, केलि गृहं राजते,
स श्री पार्श्वजिनो जने हितकरश्, चिन्तामणिः पातु माम्।।५।।

विश्व-व्यापि तमो हिनस्ति तरणिर्, बालौपि कल्पांकुरो,
दारिद्रयाणि गजावलीं हरि शिशुः, काष्ठानि वह्ने कणः।
पीयूषस्य लवोऽपि रोग निवहं, यद्वत्तथा ते विभो,
मूर्तिः स्फूर्ति मती सती त्रिजगती, कष्टानि हर्त्तुं क्षमा।।६।।

श्री चिन्तामणि मन्त्र मों कृति युतं, ह्रींकार साराश्रितं,
श्रीमर्हन् नमिऊण पास कलितं, त्रैलोक्य वश्या वहम्।
द्वेधा भूत विषापहं विषहरं, श्रेयः प्रभावाश्रयं,
सोल्लासं वसहांकितं जिन फुल्लिंगा, नन्ददं देहिनाम्।।७।।

ह्रींश्रींकार वरं नमोऽक्षर परं, ध्यायन्ति ये योगिनो,
हृत् पद्मे विनिवेश्य पार्श्व-मधिपं, चिन्तामणि संज्ञकम्।
भाले वामभुजे च नाभि करयोर्, भूयोर् भुजे दक्षिणे,
पश्चादष्ट दलेषु ते शिवपदं, द्वि-त्रैर्-भवैर् यान्त्यहो।।८।।

नो रोगा, नैव शोका, न कलह कलना, नारि मारि प्रचारा,
नैवाधिर् नासमाधिर्, न च दर दुरिते, दुष्ट दारिद्रता नो।
नो शाकिन्यो, ग्रहा, नो, न हरि करि-गणा व्याल वैताल जालाः,
जायन्ते पार्श्व चिन्तामणि नति वशतः, प्राणिनां भक्ति भाजाम्।।६।।

गीर्वाण-द्रुम धेनु-कुम्भ मणयस्, तस्यांगणे रिंगिणो,
देवा दानव मानवाः सविनयं, तस्मै हितध्यायिनः।
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिनां, ब्रह्माण्ड संस्था यिनी,
श्री चिन्तामणि पार्श्व नाथ मनिशं, संस्तौति योध्यायति।।१०।।

इति जिनपति-पार्श्वः पार्श्व पार्श्वा-ख्य यक्षः,
प्रदलित दुरि तौघः प्रीणित-प्राणि सार्थः।
त्रिभुवन-जन वांच्छा दान चिन्तामणिकः,
शिव पद-तरु बीजं, वोधि बीजं ददातु।।११।।

卐

उपसर्गहर-स्तोत्रम्

(आचार्य भद्रबाहुस्वामीकृत)

उपसर्ग हर स्तोत्र चौदह पूर्वी आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी की अमर कृति है। जैन धर्म में इसकी बड़ी महत्ता है। उपसर्ग हर स्तोत्र एवं उसका मूल बीज मंत्र *(ॐ ह्रीं श्रीं अर्हम् नमिउण पास विसहर वसह जिण फुल्लिंग ह्रीं श्रीं नमः)* बड़े ही चमत्कार पूर्ण माने जाते हैं। कोई भी संकट आ जाने पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके पहले "श्री भद्रबाहु स्वामी प्रसादात् एष योगः फलतु" ऐसा कहें। फिर बीज मंत्र की एक माला फेरें, बाद में उपसर्ग हर स्तोत्र २७ बार पढें। इस प्रकार निरन्तर २७ दिन तक साधना करने से सब संकट दूर होकर, आनन्द मंगल और सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म घण मुक्कं।
विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं।।१।।
विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं।।२।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्गं।।३।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपाय वब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं।।४।।
इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचन्द।।५।।

लघु-साधु वन्दना

साधु जी ने वंदना नित नित कीजे,प्रातः उगंते सूर रे प्राणी।
नीच गति मां ते नहीं जावे,पावे ऋद्धि भरपूर रे प्राणी।साधु।।१।।
मोटा ते पंच महाव्रत पाले, छह कायारा प्रतिपाल रे प्राणी।
भ्रमर भिक्षा मुनि सूझती लेवे, दोष बियालीस टाल रे प्राणी।साधु।।२।।
ऋद्धि सम्पदा मुनि कारमी जाणी, दीधी संसार ने पूठ रे प्राणी।
एवा पुरुषां री सेवा करता, आठ करम जाय टूट रे प्राणी।साधु।।३।।
एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एक एक ज्ञान भण्डार रे प्राणी।
एक एक मुनिवर वैयावच वैरागी, जेना गुणानो नावे पार रे प्राणी।साधु।।४।।
गुण सत्तावीस करीने दीपे, जीत्या परीसह बावीस रे प्राणी।
बावन तो अनाचार जो टाले, तेने नमावुं मारूँ शीश रे प्राणी।साधु।।५।।
जहाज समान ते संत मुनीश्वर, भव्य जीव बैठे आय रे प्राणी।
पर उपकारी मुनि दाम न मांगे देवे मुक्ति पहुंचाय रे प्राणी।साधु।।६।।
इण चरणे जीव साता पावे, पावे ते लीलविलास रे प्राणी।
जन्म जरा ने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावास रे प्राणी।साधु।।७।।
एक वचन श्री सतगुरु केरो, जो पैठे दिल मांय रे प्राणी।
नरक निगोद माँ ते नहीं जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी।साधु।।८।।
प्रातः उठी ने उत्तम प्राणी,सुणे साधुजी रो व्याख्यान रे प्राणी।
एहवा पुरुषां री सेवा करताँ, पावे अमर विमान रे प्राणी।साधु।।९।।
संवत अठार ने वर्ष अड़तीसे, बूसी गाँव चौमास रे प्राणी।
मुनि आसकरणजी इण पर जंपे, हूं तो उत्तम साधाँ रो दास रे प्राणी। साधु।।१०।।

बड़ी-साधु वन्दना

नमूँ अनन्त चौबीसी, ऋषभादिक महावीर।
आरज क्षेत्रमाँ, घाली धर्म नी सीर ।।१।।
महा अतुल बली नर, शूर वीर ने धीर।
तीरथ प्रवर्तावी, पहुंच्या भवजल तीर ।।२।।
सीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर बीश।
छे अढी द्वीप मां, जयवंता जगदीश ।।३।।
एक सौ ने सित्तर, उत्कृष्ट पदे जगीश।
धन्य मोटा प्रभुजी, तेह ने नमावुं शीश ।।४।।
केवली दोय कोडी, उत्कृष्टा नव कोड़।
मुनि दोय सहस्त्र कोडी, उत्कृष्टा नव सहस्त्र कोड ।।५।।
विचरे विदेह में, मोटा तपसी घोर।
भावे करी वन्दूं, टाले भवनी खोड ।।६।।
चौबीसे जिनना, सघला ही गणधार।
चौदह सौ ने बावन, ते प्रणमूं सुखकार ।।७।।
जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर जिनंद।
गौतमादिक गणधर, वर्तायो आनन्द ।।८।।
श्री ऋषभदेव ना, भरतादिक सौ पूत।
वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्‌भूत ।।६।।
केवल उपजाव्यूं, कर करणी करतूत।
जिनमत दीपावी, सघला मोक्ष पहूँत ।।१०।।
श्री भरतेश्वर ना, हुआ पटोधर आठ।
आदित्य जशादिक, पहुंच्या शिवपुर वाट ।।११।।

श्री जिन अन्तरना, हुआ पाट असंख्य।
मुनि मुक्ति पहुंच्या, टाली कर्म नो बंक।।१२।।
धन्य कपिल मुनिवर, नमि नमूं अणगार।
जेणे तद्क्षण त्याग्यो, सहस्त्र रमणी परिवार।।१३।।
मुनिवर हरिकेशी, चित्त मुनिश्वर सार।
शुद्ध संयम पाली, पाम्या भवनो पार।।१४।।
वली इक्षुकार राजा, घर कमलावती नार।
भग्गू ने जशा, तेहना दोय कुमार।।१५।।
छये छति ऋद्धि छांडी ने लीधो संयम भार।
इण अल्पकाल माँ, पाम्या मोक्ष द्वार।।१६।।
वलि संयति राजा, हिरण आहिड़े जाय।
मुनिवर गर्दभाली, आण्यो मारग ठाय।।१७।।
चारित्र लईने, भेट्या गुरुना पाय।
क्षत्रिराज ऋषीश्वर, चर्चा करी चित्तलाय।।१८।।
वलि दशे चक्रवर्ती, राज्य रमणी ऋद्धि छोड़।
दशे मुक्ति पहुँच्या, कुल ने शोभा चहोड़।।१९।।
इण अवसर्पिणी माँ, आठ राम गया मोक्ष।
बलभद्र मुनीश्वर, गया पंचमे देवलोक।।२०।।
दशार्णभद्र राजा, वीर वाँद्या धरी मान।
पछि इन्द्र हटायो, दियो छह काय अभयदान।।२१।।
करकण्डू प्रमुख, चारे प्रत्येक बुद्ध।
मुनि मुक्ति पहुच्या, जीत्या कर्म महाजुद्ध।।२२।।
धान्य मोटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश।
मुनिवर अनाथी, जीत्या राग ने रीश।।२३।।

वलि समुद्रपाल मुनि, राजमति रहनेम।
केशी ने गौतम पाम्या शिवपुर क्षेम ।।२४।।
धन्य विजयघोष मुनि, जयघोष वलि जाण।
श्री गर्गाचार्य पहुंच्या छे निर्वाण ।।२५।।
श्री उत्तराध्ययन माँ, जिनवर कर्या वखाण।
शुद्ध मन से ध्यावो, मन माँ धीरज आण ।।२६।।
वलि खंदक सन्यासी, राख्यों गौतन स्नेह।
महावीर समीपे, पंच महाव्रत लेह ।।२७।।
तप कठिन करीने, झोंसी आपणी देह।
गया अच्युत देवलोके, चवि लेसे भव-छेह ।।२८।।
वलि ऋषभदत्त मुनि, सेठ सुदर्शन सार।
शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय अणगार ।।२६।।
शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार।
ये चारे मुनिवर, पहुंच्या मोक्ष मँझार ।।३०।।
भगवन्त नी माता, धन्य धन्य सती देवानन्दा।
वलि सती जयन्ती, छोड़ दिया घर फंदा ।।३१।।
सती मुक्ति पहुंच्या, वलि ते वीरनी नंद।
महासती सुदर्शना, घणी सतियों ना वृन्द ।।३२।।
वलि कार्तिक सेठे, पड़िमा वही शूरवीर।
जीम्यो मोरा-ऊपर, तापस बलती खीर ।।३३।।
पछी चारित्र लीधो, मित्र एक सहस्त्र आठ धीर।
मरी हुआ शक्रेन्द्र, च्यवी लेसे भव तीर ।।३४।।
वलि राय उदायन, दियो भाणेज ने राज।
पछी चारित्र लेइने, सार्या आतम काज ।।३५।।

गंगदत्त मुनि आनन्द, तिरण तारण री जहाज।
कौशल मुनि रोहा, दियो घणाने साज ।।३६।।
धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अनगार।
आराधक होइ ने, गया देवलोक मंझार ।।३७।।
चवी मुक्ति जासे, वलि सिंह मुनीश्वर सार।
बीजा पण मुनिवर, भगवती माँ अधिकार ।।३८।।
श्रेणिक ना बेटा, मोटा मुनिवर मेघ।
तजी आठ अन्तेउरी, आण्यो मन संवेग ।।३६।।
वीर पे व्रत लइने, बांधी तपनी तेग।
गया विजय विमाने, चवी लेसे शिव वेग ।।४०।।
धन्य थावच्चा पुत्र, तजी बत्तीसे नार।
तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ।।४१।।
शुकदेव संन्यासी, एक सहस्त्र शिष्य लार।
पंचशय सु शैलक, लीधो संजमभार ।।४२।।
सब सहस्त्र अढाई, घणा जीवों ने तार।
पुंडरिक गिरि ऊपर, कियो पाद्पोपगमन संथार ।।४३।।
आराधक हुई ने, कीधो खेवो पार।
हुआ मोटा मुनिवर, नाम लियां निस्तार ।।४४।।
धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धन्ना हुआ साध।
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जासे आराध ।।४५।।
मल्लिनाथ ना छह मित्र, महाबल प्रमुख मुनिराय।
सर्वे मुक्ति सिधाव्या, मोटी पदवी पाय ।।४६।।
वलि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान।
पोते चारित्र लईने, पाम्या मोक्ष निधान ।।४७।।

धन्य तेतली मुनिवर, दियो छकाय अभयदान।
पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान ॥४८॥
धन्य पाँचे पांडव, तजी द्रोपदी नार।
थेवरांनी पासे, लीधो संयम भार ॥४६॥
श्री नेमि वन्दन नो, एहवो अभिग्रह कीध।
मास-मास खमण तप, शत्रुंजय जई सिद्ध ॥५०॥
धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार।
कीडियों नी करुणा, आणी दया अपार ॥५१॥
कड़वा तुंबा नो, कीधो सगलो आहार।
सर्वार्थ सिद्ध पहुँच्या, चवी लीधो भव पार ॥५२॥
वलि पुंडरीक राजा, कंडरीक डिगियो जाण।
पोते चारित्र लईने, न घाली धर्म माँ हाण ॥५३॥
सर्वार्थ सिद्ध पहुंच्या, चवी लेसे निर्वाण।
श्री ज्ञातासूत्र माँ, जिनवर कर्या वखाण ॥५४॥
गौतमादिक कुंवर, सगा अठारह भ्रात।
सर्व अंधकवृष्णि सुत, धारिणी ज्यांरी मात ॥५५॥
तजी आठ अन्तेउर, काढ़ी दीक्षा नी बात।
चारित्र लईने, कीधो मुक्ति नो साथ ॥५६॥
श्री अनीकसेनादिक, छये सहोदर भाय।
वसुदेव ना नन्दन, देवकी ज्यांरी माय ॥५७॥
भद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावई जाण।
सुलसा घर वधिया, सांभली नेमि नी वाण ॥५८॥
तजी बत्तीस बत्तीस अन्तेउर, निकलिया छिटकाय।
नल कूबर समाणा, भेट्या श्री नेमि ना पाय ॥५६॥

करी छठ छठ पारणा, मन में वैराग्य लाय।
एक मास संथारे, मुक्ति विराज्या जाय॥६०॥
वली दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय।
कुँवर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ़ मांय॥६१॥
वसुदेवना नन्दन, धन्य धन्य गजसुकुमाल।
रूपे अति सुन्दर, कलावन्त वय बाल॥६२॥
श्री नेमि समीपे, छोड्यो मोह जंजाल।
भिक्षु नी पडिमा, गया मसाण महाकाल॥६३॥
देखी सोमिल कोप्यो, मस्तक बांधी पाल।
खेराना खीरा, शिर ठविया असराल॥६४॥
मुनि नजर न खंडी, मेटी मननी झाल।
परीषह सहीने, मुक्ति गया तत्काल॥६५॥
धन्य जाली मयाली, उवयालादिक साध।
शाम्ब ने प्रद्युम्न, अनिरुद्ध साधु अगाध॥६६॥
वलि सत्यनेमि दृढ़नेमि, करणी कीधी निर्बाध।
दशे मुक्ति पहुंच्या, जिनवर वचन आराध॥६७॥
धन्य अर्जुनमाली, कियो कदाग्रह दूर।
वीर पै व्रत लेईने, सत्यवादी हुआ शूर॥६८॥
करी छठ छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर।
छह मासा मांही, कर्म किया चकचूर॥६९॥
कुँवर अइमुत्तो, दीठा गौतम स्वाम।
सुणी वीर नी वाणी, कीधो उत्तम काम॥७०॥
चारित्र लईने, पहुंच्या शिवपुर ठाम।
धुर आदि मकाई, अन्त अलक्ष मुनि नाम॥७१॥

बलि कृष्णराय नी, अग्रमहिषी आठ।
पुत्र-बहू दोये, संच्या पुण्य ना ठाठ ॥७३॥
जादव कुल सतियाँ, टाली दुख उच्चाट।
पहुंची शिवपुर मां, एछे सूत्र नो पाठ ॥७४॥
श्रेणिक नी राणी, काली आदिक दशे जाण।
दशे पुत्र वियोगे, सांभली वीरनी वाण ॥७५॥
चन्दन बाला पै, संयम लेई हुई जाण।
तप कर देह झोंसी, पहुंची दे निर्वाण ॥७६॥
नंदादिक तेरह, श्रेणिक नृप नी नार।
सघली चन्दन बाला पै, लीधो संयम भार ॥७७॥
एक मास संथारे, पहुंची मुक्ति मंझार।
ए नेवुं जणा नो, अन्तगड मां अधिकार ॥७८॥
श्रेणिक ना बेटा, जालियादिक तेवीश।
वीर पै व्रत लेईने, पाल्यो विश्वावीश ॥७९॥
तप कठिन करी ने, पूरी मन जगीश।
देवलोके पहुंच्या, मोक्ष जासे तजी रीश ॥८०॥
काकन्दी नो धन्नो, तजी बत्तीसे नार।
महावीर समीपे, लीधो संयम भार ॥८१॥
करी छठ छठ पारणा, आयम्बिल उज्झित आहार।
श्री वीर वखाण्यो, धन धन्नो अणगार ॥८२॥
एक मास संथारे, सर्वार्थ सिद्ध पहुंता।
महाविदेह क्षेत्र मां, करसे भव नो अन्त ॥८३॥
धन्नानी रीते, हुआ नव ही सं[illegible]
श्री अनुत्तरोववाइय मां, भाँखी गण [illegible]

सुबाहु प्रमुख, पांच पांचसौ नार।
तजी वीर पै लीधा, पांच महाव्रत सार ॥८५॥
चारित्र लेई ने, पाल्यो निरतिचार।
देवलोके पहुच्या, सुख विपाके अधिकार ॥८६॥
श्रेणिक ना पौत्र, पउमादिक हुआ दस।
वीर पै व्रत लेईने, काढ्यो देह नो कस ॥८७॥
संयम आराधी, देवलोक मां जइ वस।
महाविदेह क्षेत्र मां, मोक्ष जासे लेई जस ॥८८॥
बलभद्र ना नन्दन, निषधादिक हुआ बार।
तजी पचास अन्तेउरी, त्याग दियो संसार ॥८९॥
सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध।
सर्वार्थसिद्ध पहुंच्या, होशे विदेहे सिद्ध ॥९०॥
धन्नो ने शालिभद्र, मुनीश्वरों नी जोड़।
नार्यां ना बन्धन, तत्क्षण नाख्यां तोड़ ॥९१॥
घर कुटुम्ब कंबिलो, धन कंचन नी कोड़।
मास मास खमण तप, टालसे भव नी खोड़ ॥९२॥
श्री सुधर्मा स्वामी ना शिष्य, धन धन जम्बू स्वामी।
तजी आठ अन्तेउरी, माता पिता धन धाम ॥९३॥
प्रभवादिक तारी, पहुंच्या शिवपुर ठाम।
सूत्र प्रवर्तावी, जग मां राख्युँ नाम ॥९४॥
धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्ण राय ना नन्द।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फन्द ॥९५॥
वलि खन्दक ऋषि नी, देह उतारी खाल।
परीषह सहीने, भव फेरा दिया टाल ॥९६॥

फ फ

वलि खन्दक ऋषि ना, हुआ पांचसौ शिष्य।
घणी मां पील्या, मुक्ति गया तजी रीश।।९७।।
संभूतिविजय तणा-शिष्य, भद्रबाहु मुनिराय।
चौदह पूर्वधारी, चन्द्रगुप्त आण्यो ठाय।।९८।।
वलि आर्द्र कुमार मुनि, स्थूलिभद्र नन्दिषेण।
अरणक अइमुत्तो, मुनिश्वरों नी श्रेण।।९९।।
चौबीसे जिनना, मुनिवर संख्या अठावीश लाख।
ऊपर सहस्त्र अडतालीस, सूत्र परम्परा भाख।।१००।।
कोइ उत्तम वांचो, मोंढे जयणा राख।
उघाड़े मुख बोल्यां, पाप लगे इम भाख।।१०१।।
धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मल ध्यान।
गज होदे पायो, निर्मल केवलज्ञान।।१०२।।
धन्य आदीश्वर नी पुत्री ब्राह्मी सुन्दरी दोय।
चारित्र लेईने, मुक्ति गई सिद्ध होय।।१०३।।
चौबीसे जिननी, बड़ी शिष्यणी चौबीस।
सती मुक्ति पहुंच्या, पूरी मन जगीश।।१०४।।
चौबीसे जिनना, सर्व साधवी सार।
अड़तालीस लाख ने, आठ से सित्तर हजार।।१०५।।
चेडा नी पुत्री, राखी धर्म सु प्रीत।
राजीमती विजया, मृगावती सुविनीत।।१०६।।
पावती मयणरेहा, द्रौपदी दमयन्ती सीत।
इत्यादिक सतियां, गई जमारो जीत।।१०७।।
चौबीसे जिनना, साधु साधवी सार।
गया मोक्ष देवलोकें, हृदय राखो धार।।१०८।।

इण अढ़ाई द्वीप मां, करड़ा तपसी बाल।
शुद्ध पंच महाव्रत धारी, नमो नमो त्रि.काल।।१०४।।
इण जतियों सतियों ना, लीजे नित्य प्रति नाम।
शुद्ध मन थी ध्यावो, एह तिरण नो ठाम।।१०५।।
इण जतियों सतियों शुं, राखो उज्ज्वल भाव।
इम कहे ऋषि जयमल, एह तिरणो नो दाव।।१०६।।
संवत अठारह ने, वर्ष साते सिरदार।
गढ़ जालोर माँही, एह कह्यो अधिकार।।१०७।।

।। इति वड़ी साधु वन्दना।।

卐

बृहदालोयणा

दोहा

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगंजन अरिहंत।
इष्टदेव वंदूं सदा, भयभंजन भगवंत।।१।।
अरिहंत सिद्ध समरूं सदा, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरण को, वंदूं शीश नमाय।।२।।
शासन नायक सुमरिये, भगवंत वीर जिनंद।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानंद।।३।।
अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।४।।
श्रीगुरुदेव प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध।
ज्यूं घन वरसत वेलि तरु, फूल फलन की वृद्ध।।५।।
पंच परमेष्टी देव को भजनपुर पंचान।
कर्म अरि भाजे सभी, होवे परम कल्याण।।६।।

श्रीजिन युग पद कमल में, मुझ मन भ्रमर बसाय।
कब ऊगे वो दिन करूँ, श्रीमुख दरिसन पाय।।७।।
प्रणमी पद पंकज भणी, अरिगंजन अरिहंत।
कथन करूँ अब जीव का, किंचित् मुझ विरतंत।।८।।
आरंभ विषय कषाय वस, भमियो काल अनंत।
लख चोराशी योनि से, अब तारो भगवंत।।९।।
देव गुरु धर्म सूत्र में, नवतत्त्वादिक जोय।
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छामि दुक्कडं मोय।।१०।।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, भरियो रोग अथाग।
वैद्यराज गुरु शरण से, औषध ज्ञान वैराग।।११।।
जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
प्रभु तुम्हारी साख से, बारबार धिक्कार।।१२।।
बुरा बुरा सब को कहूँ, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधूँ आपणों, तो मोसुं बुरो न कोय।।१३।।
कहेवा में आवे नहीं, अवगुण भरया अनन्त।
लिखवा में क्युं कर लिखूँ जानो श्री भगवंत।।१४।।
करुणानिधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, करजो ग्रंथीभेद।।१५।।
पतित उद्धारन नाथजी, अपनो विरुद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खमिये बारंबार।।१६।।
माफ करो सब माहरा, आज तलक रा दोष।
दीनदयाल देवो मुझे श्रद्धा शील संतोष।।१७।।
आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवंत वंदन भाव।
रागद्वेष पतला करी, सबसे खमत खमाव।।१८।।

छूटूं पिछला पाप से, नवा न बांधु कोय।
श्रीगुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय।।१६।।
परिग्रह ममता तजी करी, पंच महाव्रत धार।
अंत समय आलोयणा, करूँ संथारो सार।।२०।।
तीन मनोरथ ए कह्या, जो ध्यावे नित्य मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन।।२१।।
अरिहंत देव निर्ग्रन्थ गुरु, संवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र, यही जैन मत मर्म।।२२।।
आरंभ विषय कषाय तज, शुद्ध समकित व्रत धार।
जिन आज्ञा परमाण कर, निश्चय खेवो पार।।२३।।
क्षण निकमो रहनो नहीं, करनो आतम काम।
भणनो गुणनो सीखनो, रमनो ज्ञान आराम।।२४।।
अरिहंत सिद्ध सब साधुजी, जिन आज्ञा धर्म सार।
मांगलिक उत्तम सदा, निश्चय शरणा चार।।२५।।
घडी घड़ी पल पल सदा, प्रभु सुमरण को चाव।
नरभव सफलो जो करे, दान शील तप भावां।।२६।।

(२)

सिद्धां जैसो जीव है, जीव सोही सिद्ध होय।
कर्म मेल का आंतरा, बूझे विरला कोय।।१।।
कर्म पुद्गल रूप है, जीव रूप हैं ज्ञान।
दो मिलकर बहु रूप है, विछडयां पद निर्वाण।।२।।
जीव करम भिन्न-भिन्न करो, मनुष्य जन्म को पाय।
ज्ञानातम वैराग्य से धीरज ध्यान जगाय।।३।।
द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असंख्य प्रमाण।
थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन ज्ञान।।४।।

गर्भित पुद्गल पिंड में, अलख अमूरति देव।
फिरे सहज भव चक्र में, यह अनादि की टेव॥५॥
फूल अतर घी दूध में, तिल में तेल छिपाय।
यूं चेतन जड़ करम संग, बंध्यो ममत दुःख पाय॥६॥
जो जो पुद्गल की दिशा, ते निज माने हंस।
याही भरम विभावसे, बढ़े करम को वंस॥७॥
रतन बंध्यो गठड़ी विषै, सूर्य छिप्यो घन मांहि।
सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नांहि॥८॥
ज्यूं बंदर मदिरा पियाँ, बिच्छू डंकित गात।
भूत लग्यो कौतुक करे, त्यूं कर्मों का उत्पात॥६॥
कर्म संग जीव मूढ है, पावे नाना रूप।
कर्मरूप मल के टले, चेतन सिद्ध स्वरूप॥१०॥
शुद्ध चेतन उज्ज्वल दरब, रह्यो कर्म मल छाय।
तप संयम सुं धोवतां, ज्ञान ज्योति बढ़ जाय॥११॥
ज्ञान थकी जाने सकल, दर्शन श्रद्धा रूप।
चारित्र से आवत रुके, तपस्या क्षपन स्वरूप॥१२॥
कर्म रूप मल के शुधे, चेतन चांदी रूप।
निर्मल ज्योति प्रगट भयां, केवल ज्ञान अनूप॥१३॥
मूसी पावक सोहगी फूँकां तणो उपाय।
रामचरण चारों मिल्यां, मैल कनक को जाय॥१४॥
कर्मरूप बादल मिटे, प्रगटे चेतन चंद।
ज्ञानरूप गुण चांदनी, निर्मल ज्योति अमंद॥१५॥
राग द्वेष दो बीज से, कर्म बंध की व्याध।
ज्ञानातम वैराग्य से, पावे मुक्ति समाध॥१६॥

अवसर बीत्यो जात है, अपने बस कछु होत।
पुण्य छतां पुण्य होत है, दीपक दीपक ज्योत ।।१७।।
कल्पवृक्ष चिंतामणि, इण भव में सुखकार।
ज्ञान वृद्धि इन से अधिक, भवदुःख भंजनहार ।।१८।।
राइ मात्र घट बध नहीं, देख्या केवलज्ञान।
यह निश्चय कर जानके, तजिये प्रथम ध्यान ।।१९।।
दूजा कभी नहीं चिंतिये, कर्म बंध बहु दोष।
तीजा चौथा ध्याय के, करिये मन संतोष ।।२०।।
गई वस्तु सोचे नहीं, आगम वांछा नांहि।
वर्तमान वर्ते सदा, सो ज्ञानी जग मांही ।।२१।।
अहो समदृष्टि जीवड़ा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अंतर्गत न्यारो रहे, ज्युं धाय खिलावे बाल ।।२२।।
सुख दुःख दोनुं बसत है, ज्ञानी के घट मांहि।
गिरि सर दीसे मुकर में, भार भींजवो नांहि ।।२३।।
जो जो पुद्गल फरसना, निश्चे फरसे सोय।
ममता समता भाव से, करम बंध क्षय होय ।।२४।।
बांध्या सोही भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव।
फल निर्जरा होत है, यह समाधि चित्त चाव ।।२५।।
बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्यां न छुड़ाय।
आपक ही करता भोगता, आप ही दूर कराय ।।२६।।
पथ कुपथ घट बध करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
युं पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुःख जग में पाय ।।२७।।
सुख दिया सुख होत है, दुख दिया दुख होय।
आप हणे नहीं अवर कूं, तो आपकूं हणे न कोय ।।२८।।

ज्ञान गरीब गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष।
इन कूं कभी न छोड़िये, श्रद्धा शील संतोष ।।२६।।
सत मत छोडो हो नरां, लक्ष्मी चौगुनी होय।
सुख दुःख रेखा कम्र की, टाली टले न कोय ।।३०।।
गोधन गज धन रत्न धन, कंचन खान सुखान।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूल समान ।।३१।।
शील रतन मोटो रतन, सब रतनां की खान।
तीन लोक की संपदा, रही शील में आन ।।३२।।
शीले सर्प न आभडे, शीले शीतल आग।
शीले अरि करि केसरी, भय जावे सब भाग ।।३३।।
शील रतन के पारखी, मीठे बोले बैन।
सब जग से उंचा रहे जो नीचा राखे नैन ।।३४।।
तन कर मन कर वचन कर देता न काहु दुःख।
कर्म रोग पातक झड़े, देखत वां का मुख ।।३५।।
पान खिरंतो इम कहे, सुन तरुवर वनराय।
अब के बिछडे कब मिले, दूर पडेगें जाय ।।३६।।
तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो पत्र इक बात।
इस घर एही रीत है, इक आवत इक जात ।।३७।।
वरस दिना की गांठ को, उच्छव गाय बजाय।
मूरख नर समझे नहीं, बरस गांठ को जाय ।।३८।।
सोरठा-पवन तणो विश्वास, किण कारण ते दृढ़ कियो।
इनकी एही रीत, आवे के आवे नहीं ।।

दोहा

करज बिरानां काढ़ के, खरच किया वहु नाम।
जब मुद्दत पूरी हुई, देना पड़सी दाम।।१।।
बिन दिया छूटे नहीं यह निश्चय कर मान।
हँस हँस क्यों खरचिये, दाम बिराना जान।।२।।
जीव हिंसा करतां थकां, लागे मिष्ट अज्ञान।
ज्ञानी इम जाने सही, विष मिलियो पकवान।।३।।
काम भाग प्यारा लगे, फल किम्पाक समान।
मीठी खाज खुजावतां, पीछे दुःख की खान।।४।।
जप तप संजम दोहिलो औषध कड़वी जान।
सुख कारण पीछे घणो, निश्चय पद निर्वाण।।५।।
डाभ अणी जल बिंदुवो, सुख विषयन को चाव।
भवसागर दुःख जल भर्यो यह संसार स्वभाव।।६।।
चढ़ उत्तंग जहां से पतन, शिखर नहीं वे कूप।
जिस सुख भीतर दुःख बसे, सो सुख भी दुःख रूप।।७।।
जव लग जिसके पुण्य का, पहोंचे नहीं करार।
तब लग उसको माफ है, अवगुण करे हजार।।८।।
पुण्य क्षीण जब होत है, उदय होत है पाप।
दाजे बन की लाकड़ी, प्रजले आपो आप।।९।।
पाप छिपाया नां छिपे, छिपे तो मोटा भाग।
दाबी दुबी नां रहे, रुई लपेटी आग।।१०।।
वहु वीती थोड़ी रही, अब तो सुरत संभार।
पर भव निश्चय जावनो, वृथा जन्म मत हार।।११।।
चार कोस ग्रामान्तरे, खरची बांधे लार।
परभव निश्चय जावणो, करिये धर्म विचार।।१२।।

रज विरज ऊँची गई, नरमाई के लाग।
पत्थर ठोकर खात है, करडाइ के लाग।।१३।।
अवगुन उर धरिये नहीं, जो हुवे विरख बबूल।
गुण लीजे 'कालू' कहे, नहीं छाया में शूल।।१४।।
जैसी जापे वस्तु है वैसी दे दिखलाय।
वाका बुरा न मानिये, वो लेन कहां से जाय।।१५।।
गुरु कारीगर सारीखा, टांची वचन विचार।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार।।१६।।
संतन की सेवा कियां, प्रभु रीझत है आप।
जाका बाल खिलाइये, ताका रीझत बाप।।१७।।
भवसागर संसार में, दीपा श्री जिनराज।
उद्यम करी पहोंचे तीरे, बैठी धर्म जहाज।।१८।।
निज आतम कूं दमन कर, पर आतम कूं चीन।
परमातम को भजन कर, सो ही मत परवीन।।१९।।
समझु शंके पाप से, अणसमझू हरषंत।।
वे लूखा वे चीकणां, इण विध कर्म बंधंत।।२०।।
समझ सार संसार में, समझूं टोल दोष।
समझ समझ कर जीवड़ा गया अनंता मोक्ष।।२१।।
उपशम विषय कषाय नो, संवर तीनों योग।
किरिया जतन विवेक से, मिटे कुकर्म दुःख रोग।।२२।।
रोग मिटे समता बधे, समकित व्रत आराध।
निर्वैरी सब जीव को, पावे मुक्ति समाध।।२३।।

।।भूल चूक मिच्छामि दुक्कडं।।

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगंजन अरिहंत।
इष्टदेव वंदूं सदा, भयभंजन भगवंत।।१।।
अनंत चौवीसी जिन नमूं, सिद्ध अनंता क्रोड़।
वर्तमान जिनवर सबे, केवली दो कोड़ी नव कोड़।।२।।
गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार।
यथायोग्य वंदन करूँ, जिन आज्ञा अनुसार।।३।।
(यहां एक बार नमस्कार मंत्र का स्मरण करना चाहिए।)
पंच परमेष्ठि देवको, भजन पुर पहिचान।
कर्म अरि भाजै सभी शिवसुख मंगल थान।।४।।
अरिहंत सिद्ध सुमरूं सदा, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरन को वंदूं शीश नमाय।।५।।
शासन नायक सुमरिये वर्धमान जिनचंद।
अलिय विधन दूर हरे, आपे परमानंद।।६।।
अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।७।।
श्रीजिन युगपद कमल में, मुझ मन अलिय वसाय।
कव उगे वो दिन करूँ, श्रीमुख दरिसन पाय।।८।।
प्रणमी पदपंकज भणी, अरिगंजन अरिहंत।
कथन करूं अव जीव को, किंचित् मुझ विरतंत।।९।।

गाथा

हूं अपराधी अनादि को, जनम जनम गुना किया भरपूर कें।
लुटिया प्राण छकाय नां, सेविया पाप अठारे करूर कें।
श्री मुनिसुव्रत साहिबा।

आज दिन तक इस भव में और पहिले संख्यात, असंख्यात अनंत भवों में, कुगुरु कुदेव और कुधर्म की सद्दहणा प्ररूपना फरसना सेवानादि संबंधी पाप दोष लगा, उनका मिच्छामि दुक्कडं। मैंने अज्ञानपन से मिथ्यात्वपन से अव्रतपन से कषायपन से अशुभयोग से प्रमाद करके अपछंदा अविनीतपना किया, श्री अरिहंत भगवंत वीतरागदेव, केवलज्ञानी, गणधरदेव, आचार्यजी महाराज, धर्माचार्यजी महाराज, उपाध्यायजी महाराज, साधुजी महाराज, आर्याजी महाराज तथा सम्यद्दृष्टि स्वधर्मी श्रावक और श्राविका, इन उत्तम पुरूषों की तथा शास्त्र सूत्रपाठ अर्थ परमार्थ और धर्म संबंधी समस्त पदार्थों की अविनय अभक्ति आशातना आदि की, कराई अनुमोदी, मन वचन काया से, द्रव्य क्षेत्र काल भाव से, सम्यक् प्रकार विनय भक्ति आराधना पालना फरसना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रम से नहीं की, नहीं कराई, नहीं अनुमोदी, तो मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं। मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब मुझे माफ करो। मैं मन वचन काया करके क्षमाता हूँ।

दोहा

मैं अपराधी गुरूदेव को, तीन भवन को चोर ।
ठगूं बिराना माल मैं, हा हा कर्म कठोर ।।१।

कामी कपटी लालची, अपछंदा अविनीत ।
अविवेकी क्रोध कठिन, महापापी... ।।२।।

जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठारह ।
नाथ तुम्हारी साख से, बार-बार धिक्कार ।।३।।

मैंने छकायपन से छकाय की विराधना की, पृथ्वीकाय, अप्काय तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय सन्नी, असन्नी, गर्भज, चौदह प्रकार के सम्मूर्छिम आदि त्रस स्थावर जीवों की विराधना मन वचन काया से की, कराई, अनुमोदी। उठते बैठते, सोते, हालते, चालते, शस्त्र वस्त्र मकानादि उपकरण उठाते, धरते, लेते, देते, वर्तते, वर्त्तावते, अप्पडिलेहणा दुप्पडिलेहणा संबंधी, अप्रमार्जना दुःप्रमार्जना संबंधी न्यूनाधिक विपरीत पडिलेहणा संबंधी और आहार विहार आदि अनेक प्रकार के कर्त्तव्यों में संख्यात असंख्यात और निगोद आश्रयी अनंत जीवों के जितने प्राण लूटे उन सब जीवों का मैं पापी अपराधी हूँ। निश्चय करके बदले का देनदार हूँ। सब जीवन मेरे को माफ करो, मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो।

देवसी, रायसी, पक्खी, चौमासी और सम्वत्सरी संबंधी बारंबार मिच्छामि दुक्कडं। मैं बारंबार क्षमाता

हूँ। आप सब क्षमा करो।

गाथा

खामेखि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती में सव्वभूएसु, वेरं मज्झं ण केणई।।१।।

वह दिन धन्य होगा जिस दिन मैं छह काय का वैर बदला से निवृत्त होउंगा। समस्त चौरासी लाख जीवयोनि को अभयदान देऊंगा, वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा।

दोहा

सुख दिया सुख होत है, दुःख दिया दुःख होय।
आप हणे नहीं अवर को, आपको हणे न कोय।।१।।

दूजा पाप मृषावाद-झूठ बोलना। क्रोध के वश, मान के वश, माया के वश, लोभ के वश, हास्य करके, भय के वश, मृषा(झूठ)वचन बोला, निंदा विकथा की, कर्कश कठोर मरम वचन बोला, इत्यादि अनेक प्रकार से मृषावाद (झूठ) बोला, बोलवाया और अनुमोदा, उसका मन वचन काया से मिच्छामि दुक्कडं।

दोहा

थापनमोसा मैं किया, करी विश्वास घात।
परनारी धन चोरिया, प्रकट कह्यो नहीं जात।।१।।

मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं।

वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मैं सर्वप्रकार से मृषावाद का त्याग करूँगा। वह दिन मेरा कल्याण रूप होवेगा।।२।।

तीसरा पाप अदत्तादान-बिना दी हुई वस्तु चोरी करके लेना। यह बड़ी चोरी लौकिक विरुद्ध है। अल्प चोरी मकान संबंधी अनेक प्रकार के कर्त्तव्यों में उपयोग सहित या बिना उपयोग से। अदत्तादान, मन वचन काया से चोरी की, कराई और अनुमोदी तथा धर्म संबंधी, ज्ञान दर्शन चारित्र और तप श्री भगवंत गुरुदेव की बिना आज्ञा किया, उसका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन सर्वप्रकार से अदत्तादान का त्याग करूंगा व दिन मेरा परम कल्याण होवेगा।

चौथा मैथुन-सेवन करने के लिये मन वचन और काया के योग प्रवर्त्ताया। नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य नहीं पाला। नववाड़ में अशुद्धपन से प्रवृत्ति हुई। मैंने मैथुन सेवन किया, दूसरों से सेवन करवाया और सेवन करने वाले को अच्छा समझा, उसका मन वचन काया से मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होगा, जिस दिन मैं नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य शीलरत्न आराधूँगा, याने सर्वथा सर्वांश प्रकार से काम विकार से निवर्तूंगा। वह दिन मेरा परम

कल्याण का होवेगा।।४।।

पांचवां परिग्रह - सचित्त परिग्रह तो दास दासी, द्विपद, चतुष्पद (पशु) आदि अनेक प्रकार के और अचित्त परिग्रह-सोना, चाँदी, वस्त्र, आभूषण आदि अनेक प्रकार के हैं। उनकी ममता मूर्च्छा की, क्षेत्र घर आदि नव प्रकार के बाह्य परिग्रह और चौदह प्रकार के अभ्यान्तर परिग्रह को रक्खा, रखवाया और अनुमोदा, तथा रात्रि-भोजन, अभक्ष्य आहारादि संबंधी पाप दोष सेव्या हो, वह मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होवेगा। जिस दिन सभी प्रकार के परिग्रह का त्याग कर संसार के प्रपंच से निवर्तूंगा, वह दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा।।५।।

छठा क्रोध-क्रोध करके अपनी आत्मा को तथा पर आत्मा को दुःखी किया।।६।।

सातवां मान-अहंकार भाव लाया, तीन गारव और आठ मद आदि किया।।७।।

आठवां माया-धर्म संबंधी तथा संसार संबंधी अनेक कर्त्तव्यों में कपट किया।।८।।

नवमां लोभ-मूर्च्छाभाव लाया, आशा तृष्णा वांछा आदि की।।९।।

दसवां राग- मनपंसद वस्तु से स्नेह किया।।१०।।

वह दिन धन्य होगा, जिस दिन में सर्वप्रकार से मृषावाद का त्याग करूँगा। वह दिन मेरा कल्याण रूप होवेगा।।२।।

तीसरा पाप अदत्तादान-विना दी हुई वस्तु चोरी करके लेना। यह बड़ी चोरी लौकिक विरुद्ध है। अल्प चोरी मकान संवंधी अनेक प्रकार के कर्त्तव्यों में उपयोग सहित या विना उपयोग से। अदत्तादान, मन वचन काया से चोरी की, कराई और अनुमोदी तथा धर्म संवंधी, ज्ञान दर्शन चारित्र और तप श्री भगवंत गुरुदेव की विना आज्ञा किया, उसका मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन सर्वप्रकार से अदत्तादान का त्याग करूंगा व दिन मेरा परम कल्याण होवेगा।

चौथा मैथुन-सेवन करने के लिये मन वचन और काया के योग प्रवर्त्ताया। नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य नहीं पाला। नववाड़ में अशुद्धपन से प्रवृत्ति हुई। मैंने मैथुन सेवन किया, दूसरों से सेवन करवाया और सेवन करने वाले को अच्छा समझा, उसका मन वचन काया से मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होगा, जिस दिन मैं नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य शीलरत्न आराधूंगां, याने सर्वथा सर्वथा प्रकार से काम विकार से निवर्तूंगा। वह दिन मेरा परम

कल्याण का होवेगा।।४।।

पांचवां परिग्रह - सचित्त परिग्रह तो दास दासी, द्विपद, चतुष्पद (पशु) आदि अनेक प्रकार के और अचित्त परिग्रह-सोना, चाँदी, वस्त्र, आभूषण आदि अनेक प्रकार के हैं। उनकी ममता मूर्च्छा की, क्षेत्र घर आदि नव प्रकार के बाह्य परिग्रह और चौदह प्रकार के अभ्यान्तर परिग्रह को रक्खा, रखवाया और अनुमोदा, तथा रात्रि-भोजन, अभक्ष्य आहारादि संबंधी पाप दोष सेव्या हो, वह मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होवेगा। जिस दिन सभी प्रकार के परिग्रह का त्याग कर संसार के प्रपंच से निवर्तूंगा, वह दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा।।५।।

छठा क्रोध-क्रोध करके अपनी आत्मा को तथा पर आत्मा को दुःखी किया।।६।।

सातवां मान-अहंकार भाव लाया, तीन गारव और आठ मद आदि किया।।७।।

आठवां माया-धर्म संबंधी तथा संसार संबंधी अनेक कर्त्तव्यों में कपट किया।।८।।

नवमां लोभ-मूर्च्छाभाव लाया, आशा तृष्णा वांछा आदि की।।६।।

दसवां राग- मनपंसद वस्तु से स्नेह किया।।१०।।

ग्यारहवां द्वेष-नापसंद वस्तु देखकर उस पर द्वेष किया।।११।।

बारहवां कलह - अप्रशस्त (खराब) वचन बोलकर क्लेश उंत्पन्न किया।।१२।।

तेरहवां अभ्याख्यान - झूठा कलंक किया।।१३।।

चौदहवां पैशुन्य - दूसरे की चुगली की।।१४।।

पन्द्रहवां परपरिवाद- दूसरे का अवगुणवाद (अवर्णवाद) बोला-निंदा की।।१५।।

सोलहवां रति अरति - पांच इन्दियों के २३ विषय और २४० विकार हैं। इनमें मनपसंद पर राग किया और नापसंद पर द्वेष किया तथा संयम तप आदि पर अरति की तथा आरंभादिक असंयम और प्रमाद में रति भाव किया।।१६।।

सतरहवां माया मृषावाद -कपट सहित झूठ बोला।।१७।।

अठारहवां मिथ्यादर्शनशल्य - श्री जिनेश्वर देव के मार्ग में शंका, कंखा आदि विपरीत श्रद्धा प्ररूपणा की।।१८।। (यहां १८ पाप स्थानों की आलोयणा विशेष रूप से एवं विस्तारपूर्वक अपने उपयोग अनुसार कहना चाहिए।)

इस प्रकार अठारह पाप का द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से, जानते, अजानते, मन वचन और

काया से सेवन किया, कराया और अनुमोदा, दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ या सुत्ते वा जागरमाणे वा इस भाव में पर भव में पहिले संख्यात असंख्यात अनंत भवों में भवभ्रमण करते आज दिन...,मिति... ,तिथि...,संवत्..., तक रागद्वेष, विषय, कषाय, आलस, प्रमाद आदि; पौद्‌गलिक प्रपंच, परगुण पर्याय की विकल्प भूल की, ज्ञान की विराधना की, दर्शन की विराधना की चारित्र की विराधना की, चारित्राचारित्र की व तप की विराधना की। शुद्ध श्रद्धा, शील, संतोष, क्षमा, आदि निज स्वरूप की विराधना की। उपशम, विवेक, संवर सामायिक, पौषध, प्रतिक्रमण, ध्यान, मौन आदि व्रत पच्चक्खाण दान, शील, तप वगैरह की विराधना की। परम कल्याणकारी इन बोलों की आराधना पालनादि मन वचन और काया से नहीं की, नहीं कराई और नहीं अनुमोदी। छह आवश्यक सम्यक् प्रकार से विधि उपयोग सहित आराधा नहीं, पाला नहीं, फरसा नहीं, विधि उपयोग रहित निरादरपने से किया, किंतु आदर सत्कार भाव भक्ति सहित नहीं किया। ज्ञान के चौदह, समकित के पांच, बारह व्रत के साठ, कर्मादान के पंद्रह, संलेखणा के पांच, इन ९९ अतिचार में तथा १२४ अतिचारो में तथा साधुजी के

१२५ अतिचार में तथा ५२ अनाचार का श्रद्धानादिक में विराधना आदि जो कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार आदि सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदना की, जानते, अजानते, मन वचन काया से उनका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं।

मैंने जीव को अजीव श्रद्दह्या प्ररूप्या, अजीव को जीव श्रद्दह्या परूप्या, धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म श्रद्दह्या परूप्या, तथा साधु को असाधु और असाधु को साधु श्रद्दह्या परूप्या तथा उत्तम पुरूष साधु मुनिराज महासतियांजी की सेवा भक्ति मान्यता आदि यथाविधि नहीं की, नहीं कराई, नहीं अनुमोदी तथा असाधुओं की सेवा-भक्ति मान्यता आदि का पक्ष किया, मुक्ति मार्ग में संसार का मार्ग, यावत पच्चीस मिथ्यात्व का सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा, मन वचन और काया से, पच्चीस कषाय संबंधी, पच्चीस क्रिया संबंधी, तेतीस आशातना संबंधी, ध्यान के १६ दोष, वंदना के ३२ दोष, सामायिक के ३२ दोष, पौषध के १८ दोष संबंधी मन वचन और काया से जो कोई पाप दोष लगा लगाया अनुमोदा, उसका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं। महामोहनीय कर्मबंध के ३० स्थानक को मन वचन और काया से सेवन किया,

सेवन कराया, अनुमोदा, शील की नवबाड तथा ८ प्रवचन माता की विराधनादि, श्रावक के २१ गुण और १२ व्रत की विराधनादि मन वचन ओर काया से की, कराई अनुमोदी तथा ३ अशुभ लेश्या के लक्षणों की ओर अन्य बोलों की विराधना की, चर्चा वार्ता वगैरह में श्री जिनेश्वर देव का मार्ग लोपा, गोपा, नहीं माना, अछते की थापना की, छते की थापना नही की और अछते की निषेधना नहीं की, छते की थापना और अछते का निषेध करने का नियम नहीं किया, कलुषता की तथा ६ प्रकार के ज्ञानावरणीय बंध के बोल, ऐसे ६ प्रकार के दर्शनावरणीय बंध के बोल, ८ कर्म की अशुभ प्रकृति के बोल सत्तावन कारणों से पाप की ८२ प्रकृति बांधी, बंधाई, अनुमोदी, मन वचन काया करके उनका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं। एक एक बोल से लगाकर कोड़ाकोड़ी यावत् संख्याता असंख्याता अनंता-अनंता बोलों में से जानने योग्य बोलों को सम्यक् प्रकार जाना नहीं, श्रद्दह्या नहीं और परूप्या नहीं, तथा विपरीतपने से श्रद्धा आदि की, कराई, अनुमोदी, मन वचन काया से, उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं।

एक-एक बोल से यावत् अनंता अनंता बोलों में

छोड़ने योग्य बोल को छोड़ा नहीं, उनको मन वचन काया से सेवन किया, सेवन कराया और अनुमोदा, उनका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं। एक एक बोल से लगा कर जाव अनंता अनंता बोलों में आदरने योग्य बोलों को आदरा नहीं, आराधा नहीं, पाला नहीं फरसा नहीं, विराधना खंडना आदि की कराई, अनुमोदी, मन वचन काया से उनका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छमि दुक्कडं। श्री जिन भगवंतजी महाराज आपकी आज्ञा में जो जो प्रमाद किया और सम्यक् प्रकार उद्यम नहीं किया, नही कराया, नहीं अनुमोदा मन वचन काया करके तथा अनाज्ञा में उद्यम किया, कराया, अनुमोदा। एक अक्षर के अनन्तवें भाग मात्र दूसरा कोई स्वप्न मात्र में भी भगवंत महाराज आपकी आज्ञा से न्यूनाधिक विपरीत प्रवृत्ति की हो, तो उसका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छामि दुक्कडं।

दोहा

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा, करी फरसना सोय।
अनजाने पक्षपात में, मिच्छा दुक्कड़ मोय ।।१।।
सूत्र अर्थ जानूं नहीं, अल्प बुद्धि अनजान।
जिनभाषित सब शास्त्र का, अर्थ पाठ परमान।।२।।

देव गुरु धर्म सूत्र को, नव तत्वादिक जोय ।
अधिका ओछा जो कह्या, मिच्छा दुक्कड़ं मोय ।।३।।
हूं मगसे लियो हो रह्यो, नहीं ज्ञान रस भींज ।
गुरु सेवा न करी शकुं, किम मुझ कारज सीज।।४।।
जाने देखे जे सुने, देवे सेवे मोय ।
अपराधी उन सबन का, बदला देशुं सोय।।५।।
गबन करूँ बुगचा रतन, द्रव्य भाव सब कोय ।
लोकन में प्रकट करूँ, सूई पाई मोय।।६।।
जैन धर्म शुद्ध पाय के, बरते विषय कषाय ।
यह अचंभा हो रह्या, जल में लागी लाय।।७।।
जितनी वस्तु जगत में, नीच-नीच में नीच ।
सबसे मैं पापी बुरो, फँसु मोह के बीच।।८।।
एक कनक अरु कामिनी, दो मोटी तलवार ।
उठ्यो थो जिन भजन को, बीच में लियो मार।।६।।

सवैया

मैं महापापी छांड के संसार छार, छार ही का विहार करूँ अगला कुछ धोय कीच, फैर कीच बीच रहूं, विषय सुख चाहूं मन्न प्रभुता बधारी है। करत फकीरी ऐसी अमीरी की आस करूँ, काहे को धिक्कार सिर पगड़ी उतारी है।।१०।।

दोहा

त्याग न कर संग्रह करूं, विषय वमन जिम आहार ।
तुलसी ए मुझ पतित को, बारंबार धिक्कार ।।११।।
राग द्वेष दो बीज है, कर्म बंध फल देत ।
इनकी फांसी में बंध्यो, छटूं नहीं अचेत ।।१२।।
रतन बांध्यों गठड़ी विषे, भाण छिप्यो घन माहिं ।
सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नाँहि ।।१३।।
बुरा-बुरा सब को कहूं, बुरा न दीसे कोय ।
जो घट शोधूं आपनो, तो मोसूँ बुरो न कोय ।।१४।।
कामी कपटी लालची, कठिन लोह को दाम ।
तुम परस परसंग थी, सुवरण थासुं स्वाम ।।१५।।

श्लोक

मैं जपहीन हूँ तपहीन हूँ, प्रभु हीन संवर समगतं,
हें दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणागतं ।
प्रभु आयो तुम शरणागतं ।।१६।।

दोहा

नहीं विद्या नहीं वचन बल, नहीं धीरज गुण ज्ञान ।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान् ।।१७।।
विषय कषाय अनादि को, भरियो रोग अगाध ।
वैद्यराज गुरु शरण से, पाऊं चित्त समाध ।।१८।।

कहवा में आवे नहीं, अवगुण भरिया अनंत।
लिखवा में क्यूं कर लिखूं, जाणो श्री भगवंत ।।१६।।
आठ कर्म प्रबल करी, भमियो जीव अनादि।
आठ कर्म छेदन करी, पावे मुक्ति समाधि ।।२०।।
पथ कुपथ कारण करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
इम पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुःख जग में पाय ।।२१।।
बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्यां न छुडाय।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय ।।२२।।
सुसाया सा अविवेक हूँ, आंख मीच अंधियार।
मकड़ी जाल बिछाय के, फसुं आप धिक्कार ।।२३।।
सर्व भक्षी जिम अग्नि हूँ, तपियो विषय कषाय।
अपच्छन्दा अविनीत मैं, धर्मी ठग दुःखदाय ।।२४।।
कहां भयो घर छांड के, तज्यो न माया संग।
नाग तजी जिम कांचली, विषय नहीं तजियो अंग ।।२५।।
आलस विषय कषाय वश, आरंभ परिग्रह काज।
योनि चौरासी लख भम्यो, अब तारो महाराज ।।२६।।
आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवंत वंदन भाव।
राग द्वेष उपशम करी, सब से खमत खमाव ।।२७।।
पुत्र-कुपुत्रज मैं हुयो, अवगुण भरया अनंत।
मायद विरद विचार के, माफ करो भगवंत ।।२८।।

शासनपति वर्द्धमान जी, तुम लग मेरी दौड़।
जैसे समुद्र जहाज बिन, सूझत और न ठौड़।।२६।।
भव भ्रमण संसार दुःख, ताका वार न पार।
निर्लोभी सतगुरु बिना, कौन उतारे पार।।३०।।
भवसागर संसार में, दीपा श्री जिनराज।
उद्यम करि पहुँचे तीरे, बैठी धर्म जहाज।।३१।।
पतित उद्धारन नाथ जी, अपनो विरुद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खामिये बारंबार।।३२।।
माफ करो सब माहरा, आज तलक रा दोष।
दीनदयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील संतोष।।३३।।
देव अरिहंत गुरु निर्ग्रंथ, संवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र है, ये ही जैन मत मर्म।।३४।।
इस अपार संसार में, शरण नहीं अरु कोय।
या ते तुम पद कमल ही, भक्त सहायी होय।।३५।।
छुटुं पिछला पाप से, नवा न बांधु कोय।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय।।३६।।
आरंभ परिग्रह त्यजी करी, समकित व्रत आराध।
अन्त अवसर आलोय के, अनशन चित्त समाध।।३७।।
तीन मनोरथ ए कह्यो, जे ध्यावे नित्य मन्न।
शक्ति वार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न।।३८।।

श्री पंच परमेष्ठि भगवंत गुरुदेव महाराज जी आपकी आज्ञा है, सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप संयम, संवर, निर्जरा और मुक्तिमार्ग यथा शक्ति से शुद्ध उपयोग सहित आराधने, पालने, फरसने, सेवने की आज्ञा है। बारंबार शुभयोग संबंधी, सज्झाय ध्यानादिक अभिग्रह, नियम, पच्चक्खाणादिक करने की, करवाने की, समिति गुप्ति प्रमुख आराधने की सर्व प्रकार आज्ञा है।

दोहा

निश्चिय चित्त शुद्ध मुख पढ़त, तीन योग थिर थाय।
दुर्लभ दीसे कायरा, हलुकर्मी चित्त भाय।।१।।
अक्षर पद हीणो अधिक, भूल चूक जो होय।
अरिहंत सिद्ध आत्म साख से मिच्छा दुक्कड़ं मोय।।२।।

भूल चूक मिच्छामि दुक्कडं।

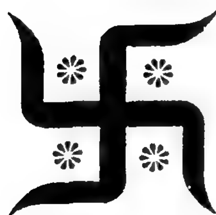
।। इति श्री बृहदालोयणा ।।

श्री शांतिनाथ-छंद

(ऋषि रघुनाथकृत)

श्री शांतिनाथजी रो कीजे जाप, क्रोड़ भवां रा काटे पाप
शांतिनाथ जी मोटा देव, सुर नर सारे जेहनी सेव।।१।।
दुःख दारिद्र जावे दूर, सुख संपत्ति होवे भरपूर
ठग फासी-गर ज़ावे भाग, बलती होवे शीतल आंग।।२।।
राज लोक मां महिमा घणी, शांति जिनेश्वर माथे धणी
जो ध्यावे प्रभु जी रो ध्यान, राजा देवे अधिको मान।।३।।
गड़ गुबड़ पीड़ा मिट जाय, द्वेषी दुश्मन लागे पाय
सघलो भाग्यो मन रो भरम, पाम्यो समकित काट्या कर्म।।४।।
सुणो प्रभुजी मोरी अरदास, हूं सेवक तुम पूरो आस
मुझ मन चिन्तित कारज करो, चिंता अरत्ति विघ्न हरो।।५।।
मेटो म्हारा आल जंजाल, प्रभु मुझने तू नयन निहाल
आपनी कीर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभु जी म्हारा काम।।६।।
जो प्रभु जी ने नित नित रटे, मोती-बंधा फूला कटे
चेप लावणी दोनुं झड़ जाय, बिंन औषध कट जावे छाय।।७।।
शांति नाम सुं आंख्यां निर्मल थाय, जाड़ो टूट पड़त कट जाय
कवलो पीलो जड़ जड़ झरे, शांति जिनेश्वर साता करे।।८।।
गरमी व्याधि मिटावे रोग, सज्जन मित्र नो मिलावे संयोग
ऐसा देव न दिसे और, नहीं चाले दुश्मन को जोर।।९।।
लुटेरा सब जावे नाश, दुर्जन फेरी होवे दास
शांतिनाथ जी की कीर्ति घणी, कृपा करो त्रिभुवन रा धणी।।१०।।
अरज करूँ छूं जोड़ी हाथ, आप सूं नहीं कोइ छानी वात

देख रह्या छो पोते आप, काटो प्रभु जी म्हारा पाप।।११।।
मुझ मन चिंतित करिये काज, राखो प्रभु जी म्हारी लाज
तुम सम जग मांही नहीं कोय, तुम जपता थी साता होय।।१२।।
तुम पास चले नहीं मिरगी रोग, ताव तेजरो न्हाखे तोड़
मृगी मिटाई कीधी प्रभु संत, तुम गुण नो नहीं आवे अंत।।१३।।
तुमने सुमरे साधु सती, तुमने सुमरे जोगी जति
काटो संकट राखो मान, अविचल पदवी दो भगवान।।१४।।
संवत अट्ठारे चौराणुं जाण, देश मालवो अधिक बखाण
शहर जावरा चातुर्मास, हूं प्रभु तुम चरणां रो दास।।१५।।
'ऋषि रघुनाथ' कीधो छंद, काटो प्रभु जी म्हारो फंद
हुं जोऊं प्रभु जी नी वाट, प्रभुजी म्हारी आशा पूरजो,
चिंता चूर जो संकट हर जो ।।१६।।



मेरी -भावना

(युगवीरकृत)

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो।।१।।
विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज-पर के हित-साधन में जो, निश-दिन तत्पर रहते हैं।।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं।।२।।
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
परधन-वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ।।३।।
अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ।।४।।
मैत्री-भाव जगत में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे।
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करूणा-स्त्रोत बहे।।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।।५।।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे।।६।।
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।।
अथवा कोई कैसा भी भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पथ डिगने पावे।।७।।
होकर सुख में मग्न न फूलें, दुःख में कभी न घबरायें।
पर्वत नदी-श्मशान-भयानक, अटवी से नहीं भय खावें।।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहनशीलता दिखलाये।।८।।
सुखी रहे सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे।
वैर पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नए मंगल गावे।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत-दुष्कर हो जावें।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावें।।६।।
ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।।
रोग, मरी, दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैले सर्वहित किया करे।।१०।।
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे।।
बन कर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति रत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करे।।११।।

संघ-समर्पणा

(आचार्य रामकृत)

तर्ज-मेरी भावना

संघ हमारा अविचल मंगल, नन्दन वन सा महक रहा।
हम सब इसके फूल व कलियां, सुन्दरतम निज संघ अहा!।।
वीर प्रभु के उपदेशों ने, संघ की महिमा गाई है।
सुर-नर वन्दन करे संघ को, संघ साधना भाई है।।१।।

संघ समष्टि का हित करता, व्यष्टि उसमें शामिल है।
संघ हेतु निज स्वार्थ तजे जो, वही प्रशंसा काबिल है।।
व्यक्तिवाद विद्वेष बढाता, संघ वाद दे प्रेम सदा।
व्यक्तिभाव को छोड़ समर्पण, संघ भाव में रहे सदा।।२।।

व्यक्ति अकेला निर्बल होता, संघ सबल होता मानें।
"संघे शक्तिः कलौ युगे" की, सत्य भावना पहचानें।।
एक सूत्र कोई भी तोड़े, रस्सी हस्ती को बांधे।
एक-एक मिल बना संघ यह, दुःसम्भव को भी साधे।।३।।

संघ श्रेय में आत्म श्रेय है, ऐसा दृढ़ विश्वास मेरा।
संघ में मुझमें भेद न कोई, बोल रहा हर श्वास मेरा।।
संघ परम उपकारी हमको, संघ ने सम्यक बोध दिया।
संघ न होता हम क्या होते, संघ ने हमको गोद लिया?।।४।।

शैशव, यौवन, वृद्धावस्था, सदा संघ उपकारी है।
भव सागर से तारण हारा, हम इसके आभारी है।।
नगर, चक्र, रथ, पद्म, चंद्र, रवि, सागर, मेरु, की उपमा।
सूत्र नन्दी में संघ गौरव की, क्या कोई है कम महिमा?।।५।।

प्रेम सूत्र से बंधा संघ है, हिल मिल आगे बढ़ते हैं।
निन्दा, विकथा तज गुणीजन के, गुणगण मन में धरते हैं।।
दूर हटा छल, छद्म अहं को, सरल सहज सद्भाव धरें।
पर हित हेतु तज निज इच्छा, सहज सुकोमल भाव वरें।।६।।

नाम अमर है उन वीरों का, जिनने संघ सेवा धारी।
अपना कुछ ना सोच किया, सर्वस्व संघ पे बलिहारी।।
यही प्रार्थना वीर प्रभु से, ऐसी शक्ति दो हमको।
संघ सेवा में झोंके जीवन, और न कुछ सूझे हमको।।७।।

संघ हेतु कुर्बान हमारा, तन मन जीवन सारा है।
संघ हमारा ईश्वर, हमको, संघ प्राण से प्यारा है।।
चमड़ी कागज खून की स्याही, अस्थि लेखनी लेकर के।
रचें भले संघ गौरव गाथा, उऋण न हो उपकारों से।।८।।

अरिहंत सिद्ध सुदेव हमारे, गुरू निर्ग्रन्थ मुनीश्वर है।
जिन भाषित सद् धर्म दयामय, नित्य यही अन्तर स्वर है।।
सद् गुरू आज्ञा ही प्रभु आज्ञा, इसमें भेद न कोई है।
शास्त्र-शास्त्र में जगह-जगह,पर वीर वचन भी वो ही है।।६।।

संघ नायक ! संघ मालिक, हम सब साधु मार्ग अनुयायी हैं।
और नहीं दूजे हम कोई, बस तेरी परछाई हैं।।
रत्नत्रय शुद्ध पालन करके, तोड़े कर्मों की कारा।
नाना गुण का धाम संघ है, घर-घर गूंजे यह नारा।।१०।।

स्वार्थ-मान को छोड़ संघ की, सेवा जो नर करता है।
इह-पर लौकिक कष्ट दूर कर, सौख्य संपदा वरता है।।

श्री हुक्म्यष्टकम्-स्तोत्रम्

गृह मोह ममत्व विनाश करं, शुभ संयम भाव रतं विरतम्।
सुसमाधि युतं गणि कीर्ति धरं, प्रणमामि महामुनि हुक्मि गुरुम्।।१।।
प्रशमादि विकास गुणैः कलित-मुपदेश सुधा-वलितं मुदितम्।
महिते निज-कार्ये पथे निरतं, प्रणमामि महामुनि हुक्मि गुरुम्।।२।।
भव-पातक मान रुजा रहितं,सुख-दायक भाव युतं सततम्।
भव-भीति हरं शिव सत्य वरं, प्रणमामि महामुनि हुक्मि गुरुम्।।३।।
तपसा सहितं विदुषा-मजितं, शशि पूर्ण सुशोभित दिव्य मुखम्।
रवि तुल्य विभासित दीप्तिधरं, प्रणमामि महामुनि हुक्मि गुरुम्।।४।।
मनसा, वचसा, वपुषा विमलं,करुणा धिषणा गरिमादि युतम्।
सुनयैः सुगुणैः सुकृतै-रनघं, प्रणमामि महामुनि हुक्मि गुरुम्।।५।।
नगरे नगरे सुख शान्ति करं,बहु शिष्य जनैः विनया-भिनुतम्।
निज कर्म-विदार करं विशदं,प्रणमामि महामुनि हुक्मि गुरुम्।।६।।
शरणा-गत धारक रक्ष परं,जगती प्रथितं सुयशो भरितम्।
जन-संकट नाशक भक्ति रतं,प्रणमामि महामुनि हुक्मि गुरुम्।।७।।
भव सागर पंक निमग्न नृणां,जिन भाषित वोध सुखं प्रददौ।
तमहं गुण-सागर बुद्धि-निधिं,प्रणमामि महामुनि हुक्मि गुरुम्।।८।।
गुरु हुक्म्यष्टकं स्तोत्रम्, मुनि ज्ञानेन निर्मितम्,।
पठन्ति ये नराः भक्त्या, सिद्धि सौधं व्रजन्ति ते।।९।।

श्री नानेशगुणाष्टकम्-स्तोत्रम्

छन्द-बसन्ततिलका

प्रज्ञा विशिष्ट करुणाकर दिव्य दीप्ति!
आदर्श भाव भृत साधक सौम्य रूप!।
निर्मुक्ति धाम परिबोधक शान्त दान्त!
नानाभिधान गुण चायक देव! वन्दे।।१।।

संबोधना प्रखर साम्य स्वरूप भव्य!
संध्यान शुक्ल कृतिकारक साध्य सिद्ध!।
वात्सल्य पूर्ण, ममता मद हत प्रधान!
नानाभिधान गुण चायक देव! वन्दे।।२।।

नैर्मल्य साधु वपुषा गुण दायिकीर्ते!
हुक्मादिगच्छ परिभूषित भव्य भानो!।
सम्यक् सुधा वलित भाषित रूप वाणि!
नानाभिधान गुण चायक देव! वन्दे।।३।।

माधुर्य पूर्ण गुणकारक देशनादि!
श्रृंगार मातृ पद धारक रत्न सूनो!।
दांता सुधाम जनिरूप विधातृ नाम!
नानाभिधान गुण चायक देव! वन्दे।।४।।

पाटे सुधर्म गण धारण रूप नव्य!
अन्त्योदय प्रणयिबोधक रूप योगिन्!।
माहात्म्य भव्य सृतिमध्य विराजमान!
नानाभिधान गुण चायक देव! वन्दे।।५।।

देवेन्द्र मौलि परिवन्दित पूज्यपाद!
शास्ता वरिष्ठ जिन शासन कार्यकारिन्!।
सिद्धान्त पक्ष निकषोपल दक्ष लक्ष्य!
नानाभिधान गुण चायक देव! वन्दे।।६।।

श्री साधुमार्ग गणधायक सौम्यशील!
आत्मेक्षणादि चय साध्य विशिष्ट दत्त!।
सारल्य शान्त विजितात्म समान भाव!
नानाभिधान गुण चायक देव! वन्दे।।७।।

शैवादि धाम परिनिष्ठित नीति कारिन्!
नानेश भव्य परिसंज्ञित मुक्ति काम!।
संधीयते निखिल भक्त निरूपरूप!
नानाभिधान गुण चायक देव! वन्दे।।८।।

(अनुष्टुप)

सम्यक् बोध प्रणेतारं, हुक्मगच्छ सुनायकम्।
द्वन्द्व रूप विजेतारं, नानेश वन्दते मुदा।।

श्री रामेशाष्टकम्-स्तोत्रम्

सम्यक् प्रबोधन विशिष्ट दयानिधानं,
हुक्मेश गच्छामधिनायक सौम्यताभं।
श्री वीतराग पथ-दायक शान्त दान्तं,
सन्नामराम फलसिद्धि विधायकं च।।१।।

पीयूष पायक विशेष विभाषकं च,
नैर्मल्यभाव भृति पूर्ण विभावरिष्ठं।
सन्तापताप हरणे मधुमास रूपं,
सन्नामराम फलसिद्धि विधायकं च।।२।।

द्वन्द्वादि दुष्ट-गण नाशक भव्यरूपं,
प्रज्ञा पयोद परमागम तत्त्वदत्तं।
व्यामोह शार्वर विनाश विभाकरत्वं,
सन्नामराम फलसिद्धि विधायकं च।।३।।

जांगल्य विश्रुत विशेष सुधामबीकाः,
तत्रैव सौम्य करणी जनि पुण्य सद्मः।
तन्नेमिनन्द गुणचायक सूरिभूताः,
सन्नामराम फलसिद्धि विधायकं च।।४।।

सच्चारु चक्षुयुगले रमते सदैव,
माधुर्य कुम्भभृत साधक साध्यसिद्धं।
चापल्यरिक्त मधुचाप विदीर्ण, शैवं,
सन्नामराम फलसिद्धि विधायकं च।।५।।

वन्दे सुशासन विशिष्ट समाधिवन्तं,
वन्दे गणाधिपति रूप यतीन्द्र चन्द्रं।
वन्दे सुदेव करुणाकर पूज्यपादं,
सन्नामराम फलसिद्धि विधायकं च।।६।।

नानेश शासन नभोद्युतिरूप देवम्,
देवेन्द्र किन्नर नरेन्द्र नरादि पूज्यम्
पीयूषपान करणे विधुरूप धाम,
सन्नामराम फलसिद्धि विधायकं च।।।७।।

मिथ्यात्ववाद दलने हरिरूप काय,
साम्यस्वरूप वरणे श्रुति धर्मकाय।
कारुण्यपुंज शिवदायक नायकाय,
श्रीरामनाम पदयोशशिरसा नमस्ते।।८।।

श्री रामेशाष्टकं स्तोत्रं वीरेन्द्र मुनिना कृतम्।
सदा पापद्‌यते भक्त्या, ह्यष्टसिद्धि विधायकं।।

卐



प्रत्याख्यान-सूत्र

नवकारसी-सूत्र

उग्गए सूरे नमोक्कारसहियं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, वोसिरामि।

पौरूषी-सूत्र

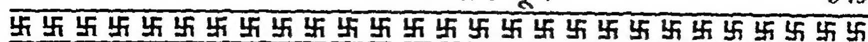
उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं साइमं। अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं,दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरामि।

पूर्वार्ध-सूत्र

उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि- वत्तियागारेणं, वोसिरामि।

एकासन-सूत्र

एगासणं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउट्टणपसारणेणं, गुरू-अब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।



एकस्थान-सूत्र

एगासणं एगट्ठाणं पच्चक्खामि, तिविहं पि आहारं-असणं खाइमं साइमं। अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, गुरू अब्भुट्ठाणेणं, परिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

आयम्बिल-सूत्र

आयंबिलं पच्चक्खामि, अन्नत्थऽणाभोगेणं,सहसागारेणं, लेवालेवेणं उक्खित्तविवेगेणं,गिहत्थ-संसट्ठेणं, परिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

उपवास-सूत्र

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, परिट्ठावणि-यागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

दिवस चरिम-सूत्र

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व- समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

अभिग्रह-सूत्र

अभिग्गहं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व- समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

निर्विकृतिक-सूत्र

विगईओ पच्चक्खामि, अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्च-मक्खिएणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

उपवास, दिवसचरिम, अभिग्रह आदि में यदि पानी का आगार रखना हो तो 'चउव्विहं' के स्थान पर 'तिविहं' पाठ बोलना चाहिये और आगे 'पाणं' का पाठ नहीं बोलना चाहिये।

प्रत्याख्यान पारणा-सूत्र

उग्गए सूरे नमोक्कारसहियं.............................. पच्चक्खाणं कयं।तं पच्चक्खाणं सम्मं काएणं फासियं, पालियं, तीरियं, किट्टियं, सोहियं, आराहियं। जं च नं आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।



समता युवा संघ, बीकानेर के बहुआयामी चरण...

1. गुरुदर्शन यात्रा संचालन
2. अकाल राहत विशिष्ट कार्य योजना
   - अ. अनाज वितरण
   - ब. पशु चारा वितरण
   - स. पेयजल वितरण
   - द. चिकित्सीय जाँच एवं निःशुल्क दवा वितरण
   - य. कंबल वितरण
   - र. वस्त्र वितरण
3. सामुहिक तेलों का आयोजन
4. समता सामायिक मंच
5. सामुहिक एकासन कार्यक्रम
6. धार्मिक शिविरों का संचालन
7. धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन
8. स्वैच्छिक रक्तदान
9. निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर
   - अ. चिकित्सीय परीक्षण
   - ब. एक्स-रे एवं ई.सी.जी. जाँच
   - स. रक्त परीक्षण
   - द. दवा वितरण

अब आपके करों में है समता युवा संघ की स्वाध्याय प्रेरक प्रस्तुति

समता स्वाध्याय सौरभ

